मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 60 | अंक : 03 | सितम्बर, 2019 | पृष्ठ : 132 | मूल्य : ₹15

शिक्षक दिवस विशेषांक

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्रारम्भिक एवं माध्यमिक) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

> "मैं यह मानता हूँ कि शिक्षा का कार्य केवल पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन कराना ही नहीं है बल्कि नये-नये अनुसंधानों से समाज को समृद्ध करना भी है। किताबी ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, स्थान विशेष की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा में स्थितियों-परिस्थितियों से संबंधित समस्याओं के निराकरण के लिए भी विद्यार्थियों में ज्ञान का प्रवाह करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।"

तस्मै श्री गुरवे नमः

भारतीय संस्कृति गुरु व शिष्य परम्परा से आरम्भ से ही आबद्ध रही है। शिक्षक का अर्थ है, वह व्यक्ति जो ज्ञान का प्रसार करे। वह प्रकाश जिससे समाज आलोकित हो। शिक्षक किसी भी देश, समाज के भविष्य निर्माता होते हैं। वह जो संस्कार विद्यालयों में बच्चों को प्रदान करते हैं, उसी से तो भविष्य के नागरिक बनते हैं। व्यक्ति निर्माण की दिशा में गुरु को इसीलिए सबसे महत्त्वपूर्ण माना गया है। वह न केवल अक्षर ज्ञान ही अपने शिष्यों को कराता है अपितु उनमें जीवन मूल्यों की स्थापना भी करता है। यह शिक्षक ही है जो बाह्य जगत में रहते हुए भी अपने शिष्य के भीतर के अन्धकार को दूर करता है। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में लिखा हैं-

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबिकर निकर।।

अर्थात् गुरु मनुष्य रूप में नारायण ही हैं। मैं उनके चरण-कमलों की वन्दना करता हूँ। जैसे सूर्य के निकलने पर अन्धेरा नष्ट हो जाता है, वैसे ही उनके वचनों से मोहरूपी अन्धकार का नाश हो जाता है। गुरु और गोविन्द में भी गुरु को श्रेष्ठ बताया गया है, इसलिए कि वही ईश्वर से साक्षात्कार को सही मायने में संभव कर सकता है। कहा गया है-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपकी गोविन्द दियो बताय।।

इस माह हम सभी शिक्षक दिवस मनाते हैं। शिक्षक दिवस, 5 सितम्बर के दिन ही देश के पूर्व राष्ट्रपति और महान शिक्षाविद् डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का जन्म हुआ था। डॉ. राधाकृष्णन् महान् दार्शनिक, उद्भट विद्वान, ओजस्वी वक्ता और कुशल राजनयिक थे। मगर वह सदा अपने को एक शिक्षक ही मानते थे। अपनी इस मान्यता पर मुहर लगाने के लिए उन्होंने अपने जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में समर्पित किया। शिक्षक दिवस के अवसर पर मैं डॉ. राधाकृष्णन् को नमन् करते हुए उनके बताए आदर्शों पर चलते हुए उनके जीवन व चरित्र से शिक्षा ग्रहण करने का आह्वान करता हूँ। सितम्बर का पूरा महिना ही शिक्षा से जुड़ा है। इसी माह 8 सितम्बर को विश्व साक्षरता दिवस भी है। मैं यह मानता हूँ कि शिक्षा का कार्य केवल पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन कराना ही नहीं है बल्कि नये-नये अनुसंधानों से समाज को समृद्ध करना भी है। किताबी ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, स्थान विशेष की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा में स्थितियों-परिस्थितियों से संबंधित समस्याओं के निराकरण के लिए भी विद्यार्थियों में ज्ञान का प्रवाह करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

ग्रीष्मावकाश के पश्चात् विद्यालय खुले दो माह से अधिक समय हो गया है। कक्षागत अध्ययन-अध्यापन के साथ यह समय खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन का है। क्लास टूरनामेंट से लेकर नेशनल टूरनामेंट तक आयोजित होंगे। गाँव की प्राथमिक पाठशाला के खेल मैदान का अपना महत्त्व है। दरअसल नींव तो यहीं डाली जाती है। याद रखिए, संसार की बड़ी से बड़ी खेल प्रतियोगिता यथा ओलम्पिक एशियाड तक पहुँचने के मार्ग का श्री गणेश प्राइमरी स्कूल के खेल मैदान से ही होता है।

खेलकूद पढ़ाई के अभिन्न अंग हैं। खेलने से मस्तिष्क का विकास होता है। शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है। भाईचारें एवं प्रेम को बढ़ावा मिलता है। अनुशासन, स्फूर्ति, एकाग्रता, सहयोग एवं समन्वय के गुण खेलों से ही सीखने को मिलते हैं। खिलाड़ियों में अपने लक्ष्य (Goal) के प्रति अवर्णनीय एकाग्रता होती है जिसकी जीवन के हर मोड़ पर जरूरत होती है।

खेल प्रतियोगिताओं के समय निर्णायकों पर भरोसा करते हुए सच्ची खेल भावना से खेलना चाहिए। खेल को खेल की भावना से खेलना चाहिए। कोई सात दशक पूर्व 1951 में भारत में एशियाई खेलकूद हुए थे। एशियाड 1951 का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने यही कहां था, "Play the game in the sprit of game." यानी खेल को खेल भावना से ही खेला जाना चाहिए। पंडित जी का यह कथन सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है। मेरी शारीरिक शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे स्कूलों में छात्र खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें तराशने का कार्य करें तथा उनके लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का पथ प्रशस्त करें। आप सभी को शिक्षक दिवस एवं साक्षरता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 60 | अंक : 3 | भाद्रपद शु.–आश्विन शु. २०७६ | सितम्बर, 2019

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

❈

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

❈

सम्पादक
मुकेश व्यास

❈

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❈

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ **15**

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in
shivirasecedubkn@gmail.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- विद्यालय : शिक्षा और संस्कार के केन्द्र 5

आलेख
- ज्ञान स्वरूपं नमामि 7
  डॉ. दाऊदयाल गुप्ता
- महान शिक्षाविद् : डॉ. राधाकृष्णन् 8
  कमलनारायण पारीक
- डॉ. राधाकृष्णन् का शैक्षिक चिंतन 9
  तरुण कुमार दाधीच
- महान दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन् 10
  भंवर सिंह
- विनोबा भावे का दर्शन 11
  ओम प्रकाश सारस्वत
- गुरु महिमा 13
  डॉ. भगवान सहाय मीना
- वर्तमान परिवेश : शिक्षक की भूमिका 15
  दिनेश कुमार गुप्ता
- मूल्य एवं सहिष्णुता 19
  सरस्वती माहेश्वरी
- बच्चों के श्रेष्ठ जीवन के लिए 21
  डॉ. रमेश 'मयंक'
- नवनियुक्त शिक्षक को पत्र 22
  चैन राम शर्मा
- विफलता सफलता से श्रेष्ठ शिक्षक है 23
  सुभाष चन्द्र कस्वां
- शिक्षा : आवश्यक संस्कार 24
  विनोद पानेरी
- समाज निर्माण में अभिभावकों का योगदान 25
  सुशीला चौधरी
- सृजन का रहस्य 26
  छाजूलाल जांगिड़
- अभिव्यक्ति कौशल का विकास : बाल सभा 27
  सुमन सिंह
- तू राख्यौ उरझाई रे.... 28
  डॉ. मूलचन्द बोहरा
- किशोरावस्था : बच्चों से सामंजस्य 30
  आकांक्षा शर्मा
- ई–लर्निंग 32
  रानू सिंह
- बधिरान्ध बालकों का शैक्षिक उन्नयन 33
  डॉ. योगेन्द्र सिंह नरुका 'फुलेता'
- स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं का योगदान 34
  सुरेन्द्र माहेश्वरी
- बेहतरी के लिए बराबरी महिलाओं के लिए चुनौती : **बजरंग प्रसाद मजेजी** 36
- एक प्रयास–बस्ते का बोझ हल्का करना 38
  मानाराम जाखड़
- राज्य के विद्यार्थियों के लिए संचालित विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएँ : **तरुण गुप्ता** 39
- राज्य में सीसीई का संचालन 41
  डॉ. डी.डी. गौतम
- हिन्दी में हिन्दी 45
  डॉ. राजेन्द्र प्रसाद खीचड़
- जीवन्त भाषा हिन्दी 46
  महेन्द्र कुमार शर्मा
- कहाँ जाऊँ पापा 46
  कैलाश गिरि गोस्वामी
- वह भी क्या दीवाली थी! 47
  भगवती प्रसाद गौतम
- माँ : सृजक व पहली गुरु 49
  शशि ओझा
- नारी महिमा 50
  अर्चना लखोटिया
- दोस्ती (दो+हस्ती) 51
  अभय कुमार जैन
- लोकजीवन और राजस्थानी लोकगीत 52
  डॉ. दयाराम
- यथार्थ बोध 54
  अनूप सैनी 'बेबाक'
- श्रवणशक्ति को गैजेट्स से खतरे 55
  सीमा शर्मा
- अनमोल मिट्टी : **ललिता शर्मा** 55
- भारत का स्विट्जरलैण्ड : कौसानी 56
  विजय सिंह माली
- मैं कुछ बन पाऊँगी 57
  रतन लाल जाट
- विकास के दीप 58
  शिवनारायण शर्मा

- संगू : **अंजीव कुमार रावत** 75
- स्वतंत्रता, शौर्य का प्रतीक : सारनाथ सिंह-शीर्ष : **पुष्पा शर्मा** 77
- जल नाम सत् है : **गिरिराज व्यास** 78
- वीरता पुरस्कार : **महेश कुमार चतुर्वेदी** 79
- वंचित लहर : **सतीश चन्द्र श्रीमाली** 80
- अश्रुदीप : **हिम्मत राज शर्मा** 81
- बचपन के दो पहलू : **बबीता आसवानी** 82
- तोड़ना या खोलना : **डॉ. चेतना उपाध्याय** 83
- आज़ादी : **घनश्याम पारीक** 85
- गुरु जीवन सँवारते **विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'** 85
- सफर रेलगाड़ी का **विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'** 85
- मुस्कुराने के अर्थ में : **सूर्य प्रकाश जीनगर** 85
- शिक्षक कौन! : **दमन त्रिपाठी** 86
- स्वच्छ है वतन : **गणपतसिंह 'मुग्धेश'** 87
- खुशियाँ : **फहमीदा बानु** 87
- पीले पत्ते : **ब्रजमोहन सिंह चौहान** 87
- बेटी : **रानू गोठवाल** 87
- छात्र विदाई गीत : **पूनम शर्मा** 88
- अनुरक्त दीप जलाएँ **सम्पत लाल शर्मा 'सागर'** 88
- जिन्दगी बनाता स्कूल **सुखविन्द्र सिंह मेघाना** 88
- मंजिल की आस : **गौरव कुमार शर्मा** 89
- गुरुजी की इच्छा : **उत्सव जैन** 89
- हे शारदे माँ वरदान दो! **डॉ. कृष्णा आचार्य** 89
- मैं नारी कमजोर नहीं : **सत्यनारायण पारीक** 89
- दोहे : **लियाकत अली खाँ 'भावुक'** 90
- मार्गदर्शक : **दिनेश शर्मा** 90
- शिक्षक की भूमिका : **पूजा दहिया** 90
- सच की राह : **लालाराम जांगिड़ 'मोहित'** 90
- गुरु जी : **किशन गोपाल व्यास** 91
- शिक्षक का सम्मान : **विद्यानिधि त्रिवेदी** 91
- महिमा देश की **हाजी साबिर हुसैन 'शुक्रिया'** 91
- मन मिलते लोग : **सुरेश कुमार** 91
- भारती मेरी माँ का नाम **वेद प्रकाश कुमावत** 92
- स्वच्छ पर्यावरण शुभम् **जगदीश प्रसाद त्रिवेदी** 92
- मैं विद्यालय जाऊँगी : **कान्ता चाडा** 93
- ग़ज़ल : **राजेन्द्र कुमार टेलर** 93
- भारत माता की पुकार : **बस्तीराम जाट** 93
- हे! शारदे माँ : **मुकेश बोहरा अमन** 93
- वो कर ही दिखलाएगा : **शालू मिश्रा** 93
- मौन चीखती प्यास : **राजकुमार बुनकर** 93
- लौटा दो मेरा बचपन **परमानन्द शर्मा 'प्रमोद'** 94
- पानी : **राम गोपाल राही** 94
- सलीका : **बाल कृष्ण शर्मा** 95
- दूध की कहानी **लक्ष्मीकान्त शर्मा 'कृष्ण कली'** 95
- स्कूल जाते बच्चे : **दिनेश विजयवर्गीय** 95
- सरदी में कैसे जाऊँ शाला **पारस चन्द जैन** 95
- रिश्ते : **अरनी राबर्टस** 96
- हिन्दी है भारत की शान **सुरेन्द्र कुमार चेजारा** 96
- जीवन एक चुनौती **उम्मेद सिंह भाटी 'सूरज'** 96
- सरकारी स्कूल है जी : **अनुराधा जीनगर** 97
- आह्वान तुम्हारा **डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल** 97
- स्वस्थ सभी हम भारत में : **मनमोहन गुप्ता** 97
- आओ मिलकर करें अर्चना **दीप सिंह भाटी** 98
- हाँ मैं शिक्षक हूँ : **कुमार जितेन्द्र** 98
- उछाव : **भीखालाल व्यास** 99
- विटळ बूढ़ापो बापड़ो : **कल्पना गिरी** 101
- विश्वास : **शांति कुमारी डोम** 102
- हड़कवा : **भोगीलाल पाटीदार** 103
- रेल : **रामस्वरूप रैगर** 104
- मरुधरा में घणमोल मोर : **ईसराराम पंवार** 105
- म्हारो देस सगळा देसां सूं न्यारो है **ओमदत्त जोशी** 105
- कूंत-एक नवोदित कवि री **शंभूदान बारहठ** 106
- जग चावो थळवट रो पशु मेळो-तिलवाड़ा **हनुमान सिंह भाटी** 107
- हिवड़े तोल : **पूरणमल तेली** 108
- आस री किरण : **रामजीलाल घोड़ेला** 109
- ठमता ठौर कोनी! : **हरीश सुवासिया** 109
- राखी रौ मोल : **आशुतोष** 110
- टाबर : घर अर स्कूल **डॉ. विमलेश कुमार पारीक** 111
- कुलधरा रौ कळाप : **जेठनाथ गोस्वामी** 112
- उन्हाळा री पंचदशी दोहावली : **नरेश व्यास** 113
- आवो नी ढोला मरुधर प्रदेश **रामेश्वर लाल** 113
- राजस्थान रो जसगान **जगदीश प्रसाद कुमावत** 114
- पढ़बा चालां रे : **उषा रानी स्वामी** 114
- बेटी मत ब्याहवो बचपन में **हजारी लाल सैनी** 114
- रंग रंगीलो राजस्थान **रितेश कुमार शर्मा (पथिक)** 115
- मायड़ रै नांव पाती : **टेकचन्द्र शर्मा** 115
- इन्सान बणै लो **डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत** 116
- ग़ज़ल : **रहीम खां हसनिया 'सांचोरी'** 116
- मोट्यार : **गोपाल लाल वर्मा** 116
- आपरौ-परायौ : **मंगलेश सोलंकी** 116
- बेटी बगिया की बहार : **समीक्षा** 117
- पेड़ों से हमें लाभ : **करण बैरवा** 117
- प्रकृति कहती : **लीला** 117
- याद आता है वो पल **नितेश कुमार सिंवाल** 117
- राजू के जूते : **निर्मल** 118
- चिड़िया मुझे बनादो... : **आचूकी** 118
- बेटी का सवाल : **भावना सिंवर** 118
- चिड़िया और चींटी : **राधा** 118
- राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2017 : अनुभूत क्षण : **डॉ. सुमन जाखड़** 119

रपट

- नेत्रहीन विद्यालय में विभिन्न कार्यों का उद्घाटन : **अल्ताफ़ अहमद खान** 124

स्तम्भ

- पाठकों की बात 6
- शिविरा पञ्चाङ्ग : सितम्बर 2019 74
- आदेश-परिपत्र 59-73
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 74
- शाला प्रांगण से 125
- चतुर्दिक समाचार 129
- हमारे भामाशाह 130
- व्यंग्य चित्र : **रामबाबू माथुर** 51, 84, 106

पुस्तक चर्चा 120

- मेरी स्कूल डायरी, लेखिका : रेखा चमोली **मुकेश व्यास**

पुस्तक समीक्षा 120-124

- साथी हैं संवाद मेरे लेखक : ज्ञान प्रकाश 'पीयूष' समीक्षक : **सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'**
- बैकुंठी, लेखक : श्री देवकिशन राजपुरोहित समीक्षक : **जगमोहन सक्सैना**
- माटी हिन्दुस्तान की, लेखक : टीकम अनजाना समीक्षक : **पृथ्वीराज रतनू**
- हाट, लेखक : ओम नागर समीक्षक : **राजेन्द्र जोशी**

मुख्य आवरण : नारायणदास जीनगर, बीकानेर, मो. 9414142641 विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

सत्यमेव जयते

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

विद्यालय : शिक्षा और संस्कार के केन्द्र

कृतज्ञ राष्ट्र अपने महान सपूत शिक्षाविद्, दार्शनिक और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् का जन्म दिवस 05 सितम्बर 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाता है।

राज्य का शिक्षा विभाग शिक्षकों के प्रति अपना सम्मान, राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन कर प्रकट करता है। राष्ट्र, राज्य और जिले के साथ-साथ इस वर्ष से ब्लॉक स्तर से ही शिक्षकों का सम्मान पूर्ण पारदर्शी और विकेन्द्रीकृत रूप से कर पाने में राज्य का शिक्षा विभाग गर्व का अनुभव कर रहा है। ब्लॉक स्तर पर भी अधिकतम शिक्षकों के सम्मान के पीछे मुख्य उद्देश्य यह है कि शिक्षकों द्वारा किए गए कार्यों को पहिचान मिल सके एवं अधिकतम शिक्षक प्रोत्साहित हों। संवेदनशील प्रशासन में ही इस प्रकार की रचनात्मक और सृजन को प्रोत्साहित करने की प्रवृत्ति विकसित होती है।

सुदूर ढाणी गाँव में भी कठिन परिस्थितियों में रह रहे हमारे शिक्षक, शिक्षा की अलख जगाने का ठोस कार्य करते हैं। उनके परिश्रम का ही सुफल है कि ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित साधनों के बावजूद भी राजकीय विद्यालयों के बोर्ड और विद्यालयी परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहे हैं। राजकीय विद्यालयों के नामांकन में उत्साहजनक वृद्धि हुई है। बालिका शिक्षा प्रोत्साहन योजनाओं के प्रचार-प्रसार और क्रियान्वयन से समाज के सभी वर्गों की बालिकाओं में शिक्षा के प्रति चेतना जाग्रत हुई है। राज्य का शिक्षा विभाग अपने शैक्षिक संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के प्रति दृढ़ संकल्पित है। प्रत्येक राजकीय विद्यालय सही अर्थ में आदर्श और उत्कृष्ट तभी बनेगा जब वहाँ की विद्यालय विकास समिति, संस्थाप्रधान, शिक्षक, अभिभावक और भामाशाह सभी मिलकर न केवल उसको भौतिक संसाधनों से सम्पन्न बनाएं अपितु विद्यालयों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों के केन्द्र के रूप में भी विकसित करें। शिक्षित और संस्कारित विद्यार्थी ही भविष्य के सुनागरिक बनते हैं।

मैं समस्त संस्थाप्रधानों एवं शिक्षकों से उम्मीद करता हूँ कि वे सभी अपने-अपने विद्यालय में शिक्षण हेतु आने वाले समस्त बच्चों की उनकी क्षमता अनुसार पहिचान कर इसी शैक्षणिक वर्ष की शुरूआत से ही अतिरिक्त कक्षाएँ लगाकर विशेष मेहनत करेंगे ताकि गुणात्मक शिक्षा सुनिश्चित हो सके एवं विद्यालय का परीक्षा परिणाम भी सुधरे।

समस्त शिक्षकों पर बच्चों का भविष्य निर्भर करता है एवं इसी आधार पर हमारे देश की दशा एवं दिशा सुनिश्चित होगी। अतः मुझे पूरी उम्मीद है कि शिक्षक अपनी जिम्मेदारी को समझेंगे एवं उसे पूर्ण दृढ़ निश्चय एवं समर्पण से निभायेंगे।

सभी को मेरी ओर से हार्दिक बधाई! और शुभकामनाएँ!!

(नथमल डिडेल)

"प्रत्येक राजकीय विद्यालय सही अर्थ में आदर्श और उत्कृष्ट तभी बनेगा जब वहाँ की विद्यालय विकास समिति, संस्थाप्रधान, शिक्षक, अभिभावक और भामाशाह सभी मिलकर न केवल उसको भौतिक संसाधनों से सम्पन्न बनाएं अपितु विद्यालयों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों के केन्द्र के रूप में भी विकसित करें। शिक्षित और संस्कारित विद्यार्थी ही भविष्य के सुनागरिक बनते हैं।"

▼ *चिन्तन*

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति
कार्याणि न मनोरथैः।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य
प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।
-सुभा. भां. 86/3

अर्थात्-कार्य उद्यम करने से सिद्ध होते हैं। केवल इच्छा करने से कोई कार्य सफल नहीं होता। ठीक उसी तरह जैसे सोए हुए सिंह के मुँह में हिरन स्वतः प्रवेश नहीं करते, उसे भी उनका शिकार करना पड़ता है।

पाठकों की बात

● माह अगस्त 2019 का शिविरा का आकर्षक मुखावरण वाला अंक प्राप्त हुआ। महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) नवाचार शिक्षा विभाग के लिए एक क्रांतिकारी कदम है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150 वीं जयन्ती पर यह श्रद्धांजली है। सामुदायिक बालसभा नवाचार से भी जन प्रतिनिधि, जनसहभागिता का जुड़ाव व रुझान बढ़ा है। 'मेरा अनुभव लेख' डॉ. सूरज सिंह नेगी (आर.ए.एस.) द्वारा विभिन्न स्थानों पर विद्यालयों में किए गए नवाचार प्रेरणादायक हैं। शिक्षा अधिकारियों को भी इस तरह की पहल करनी चाहिए। अन्य लेख भी पठनीय हैं।

–महेन्द्र कुमार शर्मा, नसीराबाद (अजमेर)

● शिविरा पत्रिका का अगस्त, 2019 का अंक रंगीन वार्षिक शिक्षा विभागीय पंचांग के साथ समय पर प्राप्त हुआ। 'अपनों से अपनी बात' में माननीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा के यह विचार जानकर अति हर्ष हुआ कि गुणात्मक सुझाव एवं शैक्षिक चर्चाओं हेतु उनके घर के द्वार गुरुजनों हेतु सदैव खुले हैं। साथ ही मैं उनकी इस बात का भी समर्थन करती हूँ कि बेहतरीन शिक्षा से ही राष्ट्र का विकास संभव है। मानाराम जाखड़ द्वारा 'हम होंगे कामयाब' शीर्षक से शिक्षा बजट 2019-20 का जो विस्तृत ब्यौरा दिया गया है,वह काफी तथ्यात्मक एवं ज्ञानवर्द्धक लगा। 25 वें भामाशाह सम्मान समारोह पर 121 भामाशाहों ने शिक्षा के क्षेत्र में रुपये 14946.84 लाख का दान दिया जो कि विगत वर्षों में सर्वाधिक है, यह जानकर अति प्रसन्नता हुई और इस पुण्य कर्म हेतु मैं भी अभिप्रेरित हुई। कन्हैयालाल बैरवा जी का आलेख 'संस्कारवान् वातावरण निर्माण में सहायक कर्मचारी की भूमिका' अत्यधिक हृदयस्पर्शी लगा। डॉ. आशा शर्मा द्वारा डॉ. सूरज सिंह नेगी के उपन्यास 'नियति चक्र' की बहुत ही सटीक एवं सार्थक समीक्षा की गई है। 'बाल शिविरा' बालकों की सृजनात्मक शक्ति को प्रकट करने वाला पृष्ठ है, जो प्रेरणास्पद है। 'शाला प्रांगण से' पृष्ठ से प्राप्त राज्य के अन्य विद्यालयों में आयोजित होने वाली उपयोगी शैक्षिक गतिविधियों की जानकारी बहुत ही लाभप्रद एवं प्रोत्साहित करने वाली है। 'चतुर्दिक समाचार' वाला पृष्ठ रोचक जानकारी से भरा हुआ है जो सहज ही आकृष्ट करता है। गत वर्ष से हुए शिक्षा में नवाचार 'सामुदायिक बालसभा का आयोजन' के अन्तर्गत अभिभावकों एवं प्रबुद्धजनों के जो शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं उत्कृष्ट सुझाव प्राप्त होते हैं, उनको भी शिविरा पत्रिका में स्थान दिया जाए तो बेहतर होगा। अन्त में यही कहना चाहुँगी कि शिविरा पत्रिका प्रथम पृष्ठ से लेकर अन्तिम पृष्ठ तक ज्ञान से भरे घट के समान है। एतदर्थ सम्पूर्ण शिविरा परिवार को अशेष बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ।

–रेखा कुमारी ओझा, भीलवाड़ा

● मैं शिविरा पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। मुझे जुलाई का अंक नहीं मिला तो मैं चिंतित हुआ। मैंने पता किया कि मुझे पुस्तक नहीं मिलने का क्या कारण है। तब पता चला कि जुलाई का अंक किसी कारणवश छपा नहीं। अब मुझे अगस्त का अंक मिला, अंक को देखते ही मन प्रसन्नचित्त हुआ, क्योंकि कवर डिजाइन बहुत ही अच्छा लगा, 'अपनों से अपनी बात' में श्री डोटासरा (शिक्षा मंत्री) ने कहा मेरे घर का द्वार गुरुजनों के लिए सदैव खुला रहेगा और मैं चाहता हूँ कि शिक्षा में कैसे सुधार हो उस पर अधिक से अधिक चर्चा हो। दिशाकल्प में निदेशक महोदय नथमल डिडेल जी ने कहा यह सत्र नव सृजन का सत्र है जिसमें प्रत्येक जिले में महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों की स्थापना की है। मैं ही नहीं बल्कि अधिकांश शिक्षक इस बात से सहमत है कि सरकार नव सृजन कर रही है और इसी प्रकार आगे भी नव सृजन का कार्य करती रहेगी। मैं इस बात पर सम्पादक मण्डल को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। आपके चयन किए हुए लेख व उनकी छपाई, कवर डिजाइन, फोटो सभी अच्छे लगते हैं। आशा करता हूँ कि इसी प्रकार से शिविरा में अच्छे आलेख व अन्य सामग्री गुणवत्तापूर्ण रूप में हमें प्राप्त होती रहेगी।

–दीनदयाल शर्मा, भरतपुर

ज्ञान स्वरूपं नमामि

❒ डॉ. दाऊदयाल गुप्ता

सामान्य प्रचलन में 'गुरु' उस देहधारी व्यक्ति के लिए सम्बोधन है, जिसका नाता शिक्षा प्रदान करने से जुड़ा है। तो क्या इसी देहधारी व्यक्ति के विषय में महात्मा कबीर का वह कथन है।

गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपको, गोविन्द दियो बताय।।

वहाँ साध्य तो गोविन्द है किन्तु उनसे साक्षात्कार करने का माध्यम गुरु है। मसला मननीय है। गोविन्द जैसे विराट व्यक्तित्व से साक्षात्कार कराना क्या इतना सरल है जिसे हर कोई नाम पदधारी गुरु करा सकता है, कदापि नहीं। तो वह कौनसा गरिमामयी गुरु है जो इस दुष्कर कार्य को सुलभ बना सकता है? इसके लिए प्रथमतः 'गुरु' शब्द की विवेचना करना युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

'गुरु' शब्द का शब्दकोशीय अर्थ भारी वजनदार होता है। किन्तु शब्द की आत्मा तक पहुँचने के लिए शब्दार्थ यथेष्ट नहीं है। हमें भावार्थ समझने के लिए 'लघु' शब्द पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। तात्पर्य यह है कि जहाँ 'लघुता' का समावेश नहीं है, वहाँ गुरुता है। जहाँ गुरुता है, वही 'गुरु' कहलाने की पात्रता रखता है। गुरुता का भावार्थ है-विचलन न होना-जिसे सामान्य प्रलोभन अथवा सुखभोग की कामनाएँ नहीं व्यापती तथा जो सामान्य व्यक्तियों की तरह सुखद-सुन्दर वस्तु की ओर आकृष्ट नहीं होता है, वही 'गुरु' है।

'मानस' में संत तुलसीदास ने स्पष्ट कहा है- 'गुरु बिन ज्ञान विवेक न होई।' जायसी ने भी पद्मावत में कहा- 'गुरु सुआ जेहि पंथ दिखावा।' अस्तु, ज्ञानार्थी अर्थात् विद्यार्थी के लिए 'गुरु' की मौजूदगी अपरिहार्य है। लेकिन 'गुरु की पात्रता' महत्त्वपूर्ण है। समस्त गीता ज्ञान जगतगुरु कृष्ण के 'ज्ञान स्वरूप' पर टिका है। जहाँ विचलन नहीं दृढ़ता है। आसक्ति नहीं निरासक्ति है। जहाँ निष्कामता के स्वर गूँजते हैं तथा राग-द्वेष, निन्दा-स्तुति आदि से विमुक्ति है और यह ज्ञान सर्वहितकारी है। क्षुद्रता लेश मात्र नहीं विराटता है। संकीर्णता से पीछा छुड़ाकर व्यापकता का वरण है। जगत गुरु कृष्ण

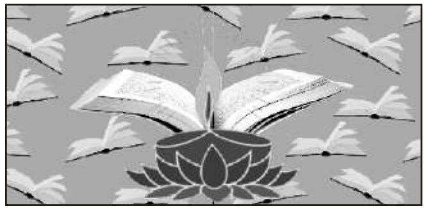

ज्ञान के सार को जो गाय के तुल्य है, दुह कर अर्जुन रूपी शिष्य बछड़े को पिला रहे हैं तथा यही दुग्ध स्वरूपी ज्ञान समस्त विद्वान पीने के लिए तत्पर है। यहाँ सद्गुरु के विषय में महात्मा कबीर की यह उक्ति चरितार्थ होती है-

सद्गुरु ऐसा चाहिए, जैसे लोटा डोर।
गला फँसावे आपना, लाए नीर झकोर।।

गुरु की महत्ता ज्ञान स्वरूपी निर्मल नीर को शिष्य के हितार्थ उपलब्ध कराने में है। अन्यथा यही घटित होगा-

जाका गुरु है अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधे-अंधा ढेलिया, दोनूं कूप पड़ंत।।

निःसंदेह गुरु के स्वरूप का दर्शन उसे प्राप्त समृद्ध ज्ञान में है। गुरु में विद्यमान ज्ञान के स्वरूप की उपासना ही सत्य है। स्वयं में ज्ञान की कमी की अनुभूति कर, ज्ञान की परिपूर्णता हेतु संशय रहित होकर अभिमान का परित्याग कर गुरु के समक्ष प्रस्तुत होता है तो वही 'गुरु-शरणं गच्छामि' कहलाता है और तब सद्गुरु लघुता से विमुक्ति का गुरुता का वरण करना सिखाता है।

ज्ञान-स्वरूप गुरु सर्वथा हितकारी अविनाशी है। इसका अर्थ यह हुआ कि हमें न तो गुरु के नाम पद से बँधना है और न ही उसके व्यक्तित्व की ओर आकृष्ट होना है अपितु उनके ज्ञान-स्वरूप गुरुत्व का दर्शन करना है तथा सद्गुणों को सतत् व अनवरत ग्रहण करना है। देखिए-

आनन्द आनन्दकरं प्रसन्नं,
निज बोधरूपं ज्ञान स्वरूपं।
योगीन्द्रं रूपं भव रोग वैद्ये,
श्रीमदगुरुं अहम नित्ये नमामि।।

'ज्ञान स्वरूपी गुरु जिसे अपने रूप का बोध है, जो प्रसन्न चित्त एवं आनन्दित है तथा आनन्द की सृष्टि करने में सक्षम है तथा जिसका योगी रूप भव रोगों से छुटकारा दिलाने हेतु समर्थ वैद्य है ऐसे महत गुरु को मैं नित्य नमन करता हूँ।

ज्ञान स्वरूप गुरु भेदभाव, पक्षपात, राग-द्वेष आदि से रहित 'पारसवत' होता है। महात्मा सूरदास ने लिखा है-

इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परौ।
पारस गुन-अवगुन वहीं चितवै कंचन करत खरौ।।

गुरु ज्ञान के सम्पर्क में आने पर शिष्यों को कंचन स्वरूपी सद्गुणी होना सुनिश्चित है। गुरु का ज्ञान, व्यापार की रेखा को लाँघकर सर्वकल्याणकारी हो, तभी महत्त्वपूर्ण है। गुरु का ज्ञान व्यक्ति को देखकर ठिठकता नहीं अपितु अज्ञान को दूर करने के प्रति उत्सुक रहता है। यही गुरु के ज्ञान की सार्थकता है।

आकाश में उदित तेजोमय सूर्य अपनी ज्ञान-किरणों को यत्र-तत्र-सर्वत्र व्याप्त करता है। उसकी पहुँच राजपथ पर तो है ही संकड़ी पगडंडियों तक भी है। उसे तो अज्ञानांधकार दूर करने से प्रयोजन है। उसकी कहीं कोई महत्त्वाकांक्षा भी नहीं है। उसे राजनीति के पचड़े में पड़कर दखल देने की जरूरत नहीं है। गुरु द्रोणाचार्य ज्ञान-सम्पन्न थे। किन्तु एकलव्य के साथ कपट पूर्ण व्यवहार ने उन्हें गुरु-गरिमा से पृथक् कर दिया। निष्कर्षतः यदि हम शिक्षकीय पद को प्रतिष्ठित कर रहे हैं तो हमें अपनी लघुता का अहसास करते हुए गुरुता की संप्राप्ति का प्रयास करना होगा ताकि अधिकाधिक ज्ञान-संपन्न बनकर हम उस ज्ञान को जनहित में प्रयुक्त कर सकें। हमारी ज्ञान स्वरूपी भूमिका ही वरेण्य हैं जिसकी जन-जन को प्रतीक्षा है।

हमारा सौभाग्य है कि हम सद्गुरुओं के देश के वासी हैं उनका जीवन-चरित्र, साधना तथा जन कल्याणकारी ज्ञान के क्षेत्र में हम गुरुजनों की ओर उत्सुक दृष्टि से निहार रहे हैं। अस्तु, हम उनके अविनाशी ज्ञान-स्वरूप का दर्शन कर उसी शृंखला में कार्य करने के लिए तत्पर हो क्योंकि प्रत्येक युग में ज्ञान-स्वरूपी गुरु ही आदर पाता है।

पुरुषोत्तमायन, दही वाली गली,
ब्यानियान, मोहल्ला, भरतपुर-321001
मो: 9461462739

महान शिक्षाविद् : डॉ. राधाकृष्णन्

❒ कमलनारायण पारीक

शिक्षक समाज के ऐसे शिल्पकार होते हैं जो बिना किसी मोह के इस समाज को तराशते हैं। शिक्षक का काम सिर्फ किताबी ज्ञान देना ही नहीं बल्कि सामाजिक परिस्थितियों में छात्रों को परिचित कराना भी होता है। शिक्षकों की इसी महत्ता को सही स्थान दिलाने के लिए ही डॉ. एस. राधाकृष्णन् ने पुरजोर कोशिश की, जो खुद एक बेहतरीन शिक्षक थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी, विद्वान, शिक्षक, वक्ता, प्रशासक, दार्शनिक, चिन्तक, राजनयिक, देशभक्त और शिक्षा शास्त्री थे।

अपने इस महत्त्वपूर्ण योगदान के कारण ही भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का जन्म दिन 5 सितम्बर भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। डॉ. राधाकृष्णन् ने अपने जीवन के 40 वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में दिए।

डॉ. राधाकृष्णन् का परिवार काफी बड़ा था, ये अपने पिता की दूसरी सन्तान थे। परिवार की आय सीमित थी। इस सीमित आय में भी डॉ. राधाकृष्णन् ने अपनी प्रतिभा को सिद्ध किया कि प्रतिभावान का कोई भी बाधा रास्ता नहीं रोक सकती।

उन्होंने न केवल महान् शिक्षाविद् के रूप में ख्याति प्राप्त की, बल्कि देश के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति पद को भी सुशोभित किया। वे स्वतंत्र भारत के पहले उप राष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति बने। उन्हें बचपन में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, मगर उन्होंने कभी इसे बाधा नहीं बनने दिया और निरन्तर आगे बढ़ते रहे। हालांकि इनके पिता धार्मिक विचारों वाले इन्सान थे लेकिन फिर भी उन्होंने डॉ. राधाकृष्णन् को पढ़ने के लिए क्रिश्चियन मिशनरी संस्था लुर्थन मिशन स्कूल, तिरुपति में दाखिल करवाया। इसके बाद उन्होंने वेल्लूर और मद्रास के कॉलेजों से शिक्षा प्राप्त की। वे स्वयं भारतीय सामाजिक संस्कृति से ओतप्रोत थे।

जो लोग डॉ. राधाकृष्णन् के विचारों से मतभेद रखते थे। उनकी बात भी वे बड़े सम्मान एवं धैर्य के साथ सुनते थे। विश्व में उन्हें परम विद्वान के रूप में जाना जाता था।

सन् 1967 के गणतंत्र दिवस पर

डॉ. राधाकृष्णन् ने देश को सम्बोधित करते हुए कहा था कि वह अब आगे राष्ट्रपति नहीं बनना चाहेंगे। हालांकि राजनेताओं ने उनसे काफी आग्रह किया कि वे अगले सत्र के लिए भी राष्ट्रपति पद को ग्रहण करें लेकिन डॉ. राधाकृष्णन् ने अपनी की गई घोषणा पर अमल किया।

राष्ट्रपति के रूप में अपने कार्यकाल को पूर्ण करने के बाद वे अपने गृह राज्य मद्रास चले गए। वहाँ उन्होंने पूर्ण अवकाशकालीन जीवन व्यतीत किया। सन् 1968 में उन्हें भारतीय विद्या भवन के द्वारा सर्वश्रेष्ठ सम्मान देते हुए साहित्य अकादमी की सदस्यता प्रदान की गई। डॉ. राधाकृष्णन् ने साधारण इन्सान की तरह अपना जीवन गुजारा था। यह परम्परागत वेशभूषा में रहते थे। सफेद वस्त्र धारण करते थे। वह सिर पर दक्षिण भारतीय पगड़ी धारण करते थे। डॉ. राधाकृष्णन् साधारण शाकाहरी भोजन करते थे। उन्होंने एक लेखक के रूप में 150 से अधिक रचनाएँ लिखी, उनकी अधिकतर रचनाएँ अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में हैं।

डॉ. राधाकृष्णन् अपनी बुद्धि से पूर्ण व्याख्याओं, आनंददायक अभिव्यक्ति और हल्की गुदगुदाने वाली कहानियों से बच्चों को मंत्रमुग्ध कर देते थे। उच्च नैतिक गुणों को अपने आचरण में उतारने की प्रेरणा अपने छात्रों को देते थे। दर्शन जैसे गम्भीर विषय को भी वह अपनी शैली से सरल, रोचक और प्रिय बना देते थे।

जब वह अपने आवास पर शैक्षिक गतिविधियों का संचालन करते थे तो घर पर आने वाले विद्यार्थियों का स्वागत हाथ मिलाकर करते थे। वह उन्हें पढ़ाई के दौरान स्वयं ही चाय देते थे और साथी की भाँति उन्हें द्वार तक छोड़ने भी जाते थे। डॉ. राधाकृष्णन् में प्रोफेसर होने का रंचमात्र भी अहंकार नहीं था। उनका मानना था कि जब गुरु और शिष्य के मध्य संकोच की दूरी न हो तो अध्यापन का कार्य अधिक श्रेष्ठ हो जाता है।

उनका कहना था कि यदि शिक्षा सही प्रकार मैं दी जाए तो समाज में अनेक बुराइयों को मिटाया जा सकता है। शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूँसे बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करें। शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। शिक्षा का परिणाम एक मुक्त रचनात्मक व्यक्ति होना चाहिए जो ऐतिहासिक, परिस्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं के विरुद्ध लड़ सके।

डॉ. राधाकृष्णन् वज्र के समान कठोर हृदय वाले लौह पुरुष के लौह कपाटों के आचरण को भेदकर उनके हृदय के सुषुप्त कोमल तार को झंकृत कर देने वाले पैगम्बरी व्यक्तित्व युक्त निर्भीक और दिव्य पुरुष के समान थे।

डॉ. राधाकृष्णन् एक मेधावी छात्र, महान् शिक्षाविद् व दर्शनशास्त्री, राष्ट्र की महान विभूति, उत्कृष्ट कोटि के वक्ता थे।

सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी, परम सत्ता के उपासक इस विश्व के महान दार्शनिक को भारत सरकार ने इनके गुणों के कारण सन् 1954 में 'भारत रत्न' की उपाधि देकर विभूषित किया।

अपने चिन्तन का कर्म से अनुवाद करने वाले इस महान् दार्शनिक ने अपने गरिमायुक्त व्यक्तित्व से देश व समाज को सुदीर्घ काल तक आलोकित करते हुए 89 वर्ष की आयु में दिनांक 17 अप्रैल 1975 को अपने पार्थिव जीवन का विसर्जन किया। उनका गरिमा युक्त उदात्त जीवन सदैव हमारा पथ आलोकित करता रहेगा और प्रेरणा देता रहेगा।

अध्यापक (सेवानिवृत्त)
1/131, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
हनुमानगढ़-335512
मो: 9414474636

डॉ. राधाकृष्णन् का शैक्षिक चिंतन

❐ तरुण कुमार दाधीच

राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् मानसिक स्वतंत्रता प्राप्त करना हमारे लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य था। यह कार्य नवीन शिक्षा प्रणाली के द्वारा ही संभव हो सकता था। देश के सभी मनीषी, विचारक और चिंतक शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता स्वीकार करते रहे हैं। इस उद्देश्य के पुण्यार्थ सुझाव, प्रस्ताव देने के लिए आयोग गठित किए गए लेकिन ब्रिटिश शासन काल में मैकाले द्वारा निश्चित की गई शिक्षा प्रणाली अभी तक कहाँ हट पाई है? इस दृष्टि से वर्तमान परिवेश में शिक्षा के प्रति डॉ. राधाकृष्णन् का शैक्षिक चिंतन उल्लेखनीय एवं प्रासंगिक है। डॉ. राधाकृष्णन् का मानना था कि शिक्षा के अभाव में शारीरिक प्रौढ़ता एवं बौद्धिक तत्परता घातक सिद्ध हो सकती है। वे स्वीकार करते थे कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शिक्षा ही सर्वोपरि नहीं है। दया और करुणा की भावना के बिना कोरा पांडित्य हमें पैशाचिक प्रवृत्ति वाला बना सकता है। वे ऐसे शिक्षण संस्थाओं के पक्षधर थे जहाँ छात्र का सर्वांगीण विकास हो सके। इस तथ्य के पक्ष में उनका मत था कि आध्यात्मिक शिक्षा के बिना शिक्षा अपूर्ण ही है। उनका मानना था कि शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जिसमें भारतीय संस्कृति के तत्वों का समावेश हो और हमारी शिक्षा उच्चतर मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित कर पाने में समर्थ हो।

डॉ. राधाकृष्णन् उच्च कोटि के लेखक थे। उन्होंने भारतीय दर्शन के इतिहास को दो खंडों में लिखा। इसके अलावा उन्होंने रवींद्र नाथ ठाकुर का दर्शन, स्वतंत्रता और संस्कृति, पूर्व और पश्चिम जीवन का हिंदू दृष्टिकोण, जीवन की आदर्शवादी दृष्टि, धर्म और समाज संबंधी अनेक ग्रंथों की रचना की।

राधाकृष्णन् ने दर्शन को इसकी सीमाओं से बाहर ला कर उसे व्यापक जीवन संदर्भ में देखा। उनकी कृतियों में विवेकानंद और रवींद्र नाथ ठाकुर जैसी प्रतिभाओं का भी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है जिनमें वे भारतीय मानवतावादी दृष्टि का आधुनिक रूप देखते हैं। वे एक महान् दार्शनिक थे और उनकी प्रमुख चिंता मनुष्य है, जिसे जीवन संघर्ष में गुजरते हुए मानवता के उच्च धरातल पर जाना चाहिए क्योंकि सार्वभौमिक दृष्टि और जीवन को महान् उद्देश्य से संबद्ध कर सकने की क्षमता ही सच्ची मनुष्यता है।

पूर्व राष्ट्रपति ने स्वीकार किया कि बौद्धिक दासता राजनीतिक दासता से कहीं अधिक भयावह है। उनका आग्रह था कि शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जो मानव का सर्वांगीण विकास कर सके और शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो हमारी भाषा और जीवन के साथ हमारे हृदय में उठने वाले भावों में उचित समन्वय स्थापित कर सके।

वर्तमान शिक्षा के स्वरूप और प्रभाव के प्रति उन्होंने क्षुब्ध होकर लिखा है कि आज विश्व में स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहित नहीं किया गया है। हम तो भौतिकता की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। सत्य यह है कि मनुष्य के मन और विश्व की चेतन आत्मा में घनिष्ठ संबंध है। इस नियंत्रण का अभ्यास करके और दया, करुणा का प्रयोग करके हम इसका अनुभव कर सकते हैं। वर्तमान समस्या के निराकरण के लिए उन्होंने स्पष्ट किया कि हमारे विश्वविद्यालयों में अपनी संस्कृति के प्रति जो अवधारणा दिखाई जा रही है वह छात्रों में बढ़ती हुई उच्छृंखलता के लिए कम उत्तरदायी नहीं है। इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षण संस्थाओं का वातावरण सुधारने के लिए प्रभावी पाठयक्रम लागू किए जाए।

पाठ्यक्रम का स्वरूप क्या हो? इस विषय पर उनका मत था कि अन्य विषयों के साथ छात्रों को धर्मशास्त्र, दर्शन शास्त्र, नीति शास्त्र के साथ गृह शास्त्र का अध्ययन अनिवार्य रूप से कराया जाए। अध्ययन में इन विषयों का अभाव भी नैतिक पतन के लिए उत्तरदायी है।

डॉ. राधाकृष्णन् ने स्वीकार किया कि प्रत्येक संतोषजनक शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य व्यक्ति का संतुलित विकास होना चाहिए। वर्तमान परिवेश में डॉ. राधाकृष्णन् ने आध्यात्मिक शिक्षा पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि धर्म, उत्सव, संस्कार आदि तो भीतर छिपी दैवीय शक्ति को खोजने के साधन हैं, साध्य तो आध्यात्मिक जीवन है। इन आदर्शों के अभाव में प्रगति की कल्पना नहीं की जा सकती। यदि हम हमारी शिक्षा को आध्यात्मिक दिशा नहीं दें तो ये अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकती।

वे चाहते थे कि शिक्षा जीवन मूल्यों से जुड़े। इसके लिए उन्होंने कहा कि शिक्षा जीवन का एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है पर अपने आप में वह साध्य नहीं है। अतः शिक्षा का स्वतंत्र मूल्य नहीं है। वह जीवन मूल्यों के साथ जुड़कर ही मूल्यवान बनती है। शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि संस्कारवान व्यक्तित्व का निर्माण हो। इसके लिए परम आवश्यक है कि शिक्षा जीवन मूल्यों के साथ जुड़े एवं जीवन मूल्यों की स्थापना के बाद जीवन मूल्यों का संप्रेषण हो और इन जीवन मूल्यों की संरक्षा की जाए। यदि हम शिक्षा के इस स्वरूप की क्रियान्विति कर पाने में सफल होते हैं तो हमें मानना चाहिए कि हमने शिक्षा के सही स्वरूप को अंगीकार किया है।

डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार जब व्यक्ति उच्च मानवीय मूल्यों के धरातल पर पहुँचने लगता है तो समाज में व्याप्त अनेक निम्न स्तर और घटिया प्रवृत्तियों पर स्वतः अंकुश लगना संभव हो सकता है। देश के उत्थान के लिए मानवीय मूल्यों की स्थापना वर्तमान शिक्षा की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है।

वर्तमान शिक्षा के प्रति डॉ. राधाकृष्णन् का शैक्षिक चिंतन आज के हलचल भरे युग में सर्वाधिक प्रासंगिक है। अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर अपने कर्त्तव्य का निर्वहन कर देश के सर्वोच्च पद पर पहुँच कर भी असाधारण व्यक्तित्व वाले राधाकृष्णन् जीवन में सदैव साधारण रहे। वे विलक्षण एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और उन्होंने शिक्षक के गौरव और अस्मिता को नवीन आयाम प्रदान किए। उनका विद्यानुराग, असाधारण व्यक्तित्व एवं शैक्षिक दृष्टिकोण हमारे लिए ज्योतिपुंज है जिसका प्रकाश समस्त देशवासियों का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

पूर्व प्रधानाचार्य
36, सर्वरितु विलास, मेन रोड, उदयपुर
मो. 9414177572

महान दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन्

❒ भंवर सिंह

आन्ध्र प्रदेश के छोटे से नगर तिरूतनि में 5 सितम्बर, 1888 को मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे डॉ. राधाकृष्णन अपने माता-पिता की दूसरी सन्तान थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा मिशनरी संस्थाओं में हुई। जन्म से लेकर सन् 1900 तक वे तिरूतनि स्थानों में रहे। उन्ही स्थानों के वातावरण ने उनके अंदर धार्मिक संस्कारों को पोषित किया। आस्था और विज्ञान ने उन्हें विषम परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होने दिया। साथ ही उनके स्वभाव को विनम्र, शालीन व सहिष्णु बनाया। मधुरभाषी डॉ. राधाकृष्णन अत्यन्त कुशाग्र, बुद्धिमान एवं अध्ययनशील थे। दस वर्ष की अवस्था में ही उनका परिचय विवेकानन्द के विचारों से हुआ।

भारतीय धर्म के संबंध में उनका मत था कि भारतीय धर्म गहन और व्यापक है। जिसका उद्देश्य सत्य और मानव कल्याण का है। इनकी शिक्षा ईसाई मिशन संस्थाओं में हुई थी इस अवधि में वे धर्म के प्रमुख सिद्धान्तों से परिचित हो गए थे। बीस वर्ष की अवस्था से ही उन्होंने लेखन कार्य आरंभ कर दिया था और 1909 में मद्रास प्रेसिडेन्सी कॉलेज में व्याख्याता के रूप में उनकी नियुक्ति हुई थी।

सन् 1918 में मैसूर विश्वविद्यालय में दर्शन के आचार्य के पद व सन् 1921 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त हुए। सन् 1927 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में उन्हें प्रोफेसर का पद संभालने का भी आमंत्रण मिला था।

शिक्षण के क्षेत्र में प्रतिष्ठित पद संभालते हुए उन्होंने कुलपति व भारत के प्रमुख राजदूत के रूप में विभिन्न देशों में कार्य किया। इसके बाद भारत के उपराष्ट्रपति के पद पर सन् 1950 से 1962 तक रहे तथा सन् 1962 में भारत के राष्ट्रपति पद पर कार्यरत हुए। उनकी विशेषता रही कि महत्त्वपूर्ण पदों पर होते हुए भी उनके शिक्षण व लेखन कार्य लगातार जारी रहे।

सन् 1948 में उन्हें विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का अध्यक्ष बनाया गया। इस आयोग की रिपोर्ट में डॉ. राधाकृष्णन् ने कहा था 'भारतीय परम्परा के अनुसार शिक्षा

जीवकोपार्जन का केवल एक साधन मात्र नहीं है, न ही यह सिर्फ विचारों की संग्रह स्थली या नागरिकता की पाठशाला है। यह तो आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश की शिक्षा व सत्य की खोज व सदगुण पालन में मानव आत्मा का प्रशिक्षण है। जिसमें प्रतिभा, व्यापक अध्ययन, निष्पक्ष चिन्तन मनन हो, जिसमें उदार प्रवृत्ति और नैतिकता की धारणा हो। वे मानते है कि आध्यात्मिक दर्शन अथवा जीवन दर्शन के लिए तर्कशास्त्र, ज्ञान और विश्व निर्माण सम्बन्धी सिद्धान्तों की सूक्ष्म व्याख्या करना अनिवार्य नहीं है, अनिवार्य है उन मूल्यों का शोध, जो जीवन का उचित निर्देशन कर सके।

जीवन मूल्यों को समझने की जिज्ञासा ने ही डॉ. राधाकृष्णन् को तुलनात्मक दर्शन की ओर मोड़ा जिसके माध्यम से वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जीवन दर्शन का धर्म उन विभिन्न दृष्टिकोणों एवं मूल्यों को एकता के सूत्र में बांधता है जो मानवीय तथा जीवनोपयोगी हो।

डॉ. राधाकृष्णन् की सबसे महान् देन यह है कि आधुनिक युग के अनुरूप उन्होंने वैज्ञानिक विधि से भारतीय दर्शन की अभिनव व्याख्या की है। मंगलमय अग्निशलाका से भू-जीवन को ज्योतिर्मय करने के आकांक्षी इस चिन्तक की दृष्टि से ऋषि मुनियों के अनुभव उनके सत्य साक्षात्कार का बोध, अपने आप में महान है पर उनकी महानता को विश्वव्यापी कल्याणप्रद तथा समयानुकूल व्यावहारिक रूप देना दार्शनिक का कर्त्तव्य है। उनकी चिन्तन दृष्टि उस विश्व दर्शन की कल्पना करती है जो सता प्रेम, तानाशाही, पक्षपात, स्वार्थ, निष्क्रियता, रूढ़िवादिता से मनुष्य को विमुख कर उस बुद्धि को जन्म देगी जो उस चेतना का प्रस्फुटन करेगी जो सार्वभौम मनुष्यता के भाव से पूर्ण होगी।

वे आदर्शवाद से मानव स्वभाव में परिवर्तन चाहते थे। उनके मत में मनुष्य ने की और बढ़ी, स्वार्थपरता तथा स्वार्थहीनता, मानवता और बर्बरता, सौन्दर्य और कुरूपता के बीच किसी एक को चुनना होता है। आध्यात्मिक कल्याण वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर मानव व्यक्तित्व के विकास से संभव है। वे भाईचारे द्वारा आत्म नियन्त्रण को विकसित करने पर विश्वास करते थे और कहते थे आदमी की अपने बारे में समझ उसे एक अनुशासित जीवन और सबके साथ प्रेम की भावना का विकास करती है। अनेक उपाधियों से सम्मानित सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री व दार्शनिक राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने 1965 में अपने एक भाषण में कहा था। हम राजनीतिक रूप से स्वतन्त्र हो सकते हैं किन्तु यदि लोग भूखे मरते हैं, उनके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं है, शिक्षा नहीं है तो इस स्वतन्त्रता का कोई विशेष मूल्य नहीं है। वे मनुष्य विकास की उन परिस्थितियों के पक्षधर थे, जो रचनात्मकता और सहकार से युक्त हो जिनमें मानसिक क्षमताएँ निखर उठे।

निश्चय ही हमें आज पुनः डॉ. राधाकृष्णन् जैसे विद्धान चिन्तक की विचारधारा को ग्रहण करना होगा। यह विचारधारा, जिसमें मनुष्य का श्रेष्ठत्व उसके जीवन का नया अर्थ, नई अन्तर्वस्तु समाहित है। क्योंकि उनका जीवन सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगा। उनके कार्य हमेशा जीवन में एक नई ऊर्जा पैदा करेंगे। इनके जीवन की शुरुआत एक शिक्षक से लेकर भारत के राष्ट्रपति पद पर पहुँचना तथा गरिमापूर्ण पद का निर्वहन करना तथा उच्च कोटि के कार्य करने की छाप छोड़ना सदैव प्रेरणादायी रहेगा।

शारीरिक शिक्षक, (नेशनल अवार्डी टीचर)
रा.मा.वि., सांवलोदा लाडखानी, सीकर
मो. 9414901203

विनोबा भावे का दर्शन

❒ ओम प्रकाश सारस्वत

आचार्य विनोबा भावे का स्मरण करते ही एक दिव्य विभूति की अनुभूति मन मस्तिष्क में हो उठती है जो सरलता, सादगी, सदाचार सहानुभूति, सहकार एवं समन्वय जैसे अद्‌भुत गुणों से परिपूर्ण है। भारत की स्वतंत्रता के लिए चले संग्राम मे जिन महापुरुषों का नाम अग्रणीय पंक्ति में लिया जाता है, जो वैराग्यवत् त्याग के साक्षात् स्वरूप हैं, उनमें महात्मा गाँधी के बाद यदि कोई दूसरा नाम लिया जाता है तो वह नाम विनोबा जी का ही है। वे स्वतंत्रता सेनानी, समाज सेवक, चिन्तक, पत्रकार , उपदेशक और वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश देने वाले महात्मा (महा+आत्मा) हैं। उनके चरित्र में आदर्श शिक्षक के दर्शन सहज ही में होते हैं। महात्मा गाँधी के सान्निध्य में कार्य करते हुए, विशेषकर वर्धा आश्रम में, उनके द्वारा अनुकरणीय व अनुपम शिक्षकीय कार्य किए गए जिनके कारण उन्हें राष्ट्रीय शिक्षक के रूप में समादरित किया गया। जैसे महात्मा गाँधी राष्ट्रपिता वैसे ही आचार्य विनोबा भावे राष्ट्रीय शिक्षक (National Teacher) 'जय जगत' का नारा देकर सारा संसार एक है, का संदेश देने वाले महापुरुष आचार्य विनोबा भावे ही थे।

आचार्य विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर, 1895 को महाराष्ट्र के गागोदा पेण नामक ग्राम में माँ रुकमणि एवं पिता नरहरि भावे के घर में हुआ। माता-पिता की आध्यात्मिक रुचि एवं कर्त्तव्यपरायणता का प्रभाव उनके कोमल मन पर बाल्यकाल से ही पड़ा। उनका मूल नाम विनायक नरहरि भावे था। महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आने पर उन्हें विनोबा भावे नाम मिला। बचपन से ही वे त्याग-विरक्त स्वभाव के थे। समर्थ गुरु रामदास, संत तुकाराम आदि के दृष्टान्त माँ से सुनकर वे वैराग्य के प्रति आकृष्ट हुए और अन्ततः घर बार छोड़कर साधु बन गए। बनारस में रहते उनके मन में हिमालय पर जाकर तप तपस्या करने के विचार उमड़ रहे थे। यह 1915 के आस पास की बात है तभी महात्मा गाँधी दक्षिणी अफ्रीका से भारत आए थे। सन् 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उद्‌घाटन के अवसर पर महात्मा गाँधी ने सेठ

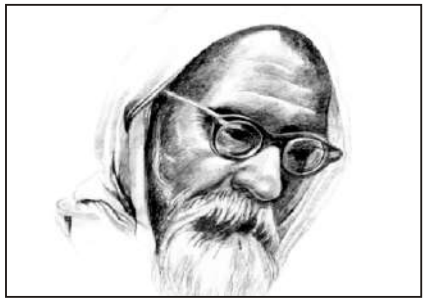

-साहुकारों, जमीदारों, राजा-महाराजाओं और रईस-शहजादों के तन पर लदे महंगे वस्त्रों एवं आभूषणों के लिए उन्हें फटकारते हुए गरीबों के लिए त्याग करने की अपील करता हुआ भाषण दिया। भारत में उनका यह पहला भाषण था। यह भाषण अगले दिन समाचार पत्रों में प्रमुखता से छपा। विनोबा भावे ने समाचार पत्रों में इन उदात निर्भीक विचारों को पढ़ा और महात्मा गाँधी की सेवा में जाने का विचार बनाया।

महात्मा गाँधी और विनोबा भावे की प्रथम मुलाकात 7 जून 1916 के दिन अहमदाबाद आश्रम में हुई। दोनों एक दूसरे से प्रभावित हुए। महात्मा जी ऐसे समर्पित साथी की खोज में थे। उन्होंने विनोबा के बारे में लिखा, ''इस आश्रम में लोग कुछ न कुछ लेने के लिए ही आते हैं, एक यही (विनोबा) हैं जो हमें कुछ देने के लिए आया है।'' यही स्थिति विनोबा जी की थी। उस तीस वर्ष के युवा मन में मची उथल-पुथल समाप्त हो गई थी। गाँधी से भेंट के पश्चात विनोबा ने लिखा, ''जिन दिनों मैं काशी में था, मेरी पहली अभिलाषा हिमालय की कंदराओं में जाकर तप-साधना करने की थी। दूसरी अभिलाषा थी, बंगाल के क्रान्तिकारियों से भेंट करने की। मगर इनमें से एक भी अभिलाषा पूरी न हो सकी। समय मुझे गाँधी जी तक ले आया। वहाँ जाकर मैंने पाया कि उनके व्यक्तित्व में हिमालय जैसी शान्ति है तो बंगाल की क्रांति की धधक भी । मैंने छूटते ही स्वयं से कहा था कि मेरी दोनों इच्छाएँ पूरी हुईं।''

देश में गाँधी जी का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा था। सन् 1920 (पहली अगस्त) में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के मसीहा बाल गंगाधर चल बसे। अब इस संग्राम की बागडोर गाँधी जी के हाथ में आ गई। गतिविधियाँ बढ़ने लगी। अहमदाबाद का आश्रम छोटा पड़ने लगा तो वर्धा में एक और आश्रम बना दिया। इस आश्रम का काम देखने के लिए 1923 में विनोबा भावे को वर्धा भेजा गया। यहाँ से उन्होंने 'महाराष्ट्र धर्म' नाम से एक मासिक पत्रिका का संपादन भी किया द्वितीय विश्व युद्ध के समय महात्मा गाँधी के व्यक्तिगत सत्याग्रह कार्यक्रम में प्रथम सत्याग्रही विनोबा जी बने। उस समय उन्होंने बहुत भावुक विचार जगत के सामने प्रकट किए थे। उनके वक्तव्य में कहा गया था, चौबीस वर्ष पहले ईश्वर के दर्शन की कामना लेकर मैंने अपना घर छोड़ा था। आज तक की मेरी ज़िन्दगी जनता की सेवा में समर्पित रही है। इस दृढ़ विश्वास के साथ कि इनकी सेवा भगवान के पाने का सर्वोत्तम तरीका है। मैं मानता हूँ और मेरा यह अनुभव रहा है कि मैंने गरीबों की जो सेवा की है, वह मेरी अपनी सेवा है, गरीबों की नहीं। ये विनम्र विचार उनकी महानता को स्पष्ट करते हैं। सेवा करने वाला न नाम चाहता है और न बदले में कोई प्रत्युपकार ही वो तो सेवक होता है, बस सेवक।

विनोबा भावे अहिंसा, समता व समाजवाद के पुजारी थे। वे वैश्विक समस्याओं का समाधान इनमें देखते थे। वे शान्ति चाहते थे। युद्ध की विभीषिका से बचने में उनका विश्वास था। द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटेन द्वारा भारत को जबरदस्ती घसीटने को लेकर गाँधी व विनोबा दोनों व्यथित थे। इसी के विरुद्ध व्यक्तिगत सत्याग्रह 17 अक्टूबर, 1940 से शुरू किया गया था। अहिंसा की ताकत बताते हुए तब विनोबा के द्वारा कही गई बातें अद्‌भुत हैं। उन्होंने कहा था, मैं अहिंसा में पूरी तरह से विश्वास करता हूँ और मेरा विचार है कि इसी से मानव जाति की समस्याओं का समाधान हो सकता है। रचनात्मक गतिविधियाँ यथा खादी, हरिजन सेवा, साम्प्रदायिक एकता आदि अहिंसा की सिर्फ बाह्य अभिव्यक्तियाँ हैं। युद्ध मानवीय नहीं होता। वह लड़ने वालों तथा न लड़ने वालों में फर्क नहीं करता। आज का मशीनों से लड़ा जाने वाला युद्ध अमानवीयता की पराकाष्ठा है। वह

मनुष्य को पशुता के स्तर पर धकेल देता है। भारत स्वराज्य की आराधना करता है। जिसका आशय है-सबका शासन । यह सिर्फ अहिंसा से ही हासिल हो सकता है। कितने सुन्दर विचार हैं आचार्य विनोबा भावे के। ऐसे उत्तम विचार जब वास्तविक धरातल पर उतरते हैं तब शान्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।

अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 में प्रारम्भ हुआ। महात्मा गाँधी ने इतने महत्त्वपूर्ण आन्दोलन की रूपरेखा विनोबा के साथ विचार विमर्श करके तैयार की तथा उन्हीं के परामर्शानुसार यह निर्णायक आन्दोलन चलाया था जो वास्तविक स्वतन्त्रता (15 अगस्त 1947) की मजबूत आधारशिला प्रमाणित हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मची उथल-पुथल और मारकाट ने महात्मा गाँधी को व्यथित कर दिया। हिन्दू-मुस्लिम दंगों से सर्वत्र भय भरा वातावरण बन गया। महात्मा गाँधी 168वें दिन (30 जनवरी 1948) चिर निद्रा में सो गए। तब महात्मा गाँधी के उत्तराधिकारी के रूप में आचार्य विनोबा भावे को ही मान्यता प्राप्त हुई थी।

भारत और पाकिस्तान नाम के दो राष्ट्रों का उदय हो चुका था। दोनों की समान-साझी समस्याएँ थी। गरीबी चरम पर थी। आत्म निर्भरता के नाम पर कुछ नहीं था। अंगेजों ने ऐसी ही बुनियाद लगाई थी। ऐसे में दोनों राष्ट्रों को मिलकर अपने अस्तित्व व उपस्थिति को सिद्ध करना था मगर दुर्भाग्य से दोनों आपस में लड़ रहे थे जिसका हर्जाना बेचारी जनता चुका रही थी। ऐसी विषमताओं के शिकार हुए गाँधी। भारत कृषि प्रधान देश रहा है। तत्कालीन विषमताओं के चलते देश की 90 प्रतिशत कृषि भूमि 10 प्रतिशत धनाढ्य लोगों के पास। जो जोतता है उसके पास जमीन नहीं और जिन गिने चुने जमीदार, सेठ-साहुकारों के पास जमीन थी, वे भूमिहीन गरीब भूमिपुत्र किसानों के रक्त पिपासु बने हुए थे। विनोबा का मन बहुत दुःखी हो गया।

वे चाहते थे कि वास्तविक जोतदार को जोत का सौभाग्य मिले। भूमिहीनों को भूमि मिले। वे ठहरे महात्मा। शासन सत्ता से दूर। इसके ऊपर अहिंसा के उपासक। महात्मा गाँधी की हत्या से वे टूट गए। मगर पीड़ित मानवता की सेवा तो उन्हें करनी ही थी। मौन और एकान्त को वे आत्मा का सर्वोत्तम मित्र मानते थे। लम्बे और अथक चिन्तन के बाद उन्हे राह मिल गई। उन्होंने भू-दान आन्दोलन चलाया। निरन्तर पद यात्राएँ करके भूस्वामियों को समझाया। उनसे अनुनय विनय किया। सन् 1951 में शुरू हुए आन्दोलन के माध्यम से 1969 तक लगभग 40 लाख एकड़ भूमि दान में प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। उन्हें नंगे पैर पैदल चलते देखकर लोग सहज ही में उनके साथ हो जाते और घर-घर तक यह संदेश पहुँचाने में उनकी मदद करते। यह कार्य इतने बड़े स्तर पर हुआ कि सरकार को इसके नियमन व नियन्त्रण के लिए पृथक् भूदान एक्ट बनाना पड़ा। महात्मा गाँधी ने ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त दिया था। ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त कहता है कि जो संसाधन आपके पास है, आप उनके मालिक न होकर न्यासी हैं और अपनी आवश्यकता पूर्ण करने के पश्चात् बचे हुए संसाधनों को जरूरतमंदों में बाँट दो। भूदान आन्दोलन के माध्यम से विनोबा ने यह सिद्ध कर दिखाया।

आचार्य विनोबा भावे का जीवन त्याग और परोपकार का जीवन्त अध्याय है। वे बहुत सरल और निरभिमानी थे। वे प्रेम और सहयोग के उद्घोषक थे। उन्होंने कहा है, ''द्वेष को द्वेष से नहीं मिटाया जा सकता। प्रेम की शक्ति ही उसे मिटा सकती है। जिस त्याग से अभिमान उत्पन्न होता है, वह त्याग नहीं। त्याग से शांति मिलनी चाहिए। अतः अभिमान का त्याग ही सच्चा त्याग है।'' सामाजिक समरसता एवं परस्पर अवलम्बन को स्वीकार करते हुए विनोबा जी कहते हैं कि परस्पर आदान प्रदान के बिना समाज में जीवन निर्वाह सम्भव नहीं है। विनोबा आजीवन शिक्षा के हिमायती थे। वे कहते थे कि जिसने नई चीज सीखने के लिए आशा छोड़ दी, समझो वह बूढ़ा हो गया। यह शिक्षा हम शिक्षकों को आत्मसात् करते हुए निरन्तर पढ़ते-लिखते रहना चाहिए। हमारे यहाँ एक मान्यता है कि संघर्ष ही जीवन है। बिना नमक की सब्जी जैसे स्वादहीन होती है वैसे ही संघर्ष विहीन जीवन रसहीन होता है। बकौल विनोबा,''संघर्ष और उथल-पुथल के बिना जीवन बिल्कुल नीरस बनकर रह जाता है। इसलिए जीवन में आने वाली विषमताओं को सह लेना ही समझदारी है।'' जब तक कष्ट सहने की तैयारी नहीं होती तब तक लाभ दिखाई नहीं देता। लाभ की इमारत कष्ट की धूप में ही बनती है।

व्यक्ति के जीवन में जैसे सद्चरित्र आवश्यक है, वैसे ही उत्तम चरित्र के बिना राष्ट्र का भला नहीं हो सकता। जिस राष्ट्र में चरित्र शीलता नहीं है, इसमें कोई योजना काम नहीं कर सकती। ज्ञान के समान पवित्र करने वाली और कोई वस्तु नहीं है। ऐसा गीता शास्त्र में वर्णित है। (अध्याय 4/38) कर्म और ज्ञान में परस्पर सम्बन्ध को बताते हुए विनोबा जी कहते हैं, ''मनुष्य जितना ज्ञान में घुल गया हो, उतना ही कर्म के रंग में रंग जाता है। ज्ञानी वह है जो वर्तमान को ठीक से समझे और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे।''

विनोबा शुद्ध विचारों की महिमा बताते हुए कहते हैं कि महान कार्य महान विचारों के परिणाम होते हैं। कर्म की उपादेयता के बारे में उनका कहना है कि स्वतंत्र वही हो सकता है जो अपने काम अपने आप कर लेता है। भारतीय भाषाओं के सम्बन्ध में वे कहते हैं कि केवल अंगेजी सीखने में जितनी मेहनत करनी पड़ती है, उतनी मेहनत में भारत की कई भाषाएँ सीखी जा सकती हैं।

आचार्य विनोबा भावे की चिन्तनपरक अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं इनमें Thoughts of Education, गीता प्रवचन, जीवन दृष्टि, लोक नीति, विचार पोथी, स्थित प्रज्ञ दर्शन आदि प्रमुख हैं। उन्हें प्रतिष्ठित रमन मैग्सेसे अवार्ड (1958) से नवाजा गया। भारत का शिखर सम्मान ''भारत रत्न'' (1983) से मरणोपरान्त उनके योगदान को मान्यता प्रदान की गई। विनोबा भावे का जीवन सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह का सुनहरा अध्याय है। उनके कार्यो से अनेक शिक्षाएँ हमें मिलती हैं। विनोबा जी के प्रवचन एवं उपदेश राष्ट्र की अनमोल थाती हैं। यही कारण है कि उन्हें राष्ट्रीय शिक्षक के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। गुरुजन को उनकी सीखों को हृदयंगम करना चाहिए। भारत माता के इस अमर सपूत का 87 वर्ष की उम्र में दिनांक 15 नवम्बर 1982 के दिन पवनार स्थित आश्रम में स्वर्गवास हो गया।

पूर्व संयुक्त शिक्षा निदेशक
ए-विनायक लोक, बाबा रामदेव रोड
गंगाशहर बीकानेर
मो. 9414060038

गुरु महिमा

❒ डॉ. भगवान सहाय मीना

'गुरु' शब्द का अर्थ हैं-अंधकार को दूर करने वाला। गुरु अज्ञान को दूर करके मनुष्य को ज्ञान का प्रकाश देता है। वह ज्ञान जो हमें बतलाता है कि हम कौन है, संसार में किस प्रकार समायोजित हो और कैसे सच्ची सफलता प्राप्त करें, किस प्रकार अपने लक्ष्य तक पहुँचे। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है कि कैसे विश्व से ऊपर उठकर अनश्वर परमानंद तक पहुँचे। मनुष्य जीवन में गुरु का होना अनिवार्य है। गुरु के महत्त्व पर संत शिरोमणि तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' में लिखा है।

गुरु बिनु भवनिधि तरइ न कोई।
जो बिरंचि शंकर सम होई।।

अर्थात् भले ही जगत् में कोई ब्रह्मा शंकर के समान क्यों न हो, वह गुरु के बिना भव सागर पार नहीं कर सकता। आदिकाल से ही गुरु की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला गया है। वेदों उपनिषदों, पुराणों, रामायण, गीता, गुरुग्रंथ साहिब आदि सभी धर्मग्रन्थों एवं सभी महान संतों द्वारा गुरु की महिमा का गुणगान किया गया है। गुरु महिमा का बखान 'स्कन्द पुराण' में इस प्रकार किया गया है।

''जिसने ज्ञान रूपी अंजन की सलाई से अज्ञान रूपी अंधेरे से अंधी हुई आँखों को खोल दिया उन श्री गुरु को नमस्कार है।''

संत शिरोमणि तुलसीदास जी ने गुरु और ईश्वर में कोई अन्तर नहीं माना हैं। उन्होंने 'रामचरित मानस' में लिखा हैं

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिन्धु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रविकर निकट।।

अर्थात् गुरु मनुष्य रूप में नारायण ही है। मैं उनके चरण कमलों की वन्दना करता हूँ। जैसे सूर्य के निकलने से अन्धेरा नष्ट हो जाता है, वैसे ही गुरु के वचनों से मोह रूपी अन्धकार का नाश हो जाता है।

सद्गुरु एक ऐसी शक्ति है जो शिष्य की सभी प्रकार के ताप-शाप से रक्षा करती है। शरणागत शिष्य के दैहिक, दैविक, भौतिक कष्टों को दूर करने एवं उसे स्वर्ग लोक में पहुँचाने का दायित्व गुरु का ही होता है। कबीर गुरु-महिमा का बखान करते हुए लिखते हैं।

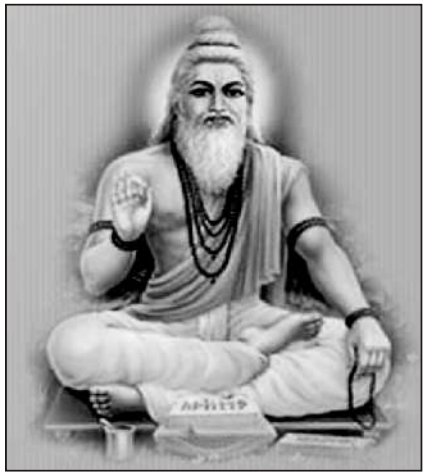

तीरथ गए तो एकफल, संत मिले फल चार।
सद्गुरु मिले तो अनन्त फल, कहे कबीर विचार।।

अर्थात् मनुष्य द्वारा तीर्थ यात्रा करने पर एक फल, संत महात्मा (सद् मनुष्य) से मिलने पर चार फल और सच्चे गुरु की प्राप्ति से अनन्त फल प्राप्त होता है। कबीर ने गुरु महिमा का चित्रण सच्चे अर्थों में किया है।

सतगुरु सम कोई नहीं, सात दीप नौ खण्ड।
तीन लोक न पाइए, अरु इकइस ब्रह्माण्ड।।

अर्थात् सात दीप, नौ खण्ड, तीन लोक और इक्कीस ब्रह्माण्डों में भी गुरु के समान मनुष्य का दूसरा सच्चा हितैषी नहीं है।

आज मनुष्य का अज्ञान यही है कि उसने भौतिक जगत को ही परम सत्य मान लिया है और उसके मूल कारण चेतन को भूला दिया है। जबकि सृष्टि की समस्त क्रियाओं का मूल चेतन शक्ति ही है। चेतन मूल तत्व को न मान कर जड़ शक्ति को ही सब कुछ मान लेना अज्ञानता है। इस अज्ञान का नाश कर परमात्मा का ज्ञान करवाने वाले गुरु ही होते है। संत रैदास ने गुरु से विमुख मनुष्य के सन्दर्भ में कहा है कि-

हरि सा हीरा छाड़ि कै, करै आन की आस।
ते नर जमपुर जांहिंगे, सत भाषै रैदास।।

अर्थात् ईश्वर समान हीरा (सद्गुरु) त्याग कर दूसरे की आशा करने वाला मनुष्य नरकगामी होता है। भगवान श्री कृष्ण ने गुरु रूप में शिष्य अर्जुन को यही संदेश दिया था।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अंह त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यिामाय शुचः।।

(गीता 18/66)

अर्थात् सभी साधनों को छोड़कर केवल नारायण स्वरूप गुरु की शरणागत हो जाना चाहिए। वे उसके सभी पापों का नाश कर देंगे। शोक नहीं करना चाहिए।

शास्त्रों में गुरु का महत्त्व बहुत ऊँचा है। गुरु की कृपा के बिना भगवान की प्राप्ति असंभव है। गुरु के मन में सदैव यह विचार होता है कि उसका शिष्य सर्वश्रेष्ठ और उसके गुणों की सर्वसमाज में पूजा हो। 'महोपनिषद' में गुरु के सन्दर्भ में रचित है-

''विषयों का त्याग दुर्लभ है,
तत्त्वदर्शन दुर्लभ है।
सद्गुरु की कृपा बिना
सहजावस्था की प्राप्ति दुर्लभ है।।''

शिक्षक का ज्ञान और छात्र की ऊर्जा का सम्मिलन एक जीवंत प्रगतिशील समाज को निर्वाण की ओर ले जाता है। स्वामी विवेकानन्द ने सद्गुरु के महत्त्व को चित्रित किया है- ''गुरु की कृपा से शिष्य बिना ग्रन्थ पढ़े ही पंडित हो जाता है। जो समाज गुरु द्वारा प्रेरित है वह अधिक वेग से उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है, इसमें कोई संदेह नहीं, किन्तु जो समाज गुरु-विहिन है, उसमें भी समय की गति के साथ गुरु का उदय तथा ज्ञान का विकास होना उतना ही निश्चित है।''

विश्व के महान वैज्ञानिक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति स्व. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी ने शिक्षक के महत्त्व को इस प्रकार रेखांकित किया था-

''मैं जीने के लिए अपने पिता का ऋणी हूँ पर अच्छे से जीने के लिए अपने गुरु का।''

संत एक नाथ ने गुरु के सन्दर्भ में कहा था कि- ''सद्गुरु से बढ़कर तीनों लोकों में कोई दूसरा नहीं हैं।''

संत ज्ञानेश्वर ने सद्गुरु के लिए कहा था ''जिन गुरु ने मुझे इस संसार सागर से पार उतारा वे मेरे अन्तःकरण में विराजमान हैं, बुद्धिमानों को गुरु-भक्ति करनी चाहिए और उसके द्वारा

कृत्तकार्य श्रेष्ठ होना चाहिए।''

काव्याचार्य भास ने कहा था कि– ''बन्धुओं तथा मित्रों पर नहीं, शिष्य का दोष केवल उसके गुरु पर आ पड़ता है, माता–पिता का अपराध भी नहीं माना जाता क्योंकि वे तो बाल्यावस्था में ही अपने बच्चों को गुरु के हाथों में समर्पित कर देते हैं।''

नाथ सम्प्रदाय के महान गुरु गोरखनाथ ने गुरु महिमा का बखान अपने शब्दों में इस प्रकार किया था– ''जो केवल कहता फिरता है वह शिष्य है, जो वेद का पाठ मात्र करता है, वह नाती है, जो आचरण करता है, वह हमारा गुरु है और हम उसी के साथी हैं।''

ऐल्बर्ट हवार्ड ने कहा है कि of all the hard jobs around one of the hardest is being a good teacher. अर्थात सभी कठिन कार्यों में एक जो सबसे कठिन है वो है एक अच्छा शिक्षक बनाना।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने गुरु के सन्दर्भ में कहा था कि– ''गुरु में हम पूर्णता की कल्पना करते हैं, अपूर्ण मनुष्यों को गुरु बनाकर हम अनेक भूलों के शिकार बन जाते हैं।''

साने गुरु जी ने गुरु के गुणों का बखान अपने शब्दों में इस प्रकार किया था– ''हमारे गुरु का न आदि है न अन्त, हमारे गुरु का न पूर्व है न पश्चिम, हमारा गुरु है परिपूर्णता।''

आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने गुरु महिमा का मंडन इस प्रकार किया था– ''ज्ञान की प्रथम गुरु माता है, कर्म का प्रथम गुरु पिता है, प्रेम का प्रथम गुरु स्त्री है और कर्त्तव्य का प्रथम गुरु सन्तान है। बादल चल रहे हैं, आँधी चल रही है, बाढ़ के कारण लाखों लहरे उठ रही हैं, ऐसी अवस्था में सद्गुरु को पुकारों फिर तुम्हें डूबने का भय नहीं रहेगा।''

समर्पित संरक्षक गुरु एक संगीतकार की प्रतिभा को तराशता है। अध्यात्म के पथ पर एक खोजी के मस्तिष्क का अज्ञान गुरु का प्रबोध दूर करता है। गुरु शिष्य का संबंध सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है। गुरु के प्रति गोविन्द जैसी श्रद्धा होती है।

ब्रह्म–विद और ब्रह्मज्ञानी तथा ईश्वरीय साक्षात्कार में स्थित गुरु को सूक्ष्मतम आध्यात्मिक संकल्पनाओं को प्रदान करने में समर्थ हो, उसके मार्गदर्शन के बिना आध्यात्मिक विकास असंभव है। शिक्षक के प्रति संपूर्ण समर्पण प्रपत्ति एक छात्र की सर्वप्रथम योग्यता है।

आज के आधुनिक युग में भी गुरु की महत्ता में जरा भी कमी नहीं आई है। एक बेहतर भविष्य के निर्माण हेतु आज भी गुरु का विशेष योगदान आवश्यक होता है। शिक्षक की वर्तमान प्रासंगिकता के पक्ष में कबीर का यह दोहा सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है–

ज्ञान समागम प्रेम सुख, दया भक्ति विश्वास।
गुरु सेवा ते पाइए, सद्गुरु चरण निवास।।

अर्थात् ज्ञान, सन्त समागम, सबके प्रति प्रेम निर्वासनिक सुख, दया, भक्ति, सत्य स्वरूप और सद्गुरु की शरण में निवास यह सब गुरु की सेवा से मिलते हैं।

विद्यास्थली है मंदिर मेरा,
गुरु मेरे भगवान है।
मेरे हृदय मे नित, उनके लिए सम्मान है।
चरण कंवल मेरे गुरुवर के
स्वर्ग से भी महान है।
चमक रहा शिखर पर शिष्य,
गुरु का प्रताप है।।

वरिष्ठ अध्यापक हिन्दी
रा.आ.उ.मा.वि., खेड़ा रानीवास
तह.–कोटखावदा, जिला–जयपुर
मो: 9928791368

वैश्विक चेतना का केंद्र हिमालय

इस तथ्य से कम ही लोग अवगत होंगे कि प्रत्येक वर्ष की 9 सितंबर को 'हिमालय दिवस' मनाया जाता है। हिमालय का नाम मुँह पर आते ही विश्व की सबसे भव्य पर्वतश्रृंखला का नयनाभिराम दृश्य आँखों के सामने से गुजर जाता है, जिसने कवियों, साहित्यकारों, रचनाकारों से लेकर पर्वतारोहियों, भूगर्भशास्त्रियों, पर्यावरणविदों यहाँ तक कि जनसामान्य, छोटे बच्चों एवं अनुभवी वृद्धों को समान रूप से रोमांचित किया है। हिमालय पौराणिक, ऐतिहासिक दृष्टि से एक अद्भुत महत्त्व की पर्वत श्रृंखला है।

हिमालय की पर्वत श्रृंखलाएँ विश्व की सबसे ज्यादा युवा पर्वत श्रृंखलाएँ हैं, जो 6 से ज्यादा देशों में फैली हुई हैं। भूगर्भवैज्ञानिकों के अनुसार, हिमालय की पर्वत श्रृंखलाएँ उन चुनिंदा पर्वत श्रृंखलाओं में से एक है जिन्हें जीवित कहा जा सकता है; क्योंकि ये प्रत्येक वर्ष 20 मिमी. तक आगे बढ़ जाती हैं। यदि ये इसी गत से आगे बढ़ती रहीं तो आने वाले 1 करोड़ वर्षों में हिमालय 1500 किमी. आगे तक बढ़ चुके होंगे।

पर्यावरण की दृष्टि से हिमालय को अद्भुत कहा जा सकता है। यदि हिममहाद्वीपों अंटार्कटिका व आर्कटिक क्षेत्र को छोड़ दिया जाए तो विश्व की सबसे ज्यादा हिमाच्छादित संपदा हिमालय में ही है। यहाँ तक कि करीब 15000 ग्लेशियर या हिमनद, अकेली हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं के भीतर हैं। यदि ध्यान से देखें तो हिमालय पर्वत भारत के ऊपर एक छत्र की तरह से खड़ा है एवं शायद इसीलिए विश्व के 14 सबसे ऊँचे पर्वत शिखरों में से 9 हिमालय में ही स्थित हैं, जिनमें से माउंट एवरेस्ट, जो कि समुद्र की सतह से 8848 मीटर या 28029 फीट ऊँचाई पर है, उससे हर कोई परिचित है। भारतीय चिंतन में हिमालय को पर्वतराज या गिरिराज कहकर पुकारा गया है। भारतीय इतिहास एवं सनातन परंपरा हिमालय को आध्यात्मिक चेतना का ध्रुव केंद्र कहकर पुकारा है।

भौगोलिक दृष्टि से हिमालय की विशिष्टताएँ अनगिनत हैं। हर स्थान विशेष की अपनी महत्ता होती है। उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव न होते तो अंतरिक्ष से बरस रही खतरनाक किरणें इनसानों का समूल सफाया कर देने में समर्थ थी। उनकी चुंबकीय शक्ति इन किरणों को छितराकर दूर कर देती हैं और मानवीय जीवन यहाँ सुरक्षित बना रहता है। वैज्ञानिकों के शोध ये प्रमाणित करते हैं कि मिस्र के पिरामिडों की स्थापना अंतरिक्षीय गतिविधियों पर दृष्टि डालने के लिए की गई थी। ठीक उसी प्रकार सिद्ध पुरुषों ने एक विशेष उद्देश्य के लिए हिमालय के क्षेत्र का भी चयन किया है।

वर्तमान परिवेश : शिक्षक की भूमिका

❒ दिनेश कुमार गुप्ता

शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की प्रमुख गत्यात्मक शक्ति है, पर यह भी सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, सहभागी क्रियाएँ, निर्देशन आदि सभी कारक शैक्षिक कार्यक्रम में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। किन्तु जब तक उनको अच्छे शिक्षकों द्वारा जीवन शक्ति प्रदान नहीं की जाएगी तब तक वे निरर्थक रहेंगी। शिक्षक ही वह शक्ति हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली सन्ततियों पर अपना प्रभाव डालती है। अतः कहा जा सकता है कि मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर ही निर्भर है। शिक्षक का जीवन मर्यादा एवं सच्चरित्रता की बालू, सीमेन्ट व ईंट से बना होता है। अपने कार्यों के प्रति जागरूकता, कड़ी मेहनत एवं मधुर सम्भाषण अध्यापक का स्तर उठाने में सहायक होते हैं। छात्र ऐसे शिक्षक को अपना आदर्श बनाकर जीवन की सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उच्च स्तर प्राप्त करते हैं। हुमायू कबीर का मत है कि **''शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है, अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का भी असफल होना अवश्यम्भावी है। अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है।''** बालकृष्ण जोशी ने कहा है कि ''एक सच्चा शिक्षक धन के अभाव में भी धनी होता है, उसकी सम्पत्ति का विचार उसके पास जमा धन से प्राप्त नहीं किया जाना चाहिए, अपितु उस प्रेम और शक्ति से किया जाना चाहिए, जो उसने अपने छात्रों में उत्पन्न की है।''

विद्यालय में शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक का सीधा सम्बन्ध छात्रों से होता है। शिक्षक बालकों के सर्वांगीण विकास करने में सहायक होता है। वह छात्रों को प्रगति की राह दिखाने वाला एक पथ प्रदर्शक होता है। शिक्षक न केवल कक्षा में अपितु विद्यालय में उचित वातावरण का निर्माण करता है। सभी बालकों के प्रति उदार पक्षपात रहित व सहानुभूति पूर्ण व्यवहार रखता है। शिक्षक बालकों की योग्यता, क्षमता, रुचि, अभिरुचि आदि के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है। छात्रों की आवश्यकताओं व प्रकृति के अनुसार शिक्षक शिक्षण पद्धति अपनाता है। विद्यालय में किसी भी क्रिया को सिखाने का दायित्व शिक्षक का होता है। वह छात्रों को ज्ञान व क्रिया का अधिगम कराने के लिए उचित वातावरण की तैयारी करता है, अतः शिक्षक को शिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया में सिद्धहस्त होना आवश्यक है। बच्चे के जन्म लेते ही अनेक रिश्ते उसके साथ जुड़ जाते हैं। परिवार के बाद, किसी बच्चे का हृदयी बंधन जुड़ता है, तो केवल शिक्षक के साथ।

वर्तमान युग में शिक्षा का स्वरूप बदल गया है, आज शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ और यह परिवर्तन निरंतर जारी है। चूँकि शिक्षा अधिगम प्रक्रिया में नए-नए प्रयोग हो रहे हैं। अतएव इसके साथ ही शिक्षकों की भूमिका में भी बदलाव की जरूरत है। प्राचीन शिक्षकों की तुलना में आज शिक्षकों की भूमिका अधिक जटिल हो गई है, आधुनिक शिक्षण तकनीक प्राचीन व्याख्यान से अलग है। वर्तमान में शिक्षण मात्र विषय पाठों का औपचारिक व्याख्यान नहीं है, अपितु छात्रों के अधिगम अनुभवों का विस्तार है। शिक्षा कक्षा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि शैक्षिक वातावरण के बजाय घर और समुदाय में और दुनिया भर में फैली सूचनाओं का आदान-प्रदान है। छात्र तथ्यों के उपभोक्ता नहीं है, वे ज्ञान के सक्रिय सृजक हैं। विद्यालय सिर्फ कंक्रीट संरचनाएँ नहीं है बल्कि वे आजीवन सीखने के केन्द्रों का रूप ले रहे हैं और सबसे महत्त्वपूर्ण शिक्षण हमारे देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्वास्थ्य के लिए पूरी तरह से महत्त्वपूर्ण, सबसे चुनौतीपूर्ण और सम्माननीय कॅरियर विकल्पों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है। परिस्थिति में आए इस प्रकार के परिवर्तन प्रभावी अध्यापकों की माँग करते हैं, पारम्परिक रूप से जिसे प्रभावी माना जाता रहा है, आज की परिस्थितियों में वह शायद प्रासंगिक न हो। शिक्षक आज जिन परिस्थितियों का सामना कर रहा है वैसी स्थितियाँ पहले कम दिखाई देती थी, अतः उन्हें उस संगठनात्मक संदर्भ में विभिन्न दक्षताओं का प्रभावी प्रचालन करना होता है, जो पिछले कुछ दशकों से भिन्न है। शिक्षा में परिवर्तन और सुधार के प्रस्तावों का स्वरूप चाहे कुछ भी हो, उनका कार्यान्वयन इस पर निर्भर करता है कि शिक्षक उन्हें किस रूप में देखते हैं और कक्षा में उन्हें किस प्रकार रूपांतरित करते हैं। कई शिक्षक आज शिक्षण के कला और विज्ञान दोनों स्वरूपों को स्वीकार करते हैं व संस्थान द्वारा भी उन्हें नए तरीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षक की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका छात्र के सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, रुचियों, योग्यताओं को जानना व एक व्यक्ति के रूप में छात्र व अपनी अद्वितीय जरूरत को समझने में है। आज शिक्षा के क्षेत्र में इस तरह के महत्त्वपूर्ण परिवर्तन के बीज बोए जा रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी, ज्ञान का विस्तार और बेहतर सीखने की राष्ट्रव्यापी माँग से प्रेरित होकर विद्यालय धीरे-धीरे निश्चित रूप से खुद को पुनर्गठन कर रहे हैं। साथ ही शिक्षकों के लिए भी आवश्यक हो गया है कि वे अपनी भूमिकाओं पर पुनर्विचार करें और अपने कौशलों को पुनः परिमार्जित करें। अतः शिक्षक भी बेहतर विद्यालयों और छात्रों की सेवा करने के लिए खुद को और अपने शिक्षण के तरीके के बदल रहे हैं। शिक्षक का कार्य छात्रों में सकारात्मक सामाजिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास को प्रेरित करना है, ताकि वे अपने निजी जीवन में अर्जित समझ और ज्ञान का समुचित उपयोग कर बेहतर निर्णय ले सकें और समाज के लिए बहुमूल्य योगदान कर सकें।

शिक्षक ज्ञानप्रदाता के रूप में- शिक्षक का स्थान बड़े महत्त्व व गौरव का है। शिक्षक का वृहद् उद्देश्य है- बालक का सर्वांगीण विकास। इस महान लक्ष्य को शिक्षक के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। वस्तुस्थिति यह है कि शिक्षक आत्मज्ञान, आत्मनिर्देशन तथा ज्ञान का भण्डार होता है। वह विभिन्न क्रियाकलापों व व्याख्यानों के द्वारा बालकों तक इस ज्ञान का हस्तांतरण करता है। वह अपने आदर्शमय जीवन से बालक

को पवित्र बनाने के लिए ऐसा सुन्दर वातावरण तैयार करता है, जिसमें रहते हुए छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके। दूसरे शब्दों में उसका कार्य बालकों की सहानुभूतिपूर्ण सहायता करके उनका उचित दिशा में मार्गदर्शन करना है और यह शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा संभव होता है। शिक्षा प्रक्रिया का उद्देश्य बालक के ज्ञान की वृद्धि करना है। प्लेटो का तर्क है कि बिना बुद्धि के ज्ञान नहीं हो सकता और बिना ज्ञान के विवेक नहीं हो सकता और बिना विवेक के सत्य और असत्य तथा सही और गलत में भेद नहीं किया जा सकता। अतः शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की बुद्धि एवं विवेक शक्ति का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षा प्रक्रिया ज्ञान की प्रक्रिया भी है और शिक्षक ज्ञानप्रदाता के रूप में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं, क्योंकि शिक्षक को अपने विषय का पूर्ण स्वामित्व है। साथ ही वह शिक्षण वृत्ति के प्रति निष्ठावान है और इस व्यवसाय को वह अपनी स्वेच्छा से चयन करते हैं। आदर्शवाद के अनुसार बच्चे के पशुत्व से मनुष्यत्व एवं मनुष्यत्व से देवत्व की ओर ले जाने में शिक्षक की बड़ी अहम आवश्यकता होती है। प्लेटो के अनुसार ज्ञान के भण्डार, दार्शनिक और अन्तर्दृष्टि प्राप्त व्यक्ति ही शिक्षक बनने के अधिकारी होते हैं। शिक्षक को विद्यालय तथा समाज में एक बौद्धिक भूमिका का निर्वहन करना होता है। शिक्षक की क्रियाओं का प्रारूप पाठ्यक्रम में दिया जाता है। शिक्षक उसी के अनुसार छात्रों को ज्ञान प्रदान करता है। अतः शिक्षक व छात्र में ज्ञाता और ज्ञेय का सम्बन्ध है। शिक्षक को ज्ञाता माना गया है और जो ज्ञान छात्र को देना है वह शिक्षक के अन्दर समाहित है। ज्ञाता और ज्ञेय (शिक्षक व छात्र) के मध्य अन्तःक्रिया के द्वारा शिक्षक यह ज्ञान बालकों को हस्तान्तरित करता है। आज के संदर्भ में पाठ्यक्रम का शिक्षा प्रक्रिया में विशेष महत्त्व है। शिक्षक उसी के अनुसार क्रियाओं का आयोजन करता है। यहाँ पाठ्यक्रम का तात्पर्य है उस सम्पूर्ण छात्रों के अनुभव से संबंधित जो विद्यालय के अंतर्गत अनुभव किए जाते हैं। ज्ञान प्रदाता के रूप में शिक्षक को यह सावधानी बरतनी होती है कि ज्ञान का आदान-प्रदान उस स्तर तक न पहुँचे, जहाँ छात्र समझने में अपने को असहाय व असमर्थ समझें। हॉर्न बड़ी तत्परता से स्वीकार करते हैं कि परिचर्चा यदि योग्य शिक्षक के हाथ में नहीं है, तो शिक्षण की प्रक्रिया व्यर्थ होगी। अतः ज्ञानप्रदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है और इसका उचित निर्वहन एक कुशल शिक्षक ही कर सकता है।

शिक्षक सुविधाप्रदाता के रूप में– सुविधाप्रदाता के रूप में एक शिक्षक समग्र भूमिका निभाता है जो शिक्षक की क्षमताओं और सामान्य ज्ञान के कई पहलुओं का आह्वान करती है। इसे उचित रूप से परिभाषित करना कठिन है। यह शिक्षक को विकसित करने में सबसे महत्त्वपूर्ण अग्रिमों में से एक है। जो शिक्षक छात्रों में व्यक्तिगत विकास को प्रेरित करते हैं वे बेहद समर्पित, असाधारण, योग्य और अद्वितीय हैं। इसके लिए उनमें आत्म आश्वासन की आवश्यकता है, शिक्षक छात्र की आंतरिक शक्तियों के विकास में मदद करता है जिनसे छात्र स्वयं भी परिचित नहीं है। यह वही अपरिभाष्य अंतर है जो प्रशिक्षण और शिक्षा, उपदेश और शिक्षण के मध्य है, जब शिक्षक सुविधा प्रदाता के रूप में होता है तो कक्षा में छात्रों के व्यक्तित्व विकास में उन्नयन होता है। सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक केन्द्रीय भूमिका में होते हैं। वर्तमान युग शिक्षा प्रक्रिया में सूचना और तकनीक का है, आइसीटी का उपयोग कर रहे शिक्षक के सुविधा प्रदाता की भूमिका में बदलाव होने से शिक्षकों द्वारा कक्षा में नेता के रूप में सेवा करने की जरूरत समाप्त नहीं हो जाती। शिक्षक के पारम्परिक नेतृत्व कौशल और उसका प्रयोग अभी भी महत्त्वपूर्ण है, विशेष रूप से उनके लिए, जो पाठ योजना, तैयारी तथा उनके फॉलो-अप में शामिल हों। इसमें पाठ की योजना बनाना महत्त्वपूर्ण है अनुसंधान से पता चलता है कि जहाँ योजना अनुचित रूप से बनाई गई हो वहाँ छात्र का काम अक्सर विकेन्द्रित होता है और इससे लक्ष्य प्राप्ति में कमी आ सकती है।

सुविधाप्रदाता की भूमिका में शिक्षक का कार्य छात्रों को मार्गदर्शन देना है, शिक्षक की विशिष्ट भूमिका है–

- छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए
- एक लक्ष्य के रूप में समस्या को पहचानने में
- खुद सीखने में उन्हें सुविधा प्रदान करने में।
- उचित विश्लेषण निरीक्षण करने में मार्गदर्शन देने में।
- स्वयं अपने लक्ष्य साकार करने में।
- स्वयं निर्णय लेने में।

अतः एक कुशल सुविधाप्रदाता के रूप में शिक्षक कक्षा में उचित वातावरण का निर्माण करे, तदापि विषय वस्तु के उचित अधिगम के लिए छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करे व उचित विश्लेषण निरीक्षण करने में मार्गदर्शन देने में समर्थ हो ताकि छात्र स्वयं उत्तर खोजने के लिए प्रेरित हो व अन्ततः उत्तर तक पहुँच सके और इस भूमिका में शिक्षक को सरल दृष्टिकोण रखना चाहिए। व्याख्यान देने और उपदेश से बचना चाहिए। पूर्व परिदृश्य में शिक्षार्थी एक निष्क्रिय भूमिका निभाता है अपितु इस परिदृश्य में शिक्षार्थी सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाता है इससे शिक्षक की बदलती भूमिका भी परिलक्षित होती है। सीखने के लिए रचनावादी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जिसमें शिक्षक द्वारा ज्ञान देने के बनिस्पत छात्रों द्वारा स्वयं ज्ञान के निर्माण पर जोर दिया जाता है, शिक्षक द्वारा छात्रों के साथ छोटे समूहों के सत्र में एक अनौपचारिक तरीके से संवाद करने की क्षमता की जरूरत है, इसमें खुले रूप में विचार विमर्श को प्रोत्साहित किया जाता है। सुविधाप्रदाता के रूप में शिक्षक में सिर्फ विषयवस्तु का ज्ञान पर्याप्त नहीं होता अपितु कई कौशलों की आवश्यकता होती है।

शिक्षक परिवर्तन अभिकरण के रूप में– शिक्षक और सामाजिक परिवर्तन में घनिष्ठ सम्बन्ध है। सामाजिक परिवर्तन में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आज के इस संक्रमणकाल में शिक्षक ही लोगों के अन्दर व्याप्त अज्ञान के अंधकार को दूर कर उन्हें प्रगति पथ की नई राह दिखा सकता है। वही परिवर्तन के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करके नए परिवर्तनों में आस्था पैदा कर सकता है और नए परिवर्तनों को लाने में समाज का नेतृत्व भी कर सकता है। सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से शिक्षक एक मित्र, पथ-प्रदर्शक और दार्शनिक के रूप में बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति सिद्ध हो सकता है। शिक्षक सामाजिक परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कोई भी शिक्षक सामाजिक परिवर्तन को लाने में उसी समय

अपना योगदान दे सकता है, जब उसको समाज की आशाओं एवं माँगों के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन के प्रकारों तथा दिशाओं का भी पूरा-पूरा ज्ञान हो। वस्तुस्थिति यह है कि सामाजिक परिवर्तन अनेक प्रकार के होते हैं- (1) विकासात्मक, (2) लहरदार, (3) चक्रीय क्रम। ऐसे ही सामाजिक परिवर्तन की दिशाएँ भी विभिन्न हैं, उनमें से मुख्य दिशाएँ है- (अ) समतल, (ब) असमतल। शिक्षक को सामाजिक परिवर्तन के उक्त सभी प्रकारों एवं दिशाओं को दृष्टि में रखते हुए इसे ऐसी दिशा में मोड़ना चाहिए, जो समस्त समाज के लिए कल्याणकारी हो और उसे जनता प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर ले। शिक्षक को इस बात का पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए कि सामाजिक परिवर्तन सदैव समतल ही नहीं होते। उसे इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि जब किसी अमुक समाज की संस्कृति दूसरे समाज के लिए लाभप्रद नहीं होती तो ऐसी संस्कृति द्वारा लाए हुए परिवर्तन तथा शिक्षक की शिक्षा योजना दोनों को असमतल की संज्ञा दी जाएगी। दूसरे शब्दों में जब सामाजिक परिवर्तन असमतल होता है तो शैक्षिक परिवर्तन भी असमतल ही होता है। अतः शिक्षक को ऐसे अहितकर परिवर्तनों से समाज की रक्षा करनी चाहिए।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि शिक्षकों ने आरंभ से ही सामाजिक परिवर्तन लाने में पूरा सहयोग दिया है। यदि प्राचीन भारत पर दृष्टिपात किया जाए तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि जब भी शिक्षकों ने सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव किया तब ही उन्होंने अपने आश्रमों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था में आश्चर्यजनक परिवर्तन किए। शिक्षकों के महत्त्व एवं उनकी सामाजिक सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए आज भी उन्हें समाज अथवा राष्ट्र का निर्माता कहा जाता है, पर खेद का विषय है कि आज शिक्षक को वह स्थान नहीं दिया जाता। यदि शिक्षक अपने थोपे हुए मान व प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करना चाहता है तो उसे बदलते हुए समाज तथा उसकी बदलती हुई आवश्यकताओं को पूरी तरह समझकर सामाजिक परिवर्तन में आवश्यक योगदान देना चाहिए। कारण यह भी है कि शिक्षण कार्य भी अन्य व्यवसायों की भाँति एक व्यवसाय बन गया है, जिसे केवल वही व्यक्ति अपना सकते हैं, जिन्हें अपने विषय का पूरा ज्ञान हो तथा जिन्होंने प्रशिक्षण भी प्राप्त किया हो। अतः आज के जनतांत्रिक युग में जहाँ एक ओर लोकप्रिय शिक्षा की माँग बढ़ती जा रही है, वहीं दूसरी ओर शिक्षकों की आर्थिक दशा में समाज तथा सरकार ने आवश्यक सुधार नहीं किया है। चूँकि प्रत्येक सामाजिक परिवर्तन प्रयोग द्वारा ही लाया जा सकता है और प्रयोग के लिए धन की आवश्यकता होती है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षकों को समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान देते हुए उनकी आर्थिक दशा में आवश्यक सुधार किया जाए। तब ही उनसे आशा की जा सकती है कि वे सामाजिक परिवर्तन के प्रभावपूर्ण प्रतिनिधि के रूप में प्रशंसनीय कार्य कर सकेंगे।

शिक्षक परामर्शदाता के रूप में- परामर्श की प्रक्रिया में उपबोधक का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। विशिष्ट एवं सुनिश्चित परिस्थितियों में ही परामर्श प्रदान किया जाता है तथा उसके लिए परामर्श देने वाले व्यक्ति में विभिन्न प्रकार की योग्यताओं एवं कौशलों का होना आवश्यक होता है। परामर्शदाता परामर्शी की समस्याओं या कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए उसकी अनुभूतियों, उसके संज्ञान, व्यवहार तथा अन्तर्वैयक्तिक संबंधों में हस्तक्षेप करके समस्याओं के समाधान तथा लक्ष्य प्राप्ति में यथासंभव सहयोग करता है। परामर्श सेवा की प्रक्रिया को संचालित करने वाले व्यक्ति को परामर्शदाता कहा जाता है। इन आवश्यक दक्षताओं के विकास के लिए विशेष शिक्षण-प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। परामर्शदाता से आशा की जाती है कि उसे मनोविज्ञान के अतिरिक्त समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, समाज कार्य का भी आधारभूत ज्ञान होना चाहिए। इन मापदंडों पर शिक्षक खरे उतरते हैं, क्योंकि वे उपर्युक्त कौशलों में निपुण होते हैं।

1. सूचनाओं को इकट्ठा करना और परीक्षण करना- शिक्षक विद्यार्थी के वातावरण संबंधी सभी प्रकार की सूचनाओं को एकत्र करता है। इस कार्य में शिक्षक परामर्शदाता विद्यार्थी का सहयोग लेकर कार्य करता है। वे सूचनाओं के महत्त्व व उपयोगिता के विषय में विचार करते हैं। कुछ सूचनाएँ अस्वीकृत हो जाती है और कुछ का अनुवर्तन करते हैं।

2. विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाने में सहायक- शिक्षक परामर्शदाता का प्रमुख लक्ष्य है- विद्यार्थियों के अधिगम को परिष्कृत करके उसके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने में सहायता प्रदान करना। विद्यार्थी को स्वयं अपनी अभिरुचियों, योग्यताओं एवं विशेषताओं के विषय में जानने की जिज्ञासा रहती है। उन्हें यह भी जानना चाहिए कि व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार के लिए ज्ञान का क्या उपयोग है।

3. विद्यार्थियों के व्यवहार में सुधार लाने में सहायक- विद्यार्थियों में सीखने के माध्यम से उनके व्यवहार में सुधार लाना परामर्शदाता का कार्य है। इस दृष्टिकोण से परामर्शदाता एक शिक्षक के रूप में अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करता है। प्रभावशाली परामर्श और प्रभावपूर्ण शिक्षण कार्य, अध्यापक और छात्र के व्यक्तिगत संबंधों, कार्य, व्यवहार पर आधारित होता है। विषयवस्तु एवं प्रक्रिया दोनों ही परामर्श को प्रभावपूर्ण बनाने में सहायता करते हैं।

4. विद्यार्थी को सामाजिक वातावरण के विषय में सूचना देना- परामर्शदाता का प्रमुख लक्ष्य है- विद्यार्थी को समाज के साथ वातावरण में ढालना। शिक्षक परामर्शदाता सामाजिक वातावरण से सम्बन्धित सभी सूचनाओं को एकत्र करता है यथा नौकरियाँ, आर्थिक साधनों, विद्यालयों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, प्रगति की दिशाओं, नागरिक उत्तरदायित्वों आदि के विषय से इन सूचनाओं में समाज में हो रहे नवीनीकरण सामाजिक मूल्य परिवर्तनों की जानकारी भी सम्मिलित होती है।

5. निर्णय प्रक्रिया के विषय में सूचना प्रदान करना- परामर्शदाता की कार्य पद्धति के अंतर्गत प्रार्थी को निर्णय प्रक्रिया के विषय में सूचित करना भी है। वह सेवार्थी के साथ मिलकर अन्य निर्णयों की समीक्षा भी करता है, जो विद्यार्थी द्वारा लिए गए निर्णय होते हैं। परामर्शदाता विद्यार्थी को गलत निर्णय के विषय में आगाह करता है।

6. परामर्शदाता सलाहकार के रूप में- परामर्शदाता एक उत्तम सलाहकार के रूप में कार्य करता है। वह विद्यार्थी को उत्तम निर्णय लेने

अनुमानित निर्णय लेने, सूचनाओं को प्राप्त करने के विषय में तथा अन्य किसी मदों से सम्बन्धित विषयों पर सलाह देता है तथा उचित निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है।

7. अन्य लोगों के साथ वार्तालाप– परामर्शदाता विद्यार्थी से सम्बन्धित जानकारी हासिल करने के लिए विषयों के अतिरिक्त अन्य लोगों से भी गोपनीय ढंग से वार्तालाप कर सकता है। परामर्शदाता विद्यार्थी के मित्रों, माता–पिता, रिश्तेदारों, शिक्षकों आदि से विचार–विमर्श करता है। यह गोपनीय विचार–विमर्श इस उद्देश्य से किया जाता है ताकि विद्यार्थी की समस्या का समाधान प्रभावपूर्ण ढंग से हो सके।

चिंतनशील व्यवसायी के रूप में शिक्षक– शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है, जो राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, अतः शिक्षक एक चिन्तनशील व्यवसायी है। शिक्षक का परम्परागत कार्य तो प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं को नई पीढ़ी को सौंपना ही रहा है। लेकिन भारत में सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख अभिकर्त्ता के रूप में शिक्षक की अवधारणा नई है। शिक्षक के लिए यह सोचना आवश्यक है कि वर्तमान भारतीय समाज की आवश्यकताओं और विशेषताओं के संदर्भ में वह किस प्रकार अपने शिक्षण कार्य को समाज के लिए उपयोगी और सार्थक बना सकता है। चिन्तनशील व्यवसायी के रूप में आवश्यक है कि वह शिक्षक सामाजिक परिवर्तन के अग्रेता बने। अधिकांश शिक्षक प्रायः सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करने में झिझकते हैं। वे परम्परागत जीवन क्रम को ही बनाए रखने में विशेष रुचि रखते हैं। यह सही है कि हमारे शिक्षकों ने प्रजातंत्र, धर्म–निरपेक्षता, समानता तथा राष्ट्रीयता के सिद्धांतों का स्वागत किया है तथा वे इनको विद्यार्थियों में प्रसारित करने का प्रयास भी करते हैं। तथापि कतिपय प्राचीन संस्कारों व पोषित अध्यापकों के व्यवहार में सामाजिक असमानता, वर्गभेद तथा धार्मिक विद्वेष का आभास अवश्य दृष्टिगोचर होता है। अतः उनकी कथनी व करनी में समन्वय नहीं हो पाता। इस प्रवृत्ति को यथासंभव दूर करने का प्रयास शिक्षकों को करना चाहिए। शिक्षकों को सामाजिक, राजनैतिक व नवीन यांत्रिक गतिविधियों तथा परिवर्तन की जानकारी से पूर्णतः अवगत होते रहना चाहिए। शिक्षकों को दैनिक समाचार–पत्रों, पत्र–पत्रिकाओं तथा नवीन विचारों से परिपूर्ण साहित्य का अध्ययन करते रहना चाहिए। शिक्षकों को आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों व आंदोलनों का पर्याप्त ज्ञान होना भी आवश्यक है। सामाजिक परिवर्तनों के प्रति शिक्षकों की इस वस्तुस्थिति से अवगत होकर ही शिक्षक एक आधुनिक दृष्टि–सम्पन्न व्यक्ति तथा उच्च स्तर के बुद्धिजीवी बन सकते हैं। शिक्षक को स्वयं सामाजिक स्थिरता में नहीं, गतिशीलता में विश्वास रखना चाहिए। शिक्षक सफलतापूर्वक कार्य संपादन कर सके, इसके लिए इनमें कुछ गुणों का होना आवश्यक है। सर्वप्रथम उनका प्रशिक्षण और योग्यता उत्तम स्तर की होनी चाहिए। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली होना चाहिए। उनके मन में व्यावसायिक मूल्यों के प्रति अत्यधिक श्रद्धा होनी चाहिए। उनमें सामाजिक समानता, स्वतंत्रता, न्याय आदि सामाजिक मूल्यों के प्रति पूर्ण आस्था होनी चाहिए। उनकी स्वतंत्रता की भावना को सबसे अधिक सम्मान मिलना चाहिए।

प्रत्येक शिक्षण संस्था की व्यवस्था इस प्रकार की होनी चाहिए कि उससे शिक्षक को अपना कार्य कुशलतापूर्वक करने में सहायता मिले। प्रशासनिक समस्याएँ उसके उत्साह और कुशलता को कुंठित कर देते हैं। आर्थिक कठिनाइयाँ उसके व्यावसायिक विकास के मार्ग में बाधाएँ प्रस्तुत करती हैं। राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण शिक्षा–व्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ता है। शिक्षण संस्था की पारस्परिक सम्बन्धों का भी शिक्षा–व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। अतः भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षक का कार्य एक गंभीर तथा महत्त्वपूर्ण चुनौती है। शिक्षकों को प्रशासकों की ओर से अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए, जिससे उसकी क्रियात्मकता व प्रारंभिक शक्ति का सर्वांगीण विकास हो सके। शाला के वातावरण में उसे अपना कार्य करने की पूरी सुविधा मिलनी चाहिए। पाठ्यक्रम के निर्माण में उसका योग हो। प्रायः शिक्षक उपलब्ध सुविधाओं व अवसरों का लाभ नहीं उठाते। शिक्षकों में और अधिक विश्वास किया जाना चाहिए। उनकी स्वाधीनता व योग्यता का समाज के सभी वर्गों, विशेषकर शिक्षा प्रशासनाधिकारियों द्वारा सम्मान होना चाहिए। शिक्षण कार्य कोई सरल कार्य नहीं है। इसके लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। शिक्षक में कुछ गुण जन्मजात होते हैं। परन्तु अनेक अन्य गुणों के लिए उसे प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। जहाँ तक जन्मजात गुणों का प्रश्न है उनको भी कार्यरूप में परिणित करने का शिक्षक को पर्याप्त अवसर मिलता है और इन कुशलताओं का शैक्षणिक परिवेश में उचित रूप से विकास करते रहना चाहिए।

सारांश– प्रत्येक शिक्षक का मूल उद्देश्य छात्रों को शिक्षा प्रदान करना होता है। साथ ही शिक्षा का उद्देश्य छात्र का अधिकतम सर्वांगीण विकास करना है। अतः इस व्यापक उद्देश्य की प्राप्ति में शिक्षक विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करता है। जब वह तथ्यों, नियमों व सूचनाओं का आदान–प्रदान करता है तो कक्षा में उसकी भूमिका ज्ञानप्रदाता के रूप में होती है। जब वह किसी अधिगम प्रक्रियाओं का संवर्धन करता है व उन्हें सिखाने में सहायता करता है, तब वह सुविधाप्रदाता की भूमिका में कार्य कर रहा होता है। छात्रों को उनके वातावरण व समाज से अवगत कराने व छात्रों के अंदर व्याप्त अज्ञान के अंधकार को दूर करके उन्हें प्रगति की राह दिखाने में करता है। अतः सामाजिक परिवर्तन में शिक्षक की सक्रिय भूमिका है तथा वह एक चिंतनशील व्यवसायी के रूप में भी अपनी भूमिका का पूर्ण कुशलता से निर्वहन करता है। शिक्षक की नितांत भिन्न और महत्त्वपूर्ण भूमिका है परामर्शदाता के रूप में। जब कभी विद्यार्थी के समक्ष कोई समस्या आती है, चाहे व्यक्तिगत हो या सामाजिक, शैक्षिक या मनोवैज्ञानिक, उसके समाधान के लिए शिक्षक उचित उपायों व अनुक्रियाओं को अपनाने में विद्यार्थी की सहायता करता है। इस प्रकार शिक्षक शैक्षणिक परिवेश में विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन कुशलता से करता है।

प्रवक्ता
अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर
मो: 9462607259

मूल्य एवं सहिष्णुता

❒ सरस्वती माहेश्वरी

येषाम् न विद्या न तपो न दानम्
न ज्ञानम् न शीलम् न गुणो न धर्मम्।
ते मृत्युलोके भूमि भारभूताः,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

अर्थात् जिसके पास न विद्या रूपी धन है, न तप रूपी शक्ति है, न उदारता है, न ज्ञान है, न चरित्र की पवित्रता है, न गुणों से भरा आचरण है और न ही धार्मिक प्रवृत्ति है, वे इस धरती पर भार स्वरूप है, ऐसे लोग मनुष्य के वेश में मृग है। प्रत्येक मानव जब जन्म लेता है, तो निरीह प्राणी के रूप में नया जीव होता है, लेकिन इंसान के रूप में उसकी पहचान तभी बनती है, जब मानवीय व नैतिक मूल्य उसे अलंकृत करते हैं। वहीं आकर भेद बनता है एक मनुष्य का पशु से। मानवीय मूल्य ही मानव का सर्वोच्च मार्गदर्शन करते हैं एवं सहिष्णु बनाते हैं। वर्तमान में आधुनिकता एवं बदलते परिवेश में असहिष्णुता बढ़ रही है एवं मानवीय मूल्यों में गिरावट हो रही है, जो चिन्ताजनक है।

वर्तमान में समाज एवं परिवार में लोगों के स्वभाव, उनकी प्रकृति में एक विचित्र बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है। विशेषकर युवाओं एवं बच्चों में नम्रता का अभाव, असहिष्णुता में वृद्धि, पारस्परिक सामंजस्य और सौहार्द्र की कमी साफ दिखाई पड़ती है जिससे बात-बात में टकराव, कलह और अलगाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। पारिवारिक और सामाजिक जीवन कष्टदायक और दुःखमय हो रहे हैं। इस पर कोई नहीं सोचता कि जीवन में कठोरता को छोड़कर सहिष्णुता एवं नम्रता से उसे मधुर, सुखमय और शान्तिपूर्ण बनाया जा सकता है। घर-घर में, हर परिवार में, भाई-भाई में, समाज में झगड़ा है, कलह है। झूठे अहं, अक्खड़पन, उद्दण्डता व असहिष्णुता से सभी पीड़ित हैं, जरूरत है कलह एवं टकराव का निदान खोजा जाय, मानव मूल्यों की शिक्षा दी जाए। सच है कि-

पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंगकर,
मानवीय मूल्यों का हो रहा पतन।
सबको मिलकर तय करना है,
कैसे करे इनका जतन।।

मानव भौतिकवादी सुविधाओं के जाल में फंसा होने के कारण जीवन के मूल्यों एवं आदर्शों से कोसों दूर जाकर पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। मानव अधिकाधिक सुख सुविधाओं को जुटाने में लगा है, जहाँ धनोपार्जन ही उसका लक्ष्य है, जिसके लिए वह घृणित से घृणित और अनैतिक कार्य करने को विवश है। फलस्वरूप मानव मूल्यों में गिरावट हो रही है जिससे देश में चरित्र का संकट उत्पन्न हो गया है। लोभ, स्वार्थ एवं दुराचार से पूर्णतः सभी ग्रसित हो चुके हैं।

सामाजिक जीवन अनसुलझे तनावों, संघर्षों और हिंसा से खोखला हो गया है। राजनीति में आदर्श और विचारधारा का लोप हो गया है। अर्थव्यवस्था शोषण और लूटमार एवं अनैतिक व्यापार का शिकार हो गई है। कॉलेज, परिवार दंगों, हिंसा एवं क्रूरता के पोषण स्थल बन चुके हैं। धार्मिक व्यवस्था झूठे दिखावे व कुण्ठित कर्मकाण्डों से क्षत विक्षत हो रही है।

समाज में असहिष्णुता बढ़ती जा रही है। लोगों के अहं टकराने लगे हैं। कोई भी व्यक्ति किसी के सामने झुकने को तैयार नहीं, अपने आप को तुर्रमखां मानते हैं। सहनशीलता गायब हो गई है। नम्रता को कमजोरी का चिह्न माना जाता है। विनम्र और सीधे-सादे व्यक्ति को लोग कमजोर, पिछड़ा व पुरातनपंथी समझकर उसका उपहास करते हैं। इसके विपरीत उद्दण्ड और कठोर स्वभाव वाले व्यक्ति को प्रभावशाली रोबदार कहकर उसकी प्रशंसा करते हैं। घर, परिवार और समाज में उनके रोब का आतंक काम करता है। इस आतंक के साए में लोग उचित-अनुचित का अंतर नहीं करते और कई बार ऐसे कार्य कर देते हैं जो बाद में पश्चाताप के कारण बनते है, जिससे आत्मग्लानि का दुःख भोगना पड़ता है। जीवन में यदि दीर्घकाल पर्यन्त घर-परिवार और समाज में श्रद्धा एवं आदर पाना चाहते हैं तो सभी को सहिष्णु एवं विनम्र बनना पड़ेगा। सहिष्णुता जीवन का आभूषण है। कहा भी गया है-

धैर्य, संयम एवं सहनशीलता अपनाओ।
परिस्थितियों से तालमेल बिठाओ।।

सहिष्णुता मानवीय अन्तरात्मा का वह सम्बल है, जिससे मानव क्लेश, कष्ट आदि को धैर्यपूर्वक सह लेता है अर्थात् मानव का वह गुण, जिससे प्रतिकार का सामर्थ्य रखते हुए भी वह हिंसा का आश्रय नहीं लेता है, सहिष्णुता से मनुष्य की आंतरिक शक्ति का विकास होता है। मनुष्य में आत्मबल आता है, आत्मबल किसी भी सफलता के लिए अनिवार्य है।

धैर्य से मानसिक वृत्तियाँ एकाग्र होती हैं। एकाग्रचित्त से कर्म करता हुआ मानव ऊबता नहीं वरन् अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अनवरत, संघर्षरत रहता है, अन्ततोगत्वा वह विजयी होता है। इससे मनुष्य में विवेक की जाग्रति होती है, जिससे सत-असत, लाभ-हानि, उचित-अनुचित का विचार बना रहता है। यही विवेक ऐसा मार्ग बनाता है जिस पर चलकर वह अपने जीवन को सफल बनाता है।

भारतीय हमेशा जीवन के उच्चतम मूल्यों को महत्त्व देते रहे हैं तो विचारना होगा कि इनका अवमूल्यन क्यों हो रहा है? इनके प्रति प्रतिबद्धता क्षीण क्यों हो रही है? चेतना को उद्बुद्ध करने वाले कतिपय मूल्य एवं महत्त्वपूर्ण तत्व खो क्यों रहे हैं? पुरखों द्वारा पोषित, युगों पुराने जीवन मूल्यों को भुला दिया गया है। आज के भौतिकवादी युग में स्वार्थ लिप्सा से आंकठ डूबे हुए मनुष्य में क्षमा, दया, परोपकार, उदारता आदि नैसर्गिक गुणों का सर्वथा अभाव पाया जाता है। विश्व व्यापारीकरण के इस युग में कोई भी देश विदेशी प्रभाव से अछूता नहीं रह सकता।

सांस्कृतिक प्रदूषण के कारण भारत पर भौतिक सुखों की दौड़ का नशा छाने लगा है। समाज में अकेलापन, नीरसता, लक्ष्यहीनता, भागदौड़ और तनाव का वातावरण व्याप्त हो गया है। गिरते मानवीय मूल्यों ने लोगों के आचरण व विचारों को प्रदूषित किया है। जीवन में संयम, नैतिकता और उत्तरदायित्व की भावना लुप्त हो गई है। यह कैसी विडम्बना है कि मनीषियों के भारत में नागरिकों का जमीर, अन्तःकरण व आत्मा सुषुप्त व असहाय अवस्था में निद्रालीन है। इस अवस्था में मानव को पहुँचाने का श्रेय

परिवार तथा समुदाय को जाता है। अन्याय, अशान्ति, संघर्ष व अलगाव के युग के अन्त के लिए जरूरी है कि परिवार तथा समुदाय के सदस्यों व बच्चों में मूल्यों को विकसित करने हेतु समग्र प्रयास करें।

भारत में मानवीय मूल्य अपनी प्राचीनता, समन्वयशीलता, विश्वबंधुत्व एवं गहरी मानवीय संवेदना के कारण विश्व में प्रमुख है। भारतीय संस्कृति विश्व में अद्वितीय व गौरवपूर्ण है। सामाजिक, भाईचारा, सौहार्द्रता, करुणा, सहानुभूति जैसे पक्षों की प्रतिष्ठा है। यहाँ के सांस्कृतिक चिंतन में अतीत से ही विश्वजनीन चेतना परिव्याप्त रही है, तभी तो

'आत्मवत सर्वभूतेषु और वसुधैव कुटुम्बकम्'

जैसी अवधारणाओं का उद्घोष किया गया। यहाँ 'धन' से अधिक महत्त्व 'मन' को, 'प्रगति' से अधिक महत्त्व 'मानवता तथा भाईचारे' को, 'सुख' से अधिक महत्त्व 'शांति को, 'व्यक्ति' से अधिक महत्त्व 'समाज' को, 'चकाचौंध' से अधिक महत्त्व 'सादगी' को दिया गया है। इस कारण यहाँ के लोग 'जीओ और जीने दो' का आचरण करते आए है। यहाँ का आदर्श है-

औरों को हँसते देखो मनु,
हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो,
सबको सुखी बनाओ।।

इसी आदर्श को फिर से स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर मानवीय व जीवन मूल्यों एवं राष्ट्रीय आदर्शों के प्रति आकर्षण एवं रुचि पैदा करनी चाहिए जिससे एक स्वस्थ परम्परा से युक्त सुसंस्कृत एवं सुसज्जित समाज का निर्माण हो सके।

जीवन मूल्य सामाजिक संबंधों को संतुलित करके तथा सामाजिक व्यवहारों में एकरूपता उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होते हैं। मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत समस्त मानवीय गुण समाहित हो जाते हैं जैसे सत्य, अहिंसा, परोपकार, क्षमा, दया, पवित्रता, विनम्रता, साहस, निष्काम भाव, धैर्य, अध्यवसाय, शांति, स्थिरता, सहानुभूति, सहयोग एवं आत्मसंयम आदि जिनका शिक्षा व संस्कार द्वारा विकास किया जाना अपेक्षित है। सच है-

जन-जन में बढ़ावे सद्भाव समभाव।
मिट जावें मन के राग द्वेष के दुर्भाव।।

समाज, परिवार व विद्यालय में शिक्षा द्वारा मानवीय मूल्यों एवं सहिष्णुता में वृद्धि हो जिससे कि व्यक्ति एक आदर्श नागरिक बने जो समृद्धि में उदार हो, कठिनाई में शुक्रगुजार हो, पड़ौसी का विश्वासपात्र हो, गरीबों के लिए खजाना, जरूरतमंद की पुकार के लिए उत्तरदायी, अपनी प्रतिज्ञा के प्रति सजग, न्याय करने में निष्पक्ष और बोलने में संयमी हो।

किसी भी मनुष्य के साथ अन्याय न करें, सभी मनुष्यों के प्रति विनम्र, जो अंधेरे में भटक रहे हों उनके लिए दीपक, दुःखी मनुष्य के लिए प्रसन्नता, प्यासे के लिए समुद्र, दुःखी के लिए स्वर्ग, पीड़ित एवं दलित का संरक्षक हो, उसके सभी कार्य ईमानदारी एवं स्वच्छ छवि के उदाहरण हो। वह अजनबी के लिए घर, बीमार के लिए औषधि हो। वह अंधे के लिए आँख व गलती करने वाले के लिए सही मार्गदर्शक ज्योति बने। सच्चाई उसका आभूषण हो, विश्वास उसका मुकुट हो।

स्वच्छ छवि के लिए मंदिर का स्तंभ, मनुष्य मात्र की साँस, न्याय का पदक, ज्ञान के समुद्र का पक्षी, सर्वसम्पन्नता के स्वर्ग का सूर्य, बुद्धिमता का भीड़ का रत्न, अपनी पीढ़ी के आकाश की चमकती ज्योति और नम्रता के पेड़ का फल बने। शिक्षा मानवीय मूल्यों में विश्वास पैदा करती है और दृष्टि को स्पष्ट करती है। असहिष्णुता व मूल्यों में क्षय से बचने के लिए मूल रसाधारों धैर्य, प्रेम, करुणा, सहयोग, समरसता, सौहार्द्र, सहनशीलता आदि को जनसामान्य में जगाना आवश्यक है।

अतः नैतिक, शाश्वत एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास एवं संवर्द्धन द्वारा ही राष्ट्रीय चरित्र एवं मानवीय मूल्यों का विकास होगा, जिसके द्वारा सहिष्णु बन कर मानव चहुँमुखी उन्नति कर सकता है और बुलंदियों को छू सकता है, जैसा कि कहा गया है-

अंधविश्वास त्यागने होंगे,
नए मूल्य अपनाने होंगे।
परिवार, समाज व राष्ट्र हित में मानवीय
मूल्यों का विकास करना होगा।।

एसोसिएट प्रोफेसर
RSCERT, उदयपुर (राज.)

संकल्प के धनी

मनुष्य इस सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना है, जिसके लिए कुछ भी असंभव नहीं। यदि वह ठान ले तो कुछ भी कर सकता है। जीवन का भौतिक क्षेत्र हो या आध्यात्मिक, यदि वह प्रयत्न करे तो किसी भी दिशा में चरम बुलंदियों को छू सकता है। ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं जो अपने संकल्प-साहस के बल पर अदनी-सी, अकिंचन-सी हैसियत से ऊपर उठते हुए जीरो से हीरो बनने की उक्ति को चरितार्थ कर कर पाए व आज भी कर रहे हैं। रसातल से चरम शिखर की इनकी यात्रा रोमांचित करती है और थके-हारे मनुष्य को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

सैंडो और चंदगीराम जैसे विश्वविख्यात पहलवान बचपन में गंभीर रोगों से ग्रसित थे। शरीर से दुर्बल इन बालकों से दुनिया को कोई उम्मीद नहीं थी। किसी तरह वे शरीर से स्वस्थ हो जाएँ, इतना ही काफी था, लेकिन दोनों बालक दूसरी ही मिट्टी के बने थे। दोनों अपने जमाने के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बनना चाहते थे। इस लक्ष्य के अनुरूप उन्होंने अपनी कसरत जारी रखी और एक दिन दुनिया के सामने अपने स्वप्न को साकार कर दिखाया। ऐसे न जाने और कितने ही शरीर से रोगी, दुर्बल यहाँ तक कि अपंग व्यक्ति होंगे, जो आज भी ऐसी सीमाओं को पार करते हुए शारीरिक सौष्ठव एवं खेलों में झंडा गाड़ रहे हैं और संदेश दे रहे हैं कि यदि व्यक्ति संकल्प का धनी है तो उसके लिए शारीरिक दुर्बलता का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

बच्चों के श्रेष्ठ जीवन के लिए

❐ डॉ. रमेश 'मयंक'

हम अपने बच्चों को कैसी दुनिया, कैसे संस्कार, कैसा माहौल दे रहे हैं? यह गहन चिन्तन का विषय बन गया है। हर क्षेत्र में अधिकारों की बातें होती है, कर्त्तव्यों की नहीं। माता-पिता सोचते हैं-भौतिकवादी संस्कृति की आपा-धापी में हम हमारे बच्चों के लिए, हर चीज अच्छी कर रहे हैं। क्या अंधी दौड़ बच्चों की जिन्दगी, व्यक्तित्व और भविष्य के साथ खिलवाड़ तो नहीं होती जा रही है?

अभिभावक संरक्षक के रूप में माता-पिता बच्चों के लिए साधन पूर्ति के उपाय जुटाते हैं। उनकी जिद्द भी पूरी करते हैं और अपेक्षाएँ भी रखते हैं लेकिन वे खुद नहीं कर पाते जो बच्चों से चाहते हैं। बच्चे वही सीखते हैं जो अपनों से बड़ों को करते देखते हैं।

एक पिता ने अपने बेटे 'प्रणव' से कहा- पानी पिलाओ। उसने कहा- 'आप खुद ही पी लो।' ऐसा क्यों? प्रणव ने कहा था- पापा! सोलर एनर्जी पर एक शॉर्ट ऐसे (लघु निबंध) लिखवा दो। पिता ने कहा था- खुद लिख लो। मेरे पास समय नहीं है। यदि पिता के पास टाइम नहीं है तो बेटा क्यों पिलाएगा पानी?

माँ ने बेटी से कहा- ये गीले कपड़े तार पर सुखा दो। बेटी ने कहा- मैं बिजी हूँ आप खुद सुखा लेना। क्या कर रही है माँ ने पूछा। बेटी ने कहा- मोबाइल पर गेम खेल रही हूँ। क्या यह इतना जरूरी है। प्रश्न के उत्तर में बेटी ने कह दिया- वेरी इम्पोरटेन्ट, आपका मीटिंग में जाना इम्पोरटेन्ट होता है तो कह देती है-दादी से-खाना बनाकर साफ-सफाई का कार्य निपटा देना, मैं मीटिंग में रहूँगी।

आज समस्या यह भी है कि बच्चों को सुरक्षित वातावरण नहीं मिल पाता। बच्चे घर-बाहर क्यों महसूस करते हैं-असुरक्षित?। घर हो या विद्यालय, अभिभावक हो या अध्यापक, जरूरी है बच्चों पर ध्यान देना, उनके साथ मधुर व्यवहार करना, स्वच्छ वातावरण देना जिससे बच्चे खुशहाल बनकर प्रसन्नचित्त एवं सक्रिय रह सकें।

माता-पिता अपनी परेशानी से बचने के लिए या समयाभाव के कारण जो उन्हें करना

चाहिए वह नहीं कर पाते। विद्यालयों को सुधारने हेतु आगे आना होगा। पिछले दिनों परीक्षा परिणाम निकले। मेरे पड़ौस में एक बच्ची के दसवीं में 90% अंक आए। मैं जब बधाई देने गया तो बच्ची मुँह लटकाए खड़ी थी। रिमझिम की आँखों से टप-टप आँसू टपक रहे थे। पापा ने कहा था-अच्छे स्कूल में पढ़ाया, कोचिंग अलग और खाली 90% दूसरी लड़कियों के 95% तक कैसे आए? उनके आ सकते हैं तो तेरे क्यों नहीं?

मुझे अजीब लगा। सोचने लगा यह कैसा व्यवहार और परिणाम? आधुनिकता का दौर ज्यादा से ज्यादा सुविधाएँ और अपेक्षाएँ फिर भी व्यवहार में नियंत्रण नहीं बच्चों को स्वस्थ वातावरण नहीं। जब 500 में से 492 से 495 तक अंक आए तो सोचने को विवश होना पड़ा कि बच्चों को क्या बना रहे हैं कम्प्यूटर या संवेदनशील इन्सान?

एक माता निधि का ध्यान बार-बार तीन साल की विधि के रोने पर बाधित हो रहा था, तो उसने तुरन्त मोबाइल फोन पकड़ा दिया। वह चुप हो गई। जब वह दूध पीती, खाना खाती तो यू ट्यूब के बच्चों के वीडियो सामने होते। बच्ची अन्तर्मुखी होने लगी। फोन ही उसका संसार बन गया।

माँ गर्व से कहती रही हमारी विधि तो फोन चला लेती है, यू-ट्यूब देखे बिना खाना ही नहीं खाती। इन बातों का बच्चों पर क्या असर पड़ रहा है? गहनता से सोचना आवश्यक है। लोग पानी में डूबते रहे, सड़क पर एक्सीडेंट के शिकार होकर तड़पते रहे और हम वीडियो बनाते रहेंगे तो कहाँ से उपजेगी संवेदना, दया और करुणा? माता-पिता द्वारा निर्धारित एवं बच्चों पर थोपे गए लक्ष्य, उनके द्वारा पूरे नहीं करने पर या उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरने की वजह से, जरूरत से ज्यादा पढ़ाई का दबाव रहने से आत्महत्या जैसे कृत्य बढ़ने लगे हैं।

घर पर माता-पिता को, विद्यालय में शिक्षक-साथी मित्रों को बच्चों की इच्छाओं, रुचियों, भावनाओं को समझना होगा। उन्हें उनकी योग्यता के अनुरूप कॅरियर की आजादी देनी होगी। प्रतियोगिता और होड़ के दबाव से बचाना होगा। बालक का सर्वांगीण विकास-विद्यालय से सुगम संभव है। आवश्यकता है-बच्चों को खुली हवा दो, खुला मैदान, खुला आसमान, प्राकृतिक वातावरण मिले। बच्चा मन से सक्रिय रहे तथा सर्वांगीण विकास का भागीदार बने।

करना होगा चिन्तन माता-पिता को, शिक्षा जगत को, समाज निर्माताओं को, राष्ट्र के कर्णधारों कि बच्चा कहीं एकाकी तो नहीं हो रहा है? बाहर निकल कर मिलता-जुलता क्यों नहीं है? आसपास की दुनिया से क्यों कट रहा है? घर, परिवार, समाज, विद्यालय से कहकर मोबाइल, कम्प्यूटर, सोशल मीडिया से जुड़कर बौद्धिक विकास में अग्रणी बालक का स्वास्थ्य क्यों कमजोर है? शारीरिक विकास क्यों समुचित नहीं हैं? वातावरण से समन्वय क्यों नहीं हो पा रहा हैं? क्यों बालक की सहन शक्ति, तर्कशक्ति, धैर्य, दूरदर्शिता तुलनात्मक रूप से कम होती जा रही है?

यदि केवल विद्यालय ही बालक के सर्वांगीण विकास पर ध्यान देंगे तो काम नहीं चलेगा। घर, परिवार बच्चे की साधनपूर्ति तक सीमित हो गए हैं, उन्हें संस्कारवान, ज्ञानवान, क्षमतावान बनाना है तो चिन्तन करना आवश्यक है ताकि अच्छा राष्ट्र तैयार हो सके एवं बच्चों का जीवन श्रेष्ठ बन सके।

प्रधानाचार्य डाइट (सेवानिवृत्त)
बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़ (राज.)-312001
मो: 09461189254

नवनियुक्त शिक्षक को पत्र

❒ चैन राम शर्मा

प्रिय श्री हरीश

अत्र कुशल सब भाँति सुहाई।
तत्र कुशल राखै रघुराई।।

यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि तुम्हारी एक शिक्षक के रूप में नियुक्ति हो गई। बच्चों का भविष्य बनाने और सुधारने का सुअवसर मिला है। सुनकर मैं अपने बीते काल में चला गया।

विद्यालय के बरामदे में दुकान लगी हुई है। बच्चों का जमघट है। वे वस्तुओं को देखते हैं और मनपसन्द चीज उठा लेते हैं। न कोई किसी से मूल्य पूछता है और न कोई दाम लेने वाला है। बस सामने दीवार पर लगी हुई मूल्य सूची के अनुसार पैसा पास में पड़ी हुई गोलक में डाल देते हैं। प्रार्थना की घंटी बजी। सभी प्रार्थना सभा में पहुँच गए। सभा के पश्चात् गुरुजी ने आज की बिक्री का हिसाब प्रस्तुत किया और आय को छात्र बचत कोष में डालकर रजिस्टर में दर्ज कर लिया।

यह कोई कहानी या कल्पना नहीं अपितु एक प्रयोग था जो आशातीत सफल रहा। आरंभ में कुछ परिश्रम करना पड़ा। हम लोग और कुछ विद्यार्थी आते-जाते निगाह भी रखते थे कि कोई छात्र कुछ गड़बड़ी न कर दे। कभी-कभी ऐसा हो भी जाता तो छात्र को डाँटते-पीटते नहीं बल्कि भविष्य में ऐसा नहीं करने को प्रतिबद्ध करते। अब तो विद्यार्थी स्वयं ही यह कार्य करने लगे। कॉपियाँ, पेन, पेन्सिल, रबर एवं अन्य स्टेशनरी के अलावा गोली, बिस्किट, चॉकलेट, चबीना, नमकीन आदि भी बिकने लगे। माल छात्रों का, विक्रेता छात्र, क्रेता छात्र, मुनाफा छात्रों का, सत्रान्त में इतनी रकम जमा हो गई कि छात्रों ने स्वयं प्रस्ताव लेकर चित्तौड़, अजमेर, जयपुर और भरतपुर तक की यात्रा करना तय किया और हमने ग्रीष्मावकाश में उनकी इच्छानुसार भ्रमण करवाया।

इस प्रयोग द्वारा छात्रों को सत्य, ईमानदारी, परस्पर सहयोग, व्यापार कला, बचत और उसका महत्त्व एवं आपसी सद्भाव का पाठ पढ़ाकर उन्हें सुनागरिकता की राह दिखाई।

उपदेश देकर और पुस्तकें पढ़ाकर बच्चों को तब तक संस्कार युक्त नहीं बनाया जा सकता जब तक व्यावहारिक जीवन में अच्छी आदतों का समावेश न हो। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ बालकों में सद्गुणों का विकास हो सकता है, यदि शिक्षक अपने दायित्व का निर्वहन करे। स्वच्छता और स्वास्थ्य के साथ बालक के अनुशासन पर पूरा ध्यान दिया जाकर उसकी दिनचर्या को आदर्श बनाया जाय जिसमें उसके उठने-बैठने, सोने, जागने, पढ़ने-लिखने, खेलने-कूदने, खाने-पीने से लगाकर घर के कार्यों में सहयोग आदि का प्रसन्नता और रुचि के साथ समय का उपयोग करें। शिक्षण के बाद और शिक्षण के समय बच्चों में गुरुभक्ति, देशप्रेम, दृढ़प्रतिज्ञ, साहस, धैर्यवान, सच्चरित्र, अध्ययनशील, परोपकार आदि अनेकानेक मानवीय मूल्यों का बीजारोपण किया जाना चाहिए। साथ ही दूरदर्शन और दूरभाष का समुचित उपयोग बताना आवश्यक है।

बालक ईश्वर का रूप है। उसके हर क्रिया-कलाप में कोई न कोई विशिष्टता छिपी हुई है, यदि वह उच्छृंखल है तो उसमें खेल-व्यायाम की प्रतिभा है। उसके परिहास में साहित्यकार बैठा हुआ है। वह जिज्ञासु मननशील है तो वह एक अन्वेषक है। यदि वह शान्त स्वभाव का मितभाषी और गंभीर है तो वह सामाजिक चिंतक, संत और नेता के रूप में मार्गदर्शक है, यदि बालक अकेले में गुनगुनाता है तो वह भविष्य का संगीतज्ञ है। उसका जुझारूपन देश पर बलिदान होने का संकेत देता हैं, बालक सूरदास का कृष्ण है तो गोपियों के लिए रास रचैया है। वही आगे जाकर सुदामा का मित्र और महाभारत का योद्धा होगा।

बालक को सबसे पहले प्यार चाहिए। यदि उसे प्यार मिल गया तो वह अपने में समेटे हुए सर्व अवगुणों का आपके मनोवैज्ञानिक निर्देशन में त्याग कर देगा। और सत्यवादी, परोपकारी, अहिंसक और अपरिग्रही बनकर नए समाज के निर्माण में भागीदार बनेगा। रूठना-मनाना, झगड़ना और सुलह कर लेना और मित्रता-नाराजगी तो बालक के स्वाभाविक गुण है।

ऐसे क्रियाकलापों को विनोद-वार्ता से जोड़कर आपस में प्रगाढ़ प्रेम का रिश्ता कायम किया जा सकता है। खेल-खेल में हार जीत को सहर्ष स्वीकार करना सिखाकर ईर्ष्या, दंभ और अवसाद का दमन करते हुए बढ़ती उम्र में मैत्री का सम्बन्ध मजबूत करे।

अंत में यही कहूँगा कि बाल मन भोला और सच्चा होता है उसे प्रेम और विश्वास की जरूरत है जो शिक्षक द्वारा दिया जा सकता है। ये कुछ पंक्तियाँ बच्चों के लिए भेज रहा हूँ, जिनका अर्थ समझते हुए अनुकरण कर सके।

गाँव पोस्ट-चन्दसेरा,
जिला-उदयपुर (राज.) 313201
मो. 9001590541

सुनो बच्चो

हँसो, मुस्कराओ पर गुस्सा
कभी न मुख पर आने दो
चिंता को छोड़ो स्वयँ को
निद्रा में खो जाने दो।
जो कुछ मिल जाता है ले लो
पर लालच मत किया करो।
अपनी क्षमता के अनुसार
गरीबों को कुछ दिया करो।
पहियों पर दौड़ो कम पैरो
का उपयोग करो ज्यादा
खूब पढ़ो खेलो कूदो पर
टूट न पावे मर्यादा।
दूध, दही, घी खाओ
पेप्सी, कोला, फंटा दूर करो,
तरकारी, फल, नींबू के रस
का सेवन भरपूर करो।
नमक मिर्च कुछ कम कर दो
चीनी के बदले गुड़ खाओ,
घूँट-घूँट पानी पीओ
भोजन को चबा-चबा खाओ।
सुना करो ज्यादा, कम बोलो
सबसे ज्यादा मनन करो।
माता पिता की आज्ञा मानो।
सदा बड़ो को नमन करो।

विफलता सफलता से श्रेष्ठ शिक्षक है

❐ डॉ. सुभाष चन्द्र कस्वां

यदि व्यक्ति को जिन्दा रहना है तो उसे समय-समय पर मरने का भी अभ्यास करते रहना चाहिए। यह बात सुनने-पढ़ने में अजीब व डरावनी लगे पर जीवन को गतिमान व सुन्दर बनाने में इस बात का उतना ही महत्त्व है जितना जीवन में क्रंदन व उल्लास का। इस सच्चाई को हम सफलता व विफलता से जोड़कर भी देख सकते हैं क्योंकि विफलता ही सफलता का एहसास करवाती है। यदि राजा मिड्रास की तरह व्यक्ति को यह वरदान मिल जाता है कि किसी वस्तु को छूने से वह सोने में तब्दील हो जाएगी तब तो जीवन का कोई असली महत्त्व ही नहीं रहता। मनुष्य जीवन भी प्रकृति के उस पौधे के समान है जो तपिश, बाढ़, बवंडरों व प्यास की तड़फन को सह प्रस्फुटित होकर फल-फूल देने योग्य बनता है। यदि व्यक्ति विफल नहीं होता तब 'सफल' मात्र एक शब्द बन कर रह जाता है। इसकी खुशी व खूबसूरती की गैर मौजूदगी जीवन को रंगहीन बना डालती है।

बहुत से लोगों की यह आदत व मानसिकता बन जाती है कि यदि मुझे इस कार्य में सफलता नहीं मिलेगी तो लोग क्या कहेंगे? इस डरावने विचार को साथ लिए वे कुछ करने से कतराने लगते हैं। जिन्हें वे लोग अपने से कमजोर समझते हैं, उनको सीढ़ियों पर चढ़ते देख कामयाबी की ओर कदम बढ़ाने से उन्हें अपनी कमजोरी का पता लगता है और सोचते हैं कि मैं उनसे बेहतर कर सकता था। दुनिया के जितने भी प्रकृष्ट (श्रेष्ठ) पुरुष हुए हैं, जिनकी सफलता को देख हम चमत्कृत व प्रेरित होते हैं कि राहें भी कम मुश्किलों से भरी नहीं रही। विफलताएँ पग-पग पर उनके पैर पीछे खींचने में लगी हुई थी पर उनके पाँव आगे बढ़ने को उतावले थे उतना ही उनका दृढ़ मन उनको पाँवों को सहारा दे रहा था। ये लोग सामान्य लोगों से भी बदतर हालात में जिए हैं पर विफलताओं की परवाह किए बिना अपने ध्येय के प्रति हमेशा हिमालय की तरह अडिग रहे। विफलता ने उनकी जिंदगी में एक उत्प्रेरक (कैटेलिस्ट) की तरह काम किया। जिस प्रकार उत्प्रेरक की उपस्थिति किसी भी क्रिया में तेज गति ला देती है उसी प्रकार विफलता उन्हें तेजी से सफलता की तरफ खींचते ले गई। महान खिलाड़ी, लेखक, कलाकार, वैज्ञानिक, कवि, महान नेता, महान पुरुष वे सब जीवन की बड़ी विफलताओं के ही उत्पाद हैं। सन् 2018 में तियालिसवाँ (43वाँ) डेविस कप विजेता लिएंडर पेस का जीवन भी कम बाधाओं से भरा हुआ नहीं रहा। दिल की बीमारी, संक्रमण की मुश्किल, आर्थिक समस्याएँ, खेलों में पराजय व वैवाहिक जीवन में तकरार जैसी विफलताओं का सामना कर चवालीस की उम्र में उम्र की दीवार को तोड़ तियालीसवाँ (43वाँ) टेनिस डेविस कप आखिर जीत ही लिया। रवीन्द्र नाथ टैगोर को भी बाधाओं ने घसीटने का काम किया। पत्नी व पुत्र की मृत्यु ने दिल को दहला दिया पर अपने कार्य में लगे रहे। रवीन्द्र नाथ के साहित्य को आज भी विदेशों में ज्ञान व मनोरंजन बतौर पढ़ा जाता है। अमिताभ बच्चन की लम्बाई व उनकी आवाज फिल्म अभिनेता बनने की चाह को विफलता की कोठरी तक धकेलने का काम कर रही थी। फिल्म निर्माता शुरूआती दौर में उनकी परछाई से भी डरने लगे। अमिताभ ने हिम्मत नहीं हारी। बाद में उनकी फिल्में पर्दे पर उनका लाजवाब अभिनय बिखेरने लगी तो उन्हें महानायक की उपाधि भी बोनस के रूप में मिल गई। उनकी लम्बाई व आवाज ही उनकी सफलता की पगडंडी बनती गई।

दो बार नोबल पुरस्कार विजेता मैडम क्यूरी का जीवन भी रुकावटों से लबालब था। जिस समय में महिलाओं को पढ़ाया ही नहीं जाता था तब उच्च शिक्षा हासिल की। मैरी के पिता सामाजिक व्यक्ति थे। शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने की वजह से उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। परिवार को आर्थिक तंगी में जीने को विवश होना पड़ा। मैरी जब दस वर्ष की थी तभी उनकी माँ का निधन हो गया। मैरी ने ट्यूशन से कमाकर अपनी पढ़ाई पूरी की। फ्राँस के भौतिक शास्त्री पियरे क्यूरी से मैरी ने शादी की। रेडियो एक्टिविटी की अद्भुत खोज पर पति-पत्नी को 1903 में संयुक्त रूप से नोबल पुरस्कार मिला। 1906 में उन्हें जबरदस्त झटका लगा जब उनके पति की एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई। यह विडम्बना उनके लिए विफलता की ओर ले जाने का ही कार्य कर रही थी। मैडम क्यूरी ने अपने को सम्भाला व अपने प्रयोगों को जारी रखा। आगे चलकर 1913 में उन्हें रसायन में रेडियम के शुद्धिकरण और पोलोनियम की खोज के लिए नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मैरी विज्ञान जगत में दो बार नोबल पुरस्कार जीतने वाली शख्सियत बन गई।

अब्राहम लिंकन का जीवन भी डग-डग विफलताओं से ओत-प्रोत था। चुनाव दर चुनाव हारते गए। एक सदस्य के चुनाव से लेकर उप-राष्ट्रपति पद में उन्हें हार झेलनी पड़ी। हार से सबक सीखते रहे और अंत में अमेरिका के राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित हो गए। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम यदि अपनी विफलताओं से दोस्ती कर लेते तब शायद रामेश्वरम में एक नाव के मालिक ही बने रहते। विफलता के सम्बन्ध में कहा गया उनका यह कथन विफल लोगों के लिए प्रकाश दीप है- 'If you fail, never give up because fail means First Attempt In Learning' अर्थात् यदि आप असफल होते हैं तब पीछे मत हटो। असफल का अर्थ है सीखने का पहला प्रयत्न। महान वैज्ञानिक एडीसन अपने प्रयोगों में नौ सो निन्यानवें बार असफल हुए। उनके साथी उनके इस रवैये से किनारा कर गए। एडीसन विफलताओं से अपने प्रयोग अनुबंध बदलते गए व हजारवाँ प्रयोग आखिर उन्हें सफलता दिला ही गया।

प्रकृतिजन्य दर्द से उपजी बाधा का कोई विकल्प आसानी से नहीं मिलता। अक्सर वह दर्द विफलता के गर्त में धकेलने का ही काम करता है। उपुर्यक्त वर्णित उदाहरण उन व्यक्तियों के हैं जिन्हें प्रकृतिजन्य व मानव जनित बाधाओं से टकराना पड़ा। ऐसे बुरे समय में आशा, आस्था, लगन व मेहनत ही उनका सहारा थी जिसकी वजह से अपने प्रयोजन में सफल हो सके व संसार में लोगों के जीवन को सुगम व सुरम्य बनाने में भी कामयाब हुए। मेहनत, आस्था, लगन व आशा व्यक्ति के जीवन के चार ऐसे आश्रम हैं। जहाँ से गुजरा व्यक्ति बिना

भविष्यवाणी के भी सफल हो जाएगा। मानसून आने की मौसम विभाग की भविष्यवाणी सच हो या न हो लेकिन विफलताओं पर टिकी जीवन की निराशाएँ बार-बार के जतन से सफलता से रू-ब-रू करवाने में किसी भविष्यवाणी के इंतजार में वक्त जाया नहीं करती। अपनी क्षमता, शक्ति व गति के हिसाब से तय ध्येय को प्राप्त करने में अधिक बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ता। दूसरों की नकल कर व्यक्ति कुछ समय के लिए सफल हो सकता है, लेकिन जिंदगी में आगे नहीं बढ़ सकता।

अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में बैठने से पहले बहुत से अभ्यर्थी यह सोचकर अपने कदम पीछे हटा लेते हैं कि उनका अकादमिक कॅरियर उतना सुन्दर नहीं है जितना इस परीक्षा में चयनित होने वाले अभ्यर्थियों का। इस परीक्षा में उन अभ्यर्थियों ने भी सफलता प्राप्त की है जो अकादमिक परीक्षाओं में असफल भी हुए हैं। बहुत से विद्यार्थियों का अंक स्तर भी हल्का रहा है फिर भी प्रतियोगी परीक्षाओं में बाजी मार ही ले गए। अपने आपको कम आंकना भी विफलता का बड़ा कारक है। व्यक्ति अपने आपको यदि सफल नहीं देखना चाहता तो कम से कम उन व्यक्तियों को तो यह दिखा दे जो उसे विफल देखना चाहते हैं। सफलता का बड़ा एक रहस्य इस बात में भी छिपा है।

सफलता के लिए बेचैन रहना तथा मशीनी बनना भी कभी-कभी बड़ा खतरनाक साबित हो जाता है। यदि बेचैनी पाल लेते हैं तब मानसिक विकार आ जाता है। मशीनी बन जाते हैं तब संवेदनाएँ मर जाती है। सफलता पाना साधारण बात है पर संवेदनाएँ बेहद असाधारण। सफलता की खुशी के साथ हार का डर भी छिपा हुआ है। हार हावी होने से सफलता की व्यक्ति से दूरी बन जाती है। सफलता का दूसरा अर्थ जॉर्ज बर्नाड शॉ के अनुसार यह भी है कि- ''सफलता इसमें नहीं है कि कोई गलती न करे, बल्कि सफलता इसमें है कि आप वह गलती जीवन में कभी दोबारा न करें।'' विफलता कष्टदायक होती है। जीवन में अवसाद, निराशा व कुण्ठा की जननी विफलता ही है। पता नहीं वर्तमान की विफलता व्यक्ति को किस सुनहरे भविष्य के लिए तैयार कर रही है। सही बात तो यह है कि विफलताओं की कसौटी पर ही मनुष्य के धैर्य और साहस की परख होती है। इस कसौटी पर खरा उतरने वाला वास्तव में सच्चा पुरुषार्थी है। एक-दो बार की विफलताओं से कभी स्वयं का मूल्यांकन करना सही नहीं है। पता नहीं अलग प्रयास सफलता की बाट जो रहा हो। प्रसिद्ध कवि टेनिसन ने इस संबंध में कहा है- 'Yet for a man fail in duty towice. And the third time may prosper get thee hence' अर्थात् एक व्यक्ति अपने कर्त्तव्य में दो बार विफल हो सकता है। तीसरी दफा वह सफलता पा भी सकता है। सफलता का असली रहस्य किसी पाठशाला, शिक्षक व विश्वविद्यालय में नहीं छिपा हुआ है। विफलता ही सफलता से मिलाप करवाती है। इसलिए यह युक्ति- 'Failure is better Teacher Than Success' अर्थात् विफलता सफलता के श्रेष्ठ शिक्षक है। यह बात आज भी उतनी सटीक है जितनी उसकी रचना के समय।

पुत्र श्री हनुमान सिंह कस्वां
ग्राम पो. हेतमसर, वाया-नूँआ, झुंझुनूं-333041
मो: 9460841575

शिक्षा : आवश्यक संस्कार

❒ विनोद पानेरी

हर किसी के जीवन मे शिक्षा एक आवश्यक संस्कार है। शिक्षा जीवन के विभिन्न चरणों में अलग-अलग भूमिका निभाती है। इसलिए जरूरी है कि हम शिक्षकों के महत्त्व को जानें और उनके द्वारा दिए हुए सबक का पालन करें। छात्र सलाह और मार्गदर्शन के लिए शिक्षक पर निर्भर होते हैं। छात्र को जीवन का सही पथ चुनने और भविष्य निर्माण में एक शिक्षक की भागीदारी बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। आज के युग में गुरु और शिक्षक के अलग-अलग भावार्थ निकाल लिए गए हैं।

पुरातन काल का गुरु कालान्तर में शिक्षक बनकर रह गया है लेकिन इसकी महत्ता आज भी वही है। वैसे तो शिक्षक का अर्थ शिक्षा देनेवाला होता है लेकिन यह केवल शाब्दिक अर्थ ही है। शिक्षक छात्र में वह सब क्षमताएँ पैदा करता है जिससे वह अपने जीवन में निरन्तर प्रगति करता रहे और देश व समाज के लिए गौरव का प्रतीक बने। एक छात्र शिक्षक के हाथ में जब आता है तब वह उस कोरे कागज या गीली मिट्टी की तरह होता है जिस पर कोई आकार या स्वरूप नहीं होता है। शिक्षक के हाथ मे ही बालक के जीवन की रूपरेखा तैयार होकर उसमें विविध तरह के रंग उकेरे जाते हैं।

शिक्षक के पास बालकों के मन को टटोलने और उन्हें उन्नत करने की कला होती है। उसमें वह कौशल होता है जिससे प्रत्येक छात्र की क्षमता का अवलोकन करता है और उसी के अनुसार वह प्रत्येक बालक को उसकी रुचि और क्षमता के अनुसार शिक्षा ग्रहण करने में मदद करता है। व्यवहार, नैतिकता, संस्कार और कौशल के साथ पुस्तकीय ज्ञान शिक्षक ही बालक को सहजता से सीखा सकता है। समय की पाबन्दी और समय का सदुपयोग कैसे करना है ये संस्कार शिक्षक ही बालकों में भर सकता है। संस्कृत में कहा गया है।

चैतन्यः शाश्वतः शान्तो व्योमातीतो निरंजनः।
बिन्दुनाद कलातीतः तस्मै श्रीगुरवै नमः।।

अर्थात् - उस महान गुरु के लिए सादर अभिवादन, जो हर पल दीप्तिमान हैं, शाश्वत, अन्तराल से परे, बेदाग और प्रकट और अप्रकट से परे हैं।

किसी भी देश का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर ही निर्भर करता है। भारतीय संस्कृति में शिक्षा का महत्त्व अनादिकाल से समझा गया है। आज के वातावरण में हर अभिभावक अपने बालक को अच्छे से अच्छे शिक्षण संस्थान में प्रवेश दिलाने की चाह रखता है। इसके पीछे उसकी भावना यही रहती है कि वह अपने बालक में छिपी प्रतिभा को तराश कर उसके जीवन को ऊँचाइयों तक ले जाए। यही भाव शिक्षा की गरिमा और महत्ता को प्रतिपादित करते हैं। इतिहास गवाह है कि सफल व्यक्ति के पीछे गुरु का हाथ रहा है। महाभारत के अर्जुन का उदाहरण है जिन्होंने गुरु के सहयोग और आशीर्वाद से ही सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर की उपाधि प्राप्त की। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो गुरु की महिमा का गुणगान करते हैं। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् जन्म दिवस पर होने वाले शिक्षकों के अभिनन्दन दिवस पर समस्त शिक्षकों के चरणों में कोटि-कोटि नमन, वन्दन।

वरिष्ठ शा.शि.
रा.बा.उ.मा.वि., बागीदौरा, बाँसवाड़ा
मो: 9414722665

समाज निर्माण में अभिभावकों का योगदान

❒ सुशीला चौधरी

शिक्षा का अस्तित्व समाज से है और शिक्षित समाज का अस्तित्व शिक्षा से। दोनों एक दूसरे को जीवित रखते हैं, दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। यदि समाज न होता तो शिक्षा किसे व कौन देता? अतः मनुष्य ने विकसित बुद्धि का उपयोग कर शिक्षा को जन्म दिया है तो शिक्षा ने उसे जीवन जीने योग्य बनाकर शिक्षित समाज का निर्माण किया। माता के गर्भ से ही बालक की शिक्षा का आरंभ हो जाता है और बालक के जन्म लेने के आठ दस माह बाद अभिभावकों द्वारा उसकी अनौपचारिक शिक्षा शुरू हो जाती है। इसी कारण परिवार को प्रथम पाठशाला कहा जाता है। जब तक बालक विद्यालय में प्रवेश नहीं लेता तब तक उसकी शिक्षा अभिभावकों द्वारा चलती रहती है। विद्यालय में प्रवेश लेते ही अभिभावक शिक्षक को यह जिम्मेदारी सौंप अपने आपको मुक्त समझ लेता है। यहीं से शिक्षा एक पक्षीय हो जाती है अतः शिक्षित समाज का निर्माण बाधित हो जाता है।

शिक्षित समाज का तात्पर्य है समाज का प्रत्येक व्यक्ति पढ़ा लिखा हो उसमें भला, बुरा समझने की शक्ति हो, वह अपने सद्गुणों से युक्त हो समाज के निर्माण में अपना सहयोग देता हो। स्वावलम्बी हो, संवैधानिक अधिकार व कर्त्तव्य का पालन करता हो। इसी उत्तम शिक्षा से स्वस्थ सम्पन्न व शिक्षित समाज का निर्माण होता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की प्राथमिक संस्था यू.एन.डी.पी. की रिपोर्ट में भारत को विकासशील देश की श्रेणी में रखा है। उसके अनुसार भारत में साक्षरता का 74 प्रतिशत है, भारत के नागरिकों की औसत आयु 68 वर्ष है।

प्रति व्यक्ति प्रतिमाह आय 5238/- है। रिपोर्ट के अनुसार भारत विश्व में 100वें स्थान पर आता है। उक्त आँकड़ों के अलावा भारत में गरीबी की रेखा से नीचे जीवन जीने वाली जनसंख्या सर्वाधिक है। शिक्षित बेरोजगारों की संख्या 22 करोड़ है। यह परिदृश्य है विकास शील भारत का। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा पर ध्यान तो दिया गया पर उसे पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। संविधान में शिक्षा धारा 45 के अनुसार 6 से 11 वर्ष तक के बालकों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा को तत्काल लागू किया गया होता तो बहुत वर्ष पहले भारतीय समाज शिक्षित हो जाता तथा अनेक समस्याएँ जन्म ही न लेती। अतः शिक्षित समाज के निर्माण के लिए बहुत प्रयास व कठिन परिश्रम किया जाना शेष है।

सरकारें बालकों को शिक्षित करने की योजनाएँ बनाती हैं, जो विद्यालय में लागू की जाती है। शिक्षक व अभिभावक उन योजनाओं के क्रियान्वन में अपनी भूमिका निभाते हैं। अतः सबसे अधिक जिम्मेदारी शिक्षक व अभिभावक की हो जाती है। देश के अधिकांश नागरिकों की यह मान्यता, यह भावना दृढ़ हो गई है कि शिक्षा योजना बनाने का काम सरकार का है, शिक्षा देने का काम शिक्षक का है। माता-पिता का काम बालक को विद्यालय पहुँचाना है, शेष काम शिक्षक करें। यहीं से गलत सोच का निर्माण हो जाता है और अभिभावक अपने कर्त्तव्य को पूरा समझ लेता है। अभिभावक का काम है सुविधा व जरूरतें पूरी करने के साथ बच्चों को पर्याप्त समय देना, समझ देना, श्रम करना, सहयोग देना तथा सुसंस्कारित करना। बालक की प्रगति देखना, विद्यालय से नियमित सम्पर्क बनाए रखना।

ज्ञात है कि शिक्षा व्यवस्था में संस्कार, शिक्षक व अभिभावक की सहभागिता आवश्यक व अनिवार्य है। यह बात सर्वविदित है कि चौबीस घंटों में से अधिकतर समय बालक माता पिता के साथ रहता है अतः उन्हें उनका दायित्व शिक्षक के दायित्व के समान बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस संबंध में अनेक शोधकर्त्ताओं ने शोध कर निष्कर्ष निकाला है कि जिन अभिभावकों द्वारा बच्चों को पर्याप्त समय देकर देखभाल की गई साधन जुटाए गए, सुसंस्कारित कर श्रेष्ठ कार्यों के लिए प्रेरणा दी गई, असामाजिक कार्यों से सतर्क किया गया, देशभक्ति समझाई गई, भाषा, गणित, तकनीकी अध्यात्म व मूल्य शिक्षा पर जोर दिया गया। उनके बच्चे सुयोग्य व प्रतिभावान बने।

अतः अभिभावकों को चाहिए कि बच्चों पर अधिक धन खर्च करने के स्थान पर उनके साथ अधिक समय बिताए। अभिभावकों को उक्त समझ व सहयोग देने हेतु विभाग ने अभिभावक शिक्षक बैठकों के आयोजन की व्यवस्था की है पर समझदार अभिभावक ही इसका लाभ लेते हैं। इन बैठकों में बालकों की शिक्षा-व्यक्तित्व व्यवहार पर बातें होती हैं पर अभिभावको के दायित्व के संबंध में विचारों का आदान-प्रदान कम ही होता है।

सुशिक्षित समाज के निर्माण में अभिभावकों के अनेक दायित्व हैं जिनमें बालकों के साथ अधिकांश समय बिताना, साधन सुविधाएँ जुटाना, प्यार देना, असामाजिक व अवांछित कार्यों के प्रति सर्तक करना, समझ व कौशल विकसित करना, अध्यापक को सहयोग देना व लेना, देशभक्ति जगाना, राष्ट्रीय सम्पत्ति की सुरक्षा की जानकारी देना, सामाजिकता के गुणों का विकास करना, चरित्रवान बनाना, परिवार में स्वस्थ व सुखद वातावरण बनाए रखना, की विज्ञान व तकनीकी की उचित जानकारी देना, ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा कर बालक से निकटता बढ़ा कर उसे प्रोत्साहित करना प्रमुख हैं।

आजकल अभिभावक शिक्षा की उपलब्धि प्राप्त अंकों के प्रतिशत को मानते हैं। यह अनुचित है। अतः इससे बालक का समग्र मूल्यांकन नही किया जा सकता।

निष्कर्ष यही है कि शिक्षित समाज के निर्माण में अभिभावक अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाकर अध्यापक के साथ सहभागी बने तो शिक्षा के लक्ष्य को सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है।

E-53, कान्ता खूतिरया कॉलोनी
डी.पी.एस.के पास, बीकानेर (राज.)
मो.9602442645

***दूसरों के साथ
वह व्यवहार न करो
जो तुम्हें अपने लिए पसन्द नहीं।***

सृजन का रहस्य

❒ छाजूलाल जांगिड़

यह शरीर रूपी रथ, जिसको इन्द्रियों के घोड़े खींच रहे हैं, मन रूपी सारथी इस पर बैठा-बैठा हाँक रहा है। यह सारथी 'मन' बड़ा ही चंचल है। इसकी चंचलता की समता की जाए तो चपला से की जा सकती है। जिस प्रकार मेघाच्छादित नभ में दामिनी क्षण भर में एक घन से दूसरे घन में चमक जाती है, उसी प्रकार प्रकाश की गति से भी तीव्र यह मन देश-देशान्तरों का भ्रमण कर आता है। यह बड़ा ही चलायमान है। इन्द्रियों पर इसका अधिकार है। परन्तु इस पर तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण सम्बन्धी वृत्तियों का अधिकार होता है। ये वृत्तियाँ जैसा भी आदेश देती हैं, वैसा ही कार्य यह मानव मन करता है।

यदा-कदा जीवन में ऐसे भी क्षण आते हैं जिनमें यह चंचल मन चिन्तन और मनन के सुरम्य कक्ष में विश्राम करता है। जिस प्रकार दही के मन्थन से घृत रूपी रत्न की उपलब्धि होती है उसी प्रकार मन मन्थन से नवीन विचारों, सुकुमार भावों की उत्पत्ति होती है। जब यह मन परिस्थितियों से आबद्ध हो जाता है या कैद कर लिया जाता है तो अपनी मुक्ति, चिन्तन और मनन के योग से करता है।

चिन्तन मन को एकाग्रता की स्थिति में ला देता है। इसके बाद की स्थिति मनन की आती है। मनन मानव की वह स्थिति है, जिसमें सुने हुए वाक्यों या बात पर बार-बार विचार किया जाता है तथा शंका समाधान द्वारा उसका निश्चय किया जाता है। चिन्तन और मनन के पश्चात् जब विचार या भाव लिखने या व्यक्त करने के लिए मनःस्थिति बनती है तो सृजन का जन्म होता है। चिन्तन और मनन के गहरे जल में डूबकी मारकर जब मन बाहर आता है तो निर्मल हो जाता है। निर्मल मन से सृजन में निखार आता है। जिस विषय पर जितना अधिक चिन्तन और मनन किया जाता है वह उतनी ही गहराई लिए हुए होता है। कोई भी अच्छी रचना बिना चिन्तन और मनन के बन जाए यह असम्भव है।

जीवन-संग्राम में मानव परिस्थितियों से संघर्ष करता है। सुख और दुःख की घड़ियों में कई प्रकार की अनुभूतियाँ प्राप्त करता है। सोने को आग में जितना अधिक गर्म किया जाता है उतनी ही अधिक निखार लेता है। यही स्थिति मानव मन की है। परिस्थितियों की गर्म आंच में इसको जितना अधिक तपाया जाता है तो मानव का मन उतना ही उज्ज्वल होता है।

इस मन की स्थिति बड़ी विचित्र है। वह किसी विशेष गुण या अवगुण से ग्रसित रहता है। एक मनुष्य ऐसा होता है जिसको दो कड़वी बात कहते ही विषैले सर्प की तरह फुंकार मारता है। दूसरा व्यक्ति उसी बात पर हल्की सी मुस्कान अपने होठों पर बिखेर कर उत्तर देता है। किसी अबोध प्राणी की हत्या जब दयालु व्यक्ति के समक्ष की जाती है तो वह दयार्द्र हो जाता है। बधिक का मन कतई विचलित नहीं होता। ये मानव मन के विविध रूप हैं। दयालु, झगड़ालु, कृपालु, शंकालु, ईर्ष्यालु न मालुम कितने प्रकार के प्राणियों की रचना उस ब्रह्मा ने की है। मोटे तौर पर दो ही प्रकार के मानव अधिक देखने को मिलते है। सरस दिल और पत्थर दिल। जिसका हृदय अनेक रसों से ओत-प्रोत रहता है, वह स्पंज की तरह होता है। उसमें रस समाया रहता है।

भाव और विचारों की दृष्टि से सोचें तो भी मनुष्य दो प्रकार के ही मिलेंगे। पहला भावुक और दूसरा विचारशील। जिसके दिल में भावना अधिक होती है, वह भावुक होता है। ऐसे व्यक्ति अधिकतर कवि-हृदयी होते हैं। किसी करुणा प्रधान दृश्य को जब वे देखते हैं तो उनके नयनों से अश्रुकण टपकने लगते है। कविता के दो शब्द भी मुखरित हो जाते हैं। भावुक व्यक्ति में हृदय तत्व अधिक होता है। वह एकांकी होता है। विचारशील व्यक्ति अच्छे आलोचक और लेखक होते हैं। उनके मन पर मस्तिष्क का अधिकार होता है। ऐसे व्यक्ति चिन्तन और मनन के बाद ही अपनी रचना करते है। वैसे दोनों प्रकार के व्यक्तियों को अच्छी अनुभूति होती है।

हमारी रचना में यदि अनुभूति अधिक होती है तो वह सत्य से ओत-प्रोत होती है। उसमें यथार्थ जीवन का चिन्तन होता है। अनुभूति के साथ-साथ यदि हमारा चिन्तन और मनन भी उसमें जुड़ा हुआ है तो वह खरे सोने के समान शुद्ध होती है। लेकिन यह भी बात है कि कल्पना बिना भी रचना नहीं बन पाती। कल्पना मानव-मन की उड़ान है। जिस प्रकार पक्षी अन्तरिक्ष में पंख की सहायता से उड़ान भरता है, मन भी कल्पना के पंख के सहारे उड़ान भरता है। कल्पना वह शक्ति है जो अन्तःकरण में नई और अनूठी वस्तुओं का स्वरूप उपस्थित करती है। सब की कल्पना समान नहीं होती है। विश्व के जितने भी मनुष्य हैं, उनकी कल्पना भी भिन्न-भिन्न होती है। कल्पना की सीमा भी नहीं होती है इसीलिए तो कहा गया है कि 'जहाँ पहुँचे न रवि, वहाँ पहुँचे कवि'। कल्पना सच्ची भी हो सकती है और झूठी भी। उस परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिए जिसने मानव को कल्पना के लोक में विचरण करने के लिए क्षमता प्रदान की है।

अनादि काल से मानव जो साहित्य का सृजन करता आ रहा है वह कल्पना का ही योग है। बिना कल्पना किए जो लेखक अनुभूत सत्य को अपने शब्दों में बांध देता है तो वह यथार्थ रचना बन जाती है। लेख या कविता में यदि अनूठा ही दृश्य उपस्थित कर दिया जाता है तो कल्पना का ही चमत्कार होता है। चिन्तन और मनन बिना भी कल्पना नहीं हो सकती। कल्पना के लिए चिन्तन और मनन करना पड़ता है। जब अनुभूति ही नहीं होगी तो चिन्तन और मनन नहीं होगा। तरह-तरह की बन्दूकों की मार अलग-अलग दूरी तक होती है, उसी तरह भिन्न-भिन्न लोगों की कल्पना भी कम व अधिक होती है। कल्पना किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने का विकल्प है। जिसका सम्बन्ध बुद्धि से है। मन्द बुद्धि वाला व्यक्ति कल्पना कम ही कर पाता है। तीव्र बुद्धि वाले व्यक्ति की कल्पना का यान तेज उड़ान भरता है। सृजन के लिए चिन्तन, मनन, कल्पना और अनुभूति सभी का मिश्रण अच्छा रहता है। इनके बिना सृजन का विसर्जन हो जाता है।

सेवानिवृत व्याख्याता
घूमचक्कर, नवलगढ़
मो. 9461661412

अभिव्यक्ति कौशल का विकास : बाल सभा

❒ सुमन सिंह

शिक्षा त्रिकोणायामी प्रक्रिया है। शिक्षक शिक्षार्थी और समाज इस त्रिकोण की तीन भुजाएँ हैं। इनका सम व सुदृढ़ होना अत्यावश्यक है। एक भुजा के कमजोर होने पर शिक्षा का लक्ष्य अप्राप्य रह जाता है। पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त कराना शिक्षा का उद्‌देश्य नहीं है। ज्ञान को व्यावहारिक रूप प्रदान कर बालक के सुन्दर बहुआयामी व्यक्तित्त्व का विकास इसके साथ-साथ चलता है। परिवार शिक्षा की प्रथम अनौपचारिक पाठशाला है, तो माता प्रथम गुरु। औपचारिक शिक्षा योग्य अवस्था हो जाने पर शिशु को जब विद्यालय भेजा जाता है तो उसे ज्ञान के साथ व्यक्तित्व निर्माण का मौका भी मिलता है। उस वातावरण में समायोजित होने का शिशु प्रयास करता है। शिशु को समायोजित करने में शिक्षक अपनी मुख्य भूमिका के साथ अनेक भूमिकाएँ निभाता है, तब बालक अपने आपको नए परिवेश में ढाल पाता है। समस्या आने पर शिक्षक माता-पिता से सम्पर्क करता है, उद्‌देश्य यही होता है बालक के व्यक्तित्व, उसकी आदतें, व्यवहार, दिनचर्या, खूबियाँ, कमियाँ जिनसे वह अनजान रह गया है उनकी जानकारी प्राप्त करना। यहाँ वह गाइड की भूमिका निभाता है।

शिक्षा सदा से ही बालकेन्द्रित रही है। औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ अनौपचारिक शिक्षा का गुप्त क्रम भी शुरू हो जाता है। शिक्षण के दौरान शिक्षक बालक के नजदीक आता है प्रश्न पूछता है, उत्तर देने पर पुनर्बलन करता है न देने पर उसे उत्तर देने में सहायता करता है, उसकी व्यक्तिगत स्वच्छता देखता है, उसे अनुशासन सिखाता है, प्रार्थना सिखाता है, व्यायाम करवाता है, प्रार्थना में अखबार पढ़ने, सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करता है। यही से बालक के आन्तरिक व बाह्य व्यक्तित्व को गढ़ने का सिलसिला शुरू हो जाता है। यही गतिविधियों जब सामूहिक मंच पर एक साथ आयोजित की जाती है तो बाल-सभा का रूप ले लेती हैं।

बाल सभा बालक के बहुमुखी व्यक्तित्व निर्माण व विकास का आधार है। अब तक ये

सभाएँ विद्यालय की चहार दीवारी में आयोजित की जाती थी। विद्यालय के वार्षिकोत्सव के रूप में विद्यार्थियों को प्रस्तुतियाँ देने का अवसर मिलता है पर इसे प्रर्याप्त नहीं कहा जा सकता। इस उत्सव में गिने चूने विद्यार्थी सहभागी बन पाते हैं, कहीं यह उत्सव आयोजित हो पाता है, कहीं नहीं। अभिभावक, बालक, शिक्षक जनप्रतिनिधि इसमें सम्मिलित होते हैं। इसी प्रकार पूर्व में आन्तरिक मूल्यांकन नामक गतिविधि विद्यालय में संचालित की जाती थी जिसमें विद्यार्थी को एक शारीरिक व एक संरचनात्मक गतिविधि में भाग लेना होता था। समय परिवर्तन के प्रवाह में यह गतिविधियाँ मृतप्रायः हो गई। इनमें ही नव जीवन का संचार करने की एक नई पहल है, सार्वजनिक स्थानों पर प्रति शनिवार बाल सभाओं का आयोजन।

अभिव्यक्ति कौशल का विकास- बाल सभाओं का मुख्य उद्‌देश्य बालक के अभिव्यक्ति कौशल का विकास करना है। इनमें अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना, स्मरण शक्ति का विकास करना, आत्मविश्वास जगा उसमें वृद्धि करना, रंगमंच का भय दूर करना, सौन्दर्यानुभूति व उसकी अभिव्यक्ति करना, संकोच दूर करना, नेतृत्व क्षमता विकसित करना, आत्म प्रदर्शन में वृद्धि करना, मानवीय मूल्यों को स्थाई रूप से जगाना, संस्कार निर्माण करना, भविष्य निर्धारण करना, नए गुणों को विकसित करना, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा जगाना सम्मिलित है।

सामुदायिक व सामाजिक जुड़ाव - इन सभाओं का आयोजन परम्परा निर्वाह के साथ सामुदायिक व सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा देना है। शहर, गाँव, ढाणी के विद्यालय जब सार्वजनिक स्थानों पर सभाएँ आयोजित करते है तो समाज व समुदाय विद्यालय और शिक्षा की ओर आकृष्ट हो जाते हैं। शिक्षा की महत्ता समझाने की उन्हें आवश्यकता नहीं होती। अपने बच्चे की शैक्षिक गतिविधि व उत्सव गतिविधि देखने के लिए जब महिलाएँ, बच्चें, युवा, वृद्ध, अभिभावक, समाजसेवी, जन प्रतिनिधि अपने आप पहुँच जाते हैं तो शिक्षा से उनका लगाव व जुड़ाव सहज हो जाता है, विद्यालय को भामाशाह मिल जाते हैं। इन सभाओं द्वारा जनसमुदाय व शिक्षक के बीच की दूरी समाप्त हो, अपनापन स्थापित हो जाता है। विद्यालय को सामुदायिक सहयोग मिलता है, सामाजिक सौहार्द्र व समरसता बढ़ती है तथा शिक्षा के प्रति सामाजिक संवेदनशीलता का स्तर भी बढ़ जाता है जन प्रतिनिधियों, सामान्य जन को जब सम्मान प्राप्त होता है तो शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है जो समाज व राष्ट्र के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शैक्षिक वातावरण निर्माण-शिक्षा को इस नई पहल से शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों में गुणात्मक सुधार तो होता ही है साथ ही राजकीय विद्यालयों की नामांकन अभिवृद्धि भी होती है। राजकीय विद्यालयों की लोकप्रियता बिना प्रयास निःशुल्क बढ़ती है।

समाज की सभ्यता संस्कृति के आदान-प्रदान की वाहिका-इन बालसभाओं में मास विशेष में आने वाले महापुरुषों, उत्सवों, दिवसों, लोकपर्वों राष्ट्रीय पर्वों का जब आयोजन होता है, तो बालक को सभ्यता, संस्कृति की जानकारी मिलती है। वह देशप्रेम, देशभक्ति, देश में चल रहे सामाजिक मुद्‌दों से रूबरू होता है। उसके सामान्य ज्ञान की वृद्धि होती है।

इस प्रकार शनिवारीय बाल सभाएँ बालक, शिक्षक व समुदाय में नई उमंग, नई ऊर्जा, नए उत्साह का संचार कर विद्यालय में आनन्ददायी वातावरण का निर्माण करने में सहायक होती है, आवश्यकता है, इस पहल में नए रंग भर, बहुरंगी बनाने की।

(से.नि.) उप निदेशक शिक्षा
E-53, खतूरिया कॉलोनी, बीकानेर
मो. 9413725779

तू राख्यौ उरझाई रे....

❒ डॉ. मूलचन्द बोहरा

करीब छह सैंकड़ा पहले कबीर जी इस दुनिया में आए। आए तो ऐसे आए कि दुनियाभर में छा गए। वे पहले ऐसे कवि थे, जो कवि कम संत ज्यादा, सुधारक उससे भी ज्यादा और क्रांतिकारी व पाखंड पर खरी-खरी सुनाने वाले सबसे ज्यादा। उन्हें पढ़ते-सुनते लगता ही नहीं है कि कबीर को इस धरती पर आए-इतने बरस हो गए। यूं लगता है, वे आज भी हमें ऊटपटांग का आचार-विचार छोड़ और सहज-साफ सुथरा बेलौस, बिंदास जीवन जीने की बात कह रहे हैं। उनकी कही बात सीधे कलेजे में उतरती है। वे कहते हैं-

सतगुरु सांचा सूरमा, सबद जु बाह्या एक।
लागत ही में मिलया, पड़ै कलेजे छेक।

उनकी बातें सीधी दिल में उतरती हैं। उनकी बातों में कहीं दुराव-छिपाव या उलझाव नहीं है। वे पंडितों-ज्ञानियों को सावचेत करते हुए बार-बार कहते हैं- ''मैं कहता सुरझावनहारि-तू राख्यौ उरझाई रे''। वे इसलिए अनपढ़ होते हुए भी सबसे अधिक पढ़े गए, समझे और सराहे गए। उनकी यही शैली शिक्षण प्रक्रिया में भी बहुत कारगर सिद्ध हुई है। उनका कथन-कहन सम्प्रेषण शैली का नायाब नमूना है।

कहना-सुनना एक सामाजिक प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया में समाज के सभी घटकों की बराबर भागीदारी रहती है। वह चाहे डॉक्टर हो, व्यापारी हो, किसान हो या फिर शिक्षक सभी के लिए इस प्रक्रिया में निष्णात होना बहुत जरूरी है। चूंकि शिक्षक सतत् रूप से ज्ञान का आदान-प्रदान करता है। अतः उसका इस प्रक्रिया में पारंगत होना बहुत जरूरी है। उसे अपनी बात सीधे तौर पर कहने की कला आनी चाहिए।

यह प्रक्रिया शिक्षण और परामर्श का महत्त्वपूर्ण घटक है। इस घटक में सम्प्रेषणकर्त्ता और सम्प्रेषण ग्रहणकर्त्ता दोनों को सक्रिय और सचेष्ट रहना होता है। यह प्रक्रिया परस्पर अन्यान्याश्रित है। कुछ इस तरह यह प्रक्रिया सम्पादित होती है

सम्प्रेषणकर्त्ता ---- ग्रहणकर्त्ता
ग्रहणकर्त्ता ---- सम्प्रेषणकर्त्ता

सम्प्रेषण एक प्रकार की मौखिक अभिव्यक्ति है। परन्तु मौखिक अभिव्यक्ति पूर्ण सम्प्रेषण नहीं है। मात्र शब्द ही मौखिक अभिव्यक्ति या सम्प्रेषण नहीं है बल्कि शब्दों के अलावा मौखिक अभिव्यक्ति के निम्न आयाम हैं-

क. चेहरे के हाव-भाव जैसे कि मुस्कुराहट, गुस्सा, नेत्र गतियाँ, भावों का उठाव, होठों का काटना, सक्रिय अथवा निष्क्रिय भाव।
ख. शारीरिक गतियाँ हाव-भाव भाषा (Body language)
ग. आवाज की गुणवत्ता उतार-चढ़ाव, शब्दों पर जोर देकर बोलना या उन में बीच में स्थान रखना, भाषा, ठहराव, प्रवाह, मौन आदि।

हमें बातचीत में समग्र रूप से मौखिक अभिव्यक्ति के इन सभी पहलुओं को दृष्टिगत रखना होता है, परन्तु वास्तविकता यह है कि प्रायः हम इन सब आयामों की अनदेखी करते हैं। परिणामस्वरूप हमारी बात निष्प्रभावी बन जाती है। आइए, कुछ उदाहरणों के जरिए इस मसले को समझने का प्रयास करते हैं-

पहली बातचीत-परिवार के सदस्य (पिता-पुत्र) के साथ

बेटा-पापा! शाम को पाँच बजे आ जाना। मुझे बैडमिंटन खेलने जाना है। मुझे कॉक भी....

पिता-हाँ, मैं आ जाऊँगा। पिता ने पूरी बात सुने बिना ही कह दिया, 'आ जाऊँगा।'

हुआ यूँ कि बेटे ने पिता से खेलने के लिए कॉक मँगाई थी और यह बात पिता ने सुनी नहीं।

इस तरह समय पर पहुँचकर भी पिता के पहुँचने का असली मकसद पूरा नहीं हुआ।

दूसरी बातचीत-दो दोस्तों के बीच (फोन पर)

दोस्त-(क) - मैं शंकर बोल रहा हूँ।

(ख) - हाँ - हाँ, बोलो

(क) - अच्छा, बताओ, वो वाला काम हो गया क्या?

(ख) - हाँ कल ही हो गया था। आज आ जाना और ले जाना।

अब प्रश्न यह उठता है कि काम था कौनसा?

यह न तो दोस्त 'क' ने बताया और न 'ख' ने। फलतः 'क' ने कुछ पैसों के प्रबन्ध की बात की थी और 'ख' ले आया बकरी का दूध, जो कभी 'क' ने अपनी दादी की पैर-मालिश के लिए मँगवाया था।

अब यह सुनना होते हुए भी सही मायने में सुनना न हुआ, क्योंकि जिस प्रयोजन से बात की गई थी, वह प्रयोजन सफल नहीं हुआ।

स्कूली बच्चों के साथ बातचीत

शिक्षण के दौरान अक्सर हमारी बातचीत बच्चों के साथ होती है। कई बार बच्चे प्रश्न, प्रति प्रश्न करते हैं और कई बार हम उन से प्रश्न करते हैं। एक बातचीत का अंश देखिए-

परीक्षा हॉल। छात्रा पुष्पा परीक्षा दे रही है। 'क' शिक्षक की ड्यूटी उस कक्षा में बतौर वीक्षक लगी हुई है। पुष्पा 'क' की शिष्या है।

पुष्पा परीक्षा के दौरान इधर-उधर देखती है। 'क' को लगता है कि पुष्पा नकल मारने का प्रयास कर रही है। वीक्षक को इस पर गुस्सा आ जाता है, क्योंकि उसे पुष्पा का नकल मारना गवारा नहीं है।

'क' गुस्से में तमतमाते हुए शिष्या पुष्पा को डाँटता है। वह कोई खास जवाबी प्रतिक्रिया व्यक्त न कर सिर्फ इतना ही कहती है- कि 'मैं आपकी शिष्या हूँ।'

यह सुनकर 'क' को और गुस्सा आ जाता है।

'क' - ''क्या मेरी शिष्या हो, इसलिए नकल मारोगी। मुझे बदनाम करोगी। मेरी शिष्या बनकर नकल के बारे में सोचती भी हो, तो मेरे लिए डूब मरने की बात है। मुझे शिक्षण और गुरु कार्य पर अफसोस है।''

पुष्पा न कुछ बोली और न कोई अन्य प्रतिक्रिया दी।

परीक्षा समाप्त होने पर वह शिक्षक 'क' के पास आई और बोली-

'सर' मैं जो कुछ कहना चाहती थी या कहा था, वो आपने सुना ही नहीं।'

तब तक 'क' भी संयत हो चुके थे।

कहा-'अब, बोलो'।

पुष्पा-''सर! मैंने कहा था कि मैं आपकी शिष्या होकर ऐसा काम (नकल मारना) कदापि नहीं कर सकती। मैं सचमुच में नकल नहीं मार रही थी, सर', आपको ऐसे ही कुछ लग गया होगा।''

अब सही-सही न सुनने के कारण सही-सही प्रतिक्रिया भी नहीं हुई। बेमतलब बात का बतंगड़ बन गया। अनायास ही किसी को बेइज्जती झेलनी पड़ी।

अब ऊपर तीन स्थितियाँ वर्णित हुई हैं, जिनमें सुनने की प्रक्रिया पूरी तरह से ठीक नहीं हुई परिणामस्वरूप प्रतिक्रिया भी ठीक नहीं हुई।

पहली स्थिति में सुनने के दौरान जो अन्तराल रह, उसके कारण निम्नानुसार थे-

(क) जल्दबाजी

(ख) पूर्वाग्रह

(ग) लापरवाही

(घ) अधैर्य

दूसरी स्थिति : यहाँ ठीक-ठीक न तो सुनना हुआ और न प्रतिक्रिया। इसके कारण कुछ भिन्न थे, जो इस प्रकार हैं-

(क) प्रति प्रश्न न पूछना (दोनों तरफ)

(ख) जल्दबाजी

(ग) अभिधा प्रयोग के स्थान पर व्यंजना पर जोर

(घ) प्रयत्न लाघव

तीसरी स्थिति : सुनना और प्रतिक्रिया में दोषपूर्ण स्थिति बनने के कारण कुछ तो पूर्व स्थिति वाले थे और कुछ भिन्न थे-

(क) पूर्वाग्रह

(ख) परस्पर संवाद के लिए प्रतिकूल परिस्थितियाँ

(ग) नियम-कायदों का ऊहा-पोह

मनोवैज्ञानिकों ने सार रूप में सुनना प्रतिक्रिया के पाँच रूप बताए हैं-EISPU

E-मूल्यांकन-जिसमें हम एक-दूसरे का मूल्यांकन करते हुए उसे बुरा या अच्छा बताते हैं। कई बार इसके कारण भी गिनाते हैं।

I-व्याख्यात्मक - इसमें परस्पर विस्तार से वार्तालाप किया जाता है।

S-प्रोत्साहन - उत्साहवर्द्धन के लिए की गई टिप्पणी इसके अन्तर्गत आती है।

P- गहन जाँच पड़ताल (Probing) कोई प्रतिक्रिया देते समय गहन जाँच-पड़ताल करना अपेक्षित रहता है। इससे प्रतिक्रिया सही रूप में व्यक्त होती है।

U-समझ

शिक्षक-शिक्षार्थी की पूरी समस्या समझकर अन्त में जो बात कहता है, उसे इस श्रेणी में रखा जाता है। इस संबंध में थार्नडाईक ने प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धांत दिया है। उनका मानना है कि सीखने की प्रक्रिया में शारीरिक और मानसिक क्रियाओं का किसी न किसी मात्रा में संबंध होता है। इसी से जब किसी व्यक्ति के समक्ष किसी परिस्थिति में कोई उद्दीपन होता है तो उद्दीपन व्यक्ति को किसी विशेष प्रतिक्रिया के लिए प्रेरित करता है। यदि उद्दीपन के प्रति अनुक्रिया सुखद होती है तो वह उसे पुनः दोहराता है। इससे उसे संतोष मिलता है और पुनः पुनः दोहराकर वह उस व्यवहार को सीख लेता है। यदि उद्दीपन की प्रतिक्रिया दुखद होती है तो उसे नहीं दोहराया जाता और उसे नहीं सीखा जाता अर्थात् उद्दीपन अनुक्रिया के बीच गहरा संबंध होता है।

आमतौर पर इन पाँच चरणों में लोग अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, जो गलत है। (इसी क्रम में) अगर इन चरणों को उलटे क्रम में रख दिया जाए, तो शिक्षण व्यवहार के अच्छे परिणाम आ सकते हैं। हमारा दैनिक व्यवहार आए दिन होने वाले बेबात के झगड़े इन चरणों के पालन नहीं करने से होते हैं। ऊपर तीन स्थितियों में हम इस तथ्य को भलीभाँति समझ चुके हैं।

भाषा सम्प्रेषण का एक आंशिक माध्यम है। पूर्ण सम्प्रेषण में भाषा के साथ-साथ सम्प्रेषण के अन्य आयामों को समझना होगा। हमने/आप ने देखा होगा कि बच्चा जो अभी बोल पाने में सक्षम नहीं हुआ है, फिर भी आपको सम्प्रेषित करता है। कैसे? रोकर, हँसकर, सोकर आदि। बच्चे के रोते ही माँ समझ जाती है कि अब उसे दूध पिलाना है। तो एक तरह से उसका रोना ही उसके लिए 'भूख लगी है' कहने के लिए प्रयुक्त होता है। हमें सम्प्रेषण की इस शुरूआती समझ को आधार बनाकर अपने सम्प्रेषण को सुधारना है। इसके कुछ मुख्य बिन्दु इस प्रकार हो सकते हैं-

1. भाषा प्रयोग करते समय शब्दानुरूप हाव-भाव का प्रकटीकरण हो, ऐसा प्रयास करना चाहिए। भाषा सहज और सरल हो। भाषा में स्तर को ध्यान में रखते हुए दुहरे अर्थवाची शब्दों से बचा जाए।

2. सम्प्रेषणकर्त्ता को अभिमुखीकरण में दक्ष होना चाहिए उसे अपने आपको स्पष्ट रूप से प्रकट करने की दक्षता हासिल होनी चाहिए।

3. सम्प्रेषणकर्त्ता ग्रहणकर्त्ता को आदर देवें। असहमति होते हुए भी उसकी बातों को ध्यान से सुनें।

4. सम्प्रेषणकर्त्ता को गैर मौखिक व्यवहार के प्रति सचेष्ट रहना चाहिए जैसे स्पर्श, मुस्कान, नेत्र विक्षेप, मिलन आदि।

5. मौखिक अभिव्यक्ति में सकारात्मक पक्ष को उभारना सम्प्रेषणकर्त्ता के लिए जरूरी है। हम अक्सर बच्चों को कहते हैं-' आजकल तुम टीवी बहुत देख रहे हो।' यह कहने की बजाय हमें कहना चाहिए। आजकल पढ़ाई का समय कुछ कम हो रहा है, इस तरफ भी ध्यान देवें।''

6. ग्रहणकर्त्ता के साथ इस प्रकार पेश आएँ कि वह किसी भी तरह की गलतफहमी होने पर प्रतिप्रश्न कर सकें। उसके लिए सवाल-जवाब का सौहार्द्रपूर्ण वातावरण तैयार किया जाए।

कुल मिलाकर कहना यह है कि बात हम सबके पास है, जानकारी भी है, पर उसे कहने का सलीका नहीं है। कभी हम उस पर पांडित्य की परत चढ़ा देते हैं, तो कभी उसे बेतरतीब भाषाई उपमाओं में उलझा देते हैं। कुंवरनारायण के शब्दों में बात की चूड़ी मार देते हैं, फिर वह कसने में ही नहीं आती। अतः बात कहते समय सदैव सुलझाव का भाव रखा जाना चाहिए। मीर ने इसी बात को बहुत कम शब्दों में कहा हैं :-

देखिए गुफ्तार की खूबी कि जो उसने कहा हमने ये समझा कि गोया वो भी मेरे दिल में था।

यहाँ गुफ्तार का अर्थ बातचीत, संवाद, अन्तःक्रिया संप्रेषण सभी कुछ है। हालांकि यह गुफ्तार की खूबी आती कहाँ से है? यह ठीक-ठीक बताया नहीं जा सकता है या उसके क्या-क्या तत्त्व हो सकते हैं कि कहने वालों की बात को ग्रहणकर्त्ता तक इस तरह हूबहू पहुँचा दे कि उसे लगने लगे कि वह आपकी ही बात कर रहा है। हाँ, यह खूबी सतत् प्रयास और अभ्यास से हासिल की जा सकती है, जिन सबका जिक्र हमने ऊपर किया है।

2ए-34, मुरलीधर व्यास नगर विस्तार, बीकानेर
मो. 09414031502

किशोरावस्था : बच्चों से सामंजस्य

❐ आकांक्षा शर्मा

चाहिए हमको न केवल ज्ञान,
देवता है माँगते कुछ स्नेह, कुछ बलिदान,
मोम-सी कोई मुलायम चीज
ताप पाकर जो उठे मन में पसीज-पसीज
प्राण के झुलसे विपिन में
फूल कुछ सुकुमार
ज्ञान के मरु में सुकोमल भावना की धार।

-दिनकर

कवि दिनकर जी की ये पंक्तियाँ मानसिक एवं भावात्मक विकास के सामंजस्य को लक्ष्य कर कही गई है जिसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है किशोरावस्था में प्रवेश करते बच्चों को। जब बच्चे किशोर अवस्था में आते हैं तो उनमें बहुत से परिवर्तन एकाएक आते हैं, मनोवैज्ञानिक इस अवस्था को सबसे अधिक संवेदनशील एवं खतरनाक मानते हुए कहते हैं कि इस अवस्था में जो परिवर्तन आते हैं वे एकदम छलांग मार कर आते हैं अतः बच्चे अपने अन्दर आए इन शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक परिवर्तनों को देखकर स्वयं को भी कई बार समझ नहीं पाते एवं तनावग्रस्त हो जाते हैं। अतएव ऐसी अवस्था में माता-पिता व शिक्षकों का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है।

माता-पिता भी कई बार अपने बच्चों में आए इन परिवर्तनों को, उनकी अवस्था की स्वाभाविकता को न समझकर एवं किशोर आयु के बच्चों के मनोविज्ञान की जानकारी के अभाव में तनावग्रस्त हो जाते हैं परिणामस्वरूप घर का वातावरण सहज नहीं रह पाता, बोझिल हो जाता है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि बच्चा जब बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर अग्रसर होने लगता है तो अपने अन्दर आए परिवर्तनों को देखकर वह अपने आपको पूर्ण वयस्क समझने लगता है और उसी भाँति व्यवहार करने लगता है। माता-पिता और अन्य परिवार जन के साथ शिक्षकों की भी उससे अपेक्षाएँ बढ़ जाती है और कई बार जब हम उसके साथ बच्चों की भाँति पेश आते हैं तो उसे बुरा लगने लगता है। वह यह निर्णय नहीं कर पाता कि आखिर वह उम्र के किस दौर से गुजर रहा है? जिसमें वह यह तय नहीं कर पाता कि स्वयं को बड़ा माने या बच्चा? वहीं बच्चा जो क्षण भर के लिए आपसे दूर नहीं होना चाहता था, जो अपनी छोटी-से-छोटी खुशी को और छोटी-से-छोटी पीड़ा को आपसे बाँटे बिना नहीं रहता था वह एकाएक अपने आनन्द के क्षण और पीड़ा के क्षणों में निजता की चाह कैसे करने लगा है?

माता-पिता की अपेक्षा उसे अपने हम उम्र सार्थियों के साथ घूमना, बातें करना अधिक भाने लगता है। पर ये सब बातें कोई अस्वाभाविक भी नहीं हैं।

नेतृत्व की प्रवृत्ति किशोर वय के बालकों में विकसित होने लगती है अतः वह परिवार में अपने निर्णय स्वयं लेने की जिद कर बैठते हैं। हाँ फिर चाहे उनका वह निर्णय उनके लिए सही हो अथवा नहीं। इन सब बातों के अलावा आपने पाया होगा कि बढ़ती उम्र के इन बच्चों का व्यवहार किसी न किसी आदर्श के अनुरूप होने लगता है फिर वह आदर्श कोई फिल्मी अभिनेता हो या क्रिकेट खिलाड़ी या कोई अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति।

किसी कवि ने एक किशोर अवस्था के बालक को दृष्टि में रखकर उसमें आए परिवर्तनों को कितने सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त किया है-

उमंग है मन में,
नए सपने हैं,
लड़कपन अलविदा हो रहा है,
अधखिले सुमन की सुगंध से,
परिचय हो रहा है।
अपनी धुन में छुप-छुप गीत गुनगुनाते हैं,
अचानक ही बिन कारण बीच में,
चुप-चुप रह जाते हैं,
सामना होता है जब तो कह देते हैं।
ये गीत कितना अच्छा,
या शरमा कर चुप रह जाते हैं,
सुध नहीं रहती जब बातों का
सिलसिला चलता है।
कुछ नया सुहाना अपनापन लगता है
इस अपनेपन का कोई नामकरण
नहीं हो रहा है,
अजीब-सी उलझन है,
यह किस बंधन से परिचय हो रहा है?

हम यदि अपने बच्चों के समझने के साथ-साथ उनमें हो रहे विकास एवं परिवर्तनों को प्राकृतिक तौर पर लें तो हम भी सहज और प्रसन्न रह सकते हैं और बच्चों के स्वाभाविक विकास में सहयोगी भी बन सकते हैं।

अपने बच्चों से हम निसंदेह बहुत प्यार करते हैं किन्तु अधिक लाड़-प्यार और स्वच्छन्दता देना उन्हीं बच्चों के लिए घातक हो सकता है इसलिए अपने बच्चों में अनुशासन व नियमित स्वास्थ्यप्रद आदतों का विकास बाल्यावस्था से ही प्रारंभ कर दें। बालकों में अच्छी आदतों का विकास हो इसके लिए आवश्यक है कि माता-पिता भी अपना जीवन अनुशासित ढंग से जिए।

जल्दी उठना और जल्दी सोना जैसी आदतें, व्यायाम की आदतें, भोजन सम्बन्धी आदतें एवं बड़ों के प्रति सम्मान की प्रवृत्ति बच्चों के समक्ष स्वयं आदर्श उदाहरण बन कर सिखाई जा सकती है।

बात-बात पर बच्चों को उपदेश देने से बच्चों पर आपके उपदेशों का प्रभाव कम होने लगता है अतः हमें सर्वप्रथम स्वयं की आदतों एवं प्रवृत्तियों को भी नियंत्रित करना होगा। जैसे यदि किसी बालक के पिता स्वयं जरदा, तम्बाकू या अन्य नशीले पदार्थ का सेवन करते हैं तो उनके किशोर बालकों पर निश्चित रूप से इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा और बहुत ज्यादा संभावना है कि वह भी आगे चलकर नशीले पदार्थों का आदी हो जाए।

जिन घरों पर माता-पिता बहुत लड़ाई-झगड़ा और मारपीट करते हैं उसका भी बुरा असर बालकों के कोमल मन पर पड़ता है ऐसे बच्चे या तो बहुत हिंसक और अपराधी बन जाते हैं या फिर बहुत संकोची या दब्बू। इन सब बातों का आप सभी ध्यान रखें कि घर का वातावरण बच्चों के विकास में कहीं बाधक नहीं बन जाए। यहाँ मैं आपको एक बात और कहना चाहूँगी कि आज समाज में किशोर आयु वर्ग के बच्चों में बढ़ता तनाव व डिप्रेशन का आँकड़ा चौंकाने वाला होने लगा है।

मनोचिकित्सकों के घर पर मरीजों की भीड़ का बढ़ना हमारे समाज में एक खतरे का संकेत है। यदि हम गौर से सोचे तो इसके पीछे हमारा अपने मूल्यों, परम्पराओं एवं अपने प्राचीन विश्वासों से हटना मूल कारण के रूप में उभर कर आता है।

संयुक्त परिवारों का विघटन होना भी एक प्रमुख कारण है। पहले बुजुर्ग लोग मनोचिकित्सक की भूमिका निभाते थे। बच्चों को घर पर अकेलापन महसूस ही नहीं होता था और जाने-अनजाने में ही नैतिक शिक्षा व चारित्रिक शिक्षा भी उन्हें मिल जाती थी।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे चरित्रवान बने, जिम्मेदार बने तो हमें पुनः संयुक्त परिवार की ओर लौटना होगा। दूसरी बात हमें अपने बच्चों पर विश्वास करना सीखना होगा। उसमें आत्मविश्वास जाग्रत करने के लिए उसे घर के छोटे-बड़े उत्तरदायित्व सौंपने होंगे ताकि उसे अपने आत्मसम्मान की अनुभूति आनन्दित कर सके। इसके अतिरिक्त माता-पिता को अपनी अपेक्षाओं को भी बच्चों पर नहीं थोपना चाहिए, बच्चे की क्षमता, योग्यता एवं रुचि को ध्यान में रख कर ही हम उसे सही विषय चयन का मार्ग बता सकते हैं।

सभी बच्चों का स्तर एक जैसा नहीं होता अतः कभी भी बच्चों में तुलना न करें। हम ये तो चाहते हैं कि हमारे बच्चे चरित्रवान बने, संस्कारवान बनें, हिंसक न बने लेकिन कैसे? ये हम नहीं जानते। वैसे तो आज के संदर्भ में ये बड़ा जटिल प्रश्न है किन्तु फिर भी हम इस दिशा में प्रयास कर सकते हैं। इसके लिए हमें हमारे बच्चों को प्रकृति व संगीत से जोड़ना होगा। हमारे आर्ष ऋषि इस संदर्भ में बड़े जागरूक थे।

प्राचीन काल में गुरुकुल में बच्चों को केवल किताबी ज्ञान नहीं दिया जाता था बल्कि उन्हें प्रकृति से जोड़कर शिक्षा दी जाती थी इसीलिए बच्चे स्वस्थ, सबल और चरित्रवान बनते थे तो हमें भी बच्चों को अपने पर्यावरण, प्रकृति, संगीत, नैतिक कहानियों एवं जीवनियों के माध्यम से शिक्षा देने का प्रयास करना होगा।

बच्चों के साथ माता-पिता को जरूरत से ज्यादा सख़्त न बन कर उनके बीच सामंजस्य करने की चेष्टा करनी चाहिए। ताकि बच्चे आपकी उपस्थिति से भयभीत न होकर सहज रह सके और दिल से आपका सम्मान कर सके। ये तो आप सभी जानते भी हो और मानते भी होंगे कि आज का युग वैज्ञानिक उन्नति के शिखर पर है ऐसे में कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के स्मार्ट क्लासेज में पढ़ने वाले हमारे बच्चों का बौद्धिक स्तर भी काफी तेज है इसलिए यदि हम चाहते हैं कि हम अपने बच्चों के साथ सामंजस्य बिठा सकें तो यह जरूरी है कि हमें अपने को समय के साथ कदम मिला कर चलना सीखना होगा। स्वयं भी अपडेट रहने का प्रयास करें ताकि हमें हीनभावना से ग्रसित न होना पड़े।

कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों को घूमने या पिकनिक पर ले जाए हो सके तो उनके साथियों को भी साथ लेकर ताकि उनके साथियों के बारे में भी जानकारी प्राप्त हो सके और आप अपने बच्चों के मित्र बन सकें।

अपने ज्ञान को अधिकाधिक बढ़ाए, समाचार पत्र एवं अच्छा साहित्य पढ़े ताकि आपके किशोर वय में प्रवेश करते बच्चे भी आपकी प्रेरणा से अच्छे साहित्य की ओर उन्मुख हो सके। ये तो आप जानते ही हैं कि अच्छे साहित्य से अच्छा मित्र संसार में और कोई नहीं अतः अपने किशोर आयु के बच्चों को आप उनके जन्मदिन पर कोई भी प्रेरणादायी जीवनियाँ एवं अच्छे साहित्य को उपहार स्वरूप दे सकते हैं।

ये उम्र की उलझन वाला वो समय है जिसमें बंधन तो हैं किन्तु स्वच्छन्द आकाश में परिंदों की भाँति उड़ने की व्याकुलता भी हम अपने किशोरवय के बालक-बालिकाओं में पाते हैं। बड़ी विचित्र और दुविधाओं से भरी इस अवस्था में क्या आप अपने बच्चों को समझने का प्रयास करेंगे?

क्या आप अपने किशोर वय की ओर कदम बढ़ाते बच्चों के माता-पिता होते हुए भी उनके मित्र बनने की चेष्टा करेंगे?

हाँ, ये ही एक पथ है जिस पर चलकर आप अपने बच्चों को अपने से दूर नहीं बल्कि पहले से भी अधिक नजदीक पाएँगे और आप पाएँगे कि आपके बच्चे और आपके बीच की वह अदृश्य दीवार कैसे स्वतः ही ढह जाएगी।

प्राध्यापिका (हिन्दी)
1 जी 7, आर.एच.बी. कॉलोनी,
कुन्हाड़ी, कोटा (राज.)
मो: 9460388594

कार्य के दबाव को कुछ ऐसे सँभालें

किसी भी क्षेत्र में जिम्मेदारी के पद पर कार्य की अधीरता एक नित्यप्रति का सत्य है, जिसका व्यक्ति को सामना करना ही पड़ता है। यदि इसका निपटारा सही ढंग से नहीं किया गया तो बोझ बढ़ता जाता है और गहरे तनाव की स्थिति बनने लगती है, जो सोचने की शक्ति को कुंद कर सकती है तथा किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति ला सकती है। ऐसे में कार्य प्रभावी ढंग से बिना अनावश्यक तनाव के कैसे निपटे, इसके कुछ सूत्रों की चर्चा यहाँ की जा रही है।

मानकर चलें कि आप सब कुछ नहीं कर सकते – काम के बोझ का दबाव सोचने की शक्ति को कुंद कर देता है

योजना बनाने के लिए दें पर्याप्त समय – किसी भी कार्य को अंजाम देने के लिए सही योजना बनाना महत्त्वपूर्ण होता है।

प्राथमिकताओं पर रहे ध्यान केंद्रित – कार्य के दबाव से निपटने के लिए कार्यों की प्राथमिकता का बोध महत्त्वपूर्ण होता है।

विघ्नकारी तत्त्वों से रहें सावधान – आज के युग में स्मार्टफोन और सोशल मीडिया एक बहुत बड़े विघ्न के रूप में सामने हैं।

ऑफिस एवं घर-परिवार के संतुलन का रहे ध्यान – घर-परिवार और कार्यक्षेत्र अर्थात ऑफिस के बीच संतुलन रखना महत्त्वपूर्ण होता है।

कई काम एक साथ करने से बचें – बहुत सारे काम एक साथ अपने हाथ में न लें।

अपने उत्साह एवं ऊर्जा को बनाए रखें – कार्य के दबाव के मध्य मन की दृढ़ता एवं आंतरिक उत्साह-विश्वास बहुत मायने रखते हैं, जिन्हें हर हालात में बनाए रखने का प्रयास करें। ऐसे कारकों से बचें, जिनसे इनका क्षय होता हो। अपने आशा-उत्साह को बनाए रखना सकारात्मक सोच के आधार पर संभव होता है। कार्य के दबाव के बीच छोटे-छोटे ब्रेक लिए जा सकते हैं। एक-डेढ़ घंटे के बाद कुछ मिनट और सप्ताह में एक दिन का ब्रेक तन-मन की ऊर्जा को नवीनता देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ई-लर्निंग

❒ रानू सिंह

आज हम संचार क्रांति के युग में जी रहे हैं। संचार साधन मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। कम्प्यूटर इस संचार क्रांति का सम्राट कहा जाता है, इसका पूरी दुनियाँ पर एक छत्र राज्य है। इसने पूरी दुनियाँ अपनी मुट्ठी में कर इसे वैश्विक ग्राम बना दिया है। शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी, समाज की समस्त शाखाएँ व क्षेत्र, सभी संस्थाएँ इसका उपयोग कर लाभ ले रहे हैं। सोशल लर्निंग, एम. लर्निंग, माइक्रो लर्निंग, ई लाइब्रेरी, ई लर्निंग जैसी अवधारणाओं ने तत्काल जन्म लिया और तत्काल पनप भी गई।

इनटरनेट के माध्य से सूचनाओं का भण्डार बहुत तेजी से बढ़ रहा है। मनुष्य जीवन के सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी व सूचना सोशल मीडिया के ई-हॉस्पिटल, ई-मार्केटिंग, ई-शापिंग, ई-बैंकिंग, ई-बुकिंग, ई-रिजर्वेशन, ई-गवर्नेंस, ई-साइन फ्रेमवर्क के रूप में आसानी से उपलब्ध हैं। इसने मनुष्य जीवन को बहुत अधिक सुविधाजनक बनाकर रोगिल भी कर दिया है। शिक्षा के क्षेत्र में ई-लर्निंग ने शिक्षा को सर्व सुलभ व लोकप्रिय बना दिया है। इलेक्ट्रोनिक माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने को ई-लर्निंग अर्थात ई-अधिगम कहा जाता है। अब तक शिक्षा का पारम्परिक साधन शिक्षक, पुस्तकें, पुस्तकालय, विद्यालय को माना जाता था। ई-लर्निंग ने इन दीवारों को तोड़कर अपनी नई पहचान व नया स्थान स्थापित किया है। इस प्रकार ई-लर्निंग अध्ययन का वह तकनीकी माध्यम है जो स्मार्ट डिवाइस, डेस्कटॉप, लेपटॉप, मोबाइल से इन्टरनेट द्वारा शिक्षा देता है। इसके माध्यम से औपचारिक, अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षाएँ काल, स्थान, देश, विदेश की सीमाओं को लाँघ चुकी हैं। यह अध्ययन ई-क्लास रूम, पार्क, घर, विद्यालय कक्ष यहाँ तक कि यात्रा के मध्य भी किया जा सकता है।

सूचनाओं के सम्प्रेषण की गति जितनी तेज हुई है, अधिगम की गति भी उतनी ही तेज हो गई है। इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करने की कोई अवस्था नहीं होती उक्त को ई-लर्निंग ने सार्थक

व प्रमाणित कर दिया है। इससे शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ गई है। इससे विश्व में हो रही नवाचार व रचनात्मक को बढ़ावा मिल रहा है। इससे प्राप्त होने वाले लाभ इस प्रकार हैं-

शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों को ज्ञान व प्रशिक्षण आसानी से उपलब्ध हो रहा है। इसका सर्वाधिक उपयोग, मुक्त विद्यालय, दूरस्थ शिक्षा, महाविद्यालय तथा सभी विषयों की ऑफ कैम्पस लर्निंग में लाभदायी सिद्ध हो रहा है। यह विद्यार्थी की रुचि बढ़ाने के साथ उसे नवाचार के लिए भी प्रेरित करता है। यह विद्यार्थी के पढ़ने व लिखने के कौशल को बढ़ावा देने में बहुत सहायक है।

> *गाँधी जी ने चरखे को अपने जीवन में बहुत अहमियत दी। वे कहते थे कि खाद्यान्न तो किसान पैदा कर ही लेता है, यदि वह चरखे से अपना कपड़ा भी बुन ले तो वह आत्मनिर्भर हो सकता है। गांधी जी ने लोगों से चरखा चलाने के लिए केवल उन्हें मौखिक उपदेश ही नहीं दिए, बल्कि अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में नियमित रूप से चरखे से सूत कातना भी उन्होंने प्रारंभ किया। उनके इस कार्य का इतना व्यापक असर हुआ कि उनके सभी अनुयायी भी नियमित रूप से सूत कातने लगे।*

ई-लर्निंग स्वतंत्र रूप से अधिगम व रचनात्मक कार्य करने, विचार करने की क्रिया को विकसित करती है। ई-लर्निंग से विद्यार्थी, मनोवैज्ञानिक व बौद्धिक रूप से शक्तिशाली बनता है, आई. क्यू. का स्तर कम होने पर वह शिक्षक की प्रताड़ना से तीन ग्रंथि का शिकार नहीं बन पाता। पावर पाइंट प्रेजन्टेशन, ई-लर्निंग को प्रभावशाली व गुणवत्तापूर्ण बनाने का सशक्त माध्यम है। यह है ई-लर्निंग का सकारात्मक पक्ष। ई-लर्निंग की कमियों को इस प्रकार प्रकाशित किया गया है-

यदि शिक्षार्थी की दिनचर्या नियमित है, तभी वह इसका पूर्ण लाभ प्राप्त कर सकता है। दिनचर्या अनियमित होने पर अधिगम बाधित होने की संभावना बढ़ जाती है। इसमें मात्र जानकारी व सूचनाएँ प्राप्त होती है, ज्ञान बढ़ाया जा सकता है पर अधिगम की नींव मजबूत नहीं की जा सकती। किसी विद्यार्थी को यह विधि थकावट पूर्ण व उबाऊ लग सकती है, इससे उसे अरुचि उत्पन्न हो सकती है। यदि उपकरणों के उपयोग में शिक्षार्थी कुशल नहीं है तो उसे पेज खोजने, बनाने में कठिनाई हो सकती है। तकनीकी उपकरणों के पुराने होने व इंटरनेट की गति धीमी होने पर अधिगम में व्यवधान पड़ सकता है। इसके माध्यम से प्राप्त जानकारी, सूचनाएँ व ज्ञान प्रामाणिक नहीं होता है, अतः हानि संभावित हो सकती है। इसमें समूह चर्चा का लाभ प्राप्त नहीं होता। तकनीकी व्यवधान की संभावना भी अधिक होती है। शिक्षार्थी मानवीय संवदेनाओं से भू विहीन हो जाता है, कभी कभी तो तकनीकी ज्ञान व शिक्षा उसके अहंकार में वृद्धि भी कर देती है। शिक्षार्थी यदि अपनी जिज्ञासा को सहेज न सकें तो वह समाप्त प्राय हो जाती है।

ई-लर्निंग के दोनों पक्षों को दृष्टिगत रखते हुए इसको महत्त्व को कम नहीं माना जा सकता। अतः ई-लर्निंग का उपयोग व चलन शिक्षार्थी को अधुनातन होने का गौरव प्रदान करने के साथ-साथ उसकी एक अलग छवि का निर्माण तो करता ही है।

महेश्वरी गर्ल्स सी. सै. स्कूल
सिंघीजी का रास्ता, चौड़ा रास्ता, जयपुर
(राज.)-302003
मो: 8278615657

बधिरान्ध बालकों का शैक्षिक उन्नयन

❒ डॉ. योगेन्द्र सिंह नरुका 'फुलेता'

बधिरान्ध-बालक हम उसे कहते हैं जो बधिर होने के साथ-साथ दृष्टि बाधित भी होता है। यह आवश्यक नहीं कि वह पूर्णतः बधिर या दृष्टि बाधित हो, कुछ मामलों में कुछ बधिरान्ध में कुछ-कुछ सुनने की क्षमता होती है तो कुछ में कुछ-कुछ देखने की क्षमता होती है। जन्म से ही पूर्ण रूप से बधिरान्ध होने के मामले प्रायः बहुत ही कम देखने को मिलते हैं।

ऐसी दोहरी संवेदी हानि से ग्रसित बालकों का शैक्षणिक प्रबन्धन सामान्य बालकों व एकल संवेदी दिव्यांगता के साथ नहीं किया जा सकता। ऐसे बालकों के लिए विशेष शैक्षणिक व्यवस्था करनी होती है जो बिना घर, परिवार, अभिभावकों व विशेष शिक्षकों के सम्भव नहीं है।

बधिरान्ध बालकों के अभिभावक व विशेष शिक्षकों को धैर्य की अपार आवश्यकता होती है क्योंकि जितनी मेहनत वो करते हैं उसके परिणाम बहुत अल्प ही आते हैं।

एकल संवेदी हानि वाले बालक यानि केवल श्रवण बाधित बधिर या केवल दृष्टि बाधित बालक को तो विशेष शिक्षक द्वारा आसानी से समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत उसका शैक्षणिक प्रबन्धन किया जा सकता है। क्योंकि वहाँ केवल एक ही समस्या रहती है, श्रवण बाधित देख सकता है तो उसे लिखकर, हाथों के ईशारों से बहुत कुछ सीखाया, समझाया जा सकता है। दृष्टि बाधित सुन सकता है, तो उसे सुनाकर व ब्रेल लिपि के माध्यम से बहुत कुछ सीखाया जा सकता है लेकिन जहाँ बालक दोहरी संवेदी हानि से ग्रसित है वहाँ स्थिति चुनौतिपूर्ण हो जाती है क्योंकि वहाँ ना बालक सुन सकता है और ना ही देख सकता है। ऐसे में उसका शैक्षिक प्रबन्धन करना जटिल हो जाता है।

आइए जानते हैं बधिरान्ध बालकों का शैक्षिक प्रबन्धन कैसे होता है-

बधिरान्ध शिक्षार्थी को प्रत्येक क्षण शैक्षिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन ऐसा नहीं हैं कि इन्हें शिक्षण से वंचित कर दिया जाए या इन्हें शिक्षित नहीं किया जा सकता हो। प्रसिद्ध दिव्यांग हेलन केलर सफल बधिरान्ध

का उदाहरण है। वही अमिताभ बच्चन व रानी मुखर्जी की फिल्म 'ब्लैक' में भी इस दिव्यांगता का परिचय तथा इसके शिक्षण कौशल का परिचय करवाया गया है।

बधिरान्ध बालकों को शिक्षण प्रदान करने से पूर्व सर्वप्रथम विशेष शिक्षक अपने आपसे प्रश्नोत्तर कर ले कि-मैं बधिरान्ध बालकों की प्रत्येक समस्या का हल भावनात्मक रूप से धैर्य के साथ करने को तैयार हूँ। अपने आसपास की समस्त जानकारियाँ एकत्र करके बधिरान्ध की मदद कर सकता हूँ। मैं दूसरों के साथ उसे वार्तालाप करने योग्य बना सकता हूँ या सहायता कर सकता हूँ। इसके बाद बधिरान्ध बालकों की गतिविधि आधारित इंटरैक्शन कौशल आते हैं जिसमें हाथ से हाथ की तकनीक (स्पर्श शिक्षा) का अभ्यास महत्त्वपूर्ण है इसी तकनीक के माध्यम से आप एक बधिरान्ध की बात समझ सकते हैं उसे अपनी बात समझा सकते हैं। ऐसे बालकों से सिमुलेशन व्यायाम भी कराए जा सकते हैं जिसमें बटन छटनी और इंटर लॉकिंग पहेली महत्त्वपूर्ण है। हाथ से हाथ की तकनीक के द्वारा कुछ इस तरह के हावभाव, क्रियाएँ, संकेत सिखाने चाहिए जिससे उसका दैनिक कार्य आसानी से हो जाए। छड़ी की मदद से उसे चलना सीखाना चाहिए जिससे की निर्बाध रूप से वह घूम फिर सके, अपना जरूरी कार्य बिना किसी की सहायता से कर सके।

बधिरान्ध के लिए कुछ उपकरण इस तरह से डिजाइन किए जाने चाहिए जिससे वह आकार-प्रकार व वस्तु की समझ पैदा कर सके। प्रत्येक मनुष्य, जानवर की विशेष गन्ध होती है, उसे गन्ध को पहचानने का प्रशिक्षण भी देना चाहिए जिससे की वह गन्ध के आधार पर किसी की पहचान करने में सक्षम हो सके। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य, जानवर, वस्तु का एक विशेष आकार-प्रकार होता है, उसे स्पर्श करने देना चाहिए, उसी के आधार पर वो किसी को पहचान पाएगा। यह नोट करना चाहिए कि वो अपने अभिभावकों, परिचितों, बेडरूम, रसोईघर आदि को पहचानने के बाद क्या प्रतिक्रयाएँ करता है। कमरे में किसी के आने व जाने की कोई प्रतिक्रिया वो कर पाता है, महसूस कर पाता है आदि।

आजकल कम्प्यूटर तकनीक आधारित कई ऐसे गजेट्स आ गए हैं जो बधिरान्ध के लिए महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। विशेष शिक्षक को कम्प्यूटर तकनीकी आधारित प्रशिक्षण भी अपने बधिरान्ध शिक्षार्थी को प्रदान करना चाहिए।

बधिरान्ध को सीखाने के लिए विशिष्ट भाषा, त्रिकोण, वृत, चौकोर, स्पर्श चिह्न, साईन लैंग्वेज, भाषण, इशारे, उंगलियों की वर्तनी, कलाई को घुमाना, तकनीकी उपकरण, चित्र, वस्तुओं, शरीर की गतिविधियों, व्यवहार तथा विभिन्न प्रकार के संचार तकनीकों का प्रयोग किया जाना चाहिए। बधिरान्ध बालक को समस्याओं को हल करने के अवसर प्रदान करने चाहिए, अपनी देखरेख में उसकी तब तक मदद नहीं करनी चाहिए जब तक की वो कोई बड़ी नुकसानदायक गलती ना कर रहा हो, इससे उसे आसपास के पर्यावरण को जानने का अनुभव होगा। यद्यपि बधिरान्ध बालकों की शिक्षा के क्षेत्र में अपार चुनौतियाँ हैं लेकिन वर्तमान सदी के आरम्भ से इस क्षेत्र में पर्याप्त शैक्षिक व तकनीकी शोधकार्य हुए हैं जो बधिरान्ध बालकों के जीवन की राह को सुगम बना रहे हैं, ऐसे बालकों की शिक्षा के प्रति समर्पित विशेष शिक्षकों को नमन.....

व्याख्याता (चित्रकला)
राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार बधिर
उ.मा. विद्यालय, जयपुर (राज.)
मो: 9461627191

स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं का योगदान

❒ सुरेन्द्र माहेश्वरी

राष्ट्रीय स्वधीनता की लड़ाई में महिलाओं का विशेष योगदान रहा है। उनमें कई महिलाओं का अनाम उत्सर्ग देश की आजादी के लिए क्रान्तिकारी कदम था। हमारे देश की क्रांतिकारी महिलाओं ने उत्साह और पूर्ण समर्पण के साथ अंगेजों का मुकाबला कर राष्ट्र को स्वतन्त्रता दिलाने में महत्त्वपूर्ण भागीदारी का निर्वहन किया है। सन् 1857 से लेकर 1947 तक की आजादी की क्रांति में महिलाओं ने आहूतियाँ देकर जो अलख जगाई, उसी से अंग्रेजों को मुँह की खानी पड़ी। इन वीरांगनाओं में मुख्यतः–

रानी चेनम्मा – कर्नाटक प्रदेश की कित्तर की रानी का नाम सन् 1824 में ''फिरंगियों भारत छोड़ो'' का नारा बुलन्द करने वाली वीरांगनाओं में था। उन्होंने रणचण्डी का स्वरूप धारण कर अदम्य साहस के साथ अंगेजों से मुकाबला किया। कहा जाता है कि यह साहसी महिला मृत्यु पूर्व काशी में निवास करना चाहती थी किन्तु अपनी यह इच्छा पूर्ण नहीं कर पाई और रानी लक्ष्मी बाई का जन्म चेनम्मा की मृत्य के 6 साल बाद लखनऊ में हुआ। रानी चेनम्मा को तो अंग्रेजी का मुकाबला करने वाली प्रथम महिला के रूप में गणना की जाती है।

लज्जो – अंग्रजो अफसरों के यहाँ पर काम करने वाली बाई लज्जो भी किसी क्रांतिकारी महिला से पीछे न रही। उसे ज्योंही यह जानकारी मिली कि अंग्रेज गाय की चर्बी वाले कारतूसों का उपयोग करते हैं। इस जानकारी को भारतीयों में प्रसारित कर आजादी की लड़ाई का सूत्रपात किया। यहाँ से 1857 के गदर की शुरूआत हुई। इस समय मेरठ की महिलाओं ने वहीं के सिपाहियों को एकजुट करके अंग्रेजों का मुकाबला करने हेतु झकझोर दिया। जब 10 मई 1857 को जेलखाना छोड़कर कैदी सिपाहियों ने साथियों को छुड़ा दिल्ली की ओर प्रस्थान किया और तभी से क्रांति की आग चारों ओर फैल गई।

बेगम हजरत महल – बेगम हजरत महल ने लखनऊ में क्रांति का नेतृत्व करते हुए अपने नाबालिग पुत्र विरजिस को गद्दी पर बिठाकर स्वयं ने अंग्रेज सेना का मुकाबला किया। अपनी कुशल नेतृत्व शक्ति के कारण वहाँ के जमीदार, किसान, सैनिक तथा अवध के लोग संगठित होकर बेगम हजरत के नेतृत्व में युद्ध करते रहे। बेगम ने स्वयं हाथों पर सवार होकर सैनिकों का मुकाबला किया। हार जाने पर अवध के देहातों में जाकर क्रांति का बिगुल बजाया।

इस स्वाधीनता क्रांति में बेगम हजरत महल का नाम सर्वोपरि रहा है। जिसने लखनऊ में क्रांति का बिगुल बजाया था। इसी ने राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए सैंकड़ों महिलाओं को तैयार किया और उन्हें तत्परता के साथ अंग्रेजों से मुकाबला करने की प्रेरणा दी।

लक्ष्मी बाई – बनारस ने मोरोपथ तांबे के घर नवम्बर 1835 में जन्मी लक्ष्मी बाई का बचपन अपने नाना के पास बिठुर (कानपुर) में बीता। अपने पति राय गंगाधर राव की मृत्यु के उपरांत सन् 1855 में लक्ष्मी बाई ने झांसी का शासन संभाल लिया। इसी समय तात्या टोपे के सहयोग से ग्वालियर पर कब्जा किया। इस मर्दाना महिला के बारे में ह्यूरोज ने कहा था'' यहाँ वह और सोई हुई है जो विद्रोहियों में एक मात्र मर्द थी।''

जीनत महल – मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर की बेगम जीनत महल। इसने दिल्ली और सपीपस्थ क्षेत्रों के स्वतन्त्रता सैनानियों को संगठित किया और बहादुरशाह जफर को भी प्रेरित करते हुए कहा था यह समय गजलें कहकर दिल बहलाने का नहीं है।'' समय आह्वान किया कि खानदान ऐ मुगलिया का खून हिन्द को गुलाम होने देगा तो इतिहास उसे कभी माफ नहीं करेगा। यह संदेश बहादुर शाह जफर के लिए नाना साहब द्वारा प्रस्तुत किया गया।

बेगम तुकलाई सुल्तान – दिल्ली सल्तनत के शाहजादे फिरोज शाह की बेगम तुकलाई सुल्तान जमानी बेगम को दिल्ली क्रांति की भनक लगी तो वह शान शोकत की जिन्दगी को छोड़ युद्ध शिविरों में रहकर सैनिकों के लिए रसद पहुँचाने, घायल सैनिकों की सेवा का प्रबन्ध करने का कार्य करती थी। उस समय अंग्रेज हुकुमत अत्यधिक भयभीत थी। अतः उसे घर में नजरबंद कर दिया तथा दिल्ली में प्रवेश करने पर रोक लगा दी।

रहीमी – रहीमी एक क्रांतिकारी वीरांगना थी। वह हथियारों का प्रयोग बड़ी कुशलता से करती थी। लखनऊ की बेगम हजरत महल की महिला सैन्य दल का नेतृत्व करती थी। वह सदैव फौजी वेश धारण करती और हथियार चलाने में

कुशलता अर्जित कर महिलाओं को तोप व बन्दूक चलाना सिखाया करती थी। रहीमी के नेतृत्व में महिलाओं ने अंग्रेजों का डटकर मुकाबला किया उस समय लखनऊ में हैदरी बाई नाम की एक तवायफ थी। उसके यहाँ अंग्रेज अधिकारी आते-जाते थे और कई बार भारतीय क्रांतिकारी के विरुद्ध योजनाएँ बनाते थे। उस समय हैदरीबाई ने देशभक्ति का परिचय देते हुए उन समस्त योजनाओं की जानकारी क्रांतिकारी को देती थी और बाद में वह स्वयं भी रहीमी के सैन्य दल में सम्मिलित हो गई।

ऊदा देवी – इस क्रांतिकारी महिला के पति जब चिन्हट की लड़ाई में मारे गए तो उस समय लखनऊ में सिकन्दराबाद किले पर हुए आक्रमण के समय ऊदा देवी ने अदम्य साहस का परिचय दिया। इस वीर महिला ने पीपल के घने पेड़ पर छिपकर लगभग 32 अंग्रेज सैनिकों को मार गिराया। अंग्रेज आश्चर्य में पड़ गए। तभी कैप्टन बैल्स ने पेड़ पर गोली चलाई तो पेड़ से एक मानवाकृति गिरी नीचे गिरने के कारण उसकी लाल जैकेट का ऊपरी भाग खुल गया इससे ज्ञात हो गया कि वह एक महिला है। जब इस वीरांगना का शव धरती पर गिरा देखा तो कैप्टन बैल्स ने संवेदनशील होकर कहा कि ''यदि मुझे पता होता तो ये महिला है तो मैं कभी गोली नहीं चलाता।''

रानी राजेश्वरी – रानी राजेश्वरी ने अवध के मुक्ति संग्राम में प्रमुखता से भाग लिया। वह गौंडा से 40 किमी. दूर स्थित तुलसीपुर रियासत की रानी थी। राजेश्वरी देवी ने होपग्रांट के सैनिक दस्तों से बहादुरी के साथ मुकाबला किया।

बेगम आलिया – अवध देश की बेगम आलिया ने अपनी बहादुरी और पराक्रम के कारनामों से अंग्रेज शासकों को चुनौती देते हुए उनका मुकाबला करती रही। बेगम आलिया 1857 के एक वर्ष पूर्व ही से महिलाओं को शस्त्र कला का प्रशिक्षण देती रही। महिला गुप्तचरों के सहयोग से समय-समय पर ब्रिटिश सैनिकों से युद्ध करती रही और उन्हें अवध से भगा कर दम लिया।

झलकारी बाई – जब झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने महिलाओं का एक सैन्यदल ''दुर्गा दल'' के नाम से संचालित किया उस समय झलकारी बाई ने महिलाओं को कुश्ती, घड़सवारी तथा धनुर्विद्या का प्रशिक्षण दिया उसने यह भी प्रतिज्ञा की कि जब तक झांसी स्वतन्त्र नहीं होगी तब तक व न शृंगार करेगी और न ही माथे पर सिंदूर लगाएगी। जब झाँसी पर अंग्रजों ने आक्रमण किया तो झलकारी बाई ने उनका डटकर मुकाबला किया उसकी शक्ल लक्ष्मी बाई से मिलती जुलती थी। कद काठी भी वैसी ही थी। अंगेजों ने जब लक्ष्मी बाई को घेर लिया तो उसने लक्ष्मी बाई को महल से बाहर निकल जाने को कहकर स्वयं ने अंग्रेजों का मुकाबला किया और शहीद हो गई।

मोतीबाई – यह महिला लक्ष्मी बाई की सेना में जनाना फौज का नेतृत्व करती थी और सदैव लक्ष्मी बाई के साथ ढाल बनकर रहा करती थी। इसके साथ काशीबाई, जूही और दुर्गाबाई भी दुर्गादल में प्रमुखता से काम कर रही थी। ये महिलाएँ रानी लक्ष्मी बाई की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हुए वीरगति को प्राप्त हो गई।

अजीजबाई – अजीज बाई ने 1857 की क्रांति में क्रांतिकारियों का हौंसला बढ़ाने में सदैव सफल रही। सन् 1857 में नाना साहब के साथ कानपुर में क्रांति की योजना बनाई गई। उस समय अजीज बाई ने अपनी प्रमुख भूमिका का निर्वहन किया। इस योजना के अन्तर्गत 400 महिलाओं का एक दल तैयार किया। जो पुरुष वेश में रहती थी। वह नौजवानों को क्रांति में भाग लेने हेतु प्रेरित करती रहती थी। उस समय तात्या टोपे और नान साहब विठुर युद्ध में हार जाने पर पलायन कर गए। जब अजीज बाई ने टोली का नेतृत्व किया। जब अजीज बाई को हेवलॉक के सम्मुख युद्ध बंदी के बाद प्रस्तुत किया गया तो उसने प्रस्ताव रखा कि यदि आजीवन अपनी गलतियों को स्वीकारते हुए क्षमा याचना करे तो उसे माफ किया जा सकता है किन्तु उसने एक क्रांतिकारी महिला के रूप में प्रस्ताव ठुकरा दिया और उत्तर दिया कि देश पर इतना जुल्म ढाने वाले अंग्रेजों को माफी मांगनी चाहिए। इस बात पर हेवलॉक ने अंग्रजों को गोली मारने का आदेश दे दिया और उसने मातृभूमि की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिया।

मस्तानी बाई – स्वाधीनता संग्राम के इस आन्दोलन में मस्तानी बाई ने भी अपने आप को न्यौछावर कर दिया। जब वह बाजीराम पेशवा के साथ बिठुर आई उस समय वह अंग्रेजों की खुफिया जानकारी जुटाती रहती तथा अंग्रेजों की समस्त कार्ययोजनाओं का काला चिट्ठा पेशवा के सम्मुख प्रस्तुत कर क्रांति को सुदृढ़ बनाने में अपनी भूमिका का निर्वहन करती रही।

मैनावती – मैनावती नाना साहब की मुँह बोली बेटी थी। छोटी अवस्था में ही जब क्रांतिकारियों के कारनामों को देखती तो वह प्रभावित हो जाया करती। यह देश प्रेम की भावना से आलोड़ित हो सदा क्रांतिकारियों की सहायता से तत्पर रहती। जब नाना साहब बिठूर छोड़कर चले गए तब मैनावती वहीं रह गई। एक दिन जब अंग्रेज प्रतिनिधि नाना साहब का पता पूछने के लिए मैनावती के घर पर आया तो पता पूछने पर उसने इन्कार कर दिया तो मैनावती को जिन्दा ही आग के हवाले कर दिया गया।

अवंतीबाई – इस वीरांगना ने इस क्रांति में बड़ी बहादुरी का परिचय दिया। मध्यप्रदेश के रामगढ़ की रानी अवन्ती बाई ने अंग्रेजों का प्रतिकार किया और अंग्रेज सेना के द्वारा घेर लिए जाने पर भी आत्मसमर्पण नहीं करते हुए स्वयं ने आत्मोत्सर्ग कर दिया।

महावीरी देवी – इस क्रांतिकारी महिला ने 1587 के गदर में 22 महिलाओं के साथ अंग्रजों पर आक्रमण किया और अनूपशहर की चौहान रानी ने भी इसी समय अपने घोड़े पर सवार होकर अंग्रजों का मुकाबला किया तथा शहर में स्थित थाने पर लहराते हुए यूनियन जैक को उतार कर उसके स्थान पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने का साहसिक कार्य कर दिखाया।

भारतीय स्वाधीनता की लड़ाई जो क्रांति 1857 में हुई उसमें दिल्ली के समीपस्थ गाँवों की लगभग 255 महिलाओं को मुज्जफरनगर में मौत के घाट उतारा गया था। इस क्रांति में भारतीय महिलाओं ने रणचण्डी का रूप धारण कर अदम्य साहस का परिचय देते हुए अंग्रेजों का मुकाबला किया और क्रांतिकारियों को संबल प्रदान करने में सफलता अर्जित की।

प्रधानाचार्य
राउमावि तस्वारिया (हुरड़ा)
जिला-भीलवाड़ा
मो. 98299925909

बेहतरी के लिए बराबरी महिलाओं के लिए चुनौती

❒ बजरंग प्रसाद मजेजी

'नारी अपने हृदय को उन्मुक्त करे, बुद्धि को उज्ज्वल करे, निष्ठा को ज्ञान की तपस्या में प्रयुक्त करे। वह सदा इस बात को ध्यान में रखे कि निर्विचारण और अंधरक्षणशीलता, सृजन शक्ति की विरोधी होती है। अज्ञान की जड़ता और सभी तरह के काल्पनिक और वास्तविक भय से निम्नगामी आकर्षण से बचकर अपने आपको ऊपर उठाना होगा।'

रविन्द्र रचनावली–रविन्द्रनाथ टैगोर

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस की थीम–बेहतरी के लिए बराबरी – इस वर्ष अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च 2019 की थीम मानी गई बेहतरी के लिए बराबरी। इस सलोगन के द्वारा विश्व के सभी देशों ने बालिका शिक्षा की स्थिति, उसके परिणाम एवं अच्छी शिक्षण व्यवस्था से बेहतर परिणाम के फलस्वरूप महिलाओं की स्थिति पर तुलनात्मक विचार विमर्शकर 'थीम' घोषित की है। सभी देशों में महिलाओं की स्थिति पर विचार करते हुए महिलाओं को पुरुषों के बराबर माने जाने वाले सर्वमान्य सिद्धान्त को पुष्ट करने हेतु सभी देशों से अपेक्षा की है कि महिलाओं की वर्तमान स्थिति पर चिन्तन कर उनको बेहतर बनाने की दिशा में देशानुकूल पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक दृष्टि से कारगर योजना बनाकर क्रियान्वित की जानी चाहिए। आज से 100 वर्ष पूर्व जब पहली बार साल का एक दिन 'महिला दिवस' माना गया तो सवाल सन्तुलन का नहीं हक का था। तब महिलाओं ने कहा हमें शिक्षा का अधिकार चाहिए, वोट का अधिकार, पिता की सम्पत्ति में बराबरी का अधिकार, मर्जी से शादी करने या न करने का अधिकार जीविकोपार्जन स्वयं की इच्छानुसार करने, राजनैतिक फैसलों में हिस्सेदारी का अधिकार चाहा था। निरन्तर चल रही महिलाओं की मांग पर कई देशों ने महिलाओं की स्थिति के सुधार हेतु प्रयत्न किए हैं।

वर्तमान में भारत ने महिलाओं की बराबरी के लिए तमाम संघर्षों के बाद भारतीय संविधान में बराबरी का अधिकार दिया है। जमीनी

हकीकत अभी भले ही सुनहरी न हो लेकिन देश के संविधान ने महिलाओं को पुरुषों के बराबर का अधिकार दिया है। बेहतरी के लिए बराबरी की थीम पर विचार करें तो भारत में वैदिक काल से वर्तमान काल में महिलाओं की स्थिति पर विचार करना होगा। वैदिक काल से वर्तमान तक भारत में परिस्थिति जन्य दृष्टिकोण एवं उनके द्वारा देय उपादेयता में अनेक परिवर्तन होते रहे हैं जिन पर दृष्टिपात करना आवश्यक है।

वैदिक काल में नारी:– शैक्षिक, बौद्धिक, व्यावसायिक, सामाजिक सभी क्षेत्रों में अग्रणी थी। वे परा–अपरा दोनों प्रकार की विद्याओं में पुरुषों के समान ही पारंगत और विज्ञ समाज की शोभा बढ़ाने वाली थी। वे दार्शनिक, शास्त्रार्थ एवं यांत्रिक कार्यों में बराबर भाग लेती थी। वैदिक युग में उल्लेखनीय कार्यों, विद्वता में गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, आत्रेयी, घोषा, विश्वारा, भारती, जबाल, शैव्या, मदालसा, अनुसूया, शाण्डिली, कामायनी, सुलभा, कात्यायनी, काक्षीवती, सूर्या, लोपमुद्रा, शाश्वती, इन्द्राणी, उर्वशी, आदिति, विश्ववारा, श्रद्धा, देवयानी आदि ने उल्लेखनीय कार्य कर प्रसिद्धि प्राप्त की थी।

मध्ययुग में नारी– इस युग में अधिकांश भाग पर मुगलों के साम्राज्य स्थापना के कारण उत्तर भारत से दक्षिण तक पर्दा प्रथा के प्रचलन से नारी की स्वतंत्रता पर कुठाराघात हुआ। लेकिन इसी काल में राजपूत और मराठा वीरांगनाओं ने मुगल आक्रमणों का मुकाबला किया तथा प्रमाणित किया कि भारतीय नारी देशप्रेम, आत्म बलिदान, वीरता में पुरुषों से कम नहीं हैं। परन्तु शिक्षा के अभाव में इस काल में अधिकांश महिलाएँ अशिक्षित रह गई। फिर भी इस काल में कई विदुषियाँ हुई हैं। संस्कृत साहित्य में शील, भट्टारिका, विजयांका, प्रभुदेवी, सुभ्रदा तथा प्रादेशिक भाषा में कवियित्रियों में कांती हेलननकट्टे गिरियम्भ, अकभद्दा देवी तथा कन्नड़ भाषा में मौला, वैगभाम्ब तेलगू में महदम्बा, मराठी में मुस्ताबाई, कश्मीरी में लल्ता, बृजभाषा में मीराबाई आदि प्रसिद्ध महिलाएँ हुई। मुगलकाल और ब्रिटिशकाल के प्रभाव ने महिलाओं की शैक्षिक स्थिति को प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप महिलाओं के सम्पूर्ण विकास की गति में अन्तर आया है तथापि वर्तमान परिदृश्य विकास का परिचायक है। महिलाओं की स्थिति पर विचार करते समय हमें अपने देश तथा समाज में महिला का स्थान जीवनोद्देश्य, परिवार में उसकी भूमिका, व्यक्तित्त्व के विकास, स्वावलम्बन, सामाजिक राष्ट्रीय दायित्व उसके कर्त्तव्यों की नैसर्गिक भिन्नता का गहन चिन्तन करना होगा।

वर्तमान युग की नारी :– पी.वी. सिन्धु, गीता फोगाट, सायना नेहवाल, सानिया मिर्जा, साक्षी मलिक, पी.टी. उषा ने विश्व में प्रदर्शन से भारत को गौरवान्वित किया है। इसरो के रितु करढ़ाल, मौमिता दत्ता, नंदिनी हरनाथ, अनुराधा टी.के. मीतल, संपथ कीर्ती फौजदार आदि वैज्ञानिक कार्यों में उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं। साहित्य क्षेत्र में कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, चन्द्रकान्ता, मृदुला गर्ग, अल्पना मिश्रा, वंदनाराय ने उत्कृष्ट साहित्य की रचना की है। अन्य सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने जिम्मेदारी से कार्य कर अपनी पहचान बनाई हैं।

महिलाओं को बराबरी के अवसरों की चुनौतियाँ :– भारतीय संविधान में महिलाओं को पुरुषों की बराबरी हेतु समान अधिकार उनकी स्थिति सुधारने, विकास के अवसर उपलब्ध कराने, महिला अधिकारों को सुरक्षित करने हेतु विशेष प्रावधान किए हैं। अपने लिए कैसा जीवन हो इसका चयन आज भी 25 प्रतिशत महिलाएँ ही तय कर पाती हैं बाकी 75 प्रतिशत महिलाएँ पढ़ लिखकर भी अपनी जमीन

तय नहीं कर पाती हैं। उनकी आत्मशक्ति को सुनिश्चित करने के लिए महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता है। इसमें आने वाली बाधाएँ अशिक्षा, आर्थिक निर्भरता, सामाजिक कुरीतियाँ, महिला पर पुरुष का प्रभुत्व, तकनीकी अज्ञानता को शिक्षा द्वारा दूर करने की आवश्यकता है। भौतिक मूल्यों के विकास, शासन में भागीदारी, पुरातन धारणाओं को बदलकर क्षमता में वृद्धि कर मनःस्थिति में बदलाव लाकर विकास मार्ग पर स्वयँ की ऊर्जा से आगे बढ़ने पर ही सशक्तीकरण के लक्ष्य पूरे हो सकते हैं। वर्तमान में पूर्व की अपेक्षा महिलाएँ न इंजीनियर, चिकित्सा, कम्पनीकार्य, मशीनरी व्यवसाय, बीमा, बैकों, उद्योगों में अपने कार्यक्षमता का प्रदर्शन प्रारंभ कर दिया है। फिर भी अन्य देशों की तुलना में भारतीय महिलाएँ अभी पीछे हैं। अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर प्राइस वाटर हाउस कूपर्स पी.डब्ल्यू.यू.सी. ने विभिन्न कार्यक्षेत्र के इंडेक्स 2019 में 33 देशों के कार्यस्थल में महिलाओं की भागीदारी में आइसलेण्ड को सबसे आगे 10 वें स्थान पर 79 प्रतिशत अंक दिए हैं। स्वीडन को 76.1, न्यूजीलेण्ड को 73.6, स्लोबोनिया को 73.5, नार्वे को 72.31, लग्ज्मबर्ग को 71.6, डेनमार्क को 70.1, पोलेण्ड 69.2, फिनलेण्ड को 67.6, बेल्जियम को 66.1 अंक दिए हैं। यदि भारत इस सूची में सम्मिलित होता तो 33 वें स्थान पर होता। भारत में महिलाओं की सेना में भागीदारी निरन्तर बढ़ रही है। सेना में ब्रिगेडियर मेजर जनरल, लेफ्टिनेन्ट जनरल तक सेवाएँ दे रही है। वर्तमान में सेना में 1561, वायु सेना में 1594, नौ सेना में 666 महिलाएँ इन पदों पर कार्यरत हैं। पंचायत राज के चुनावों में 50 प्रतिशत महिलाएँ भाग ले रही है। संसद, विधानसभा में 33 प्रतिशत चुनी जा सकती है। अब तक 15 प्रांतो में महिला मुख्यमंत्री रह चुकी है। महिलाओं की पुरुष की बराबरी के लिए आवश्यक है कि शिक्षा का स्तर बढ़ाए। महात्मा गाँधी ने कहा है कि ''शिक्षा से महिला आत्मनिर्भर बनती है तथा पारिवारिक, सामाजिक, अज्ञानता स्वतः ही समाप्त हो जाएगी। शिक्षित महिलाएँ अनेक समस्याओं का समाधान कर सकेगी। बाल विवाह दहेजप्रथा, अंधविश्वास, कुप्रथा से निजात दिला सकेगी। संस्कृति के जीवन तत्त्वों को ग्रहण कर गरिमामय व्यक्तित्त्व निर्माण कर देश के सभी क्षेत्रों में भागीदार बनेगी।

महिला उत्थान हेतु शिक्षा व्यवस्था का निर्धारण :– स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि महिला के विकास के लिए आवश्यक है कि उन्हें सोद्देश्य शिक्षा दी जाए ताकि उनका मानसिक विकास सही धारा में हो सके तथा जीवनोद्देश्य के लिए योग्य अनुकूल जीवन निर्वाह का निर्णय ले सके। उन्होंने कहा है कि– ''महिला शिक्षा का उद्देश्य सीता, सावित्री, जीजाबाई जैसी महिलाओं का निर्माण करना है, जिनके संस्कारमय सृजन का परिणाम लवकुश, महाराणा प्रताप, शिवाजी हैं।'' हम चाहते हैं कि भारत की स्त्रियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे निर्भय होकर देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों को भलीभाँति निर्वहन कर सके तथा संघमित्रा लीलावती, अहल्याबाई, मीराबाई आदि भारत की महान देवियों द्वारा चलाई गई परम्परा को आगे बढ़ा सके। भारत की स्त्रियाँ त्याग की मूर्ति है क्योंकि उनके पास बल और शक्ति है, जो सर्वशक्तिमान परम्परा के चरणों में सम्पूर्ण आत्मसमर्पण से प्राप्त होती है। वर्तमान पाठ्यक्रम में बालिकाओं को गुण संवर्द्धन की प्रेरणा देने वाले, धर्म व्यवहार, लौकिक व्यवहार, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय दायित्त्व बोध को जाग्रत करने, मातृत्व पोषक ज्ञानवर्द्धक पाठों का समायोजन किया जाना चाहिए। देश की तेजस्वी महिलाओं के चरित्र वर्णन रानी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, पद्मिनी जैसी वीरांगनाओं के चरित्र तथा समाज सहभागिता के प्रेरक प्रसगों का समावेश पाठ्यक्रम में होना चाहिए। शिक्षा से महिलाओं में होने वाले परिवर्तन का भाव व्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है कि–

क्या कर नहीं सकती भला
यदि शिक्षित हो नारियाँ,
रण, रंग राज्य, सुधर्म,
रक्षा कर चुकी सुकुमारिया
सोचो, नरों से नारियाँ
किस बात में है कम हुई,
मध्यस्थ ये शास्त्रार्थ में है,
भारती के सम हुई।

से.नि.प्र.अ.
सांपला (अजमेर)
मो. 9460894708

चरित्र निर्माण के सुदृढ़ आधार

चरित्र किसी व्यक्ति के रूह की खुशबू होती है, उसके व्यक्तित्व का सार होता है। चरित्रवान व्यक्ति किसी भी समाज एवं राष्ट्र की सबसे बेशकीमती संपदा होता है, पूरी मानवता का अनमोल नगीना होता है, क्योंकि चरित्रवान व्यक्ति ही वहाँ के दिव्य वातावरण, सुख–शांति एवं समृद्धि के वास्तविक आधार होते हैं। जिस भी देश, समाज, संस्था एवं परिवेश में चरित्रनिष्ठ व्यक्तियों की जितनी अधिक संख्या होगी, वहीं सतयुगी वातावरण निर्मित हो रहा होगा। जहाँ जितने चरित्रन्यून व्यक्तियों का जमावड़ा होगा, वहाँ उसी अनुपात में अराजकता एवं नारकीय परिस्थितियों का साम्राज्य दृष्टिगोचर होगा।

चरित्र सहज ही व्यक्ति में श्रद्धा का भाव जगाता है और लोगों का सर श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता है, लेकिन यह सहज ही नहीं होता, यह अपनी कीमत माँगता है, जिसे व्यक्ति अथक श्रम और ईमान के आधार पर कमा सकता है। सच में कहा जाए तो यह एक जन्म में अर्जित पूँजी नहीं होती, यह तो जन्म–जन्मांतरों से अर्जित पुण्य, तप एवं सद्गुणों का सुफल होता है। आश्चर्य नहीं कि इसे जीवन की सबसे बड़ी संपदा कहा जाता है। कहावत भी प्रसिद्ध है कि यदि धन गया तो समझो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो समझो कुछ गया और चरित्र गया तो समझो सब कुछ गया।

महापुरुषों में चरित्र निर्माण की पराकाष्ठा के दर्शन होते हैं, जिसके आधार पर वे अपने युग की दिशाधारा को सार्थक दिशा देते देखे जा सकते हैं। बुद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महर्षि रमण, श्री अरविंद, श्री राम शर्मा 'आचार्य' जैसे महामानवों के जीवन में इस सत्य को घटित होते देखा जा सकता है, इस सत्य के दर्शन होते हैं, जिसके कारण वे आज भी मानव मात्र के लिए श्रद्धा के पात्र हैं, पूजनीय हैं, अनुकरणीय हैं, वंदनीय हैं।

एक प्रयास-बस्ते का बोझ हल्का करना

❒ मानाराम जाखड़

शिक्षा के क्षेत्र में देश-प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण व आनन्ददायी शिक्षा के लिए नवाचार और नई-नई तकनीक पर जोर दिया जा रहा है। एक ओर शिक्षा में दिन-प्रतिदिन नए-नए आयाम जुड़ रहे हैं वही ऑनलाइन अध्ययन का दायरा भी बढ़ गया है। कम्प्यूटर, टेबलेट व ई-क्लास ने बस्ते का बोझ काफी कुछ कम करने की ओर कदम बढ़ाया है। इन सबके बावजूद स्कूली बच्चे बस्ते का बोझ झेलने को मजबूर हैं।

देश-प्रदेश में अनेक समितियाँ एवं आयोग भी गठित हुए हैं परन्तु इन सबके बावजूद बच्चों के बस्ते के बोझ को लेकर कोई विशेष प्रयास नहीं हुए हैं। बस्ते के बोझ को लेकर कई बार अभिभावकों एवं समाजसेवी संगठनों ने भी आवाज उठाई है।

निजी स्कूलों में दी जा रही स्टेशनरी एवं किताबों के द्वारा जो बस्ते के बोझ को बेतहाशा बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है उसका अभिभावकों ने खुली सड़कों पर विरोध कर इस भारकारी व्यवस्था को बन्द करने की पुरजोर माँग की है। निजी स्कूलों में बस्ते के साथ एक पानी की बोतल का बोझ भी बढ़ चला है परन्तु अब तक किसी ने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है ना ही कोई ठोस कदम उठाए गए हैं। बच्चों के बस्तों का बोझ कम करने के लिए ना तो कोई नियम है और ना ही कोई नीति। अब माननीय मुख्यमंत्री जी के निर्देशन में माननीय शिक्षा मंत्री महोदय के प्रयासों से हाल ही में राज्य सरकार द्वारा इसके निराकरण हेतु एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन किया जाकर इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता महसूस की गयी है। जिसे शीघ्र ही साकार रूप दिया जाने का प्रयास है जो एक सराहनीय कदम है।

शिक्षा को लेकर चिन्तित रहने वाले हर शिक्षाविद्, शिक्षा प्रशासन एवं राज्य सरकारें शिक्षा के प्रसार को लेकर सार्वजनीनीकरण (Universalisation) एवं वैश्वीकरण (Globalisation) की बात तो आये दिन बैठकों, कार्यशालाओं, प्रशिक्षणों, सेमीनारों, कॉन्फ्रेंस एवं समूहों में करते रहते हैं, परन्तु स्कूली बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने के लिए कोई विशेष प्रयास नजर नहीं आता है। हाँ, देश में बस्ते के बोझ को कम करने हेतु पूर्व में प्रो. यशपाल समिति का गठन सन् 1992-93 में किया जाकर उसकी रिपोर्ट लागू करने की बात कही गई परन्तु इस ओर अब तक कोई ठोस एवं सकारात्मक कदम नहीं उठाए गए। इसके बाद यदि कोई शिक्षाविद् बस्ते के बोझ का जिक्र भी करता है तो NCF 2005 की कक्षावार/स्तरानुसार दक्षताओं एवं कौशल बढ़ाने की बात का अड़ंगा लगाकर बोझ कम करने का मुद्दा टाल दिया जाता है।

यह प्रदेश का सौभाग्य मानो कि माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने प्रदेश में शिक्षा विभाग की कमान स्वच्छ विचारधारा के राजनेता श्री गोविन्द सिंह डोटासरा को शिक्षा का दायित्व सौंपा है वहीं समान विचार धारा के एवं प्रदेश में सत्यनिष्ठा से स्वच्छ ईमानदार छवि IAS अधिकारी श्री प्रदीप कुमार बोरड़ को शिक्षा आयुक्त का जिम्मा सौंपकर शिक्षा को एक सुगम राह देने का कार्य किया है। विगत कुछ महिनों में ही हमारे शिक्षा मंत्री महोदय व शिक्षा आयुक्त का नजरिया शिक्षा विभाग को एक ही दिशा में गति प्रदान करने वाला साबित हो रहा है। प्रदेश में शिक्षा विभाग में दिन-प्रतिदिन नए-नए नवाचार एवं कार्य सुविधाओं का मंच तैयार हुआ है।

बात चाहे शैक्षिक गुणवत्ता की हो, राजकीय विद्यालयों को समुदाय से जोड़ने की हो, समय परिवर्तन की हो, स्टाफ कॉर्नर, सिटीजन कॉर्नर की हो, राजीव गाँधी कॅरियर गाइडेंस पोर्टल, नामांकन वृद्धि की हो, पाठ्यक्रम समिति की हो या फिर परीक्षा परिणाम में 10% का शिथिलन की हो, इन सब नवाचारों से शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश में अल्प समय में ही उल्लेखनीय प्रगति हुई है। प्रदेश का शिक्षक वर्ग भी निरन्तर सकारात्मक सहयोग करता नजर आ रहा है। नववर्ष के शुरूआती दिनों में वृहद् सामुदायिक बाल सभाओं के नवाचार ने तो प्रदेश में ही नहीं बल्कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय सहित पूरे देश में एक अलग पहचान बनाई है। इसी तर्ज पर हमारे शिक्षा मंत्री जी की प्रेरणा से शिक्षा आयुक्त श्री प्रदीप कुमार बोरड़ ने, स्कूली बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने की कवायद की पहल करते हुए देश में पहली बार विशेष नवाचार के रूप में प्रदेश के 33 जिलों के एक-एक राजकीय विद्यालय में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू कर इसे अमली जामा पहनाने हेतु सक्रिय हो गये है। इस हेतु प्रदेश में वर्तमान में कक्षा 1 से 8 तक लागू पाठ्यक्रम की पुस्तकों में किसी भी पाठ/अध्याय में बिना बदलाव के प्रत्येक पुस्तक के त्रैमासिक दक्षताओं के अनुसार तीन भाग कर उनके प्रत्येक भाग को एक साथ समेकित पुस्तक आओ खेलें के नाम से तैयार करवाई जा रही है।

उदाहरणार्थ:- कक्षा 2 की हिन्दी की पुस्तक के कुल .... अध्यायों को तीन भागों में विभाजित किया, अंग्रेजी की पुस्तक के कुल ..... अध्यायों को तीन भागों में विभाजित किया तथा गणित की पुस्तक के कुल ... इकाई को तीन भागों में विभाजित किया। इस प्रकार प्रत्येक पुस्तक के तीन भाग कर प्रत्येक पुस्तक के प्रथम भाग को एक साथ समेकित कर भाग-1 आओ खेलें नाम से एवं प्रत्येक पुस्तक के दूसरे भाग को एक साथ समेकित कर भाग-2 आओ खेलें नाम से तथा प्रत्येक पुस्तक के तीसरे भाग को एक साथ समेकित कर भाग-3 आओ खेलें नाम से बाइंडिंग की गयी है। विद्यार्थी प्रथम तिमाही में आओ खेलें भाग-1 ही स्कूल ले जाएगा जिससे उसका बस्ते का बोझ 2/3 कम हो गया। इसी प्रकार भाग-2, भाग-3 आगामी तिमाहियों में में स्कूल ले जाएगा। जिससे बच्चे के बस्ते का बोझ तो कम हो ही जाएगा साथ ही प्रत्येक भाग में बच्चों को नवीनता भी देखने को मिलेगी। प्रत्येक पढ़े गए/पढ़ाए गए भाग को बच्चे घर पर या विद्यालय में संदर्भ हेतु रख सकते हैं।

शिक्षा आयुक्त के इस सपने को साकार होने एवं इस सार्थक पहल के सफल होने से शायद बच्चों के बस्ते का बोझ हल्का हो जाए। किसी शिक्षाविद् ने तो नहीं, पर शिक्षा की अलख जगाने वाले एक नेक राहगीर ने बच्चों के बस्ते के बोझ का दर्द समझा और उसके दर्द को दूर करने हेतु इस दिशा में अपना कदम बढ़ा दिया है।

उपनिदेशक (प्रशासन)
राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, जयपुर (राज.)
मो: 9829082311

राज्य के विद्यार्थियों के लिए संचालित विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएँ

❒ तरुण गुप्ता

वर्तमान में शिक्षा विभाग के अन्तर्गत राजकीय एवं मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति योजनाएँ संचालित की जा रही हैं जो नामांकन वृद्धि, शैक्षिक उन्नयन एवं प्रोत्साहन हेतु शासकीय नीति के अभिन्न अंग के रूप में कार्य कर रही है। उक्त योजनाओं से संबंधित पात्र छात्र-छात्राओं को देय लाभ एवं सुविधाएँ निर्धारित समयावधि में दिलवाया जाना संबंधित विभागीय कार्मिकों तथा समस्त संस्थाप्रधानों के पदीय दायित्वों का अभिन्न अंग है। छात्रवृत्ति आवेदन तथा वितरण में विद्यालय शालादर्पण प्रभारी, छात्रवृत्ति प्रभारी तथा संस्थाप्रधान की महत्ती भूमिका है तथा इनके द्वारा निर्धारित समय पर प्राप्त कर, पात्र विद्यार्थियों के आवेदन शालादर्पण एवं नेशनल स्कालरशिप पोर्टल पर अपलोड किए जाने से विद्यार्थियों को निर्धारित समय पर छात्रवृत्ति वितरित किए जाने में मदद मिलेगी।

अकादमिक सत्र 2019-20 में विभिन्न छात्रवृत्तियों के आवेदन के लिए विभिन्न विभागों तथा मंत्रालय के द्वारा विज्ञप्ति जारी कर दी गई है। इस परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों एवं संस्थाप्रधानों की सुविधा हेतु समस्त प्रकार की छात्रवृत्तियों में देय लाभ, पात्रता, आवश्यक दस्तावेज, आवेदन प्रक्रिया इत्यादि के संबंध में विस्तृत जानकारी निम्नानुसार है-

विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएँ, पात्रता तथा छात्रवृत्ति राशि

क.सं.	छात्रवृत्ति योजना	कक्षा	वार्षिक आय सीमा (लाख रु.)	छात्रवृत्ति राशि प्रतिमाह (अधिकतम 10 माह के लिए)
1.	अनुसूचित जाति (SC)	6-8	आयकरदाता ना हो	बालिका-रु. 125/-, बालक रु. 75/-
2.	अनुसूचित जनजाति (ST)	6-8	आयकरदाता ना हो	बालिका-रु. 125/-, बालक रु. 75/-
3.	अति पिछड़ा वर्ग (MBC)	6-8	वार्षिक आय रु. 2.00 लाख से अधिक नहीं हो	बालिका-रु. 100/-, बालक रु. 50/-
4.	अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC)	6-10	वार्षिक आय रु. 2.50 लाख से अधिक नहीं हो	बालिका एवं बालक रु. 100/-
5.	अनुसूचित जाति (SC)	9-10	वार्षिक आय रु. 2.50 लाख से अधिक नहीं हो	बालिका एवं बालक रु. 225/-
6.	अनुसूचित जनजाति (ST)	9-10	वार्षिक आय रु. 2.00 लाख से अधिक नहीं हो	बालिका एवं बालक रु. 150/-
7.	अति पिछड़ा वर्ग (MBC)	9-10	वार्षिक आय रु. 2.00 लाख से अधिक नहीं हो	बालिका-120/-, बालक-रु. 60/-
8.	प्री-कारगिल एवं पोस्ट-कारगिल युद्धों तथा इमरजेन्सी काउण्टरों में शहीद/स्थायी विकलांग के आश्रितों को छात्रवत्ति	1-10	-	बालिका एवं बालक रु. 180/-
9.	भूतपूर्व सैनिकों की नियमित अध्ययनरत प्रतिभावान पुत्रियों को देय छात्रवृत्ति	11-12	-	बालिका रु. 100/-
10.	सफाई से जुड़े एवं जोखिमपूर्ण व्यवसाय में लगे परिवारों के बच्चों के लिए	1-10	-	बालिका एवं बालक रु. 225/-
11.	अल्पसंख्यक (Minority)	1-10	वार्षिक आय 1.00 लाख से कम	**प्रवेश शुल्क;** (Cls 6-10) बालिका एवं बालक रु. 500/- प्रतिवर्ष (वास्तविक), **शिक्षक शुल्क;**(Cls 6-10) बालिका एवं बालक रु. 350/- प्रतिमाह (वास्तविक), **अनुरक्षण भत्ता;**(Cls 1-10) बालिका एवं बालक रु. 100/- प्रतिमाह
12.	अनुसूचित जाति (SC)	11-12	वार्षिक आय रु. 2.50 लाख से अधिक नहीं हो	बालिका एवं बालक - रु. 230/-
13.	अनुसूचित जनजाति (ST)	11-12	वार्षिक आय रु. 2.50 लाख से अधिक नहीं हो	बालिका एवं बालक - रु. 230/-
14.	अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC)	11-12	वार्षिक आय रु. 1.00 लाख से अधिक नहीं हो	बालिका एवं बालक - रु. 160/-
15.	अति पिछड़ा वर्ग (MBC)	11-12	वार्षिक आय रु. 2.50 लाख से अधिक नहीं हो	बालिका एवं बालक - रु. 230/-

पात्रता के लिए शर्तें

1. आवेदक छात्र/छात्रा सरकारी अथवा गैर सरकारी (शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त) शिक्षक संस्था में नियमित विद्यार्थी हों।
2. आवेदक छात्र/छात्रा किसी अन्य केन्द्रीय, राजकीय सार्वजनिक, धार्मिक स्रोत से अध्ययन हेतु किसी प्रकार की छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं कर रहा हो।
3. आवेदक छात्र/छात्रा, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग या अन्य किसी विभाग/योजना द्वारा संचालित या अनुदानित छात्रावास में नहीं रह रहा हो।
4. आवेदक छात्र/छात्रा पिछली कक्षा में निर्धारित अंकों से उत्तीर्ण हो।

आवश्यक दस्तावेज

1. आवेदक छात्र/छात्रा का स्वयं का सक्षम अधिकारी द्वारा जारी जाति प्रमाण-पत्र (स्व-प्रमाणित प्रति)
2. माता-पिता (माता-पिता के जीवित ना होने पर संरक्षक) का आय स्व-घोषणा पत्र
3. भामाशाह तथा आधार में नामांकन या आवेदन स्लिप
4. भामाशाह योजना से लिंक किया हुआ विद्यार्थी बैंक खाता
5. पिछली कक्षा की अंकतालिका
6. राजस्थान राज्य का मूल निवासी प्रमाण पत्र

आवेदन प्रकिया

1. कक्षा 6-10 (क्रम सं. 1-10 पर अंकित) की छात्रवृत्ति हेतु शालादर्पण पोर्टल पर संस्थाप्रधान के माध्यम से आवेदन। विस्तृत जानकारी http://education.rajasthan.gov.in/secondary पर उपलब्ध है।
2. अल्पसंख्यक (क्रम सं. 11 पर अंकित) छात्रवृत्ति हेतु नेशनल स्कालरशिप पोर्टल (NSP) पर विद्यार्थी द्वारा आवेदन। विस्तृत जानकारी https://scholarships.gov.in/ पर उपलब्ध है।
3. कक्षा 11-12 (क्रम से 12-15 पर अंकित) की छात्रवत्ति हेतु सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के पोर्टल पर विद्यार्थी द्वारा आवेदन। विस्तृत जानकारी www.scholarship.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।

छात्रवृत्ति आवेदन हेतु अंतिम तिथियां

छात्रवृत्ति	छात्रवृत्ति पोर्टल जिस पर आवेदन किया जाना है	प्रारम्भ तिथि	अंतिम तिथि
पूर्व मैट्रिक (कक्षा 1-10)	शाला दर्पण http://rajrmsa.nic.in/Home/Public2/Default.aspx	1.07.2019	माध्यमिक शिक्षा निदेशालय द्वारा तय प्रवेश की अंतिम तिथि के पश्चात् 07 दिवस तक
अल्पसंख्यक (कक्षा 1-10)	नेशनल स्कालरशिप पोर्टल (NSP) https://scholarships.gov.in/	20.7.2019	15.10.2019
उत्तर मैट्रिक (कक्षा 11-12)	स्कालरशिप पोर्टल www.scholarship.rajasthan.gov.in	20.06.2019	31.08.2019

वर्ष 2019-20 में छात्रवृत्ति प्रक्रिया में लाए गए सुधार

1. विभिन्न छात्रवृत्तियों के आवेदन तथा वितरण हेतु एक समयबद्ध कैलेण्डर बनाया गया है, उसी के अनुसार छात्रवृत्तियों का कार्य सम्पादित किया जाएगा।
2. कैलेण्डर के अन्तर्गत, अकादमिक वर्ष 2019-20 में विद्यालयों में प्रवेश प्रारम्भ के साथ ही छात्रवृत्ति आवेदन प्रक्रिया को प्रारम्भ कर दिया गया है तथा इस प्रकिया को प्रवेश की अन्तिम तिथि के पश्चात् 7 दिवस में पूर्व करना होगा। ताकि समेकित प्रस्तावों को समय पर भारत सरकार को प्रेषित किया जा सके।
3. छात्रवृत्ति आवेदन में अत्याधिक दस्तावेजीकरण को कम करने के लिए विद्यार्थी से विद्यालय में प्रवेश के समय ही स्थाई प्रकृति के आवश्यक दस्तावेज 1. जाति प्रमाण पत्र 2. भामाशाह कार्ड एवं आधार कार्ड की प्रति 3. बैंक पासबुक की प्रति, इत्यादि लिए जाएँगे। छात्रवृत्ति आवेदन के लिए आवश्यक दस्तावेज यथा भामाशाह/आधार/जाति प्रमाण पत्र प्रतिवर्ष नहीं लिए जाकर पूर्व में जमा किए प्रमाण पत्रों को ही मान्य माना जाएगा।
4. शालादर्पण पोर्टल पर विद्यार्थी के भामाशाह नम्बर का आनलाइन सत्यापन (Online Authentication) किया जाएगा। इसके लिए भामाशाह पोर्टल तथा शालादर्पण पोर्टल को लिंक कर दिया गया है।

समस्त संस्थाप्रधानों तथा शिक्षा विभाग से जुड़े कार्मिकों से निवेदन है कि समाज के मेधावी, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े विद्यार्थियों हेतु राज्य तथा केन्द्र सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई की जा रही विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में अपना सक्रिय योगदान करें एवं यह सुनिश्चित करें कि एक भी पात्र विद्यार्थी छात्रवृत्ति योजना से वंचित ना रहें, जिससे राज्य में नामांकन तथा शैक्षिक उन्नयन में आशातीत वृद्धि हो।

नवीन अकादमिक सत्र 2019-20 की हार्दिक शुभकामनाएँ।

कन्सलटेन्ट, उड़ान परियोजना
आइ.पी.इ. ग्लोबल लिमिटेड़, 301-303 सिग्नेचर टावर, डी सी-2, अपेक्स बैंक के पीछे, लाल कोठी, टोंक रोड, जयपुर-302015
मो: 8764006850

राज्य में सीसीई का संचालन

❐ डॉ. डी.डी. गौतम

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एक बहुआयामी संप्रत्यय है एक ऐसी शिक्षा, जिसके द्वारा शिक्षार्थियों को उनकी क्षमताओं के अनुरूप, उन्मुख दृष्टिकोण व बुनियादी कौशल के साथ-साथ व्यक्तिगत क्षमताओं, रचनात्मक अभिव्यक्ति, मूल्यपरक एवं संस्कारी शिक्षा मिलती है। इसके अन्तर्गत बच्चों को सीखने के पर्याप्त एवं समान अवसरों की उपलब्धता के द्वारा ज्ञान का सृजन करते हुए, संज्ञानात्मक एवं कौशल विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। बालक में सशक्तिकरण, सक्रिय सहभागिता, भावनात्मक संबलन, आत्मविश्वास में अभिवृद्धि, अधिगम प्रक्रिया में समग्रता, समसामयिक संदर्भ में सर्वांगीण विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। इसके द्वारा बच्चों की क्षमताओं की पारस्परिक सक्रिय सहभागिता एवं व्यक्तिगत विकास के दृष्टिकोण को उन्मुख किया जा सकता है।

वर्तमान परिदृश्य में प्राथमिक शिक्षा को शिक्षा की नींव की संज्ञा दी गई है। इस हेतु एनसीएफ-2005 तथा आरटीई अधिनियम-2009 में प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन की पहल की गई है। जिससे वर्तमान में शिक्षण व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है।

दार्शनिक एवं शिक्षाविदों द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संदर्भ में व्यक्त विचार निम्नानुसार हैं :-

प्लेटो के अनुसारः- 'ऐसी शिक्षा जिसके द्वारा बच्चों में उचित आदतें उत्पन्न कर सद्गुणों का विकास किया जा सके।'

जॉन डीवी के अनुसारः- 'ऐसी शिक्षा अनुभवों की निरन्तर पुनर्रचना द्वारा जीने की प्रक्रिया है।'

महात्मा गाँधी के अनुसारः- 'शिक्षा का आशय केवल अंक-अक्षर के ज्ञान से नहीं अपितु व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व विकास एवं चारित्रिक संस्कारों को निर्मित करना है।'

यूनेस्को ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को मानवाधिकार माना है।

Definition of Quality Education :- "To Provide all learner with capabilities they require economically productive, Develop sustainable livelihoods, contribute to demodratic societies and enhance individual well"

भारतीय संविधान की मंशा 'सबके लिए शिक्षा' की अवधारणा के क्रियान्वयन के लिए 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा मुहैया करवाने के लिए RTE 2009 लागू किया गया, ताकि प्रत्येक बच्चे को अनिवार्य रूप से सहज एवं सुलभ गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा दी जा सके। विद्यालयों में बच्चों के सीखने को स्थाई बनाने, सीखने में आ रही चुनौतियों को समझने एवं उनका समाधान करने तथा सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाने पर बल दिया है, जिससे सीखना, गतिविधि आधारित, आनंददायी, रुचिकर एवं बाल उपयोगी हो तथा बच्चों को अपनी गति, रुचि एवं स्तर के अनुरूप स्वयं करके सीखने के अवसर उपलब्ध हो सकें।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम - 2009 की पालना सुनिश्चित करने के लिए विद्यालयों का संगठनात्मक ढाँचा मजबूत करने, शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने, प्रत्येक बच्चे को अधिगम के समान अवसर उपलब्ध करवाने के उद्देश्य मुख्य है। आज आयु अनुरूप कक्षा में प्रवेश से एक ही कक्षा में विभिन्न शैक्षिक स्तर के बच्चों की स्थिति उत्पन्न होती है। वर्तमान में शिक्षा के बदलते स्वरूप की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, NCERT नई दिल्ली द्वारा परम्परागत शिक्षण एवं मूल्यांकन पद्धति में सकारात्मक बदलाव करते हुए शिक्षा के सुदृढ़ीकरण हेतु नवाचार के रूप में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) को लागू किया, जिससे बालक का शिक्षण के दौरान शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों का समग्र आकलन करते हुए अधिगम सुनिश्चित किया जा सके। इसके अन्तर्गत कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया में बाल उपयोगी एवं बाल केन्द्रित शिक्षाशास्त्र के अनुसार गतिविधि आधारित अधिगम सुनिश्चित किया जाता है साथ ही सीसीई पद्धति से प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मूल उद्देश्यों को रेखांकित किया जा सकता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के उद्देश्यः-

- शिक्षा के प्राथमिक स्तर की नींव मजबूत करना।
- एनसीएफ-2005 एवं आरटीई-2009 की अक्षरशः पालना सुनिश्चित करना।
- बच्चों में पूर्णतम मात्रा तक शारीरिक व मानसिक योग्यताओं का विकास करना।
- बच्चों के स्वयं ज्ञान सृजन करने की क्षमताओं को विकसित करना।
- विद्यालयों में बच्चों को आयु अनुरूप प्रवेश की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना।
- विद्यालय प्रबंधन एवं शिक्षकों को दायित्वों के प्रति जवाबदेह बनाना।
- भयमुक्त परीक्षा प्रणाली के सिद्धान्तों को लागू करना।
- बच्चों में बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं दार्शनिक सोच को विकसित करना।
- कक्षा-8 तक नो रिटेन्शन की बाध्यता सुनिश्चित करना।
- जीवनोपयोगी एवं मूल्यपरक शिक्षण व्यवस्था को सुनिश्चित करना।
- विद्यालयों में भौतिक एवं मानव संसाधन उपलब्ध करवाना।
- शिक्षण प्रक्रिया में लर्निंग बाई डूइन्ग विधि का व्यवहारिक अनुप्रयोग।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को तर्कपूर्ण, खोजपरक, आनन्दायी एवं रोचक बनाना।
- बदलती शिक्षण व्यवस्था में आ रही चुनौतियों का निराकरण करना।
- शिक्षण कार्य में नवाचार को समाहित करते हुए कक्षावार-विषयवार अधिगम प्रतिफल की संप्राप्ति करना।
- बच्चों के शैक्षिक स्तर एवं सीखने की गति अनुरूप शिक्षण कार्य करवाना।
- बाल उपयोगी एवं बाल केन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया सुनिश्चित करना।
- शिक्षण एवं आकलन-मूल्यांकन प्रक्रिया का दस्तावेजीकरण करना।

- शैक्षणिक प्रक्रिया में समग्रता एवं समसामयिक संदर्भ में बच्चों का चहुँमुखी विकास करना।
- बच्चों में खोजपरक अभिरुचि के माध्यम से वैज्ञानिक सोच विकसित करना।
- पर्यावरण संसाधन, जनसंख्या एवं स्वास्थ्य संबंधी संचेतना विकसित करना।
- बच्चों की वैयक्तिक भिन्नताओं की पहचान कर तदनुरूप अधिगम के अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- बच्चों को औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा के द्वारा व्यक्तित्व विकास के लिए कर्त्तव्यपरायणता, त्याग, सहयोग, सहनशीलता, शिष्टाचार, नैतिकता, विनम्रता और समता के गुणों का विकास करना।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के घटक :-

- विद्यालय/संस्था
- संस्थागत व्यवस्था
- विद्यार्थी
- शिक्षक
- शिक्षण विधाएँ
- आकलन - मूल्यांकन पद्धति
- अभिभावक
- सामुदायिक सहभागिता
- संसाधन उपलब्धता
- शिक्षा विभाग
- शासन व्यवस्था

राज्य में प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 2011 में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में 'सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन' (CCE) पद्धति को लागू किया गया, जिसका विस्तार करते हुए वर्तमान में राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों के शैक्षिक उन्नयन हेतु कक्षावार एवं विषयवार अधिगम प्रतिफल/सम्प्राप्ति के उद्देश्य से कक्षा 1 से 5 में CCE के अन्तर्गत शिक्षण व्यवस्था का संचालन किया जा रहा है। प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षण कार्य में CCE की उपादेयता को उपयोगी समझते हुए माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत संचालित विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से वर्ष 2016 में इसे SIQE (State Initiative for Quality Education) के रूप में अपनाया गया।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE):-सतत‌ता का आशय लगातार व निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया से है। यह प्रक्रिया शिक्षण के दौरान सतत् अवलोकन, कक्षा शिक्षण, समीक्षा व नियोजन आदि से सीधी-सीधी जुड़ी हुई है।

व्यापकता-मूल्यांकन की व्यापकता में मूल्यांकन के क्षेत्रों एवं तरीकों की व्यापकता अन्तर्निहित है। यह बालक को उपलब्ध करवाए जाने वाले अवसरों, तरीकों व अनुभवों में देखी जा सकती है।

आकलन एवं मूल्यांकनः-आकलन छोटे-छोटे उद्देश्यों के साथ किया जाता है। आकलन मूल्यांकन का ही आधार होता है जिसके द्वारा कार्य की प्रक्रिया में निरन्तर सुधार किया जाता है। मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसमें अपेक्षित दक्षताओं के विकास के स्तर का निर्धारण किया जाता है।

बालकेन्द्रित शिक्षण शास्त्र (CCP):- बालकेन्द्रित शिक्षण-शास्त्र का आशय है कि बच्चे के अनुभव, स्तर और बच्चे की सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना, ताकि बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास व अभिरुचियों के मद्देनजर शिक्षा को नियोजित किया जा सके। इसमें प्रत्येक बच्चा महत्त्वपूर्ण है जिसमें बच्चों के अनुभवों, विचारों व सहभागिता को प्राथमिकता दी जाती है, बच्चा न केवल पुस्तक से अधिगम करता है, बल्कि अपने सहपाठी, परिवेश अथवा वातावरण से भी शिक्षा ग्रहण करता है। इससे बच्चे के पुस्तकीय ज्ञान को परिवेशीय सजगता से जोड़कर अधिगम का मार्ग प्रशस्त होता है। जिससे बच्चे अपने अनुभव, विचार और सहभागिता के आधार पर ज्ञान की रचना स्वयं करते हैं। इसके अन्तर्गत प्रत्येक बच्चे को कार्य करके सीखने के पर्याप्त अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए शिक्षण योजना का निर्माण किया जाता है।

गतिविधि आधारित अधिगम (ABL):- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अनुसार प्रत्येक बच्चा अपनी गति स्तर एवं रुचि के अनुसार सीखता है। निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 की धारा 29 (घ) के अनुसार सीखने-सिखाने की प्रक्रिया बालकों के शैक्षिक स्तर के अनुरूप, गतिविधि आधारित एवं खोजने की प्रवृत्ति को बढ़ाने वाली हो। इस हेतु सतत् एवं व्यापक मुल्यांकन में प्रत्येक बच्चे के सीखने को सुनिश्चित करने के लिए गतिविधि आधारित अधिगम की प्रक्रिया अपनाई जाती है।

लर्निंग आउटकम (LO):-विद्यालय में शिक्षण व्यवस्था के विकास की रचना में Larning Outcomes (अधिगम प्रतिफल/सम्प्राप्ति) प्रभावी साधन है। इसमें कक्षावार एवं विषयवार बच्चों के न्यूनतम अधिगम स्तर का निर्धारण किया गया है। इसके द्वारा बच्चों की शैक्षिक प्रगति का आकलन किया जा सकता है। यह सीखने-सिखाने की समावेशित प्रकार्यों के मापदंड का मानक है।

CCE के अन्तर्गत विद्यालयों हेतु सामग्रीः-विद्यालयों में योजनान्तर्गत कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया को प्रभावी बनाने, बच्चों के अधिगम स्तर का आकलन करने, बच्चों की अपेक्षित दक्षताओं एवं प्रगति को नियमित दर्ज करने तथा बच्चों के कक्षावार-विषयवार अधिगम सम्प्राप्ति की उपलब्धि का संधारण करने के उद्देश्य से कक्षा 1 से 5 के लिए आवश्यकतानुसार सवंर्धित सामग्री का विकास किया गया है जिससे शिक्षक, कक्षागत शिक्षण एवं मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावी रूप से संधारित कर सके। सीसीई के अन्तर्गत सामग्री जिसे विद्यालय स्तर पर अध्यापन कार्य करवाने वाले शिक्षकों के द्वारा संधारित किया जाता है, निम्नानुसार हैः-

1. **टर्मवार, कक्षावार-पाठ्यक्रम विभाजनः-**इसे प्राथमिक स्तर पर टर्मवार पाठ्यक्रमणीय अधिगम उद्देश्यों की पुस्तिका के रूप में तैयार किया गया है। जिससे सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को तय समयावधि में तदनुरूप अधिगम गतिविधियों का आयोजन किया जा सके। इसके अन्तर्गत कक्षावार-विषयवार-पाठ्यक्रम तालिका में अधिगम क्षेत्र/घटक, सीखने के प्रतिफल, अधिगम उद्देश्यों, पाठ का शीर्षक, पाठ में आए प्रमुख अधिगम बिन्दु समाहित किए गए हैं। इसके द्वारा, पाक्षिक योजना निर्माण, कक्षा-कक्षीय गतिविधियों के निर्धारण तथा सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने में शिक्षकों को मार्ग दर्शन प्राप्त होता है।

2. अध्यापक योजना डायरी- CCE की अवधारणा में शिक्षक द्वारा बच्चों के अधिगम स्तर का निर्धारण कर शिक्षण कार्य के दौरान ही

मूल्यांकन/आकलन का कार्य निहित होता है। पाठ्यक्रम विभाजन के आधार पर बच्चों के शैक्षिक स्तर अनुरूप समूह निर्धारण कर शिक्षण योजना तैयार की जाती है। शिक्षण योजना, पाक्षिक रूप से निरन्तर बनाई जाती है। इसमें शैक्षिक लक्ष्यों के आधार पर योजनागत शिक्षण कार्य करवाया जाना निहित है। शिक्षक द्वारा कराए जा रहे शिक्षण कार्य का संस्थाप्रधान द्वारा अवलोकन उपरान्त अभिमत दर्ज किया जाता है।

3. आकलन सूचक अंकन पुस्तिका (चैक लिस्ट) – इस दस्तावेज में विद्यार्थियों के साथ किए गए कक्षावार एवं विषयवार रचनात्मक कार्यों की उपलब्धियों को दर्ज किया जाता है। इसके निर्धारित प्रारूप में विषयवार अधिगम क्षेत्र के सापेक्ष प्रत्येक विद्यार्थी का आधार रेखा मूल्यांकन/पदस्थापन कर तदनुरूप प्रत्येक रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन में शैक्षिक प्रगति की स्थिति को A/B/C ग्रेड के रूप में दर्ज किया जाता है। प्रत्येक टर्म के अन्त में विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को दर्ज कर बच्चों का आगामी कक्षा-स्तर का निर्धारण किया जाता है।

4. वार्षिक आकलन अभिलेख पंजिका (स्कूल रजिस्टर):–वार्षिक आकलन अभिलेख पंजिका, बालक के सीखने की प्रक्रिया के समेकन के प्रमाण का दस्तावेज है। जिसे प्रत्येक विद्यार्थी के लिए निर्धारित प्रारूप में पृथक्-पृथक् से संधारित किया जाता है। इस पंजिका में विषयाध्यापकों का विवरण, पदस्थापन प्रारूप, विषयवार एवं अधिगम क्षेत्रवार उपलब्धि दर्ज की जाती है। इसमें बच्चों की शैक्षिक प्रगति के अलावा सह-शैक्षिक यथा व्यक्तिगत अभिवृत्तियाँ, स्वास्थ्य शारीरिक शिक्षा एवं कला शिक्षा के अन्तर्गत संगीत, चित्रकारी, दस्तकारी, नाटक, नृत्य की अभिरुचि को दर्ज किया जाता है।

5. पोर्ट फोलियो :– एक निश्चित अवधि में बच्चें की उत्तरोत्तर अधिगम उपलब्धि के संचयी साक्ष्य के रूप में फाईल संधारित की जाती है। बच्चों की कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया में रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन के दौरान अकादमिक प्रगति यथा मौखिक एवं लिखित साक्ष्य के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास संबंधी दस्तावेज संकलित किए जाते हैं। इसे समय-समय पर अभिभावकों से साझा किया जाता है।

6. विद्यार्थी वार्षिक आकलन प्रतिवेदन (रिपोर्ट कार्ड) : यह प्रत्येक विद्यार्थी को शैक्षिक स्थिति के अभिलेख के रूप में सत्रान्त पर दिया जाता है। इसमें कक्षावार-विषयवार अधिगम स्तर/कौशलों के सापेक्ष ग्रेड A, B & C के रूप में दर्ज किए जाते हैं।

ग्रेड देने के आधार

A= स्वतंत्र रूप से कार्य कर पाना या अपेक्षित स्तर की समझ/दक्षता होना।

B = शिक्षक की सहायता से कार्य कर पाना या मध्यम स्तर की समझ/दक्षता होना।

C = शिक्षक की विशेष सहायता से कार्य कर पाना या आरम्भिक स्तर की समझ/दक्षता होना।

कला-शिक्षा के आकलन में ग्रेड के स्थान पर क्षेत्र विशेष में विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति की स्थिति के अनुसार कोड 1, 2 या 3 के रूप में दर्ज किए जाते हैं।

7. कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया– प्राथमिक कक्षाओं में कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया का क्रियान्वयन सतत् शिक्षण एवं आकलन की अवधारणा को समाहित करते हुए किया जाता है। इसके अन्तर्गत बाल केन्द्रित शिक्षण को अपनाते हुए कक्षा में बच्चों का विषयवार आधार रेखा मूल्याकंन/पदस्थापन किया जाता है जिससे शिक्षक को बच्चों के शैक्षिक स्तर का आकलन कर गतिविधियों के निर्धारण में सहजता रहती है। शिक्षक द्वारा पाठ्यक्रम विभाजन एवं अधिगम सम्प्राप्ति के अनुरूप शिक्षण योजना का निर्माण कर तदनुरूप कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया में बाल केन्द्रित शिक्षण करवाते हुए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाता है। इसमें बच्चों की रुचि एवं सीखने की गति अनुरूप सामूहिक उप समूह तथा व्यक्तिगत कार्य किया जाता है। जिससे समयानुसार अधिगम की गति एवं स्तर में वृद्धि होती है। इस प्रकार शिक्षक नवीन विधाओं, नवाचार एवं शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग करते हुए शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने का प्रयास करते हैं।

विद्यालय अवलोकन :– विद्यालयों में बच्चों के शैक्षिक स्तर के साथ-साथ सह-शैक्षिक गतिविधि के विभिन्न पक्षों की समीक्षा, शिक्षण में आ रही चुनौतियों एवं इनके समाधान तथा अकादमिक सम्बलन प्रदान करने के उद्देश्य से विद्यालय अवलोकन/निरीक्षण किया जाता है। सीसीई की अवधारणा में अवलोकनकर्त्ता एक निरीक्षणकर्त्ता की भूमिका में न होकर एक सम्बलनकर्त्ता के रूप में होता हैं। वह समुचित अकादमिक पक्षों का अवलोकन करते हुए न्यून प्रगति वाले बच्चों के शैक्षिक स्तर उन्नयन हेतु संस्थाप्रधान एवं शिक्षकों से चर्चा कर सुझावों को निरीक्षण पंजिका में दर्ज करते हैं, जिससे आगामी अवलोकन में पालना सुनिश्चितता की जा सके।

हमारे दायित्व

शिक्षक के रूप में

- बाल केन्द्रित शिक्षण (CCP) के अनुसार शिक्षक प्रक्रिया सम्पन्न कराना।
- आधार रेखा मूल्यांकन/पदस्थापन कर समूह के अनुसार शिक्षण आकलन योजना बनाना।
- कक्षा-कक्षीय प्रक्रिया में योजनानुरूप शिक्षण करवाते हुए समीक्षा एवं सतत् आकलन करना।
- बच्चों की शैक्षिक प्रगति को निर्धारित दस्तावेजों में नियमित दर्ज कर अभिभावकों से साझा करना।

संस्थाप्रधान के रूप में

- कक्षा में शिक्षण प्रक्रिया का अवलोकन करते हुए शिक्षण योजना के क्रियान्वयन की समीक्षा करना।
- यथा समय संबलन प्रदान करते हुए शैक्षिक प्रगति का अभिलेख संधारण सुनिश्चित करवाना।
- मासिक समीक्षा बैठक का अयोजन करना व शिक्षकों की चुनौतियों के समाधान का प्रयास करना।
- एसएमसी/पीटीएम की बैठक में बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि एवं प्रगति को साझा करना।

समुदाय की सहभागिता:– विद्यालय में समुदाय की सहभागिता से न केवल बच्चों की प्रगति बेहतर होती है, बल्कि इससे शिक्षक के मनोबल में भी वृद्धि होती है। अभिभावकों द्वारा शिक्षक से चर्चा कर समस्याओं का निराकरण किया जाता है। इससे विद्यालय में बच्चों की नियमितता, ठहराव एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उन्नयन में समुदाय की सहभागिता व स्वामित्व परिलक्षित होता है।

अतः राज्य में प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की

नींव को मजबूत करने, बच्चों का सर्वांगीण विकास एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सीसीई के अन्तर्गत विद्यालयों में नियोजित तरीकों से रुचिकर अधिगम, शिक्षण कार्य समीक्षा, शैक्षिक स्तर अनुरूप शिक्षण आकलन में वस्तुनिष्ठता, व्यापकता एवं समग्रता को समावेशित किया गया है। शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के दस्तावेजीकरण के साथ-साथ बच्चों की शैक्षिक प्रगति को अभिभावकों से साझा किया जाता है।

विद्यालयों में सीसीई की मूल धारणा के अनुरूप शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से शिक्षक व बच्चों के मध्य संवाद की स्थिति बेहतर हुई है। जिससे विद्यालयों में **चाइल्ड फ्रेन्डली एनवायरमेन्ट** का विकास हुआ है। वर्तमान में प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में अधिगम प्रतिफल संप्राप्ति के साथ-साथ कक्षावार-विषयवार लर्निंग गेप्स के न्यूनतम स्तर को प्राप्त कर बच्चों के सर्वांगीण विकास को बल मिला है। सीसीई कार्यक्रम के प्रभावी संचालन में विभाग, संस्थाप्रधान, शिक्षकों, अभिभावकों एवं समुदाय के साझा सहयोग एवं सहभागिता से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उन्नयन की दिशा में सार्थक परिणाम परिलक्षित हो रहे हैं। यही सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) प्रक्रिया की मूल अवधारणा है।

राज्य में गुणवत्ता शिक्षा हेतु सहभागी संस्थाएँः-

BRC = Block Resource Centre
DIET = District Institute for Education and Training
SCERT = State Council of Educational Research and Training
SIEMAT = State Institute of Educational Management and Training
SMSA = Samarga Shiksha Abhiyan
DOSE = Directorate of Secondary Education
DOEE = Directorate of Elementary Education
UNICEF = United Nations International Children's Emergency Fund

"Education is for Every one"
'शिक्षा राष्ट्र निर्माण की प्रथम सीढ़ी है।'

अति. जिला शिक्षा अधिकारी
कार्यालय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा
भरतपुर संभाग, भरतपुर, **मोः 9413671118**

रचनात्मक उत्कृष्टता के सबल आधार

रचनात्मक उत्कृष्टता जीवन की संभावनाओं की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति है। यह बाहरी जीवन की हो या आंतरिक जीवन की, अपनी रुचि के क्षेत्र में कुछ नया करने की या अपने व्यक्तित्व को सजाने-सँवारने की-यदि इसे सही ढंग से अंजाम दिया जाए तो जीवन एक मौलिक दीप्ति के साथ आलोकित हो उठता है और जीवन उपलब्धि के गहरे संतोष भाव के साथ आप्लावित हो जाता है।

जीवन में रचनात्मक उत्कृष्टता किस तरह से साकार हो, इसके आधारभूत तत्त्वों का बोध आवश्यक है, जिनका संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत है-

(1) जिज्ञासा भाव- किसी भी सृजन का पहला चरण होता है। जिज्ञासा के गर्भ से ही नई रचना का प्रस्फुटन होता है। जिज्ञासा जितनी गहरी होगी, सृजन उतना ही अर्थपूर्ण होगा और समाधान उतना ही समग्र। अतः हम जितना विद्यार्थी भाव से भरे होंगे, गहरी जिज्ञासा लिए होंगे, उतनी ही हमारी सृजन की संभावनाएँ बेहतर होगी और हमारी रचनात्मक उत्कृष्टता पंख लगाकर उड़ान भरने के लिए तैयार होगी।

(2) रचनात्मक उत्कृष्टता के लिए स्वतंत्र चिंतन एवं मौलिक विचार का होना आवश्यक है। घिसी-पिटी राह पर चलते हुए हम बड़े सृजन या मौलिक समाधान की आशा नहीं कर सकते। बदलती परिस्थितियों के बीच जीवन की गहरी समझ अपेक्षित होती है, जो प्रस्तुत हो रही नित नवीन चुनौतियों का सामना करने व उनका सटीक समाधान देने में समर्थ हो।

(3) इसके लिए दृष्टिकोण की समग्रता महत्त्वपूर्ण होती है, जो किसी विषय के हर पहलू को समझने, इसके पक्ष एवं विपक्ष पर सम्यक विचार करने व सही निष्कर्ष तक पहुँचने में सक्षम हो। इसके अभाव में मात्र किसी एक पक्ष पर ध्यान केन्द्रित करने या अटके रहने से मामला एकतरफा एवं अतिरंजित हो जाता है और सृजन अपनी समग्रता के साथ प्रकट नहीं हो पाता। दृष्टिकोण की समग्रता के लिए अध्ययन की व्यापकता बहुत सहायक होती है।

(4) अध्ययन किसी विषय के नए-नए पहलुओं को प्रकाशित करता है, विचारों के विविधतापूर्ण संसार से हमें परिचित करवाता है। अध्ययन जितना व्यापक एवं विविधतापूर्ण होगा, उतना ही सोच में समग्रता का समावेश होता जाएगा और सृजन के सर्वथा नए द्वार हमारे लिए खुलते जाएँगे। इसके अभाव में व्यक्ति कूपमंडूक ही बना रह जाता है।

(5) रचनाधर्मी लोगों का संग- इसमें नए आयाम जोड़ता है। पुस्तकों से तो हमें एकतरफा सत्संग का लाभ मिलता है, लेकिन विशेषज्ञों का संग-साथ हमारी उठ रही जिज्ञासाओं का तत्काल समाधान भी कर देता है। अपने विषय का जानकार व्यक्ति उस विषय पर चलता-फिरता ज्ञानकोष होता है, जिसका संग रचनात्मक सृजन के संदर्भ में बहुत ही प्रेरक एवं सहायक सिद्ध होता है। न जाने इनका कौनसा एक विचार बीज जीवन की महान संभावनाओं को साकार करने की दिशा में एक निर्णायक कारक बन जाए।

(6) सहेजें चिंतन-मनन के एकांत-शांत पल- सृजन मन की एकाग्र-स्थिर एवं शांत अवस्था का शुभ फल होता है, जिसके लिए एकांत-शांत पल वरदान सरीखे होत हैं। जीवन की आपाधापी एवं भागदौड़ के बीच उच्च सृजन एवं गंभीर कार्य की आशा नहीं की जा सकती। अतः गहन चिंतन-मनन के लिए उपयुक्त एकांत-शांत पल एवं मनःस्थिति जब भी उपलब्ध हों, इन्हें सहेजने के लिए हमें सदा तत्पर रहना चाहिए।

(7) ध्यान का अभ्यास- रचनात्मक सृजन में बहुत लाभदायक होता है; क्योंकि ध्यान से तन तनावमुक्त होता है, इसकी स्थिरता एवं एकाग्रता बढ़ती है, जिससे हमारी रचनात्मक क्षमता में वृद्धि होती है। जिन भी चीजों से चित्त एकाग्र एवं शांत होता हो, उन्हें ध्यान का विषय बनाया जा सकता है। दिव्य प्रतीकों से जुड़ा ध्यान चित्त को परिष्कृत करता है। कालांतर में ध्यान से परिष्कृत मन सृजनात्मक उत्कृष्टता का एक प्रभावी उपकरण सिद्ध होता है।

साभार : अखण्ड ज्योति, सितम्बर 2019, पृष्ठ संख्या 46

हिन्दी में हिन्दी

❒ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद खीचड़

जब-जब हिन्दी भाषा हमारी बातचीत का विषय बनती है तब-तब यह रोना रोया जाता है कि हिन्दी भाषा को भारत की प्रथम भाषा का दर्जा संविधान की किताब के पन्नों में तो मिल गया है परन्तु व्यवहार में यह दोयम दर्जे की ही भाषा मानी जाती है। हिन्दी भाषा को भारत की वास्तविक राजभाषा का स्थान देने के लिए न तो सरकार की तरफ से कोई प्रयास किया जा रहा है और न ही देश की प्रजा के हृदयों में अपनी भाषा के लिए वह प्रेम और लगाव पैदा हो रहा है जो अपेक्षित है। हिन्दी के साथ हो रहे इस सौतेले व्यवहार की याद आते ही अनायास ही मानस पटल पर एक सवाल जन्म ले लेता है कि भाषा तो भावाभिव्यक्ति और विचाराभिव्यक्ति का एक माध्यम मात्र है। उच्चता तो भाव की होनी चाहिए। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी कहा है-

'भाव अनूठो चाहिए भाषा कोऊ होय'

तो फिर अभिव्यक्ति के एक माध्यम के लिए इतना चिन्तित होने की क्या आवश्यकता है। हिन्दी भाषा के अपने स्थान को विदेशियों की एक भाषा आंग्ल भाषा ने छीन रखा है और उस पर इस प्रकार से काबिज है कि भविष्य में कोई संभावना नहीं दिखाई पड़ रही है कि यह विदेशी भाषा इस स्थान को छोड़ेगी और इस स्थान की वास्तविक अधिकारिणी हिन्दी भाषा को बाइज्जत लौटाएगी। उल्टे वह तो भारतीय जाति को मानसिक रूप से अपना और भी गुलाम बना रही है। इस गुलामी को प्रश्रय देने वाले अंग्रेजी प्रेमी किंचित अर्द्ध-भारतीय भी अंग्रेजी के समर्थन में यह तर्क देते हुए मिल जाते हैं कि भाषा तो एक माध्यम मात्र है और माध्यम कोई भी हीन नहीं होता है। कुछ हद तक उनके इस तर्क में वजन भी है, परन्तु यहाँ सवाल हिन्दी व अंग्रेजी जैसे अभिव्यक्ति के माध्यमों का नहीं है, सवाल है संस्कृति का, सवाल है मानसिकता का, सवाल है जातीय प्रेम और जुड़ाव का जिसे भाषा सर्वाधिक प्रभावित करती है।

यहाँ भाषा को सहज अभिव्यक्ति का माध्यम बनाकर चलना उचित नहीं है। भाषा एक व्यापक मानसिक तंत्र होता है। किसी भी जाति व देश की भाषा उस जाति व देश की संस्कृति के साथ घुली-मिली हुई होती है। अपनी स्वयं की विकसित की हुई भाषा के अभाव में संस्कृति अपनी उच्चता को छोड़कर रुग्णता को प्राप्त करती है और संस्कृति का पल्लू छोड़कर भाषा अपने विकास को अवरुद्ध कर देती है। युगों-युगों से संचित संस्कार अपनी भाषा के सहारे ही पीढ़ियों को प्राप्त होते हैं और समय-समय पर उनका उचित परिष्कार भी अपनी स्वयं की भाषा के अभाव में नहीं हो सकता है।

हिन्दी हमारी मातृभाषा है, हमारी स्वयं की तैयार की हुई भाषा है। इसके प्रत्येक शब्द में हमारी संस्कृति की महक है। हिन्दी भाषा ही हमारी पावन संस्कृति की संवाहिका है। अतः हिन्दी भाषा को ही अपनाकर हम हमारी संस्कृति के साथ न्याय कर सकते हैं और इससे ही हम हमारी संस्कृति को अपने जीवन में पूर्णतया धारण कर सकते हैं। अंग्रेजी को अपना कर न तो हम अंग्रेजी में संस्कारित हो सकते हैं और न ही अपनी संस्कृति को बरकरार रख सकते हैं। राष्ट्रकवि दिनकर ने भी लिखा है-

''जातियों का सांस्कृतिक विनाश तब होता है जब वे अपनी परम्पराओं को भूलकर दूसरों की परम्पराओं का अनुकरण करने लगती हैं। इस सांस्कृतिक दासता का भयानक रूप वह होता है जब कोई जाति अपनी भाषा को छोड़कर दूसरों की भाषा अपना लेती है। फल यह होता है वह जाति अपना व्यक्तित्व खो बैठती है। उसके स्वाभिमान का विनाश हो जाता है।''

निःसंदेह अंग्रेजी एक समृद्ध भाषा है। इस भाषा के पास साहित्य की कोई कमी नहीं है। यह ज्ञान की भाषा है। इसे सीखना कोई पाप कर्म नहीं है और न ही अंग्रेजी सीखना हिन्दी के लिए कोई आपत्ति की बात है। रूसी, चीनी और जापानी भाषा भी सीखनी चाहिए। जो जितनी भाषाएँ सीख सके वह उतना ही अधिक विविध ज्ञान अर्जित कर सकेगा। किन्तु यह कहाँ उचित है कि किसी एक विदेशी भाषा को हम अपनी संस्कृति की संवाहिका बना लें। उसे शिक्षा का माध्यम बना कर अंग्रेजी और भारतीयता से मिश्रित एक मिश्रित भाषा पैदा करें अथवा चंद लोगों के स्वार्थ की पूर्ति के लिए उसे राजभाषा बना डालें।

लोकतांत्रिक प्रणाली की यह एक अनिवार्य शर्त मानी गई है कि जन की भाषा, लोकभाषा को प्रशासन में महत्त्वपूर्ण स्थान मिले। जो लोकभाषा बहुमत की भाषा है, वही राजभाषा बनने की अधिकारिणी है। बताने की आवश्यकता नहीं कि भारत के बहुमत की भाषा कौनसी है, वह कौनसी भाषा है जो समस्त भारतीयों के हृदयों को एक तार में पिरोने की क्षमता रखती है। हिन्दी को बोलने-समझने वाले लोग देश की जनसंख्या के पचास प्रतिशत से कुछ अधिक ही है। डेढ़ सौ वर्ष तक भारत में अंग्रेजी हुकूमत की तूती बोलती रही और राजभाषा अंग्रेजी बनी रही फिर भी दो प्रतिशत से अधिक लोग अंग्रेजी भाषा नहीं सीख पाए, आखिर यह अनुपात शून्यता पैदा कैसे हुई? क्योंकि अंग्रेजी ने हम पर शासन तो किया, परन्तु हमारी संस्कृति का संवहन वह कभी नहीं कर सके। कर भी कैसे सकते, भारतीय संस्कृति की संवाहिका तो कोई भारतीय भाषा ही हो सकती है। अंग्रेजी अपने प्रति हमारे अन्दर आकर्षण तो पैदा कर सकती है, श्रद्धा और प्रेम पैदा नहीं कर सकती है।

अंग्रेजी को थोपने वाले वर्ग के द्वारा एक तर्क यह भी दिया जाता है कि अंग्रेजी एक विश्वभाषा है और विश्वभाषा के प्रयोग के अभाव में किसी भी देश की प्रगति संभव नहीं हो सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने और समस्त संसार से जुड़ने के लिए एकमात्र भाषा अंग्रेजी ही हो सकती है। यहाँ मैं कहना चाहूँगा कि हम किसी भाषा विज्ञानी से जानकारी प्राप्त करें कि अंग्रेजी का कौनसा एक रूप विश्व का प्रतिनिधित्व करता है। अंग्रेजी का कोई भी एक रूप ऐसा नहीं है कि वह समस्त विश्व में बोला और समझा जाता है।

हमारे पूर्वज जब देश को स्वतंत्र करवाने के लिए अपना जीवन होम कर रहे थे, तब उनका यह सपना था कि भारत की स्वतंत्रता के बाद भारत की राजभाषा अपनी भाषा हिन्दी होगी। देश की स्वतंत्रता के बाद भारत की राजभाषा अपनी भाषा हिन्दी होगी। देश की स्वतंत्रता के पश्चात हिन्दी को वह इज्जत मिलेगी जिसकी

वह हकदार है, परन्तु उनके इस पावन स्वप्न को उनकी ही पीढ़ियों ने मटियामेट कर दिया। महात्मा गाँधी ने एक बार कहा था कि ''यदि मैं तानाशाह होता तो आज ही मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बना देता।'' और गाँधीजी ने एक बार यह भी कहा था ''क्या कोई व्यक्ति स्वप्न में भी यह सोच सकता है कि अंग्रेजी भविष्य में किसी दिन भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है?'' परन्तु आज हमारी राजभाषा अंग्रेजी है। हो सकता है कल को हम हिन्दी को पददलित करके अंग्रेजी को अपनी राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारें।

प्रत्येक वर्ष हिन्दी दिवस को पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दी भाषा को विषय बना कर अनगिनत लेख प्रकाशित किए जाते हैं। हिन्दी दिवस मनाने के लिए मंच तैयार किए जाते हैं और इन मंचों पर माथापच्ची से तैयार किए हुए हिन्दी भाषण दिए जाते हैं। क्या हमने कभी अपनी अन्तरात्मा से इस बात को स्वीकार किया है कि हिन्दी ही हिन्दी। शायद नहीं। अगर ऐसा होता है तो हिन्दी को भिखारिन बनकर हमारा मुँह नहीं ताकना पड़ता।

हिन्दी का तात्पर्य यहाँ हिन्दी से ही नहीं है। हिन्दी तात्पर्य है एक ऐसी परिनिष्ठित भाषा जो भारतवर्ष का प्रतिनिधित्व कर सके और मेरे विचार से ऐसी भाषा हिन्दी ही हो सकती है और हिन्दी भाषा की यह विशेषता है कि वह सभी भारतीय भाषाओं के शब्द-भण्डार से समानता रखती है।

हिन्दी विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषाओं में से एक है। इसकी अपनी स्वयं की लिपि है-देवनागरी और हिन्दी भाषा में साहित्य की भी कोई कमी नहीं है। विविध मुखी साहित्य हिन्दी के पास उपलब्ध है। इतना होते हुए भी हिन्दी कोई कठिन भाषा नहीं है। बहुत कम समय में इसे सीखा जा सकता है। इसमें वह ताकत है कि यह किसी भी प्रशासनिक, राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक, धर्म, दर्शन, शिक्षा, विज्ञान के विषयों को अभिव्यक्त कर सकती है। फिर कहाँ आवश्यकता पड़ गई हमें एक विदेशी भाषा का पल्लू पकड़ने की, उसका गुलाम बनने की। समस्त भारतीयों को इस सवाल पर एक बार पुनः विचार करने की आवश्यकता है।

सहायक आचार्य (हिन्दी)
राजकीय एम.एस. कन्या महाविद्यालय, बीकानेर
मो: 9828302984

जीवन्त भाषा हिन्दी

❐ महेन्द्र कुमार शर्मा

हिन्दी दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है, अनेक गोष्ठियाँ, परिचर्चाएँ और प्रतियोगिताएँ आदि आयोजित की जाती हैं।

हिन्दी हमारी संस्कृति की पहचान है, हिन्दी किसी एक धर्म, सम्प्रदाय, जाति और प्रदेश की भाषा नहीं है वरन् भारत के प्रत्येक कोने में कम या अधिक बोली और समझी जाती है, यह देश की अखण्डता का एक स्रोत है।

देश की प्रथम भाषा के साथ-साथ यह मातृभाषा भी है, व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास जितना मातृभाषा में होता है उतना अन्य भाषा में नहीं, विचार विनिमय का भाषा से बढ़कर कोई साधन नहीं हो सकता।

सम्पूर्ण देश में हिन्दी भाषा एक सम्पर्क सूत्र के रूप में विद्यमान है, यह एक लचीली भाषा है, इसमें अनेक विदेशी भाषाओं के शब्द समाहित हैं, जिनका प्रयोग हम दैनिक जीवन में बहुत ही सहज रूप से करते हैं।

हम हिन्दी दिवस को हिन्दी भाषा के विकास की बातें करके रह जाते हैं, मात्र इससे हिन्दी भाषा को गौरवमय स्थान मिलने वाला नहीं है, आज हिन्दी की अपेक्षा आंग्ल भाषा के ज्ञाता को अधिक विद्वान माना जाता है, इस मानसिकता को हमें दूर करना होगा।

मात्र संकल्प से हिन्दी भाषा का विकास नहीं होगा, इसे हमें व्यावहारिक रूप देना होगा, हमें परस्पर वार्तालाप में, पत्र व्यवहार में और कार्यालय आदि में हिन्दी भाषा का प्रयोग करना चाहिए, हमें हस्ताक्षर भी हिन्दी भाषा में करने चाहिए, हमें हिन्दी भाषा बोलने में गौरव का अनुभव होना चाहिए।

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
4167-68, खाटा ओली, नसीराबाद,
अजमेर (राज.)-305601

कहाँ जाऊँ पापा

❐ कैलाश गिरि गोस्वामी

11वीं कक्षा की छात्रा माया गत सत्र में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुई थी। सभी शिक्षकों ने उसके रिजल्ट को देख खूब सराहा था। गर्मी की छुट्टियों में खूब शादियों का दौर चला। दादी माँ ने बेटे को पास बुलाकर कहा-''रामजी, मेरे बेटे-बिटिया के हाथ पीले कर दो। बेटा, अब मेरे जीवन का कोई भरोसा नहीं है। और.... कल किसने देखा? कहते हैं न! काल करे से आज कर....।'' रामजी माँ की बात को टाल न सका। आनन -फानन में बच्ची की शादी करवा दी गई।

डेढ़ महीना बीत गया। स्कूलें फिर खुल गई। जुलाई का एक सप्ताह बीत गया। माया स्कूल से नदारद थी। प्रवेशोत्सव के सिलसिले में शिक्षकों ने माया के घर पर सम्पर्क किया। समझाने बुझाने पर अभिभावक तैयार हुए। माया ने हाथ में किताबें और कलम उठाई और स्कूल जाने को ज्यों ही देहरी लाँघी कि तभी मोबाइल की घंटी बजी। बेटी ने कॉल रिसीव किया। तभी उसके हाथ से किताबें नीचे गिर गई।

कॉल उसके पति का था, कह रहा था- ''माँ बहुत बीमार है, हम उसे लेकर अहमदाबाद हॉस्पीटल जा रहे हैं। तुम फौरन घर (ससुराल) आओ और काम-काज सम्भालों।''

माया के कदम रुक गए। सजल नेत्रों से अवाक् खड़ी थी वह। रामजी ने अधीर होकर पूछा-''बेटी तुम्हारी आँखों में आँसू क्यों हैं? बताओ तो.....।''

बेटी रूंधे गले से बोली-''पापा, मेरी एक आँख में आँसू इसलिए हैं कि मेरी माँ (सास) बीमार हैं और दूसरी आँख में आँसू इसलिए हैं कि अब मैं स्कूल नहीं जा पाऊँगी।

अब आप ही बताइए, मैं कहाँ जाऊँ पापा?

इतना कहकर फिर वह सुबकने लगी।

शिक्षक और अभिभावक निरुत्तर खड़े थे मगर ऐसा लग रहा था जैसे उनके बीच अभी भी कोई गहन संवाद हो रहा हो।

प्राध्यापक (हिन्दी)
मु. बोदिया, पो. मादलदा, तह. गढ़ी
जिला-बाँसवाड़ा-327034
मो. 9982505957

वह भी क्या दीवाली थी!

❒ भगवती प्रसाद गौतम

कैसे लौट-लौट आता है बरबस ही यादों में बचपन! वह दौर रहा होगा 1950-55 का। कोटा में छोटे काका जी के स्नेहिल संरक्षण में पढ़ाई-लिखाई के चलते ज्यों ही वार्षिक परीक्षाएँ खत्म होती, पाँव दौड़ पड़ते जन्मभूमि यानी तहसील छीपाबड़ोद के गाँव मोखमपुरा, जिला बारां (तब कोटा) की ओर। सफर का सिलसिला यों बनता...। पहले ताँगे से स्टेशन (जंक्शन), फिर ट्रेन, फिर बस...और उसके बाद 10-11 मील (लगभग 18 किमी) बैलगाड़ी या घोड़े-गाड़ी के हिचकोले। आखिर छुट्टियाँ तो छुट्टियाँ ही होतीं। चाहे वे गर्मियों की हों, दीवाली की हो या बड़े दिनों की। मगर बालपन में सफर की उस दूरी को हम कुछ न मानते। कभी-कभी ऐसा भी होता कि दशहरा-दीपावली की छुट्टियाँ एक साथ आ पड़ती और उस पर फिर उतरती आती भोली-भाली ठंड और सुहावनी हवा अद्‌भुत का आनन्द।

बारिश के बाद का मौसम। गाँव-बस्ती में साफ-सफाई का मौसम। गारा-गोबर, लिपाई-पुताई का मौसम। यों कहें कि दशहरा-दीवाली की तैयारियों का मौसम। इधर घर-घर में यह सब चलता और उधर हम भाइयों सहित सभी संगी-साथी, महावीर, शिव, गोविन्द, हरिबल्लभ, राधामोहन, पुरुषोत्तम, नारायण, रामकिशन, कल्याणा किस-किसके नाम गिनाएँ, एक से बढ़कर एक.. निकल पड़ते गाँव से लगी डाँग (घना जंगल) में कल-कल बहते झरनों-नालों की ओर। हँसी-खुशी के साथ नहाते-धोते, मौसमी फल तोड़ते-चखते और जब लौटते तो कमर तक लहलहाते घास और हरे-भरे वृक्षों के झुरमुटों के बीच से गुजरते हुए यहाँ-वहाँ पड़े मोरपंखों को उठाते और साथ भी ले आते। खेलने-कूदने, खाने-पीने व मौज-मस्ती के साथ जीने का नाम ही तो है बचपन। पर इसके साथ ही सोचें तो वह रचनात्मकता में हाथ खां करने का अवसर भी है। वह कैसे?

उस दौर मैं गाँव में न तो कोई स्कूल था और न ही कोई पक्के घर। सभी कच्चे, गारे-मिट्‌टी के, खपरेली और 'पांडू' (खड़िया जैसी मिट्‌टी) से पुते हुए। ऐसे में हम फुरसत में होते तो कुछ नया सोचते, समय का सदुपयोग करते और सफेद झक्क भींतों-दीवारों पर हरमच (कत्थई रंग), गेरु मिट्‌टी या लाल-नीले रंग से प्रेरक व ज्ञानवर्द्धक संदेश मांडते या फिर तुलसी, कबीर, रहीम जैसे संत कवियों के दोहे ही लिख देते। आते-जाते लोग पढ़ते और मुलकते-मुस्कराते तो हमें मन-ही-मन बड़ी खुशी होती।

बालपन से ही कलात्मक सृजन के प्रति मेरा रुझान रहा। दाज्जी खाती की खतोड़ में बैठे-बैठे लकड़ी की गढ़ाई-छिलाई को या देवा जी कुम्हार के चाक पर जाकर मिट्‌टी के लौंदों को नए-नए आकारों में ढलते देखना मुझे अच्छा लगता। इस तरह बड़े काका जी को सन या बांकड़े की रस्सी मेलते व गलाई-मोहरी बनाते और हाली-ग्वालों को चौपायों के लिए सुंदर सजावटी कंडे गूँथते देखता तो मुझे भी कुछ ऐसा ही करने का चस्का सा लगा और सच, जो मोरपंख खेतों-बाड़ों या डांग में मिलते वे सब घर आ पहुँचते। उनके सफेद पात खींचकर मैं भी कंडे बनाता और दीवाली पर ही नन्हें-नन्हें बछड़ों-बछड़ियों और पाड़े-पाड़ियों के गलों में बाँधता। घर के बड़े तो सराहते ही, ग्रामवासी भी आश्चर्य करते और कहते-''देखो रे, भाया जी भी आपणा लक्खण सीखग्या छै।''

वैसे हमने शहर की दीवाली भी देखी, उसकी चमक-दमक भी देखी और उसके बदलते बाजारवादी रंग-ढंग भी देखे। लेकिन उधर बचपन में देखी और पूरे उत्साह व उल्लास के साथ मनाई गई दीवाली को याद करते हुए मन अब भी सहज ही बोल उठता है-वास्तव में लोक जीवन और सात्विक संस्कृति से सराबोर वह दीवाली भी क्या दीवाली थी। वे दिन थे ही ऐसे कि बस्ती में कुछ रौनक तो तभी आ जाती जब हम शहर से गाँव पहुँचते और चिट-पिटियों, भींत-भड़ाकों और छोटे-मोटे पटाखों की आवाज होने लगतीं। फिर भी खास शुरूआत होती दशहरे से।

भारतीय पंचांग के अनुसार आश्विन शुक्ल नवमी यानी विजयादशमी से एक दिन पूर्व 'गाँव परजापत' (ग्राम कुम्हार) का परिवार मुहूर्त के मुताबिक ठंडे पड़े आवों (भट्‌टों) में से छोटे-बड़े कई कलश, घड़े, भांडो को छाँटता और जा पहुँचता 'रावण जी' के लंकाऊ डोल (दक्षिणी मगरे) पर। बर्तन-बासनों के आकार-प्रकार देख-देखकर उन्हें करीने से जमाता। एक तरफ पत्थरों की चिनाई से लंका का निर्माण होता, दूसरी तरफ हरी-भरी टहनियों का रोपण-जमावड़ा कर अशोक वाटिका जैसा दृश्य सजाया जाता और बीच में खड़े होते पूरी सज-धज के साथ राक्षसी प्रवृत्तियों व बुराइयों के प्रतीक 'रावण जी।' बचपन से ही सुनते आए थे कि रावण प्रकाण्ड पंडित था, बहुत बड़ा ज्ञानी था। इसीलिए गाँव-देहात में उनका नाम-सम्मान के साथ लिए जाने की परंपरा रही है। उसी शाम कुछ घरों में अश्व-पूजन होता। घोड़ों को नहला-धुलाकर उनके रंग-रूपों के अनुसार उन्हें सजाया जाता। शानदार खुगीर-काठी कसने के बाद खास तरह की मोहरी-लगाम पहनाई जाती। रावलों (रजवाड़ी, घरानों) में तो शस्त्र पूजन भी होता। अब न तो गाँव में रावले रहे और न ही उनके ठाट-बाट। इसलिए परंपरा केवल घोड़े-घोड़ियों के पूजन तक सीमित रह गई।

अगले ही दिन साँझ ढलने के साथ ही राजमंदिर से राम जी की सेना का कूच होता। सुंदर सुसज्जित ब्याण (विमान) ढोल बाजों के साथ रवाना होता, जिसमें बिराजमान होते भगवान राम, लक्ष्मण जी और हनुमान जी। पीछे-पीछे चलती तीर-धनुष, तलवारें, बल्लम, भाले, फरसे, गंडासे जैसे अस्त्र-शस्त्र लिए वानर-भालू के रूपधरे बच्चों-किशोरों की टोली। 'सियावर रामचन्द्र की जय', 'पवनसुत हनुमान की जय' सरीखे ओजस्वी घोष दो-तीन मील दूर बसे पहाड़ी गाँवों तक भी सुनाई देते। जब सेना लंका के निकट पहुँचती तो गाँव पटेल या बड़े पुजारी जी श्रीराम जी से स्पर्श करवाकर तीर छोड़ते तो बस 'जय श्रीराम' के मिले-जुले जयकारे के साथ ही सेना टूट पड़ती और घड़ों-भांडों से बने 'रावण जी' का अस्तित्व चंद मिनटों में बिखर जाता।

रावण वध के बाद ही बस्ती में एक नए उत्साह का संचार होता और हम इंतजार करते कि कब छोटे काका जी शहर से आएँ और अपने साथ फूलझड़ी, रोशनी, लड़ें, अनार, जमीन चक्कर, आकाशें, हुक्के, सुतली बम, रॉकेट व

तरह-तरह के नए से नए पटाखे लाएँ। वैसे शहरों-कस्बों में महालक्ष्मी पूजन की विशेष महत्ता रही है, मगर कोटा-बूँदी के हाड़ौती इलाके में धनतेरस (कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी) से भैयादूज व कलमदान पूजन (कार्तिक शुक्ल द्वितीया) तक सभी गाँव मिट्टी के दीयों की रोशनी और अलग ही तरह के रीति-रिवाजों व धूम-धड़ाकों में डूबे रहते। इन्हीं के चलते रूप चौदस के बाद अमावस्या के दिन गौ-पूजन के साथ ही भेड़-बकरियों का भी साज-सिंगार होता और उन्हें भी कई घरों में श्रद्धा के साथ पूजा जाता।

अब शुरू होती बा (दादी) की भूमिका। वह हमें कुम्हारों के चाक पर ले जाती और सभी को मिट्टी की बड़े दीयों जैसी हीडें दिलवातीं। घर पर दीयों के साथ ही उनका भी पूजन होता। फिर हम जली हुई हीडें लिए घर-घर जाते और बोलते-'तेल मेलो.. तेल मेलो, घी की हांडी फोड़ मेलो।'' कोई हीडों में अलसी-तिल्ली का तेल डालते, कोई मीठा मुँह कराते और कोई उपहार स्वरूप सिक्के-पैसे भी देते। माँ व काकियाँ 'परस्या पावणा' की गुहार लगातीं पास-पड़ोस के दरवाजों पर दीपक रखने जातीं। देखते-देखते सारी की सारी बस्ती रोशनी से जगमगा उठती। उसी के बाद आरंभ होता महालक्ष्मी का विधिवत पूजन, जिसमें घर के छोटे-बड़े सभी सदस्यों का उपस्थित रहना जरूरी होता। फिर चलता गाँव भर में बधाइयों व आपसी मेल-मिलाप का सिलसिला। छोटे बच्चे, युवा घर-बाहर के बड़ों के पाँव छूते और बड़े, छोटों को भरपूर लाड़ प्यार के साथ दुलारते, जुग-जुग जीने का आशीर्वाद देते।

दरअसल मेरी जन्मभूमि की दीवाली का खास आकर्षण रहा बैल-पूजन। कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (बोलचाल में पड़वा) के सूर्योदय के साथ ही घर की चौखट के सामने गोबर का लीपणा होता, चौक मांडा जाता, गोवर्धन जी (गोवर्धन पर्वत) थेपे जाते, दीप-धूप के साथ स्थापित किए जाते। उन पर वृक्षों के झुरमुट स्वरूप कुछ हरी-भरी टहनियाँ रोपी जातीं, मोरपंखों से सजाया जाता और बा के मार्गदर्शन में महिलाएँ दूध-दही के अर्पण के साथ उनका सामूहिक पूजन करती। मगर रोशनी त्यौहार पर इसी दिन एक मजेदार आयोजन और होता, जिसे कहते हैं 'खलूला।' दोपहर ढले भैंसों के साथ साज-श्रृंगार और पूजन के बाद उन्हें बस्ती के पिछवाड़े धूल-धूसर, खेतों-बाड़ों में खुला छोड़ दिया जाता। छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष सभी वहाँ पहुँचते। कुछ लोग खाली पीपों (कनस्तरों) को लंबे बाँसों से बाँधकर उनमें घास-छाने (कंडे, थेपले) भरते और थोड़ा जलाकर धुँआ पैदा करते। बस, फिर क्या, ढोल ढफ की आवाजों के साथ ही बारी-बारी से पीपों को खींचते हुए ज्यों-ज्यों वे भागते, कुछ भैंसे सिर मारती हुई उनके पीछे-पीछे दौड़ पड़ती। काफी उल्लास भरा शोर-शराबा होता। कभी कोई करतबी संतुलन खो बैठता तो कभी कोई भैंस ही बिगड़ जाती और गुस्से में किसी पर भी झपट पड़ती। हो-हल्ले में कई तमाशगीर खुद को बचाने के खातिर इधर-उधर भागते और कई लोग गिरते-पड़ते भी 'खलूले' का जमकर मजा लेते।

आखिर शाम होती, दीया-बाती होते और वह घड़ी आ पहुँचती जब अधिकांश घरों के दरवाजों पर बैल-पूजन होने को होता। बचपन से ही देखा है कि गाँव में हर साल इस पारंपरिक पूजन की शुरूआत हमारे घर से ही होती। ढोल की धमक के साथ दादा माँगू (मांगीलाल ढोली) सामने वाली नीमड़ी के नीचे आ जमता। एक-एक कर के बस्ती के युवा जुड़ने लगते। दादी के साथ माँ व काकियाँ पूजा का बड़ा थाल लिए पोल में आ खड़ी होती। छोटे बच्चों को गोखड़ों पर बैठा दिया जाता। ग्रामवासी चबूतरों से लग जाते और फिर आते पगड़ी-अंगरखी पहने दोनों हाली-हीरा जी और मन्ना जी, बैल-जोड़ियों की रास थामे हुए। मेंहदी रचे बैलों पर सुंदर कंडों, रेशमी पट्टों व डोरों-फूँदों के साथ छम-छम बजती भारी-भरकम घूघरमाल देखते ही बनती। इसी के साथ शुरू होता हीड-गायकी विशेष मंगलाचरण। छोटू, भँवरा, कान जी, सत्तू, फूल्या के सुरों में सुर मिलाते हुए रहमान भाई ऊँची टीप पर गा उठते-

हे हीड/सुमरो रे गणपत लाडला/
गबरी का नंद गनेस/सुमरो रे जटी हनुमान नै/
यां नै सारिया राम का काज।

जिसका आशय यह है कि 'हीड के साथ ही गौरी के लाडले पुत्र गणेश जी का स्मरण करें। उन हनुमान जी का भी स्मरण करें जिन्होंने भगवान राम के कार्य सम्पन्न किए।

यहाँ बताते चलें कि 'हीड' शब्द के दो अर्थ हैं। पहला दीप या मशाल और दूसरा गीत। एक में आजीवन प्रकाश व भाईचारा का संदेश विद्यमान है तो दूसरे में बैलों और घोड़ों की महत्ता को दर्शाया गया है, क्योंकि बैल भारतीय संस्कृति में अन्नदाता रहे हैं तो घोड़ों ने देश व मानव जीवन की रक्षा है। इसलिए मंगलाचरण की कड़ियों में देवी-देवताओं के साथ इनका भी स्मरण किया जाता है-

धरती पै भाया रे दो बड़ा/
एक तो घोड़ी अर दूजी गाय/
गऊ को जायो हल बोवै/
घुड़ला नै ढाब्यो छै राज।

भाव यह कि ''इस पृथ्वी पर दो ही पशु बड़े हैं। एक घोड़ी और दूसरी गाय। गाय का जाया (बैल) फसल बोता है और घोड़ों ने सदा राज्य को संभाला है, बचाया है।'' इसी तरह एक ओर समवेत स्वरों में हीड का मिठास घुलता है और दूसरी ओर अर्चन-वंदन के क्रिया-कलाप आगे बढ़ते। दोनों हाली बैलों की रास बड़े काका जी के हाथों में थमाते। बा अपने हाथों से बैलों को मीठी-चरकी पापड़ियाँ खिलाती। साथ ही माँ व काकियाँ उनकी आरती उतारती और भाई जी (पिताजी) अंतिम मंत्रोच्चार के उपरांत परिक्रमा कर बैलों के खुरों को छूकर ढोक देते तो बरबस ही उनकी आँखें छलक पड़ती। सच, यह दृश्य बड़ा ही मार्मिक व भावुकतापूर्ण बन पड़ता। खैर, अंततः ज्यों ही हालियों को उपहार दिए जाते, वस्त्र भेंट किए जाते, त्यों ही वे अपने-अपने बैलों की रासें थामकर मंदिर के सम्मुख बँधी 'मंगलार' (घास से निर्मित मंगलद्वार) की ओर बढ़ जाते और उन्हें उसी मंगलार के नीचे से गुजारकर ईश्वर से उनकी सेहत व शक्ति के लिए प्रार्थना करते।

बस, इसी के साथ छोटे काका जी के पटाखों का पिटारा खुलता और शुरू हो जाता हम बच्चों का आतिशबाजी का मजेदार दौर। यद्यपि मौज-मस्ती के चलते कभी-कभी छोटी-मोटी अप्रिय घटनाएँ भी हो ही जाती, मगर हमारी सूझ-बूझ या बड़ों की सीख-सिखावन से सब ठीक हो जाता। सच, वह भी क्या दीवाली थी, जहाँ सहज स्नेह था, सम्मान था, सुकून था, सौहार्द्र था, सामंजस्य था। एक का सुख-दुःख पूरे गाँव का सुख-दुःख था और सबसे बड़ी बात यह कि उसमें सच्चे बचपन का सच्चा आनन्द था।

1-त-8 अंजलि, दादाबाड़ी, कोटा-342009
मो: 09461182571

माँ : सृजक व पहली गुरु

❒ शशि ओझा

माँ जन्मदात्री है, पालक है, हर क्षण समर्पित है। माँ तराजू के एक पलड़े में बैठी है तो दूसरे पलड़े में पूरा संसार, वैभव, चाहत, रिश्ते सब कुछ निहित हैं। माँ का रिश्ता सबसे बड़ा है।

माँ सृजन का ईशप्रदत्त गुण लिए समर्पण का सार है। बालक शिशु, किशोर, युवा, वृद्ध सभी अवस्थाओं से गुजरता है। लेकिन माँ की ममता में अन्तर नहीं आता है। माँ प्रातः 5 बजे से उठकर रात्रि 10.00 बजे तक निरन्तर सजग रहती है। एक अद्‌भुत उत्साह, जीवटता से कार्य करती है।

मेरी माँ भी क्रियाशील, परिश्रमी रही। पाकशास्त्र में निपुण थी। भोजन बनाना, परोसना, घर के सभी कार्य हँसते हुए करती थी। आज भी हँसमुख चेहरा, भाल पर लाल सुर्ख बिन्दी, हाथों में लाल मेंहदी याद आती है। मेरी माँ गौरवर्ण बड़ी-बड़ी आँखें, पतली सी नाक-नक्श वाली सुन्दर लगती थी। सुन्दर सी साड़ी (कॉटन) पहने आँगन की शोभा बढ़ाती थी।

माँ ब्यूटी पार्लर, डाइटीशियन, गुरु, मार्गदर्शक थी। नाश्ते में दूध, दलिया, मक्खन मिश्री, घानी, कड़कड़ शक्कर खिलाती थी। भोजन में मौसमानुसार बड़े श्रम से बनाती थी। भोजन में हरी सब्जी, चपाती, चटनी (धनिया, पोदीना, लहसुन आदि की सिलबट्टे पर बाँटकर) रायता खिलाती थी। गर्मी में चना, गेहूँ की घूघरी भी बनाती थी। घूघरी में कड़कड़ शक्कर मिलाकर (दोपहर में) सबको खिलाती थी। घर पर ही स्वच्छ व स्वस्थ भोजन बनाकर खिलाती थी।

चार भाई-बहिन रहे। सबको अपना-अपना काम बाँट देती थी। अपने-अपने वस्त्र अपनी-अपनी ताकों (खुली अलमारी) में रखते थे। प्रातः दूध, देशी गाय का ताजा ठंडा ही पिलाती थी। शाम के भोजन में खिचड़ी, चावल, दाल, टमाटर सूप बनाती थी। लगभग 20 लोगों का खाना जरूरत पड़ने पर खुद ही बना लेती थी।

माँ किसी भी साबुन का उपयोग स्नान कराने में नहीं लेती थी। साबुन व वाशिंग पाउडर से वस्त्र धोती थी। माँ बेसन में हल्दी मिलाकर हमें हाथों व पैरों के लगाकर स्नान करवाती। प्रतिदिन सरसों का तेल नाक व कान में लगवाती थी। कभी-कभी सरसों का तेल नाभि पर लगवाती थी।

माँ को प्रकृति से बेहद प्रेम था। घर में कुछ पौधे लगा रखे थे। नीम का पेड़ था। तुलसी जी आँगन में शोभा बढ़ाती रही। हमेशा प्रातः तुलसी को दीपक, जल चढ़ाना, सूर्य को अर्घ्य देना, सामान्य बात रही। मेरी माँ आध्यात्मिक विचारों की थी। पिताजी को मैं भाई बाकी सब बाऊजी कहते थे। बाऊजी भी आस्तिक रहे। आप भी प्रतिदिन ईश्वर की पूजा करते। बाद में सारे कार्य होते थे।

सबका जीवन संयमित रहा। चार, पाँच जोड़ी कपड़ों से अधिक किसी के भी नहीं सिलवाती थी। उनमें से कोई फटते तब दूसरी पोशाक आती थी। घर के सदस्यों का आपस में विश्वास, प्रेम अधिक था। समय-समय पर काका, ताऊ, ताईजी, उनके बच्चे आते थे। सब साथ रहते। बड़ा आनन्द आता था।

माँ किसी चिकित्सक से कम नहीं थी। गर्मी में स्नानघर में एक मटकी पानी से भरी रखती थी। माँ का तर्क था कि जितनी बार स्नानघर में जाओ अपने पैरों व आँखों, मुँह पर पानी डालो इससे सिर में ठंडक पहुँचती है जो शरीर के लिए आवश्यक है। आँखों की रोशनी तेज होती है। मेरी माँ अनुभवी रही। नानाजी वैद्य रहे। माँ को आयुर्वेद की देशी दवाइयों की जानकारी थी। घर के मसाले, वस्तुओं से वो उल्टी, दस्त, कब्ज, बुखार आदि का उपचार कर देती थी। माँ कर्मठ, सेवाभावी, मृदुभाषी रही। पड़ौस की महिलाएँ अवसर आने पर माँ से उल्टी, दस्त, बुखार, सिरदर्द, लू लगना, खाँसी, घबराहट आदि की दवाइयाँ पूछती थीं। ऐसे में मेरी माँ किसी डॉक्टर से कम नहीं थी। आप शांत रहकर प्रेम से आत्मविश्वास से सब नुस्खे बता देती थी लाभान्वित करती थी।

गर्मी में बच्चों को विद्यालय में अवकाश होते ही काका, भुआजी, ताऊजी आदि के बच्चे 15-20 दिन साथ में रहते थे। माँ हमारे साथ ताश, साँप-सीढ़ी, लंगड़ी, टाँग, चंगाया, चौपड़, चिरामियाँ (लकड़ियों का खेल) रिंग, धूप-छाँव आदि प्रसिद्ध खेल खिलाती व खुद खेलती थी। यह सन् 1961-62 की बात है और बाद में भी यही जीवन शैली रही।

मेरी माँ कुशल रही। सबको छोटे-छोटे काम सिखाती थी बड़े भाई कपड़ों के प्रेस खुद करते। मैं झाड़ू, पौंछा लगाती थी। सब मिलकर काम करते थे। मुझे कक्षा 11 में किरोशिया धागे में फँसाकर फूल व बनानी सिखायी एक फूल बनवाकर फ्रॉक पर लगवाया। तकिया के पर भी फूल, बेल सजाती थी। मेज कवर के बॉर्डर बनाना सिखाया।

माँ गर्मी के मौसम में शर्बत (गुलाब, गुलकन्द, नींबू) खुद ही बनाती थी। घर पर ही आगरे का पेठा बनाती थी। ताजा व स्वादिष्ट वस्तुएँ, मिठाई खिलाती थी। घर के पिछवाड़े में खुली जगह पर क्यारी बनी हुई थी। जिसमें भिंडी, टमाटर लगा रखे थे। टमाटर, भिंडी रोज खिलाती थी।

माँ हमें घर पर ही चित्रकला, देश भक्ति गीत, प्रयाण गीत, भजन सिखाती थी। अंग्रेजी भाषा के शब्दों को बार-बार लिखवाकर याद करवाती थी। गणित में गिनती जोर से बोलना, याद करना सिखाती थी। वह मेरी पहली गुरु थी। हमें कोचिंग कक्षाओं में नहीं जाना होता था। माँ आत्मा से जुड़ी थी।

माँ पारम्परिक गीतों में सिद्धहस्त रही जैसे जन्म, सगाई, विवाह, बधाई, बहु के आगमन पर, हल्दी, तेल आदि के गीत लयबद्ध होकर गाती थी। मेरे पूरे परिवार में गीतों की विशिष्ट गायिका रही।

माँ की यादें हर पल मेरे जहन में रहती हैं। मैं जब मुसीबत में होती हूँ तो ऐसा लगता है जैसे आत्मा से संबंध है या माँ मेरे इर्द-गिर्द ही छाया सी रहती है। मैं कुछ समय बाद माँ से पूछती हूँ अन्दर से आवाज आती है और हल निकल जाता है।

वास्तव में जीवन शेली का बहुत बड़ा असर होता है। हमें इसे सुधारना होगा।

4 एच 1, आर.सी. व्यास कॉलोनी,
भीलवाड़ा
मो: 9461686100

नारी महिमा

❒ अर्चना लखोटिया

''धरती की तरह मौन है नारी,
चाँद की तरह शीतल है नारी।
सागर की तरह विशाल है नारी,
इसे अधिकार दो, नहीं तो
रणचण्डी की तरह खूंखार है नारी।''

हमारे देश में प्राचीन काल से ही नारी को सम्मान दिया जाता रहा है। भारतीय संस्कृति में नारी नर को लक्ष्मीनारायण का प्रतिरूप माना गया है। साथ ही **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'** जैसे कथन से नारी का विशेष गरिमा प्रदान की गई है। वास्तव में भारतीय नारी विद्या, बुद्धि, शौर्य और चरित्र के क्षेत्र में आदर्श रही है। प्राचीन काल में नारी को सम्मान प्राप्त रहा वह मध्यकाल में माना जाता रहा परन्तु वर्तमान में नारी वह सम्मान पुनः प्राप्त करने में आगे आ रही है।

नारी का प्राचीन स्वरूप

सीता का त्याग और द्रोपदी के चीर की कहानी।
पत्थर दिल आँखों में भी ला देता है पानी।।
अधर है त्याग हाड़ा रानी का।
गान्धारी को सबक मिला बच्चों की मनमानी का।।
कृष्ण को देवकी ने जन्म दिया और यशोदा ने पाला।।
नारी तुम हो संस्कारों की प्रथम पाठशाला।।

वैदिक काल में भारतीय नारी का स्वरूप बहुत ही सम्माननीय था। उस समय नर-नारी को समान अधिकार प्राप्त थे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने का उन्हें अधिकार था। गार्गी, मैत्रेयी आदि विदुषी नारियों के उदाहरण इस बात के गवाह हैं। इसके साथ ही वे युद्ध में शौर्य प्रदर्शन भी करती थीं। वे आदर्श गृहिणी और आदर्श माताओं के रूप में अपना जीवन बिताती थी।

वर्तमान युग की नारी

अटल साहस का प्रतीक है तू विश्वास का।
ढलता हुआ सूरज है तू सबकी आस का।।

पुरुषों के साथ तू कन्धे से कन्धा मिलाकर चली। और आज का युग वैज्ञानिक चिन्तन युग है। समय के साथ नारी के प्रति दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया है। अब न उसे अबला माना जाता है और न ही उसके साथ किन्हीं अन्धविश्वासों को जोड़ा जाता है। आजादी के बाद कस्तूरबा गाँधी, सरोजनी नायडू, सुचेता कृपलानी, इन्दिरा गाँधी का नाम गौरव के साथ लिया जाता है। वर्तमान समय में नारी की भूमिका पर बहुत बल दिया जा रहा है। शिक्षा के लिए अधिकाधिक सुविधाएँ दी जा रही हैं। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने अनेक योजनाएँ लागू की हैं जिनमें बालिका छात्रावास, बालिकाओं के लिए साइकिल योजना, कस्तुरबा गाँधी बालिका आवासीय योजना, बालिकाओं के लिए कम्प्यूटर प्रशिक्षण, बालिका शिक्षा ऋण, आपकी बेटी योजना आदि योजनाएँ बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए लागू की गई हैं।

आधुनिक भारतीय नारी

नारी जीवन विविध क्षेत्रों में सक्रिय है। वह राजनेता, अर्थशास्त्री, डॉक्टर, उच्च पुलिस अधिकारी, न्यायविद, उद्योगपति, अध्यापिका, पॉयलट, ड्राईवर है। भाव यह है कि हर प्रकार का कार्य करने में वह अपनी सामर्थ्य सिद्ध कर रही है। जिन क्षेत्रों पर पहले पुरुष का एकाधिकार समझा जाता था उनमें भी नारी क्रमशः आगे बढ़ रही है। ट्रक चलाने, बन्दूक चलाने, हवाई जहाज उड़ाने जैसा कार्य भी कुशलता पूर्वक सम्पन्न करने में नारी सफल हो रही है। एक सफल पुरुष के पीछे हमेशा नारी का ही हाथ होता है। चाहे वह माँ हो, बहन हो या बेटी हो। नारी हमेशा नर से महान रही है इसलिए भारतीय संस्कृति में नारी को देवी कहकर पुकारा जाता है और पुरुषों से पहले नारी का नाम लिया जाता है। जैसे सीताराम, राधेश्याम, उमाशंकर, गौरीशंकर, पार्वतीपरमेश्वर, लक्ष्मीनारायण, गिरजाशंकर आदि।

बालक की प्रथम पाठशाला परिवार है और उसकी प्रथम गुरु माँ है। माँ शब्द बीज की तरह छोटा है और बरगद की तरह विशाल।

माँ = MOTHER

M=make;
O=of;
T=the;
H=human;
E=excellent;
R=relations

समाज परिवार से बनता है परिवार की खुशियाँ या परिवार को स्वर्ग उस घर की नारी ही बना सकती है। यदि नारी शिक्षित होगी, समझदार होगी तो अपने बच्चों में अच्छे संस्कारों के बीज पैदा करेगी। हर नारी को चाहिए कि वह अपनी सन्तान को घर का गमला नहीं जंगल का वृक्ष बनाएँ, ताकि यदि कोई उन्हें खाद पानी न भी दे, तब भी वे अपने बलबूते पर खड़े रह सके। जीवन में हरी घास सूखती अवश्य है इसलिए बच्चों को इस बात का अहसास कराते रहें कि उन्हें जो हरी घास मिली है उसे सूखने में ज्यादा समय नहीं लगता है।

आधुनिक भारत का जो दुनिया में स्थान है उसे बनाने में नारी का ही योगदान रहा है। उसी ने संस्कारों से युक्त पीढ़ी तैयार कर भारत को विश्व गुरु के स्थान पर सुशोभित किया है। हम अपने देश का स्थान दुनिया में बनाएँ रखें इसके लिए नारी को ऐसी पीढ़ी तैयार करनी चाहिए कि उनमें सस्कारों की शिक्षा कूट-कूटकर भरी हो। पुरुषों को भी नारी का पूरा सम्मान करना चाहिए।

मनुस्मृति में कहा है कि-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।
शौचन्ति जामए यत्र विनशत्याशु तत् कुलम्।।

अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं और जिस घर में नारियाँ दुःख प्राप्त करती हैं उस कुल का शीघ्र नाश हो जाता है इसलिए पत्नी को अर्द्धाँगिनी समझे, गुलाम नहीं। विवाह करके गृहलक्ष्मी लाए तो उसे लक्ष्मी समझें भी। उसके मान-सम्मान की पूरी रक्षा करें। नारी को अभी भी तुच्छ या हेय समझा जाता है और उसे अनेक प्रकार से सताया जाता है। दफ्तरों आदि में उसे अनेक प्रकार की अप्रिय बात सुनने को मिलती है और घर में भी अपमान के कड़वे घूंट पीने पड़ते हैं। इन सब बाधाओं को दूर करने का प्रयास जारी कर रही है। यह समस्याओं से जूझ रही है और नवीन चुनौतियों का मुकाबला भी कर रही है। वह दिन दूर नहीं जब समाज में उसका गौरवपूर्ण तथा सम्मानजनक स्थान सुनिश्चित होगा।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
पारा (केकड़ी) अजमेर (राजस्थान)
मो. 9649973308

दोस्ती (दो+हस्ती)

❒ अभय कुमार जैन

''दोस्ती शब्द का अर्थ बड़ा ही मस्त होता है, जब दो हस्ती मिलती हैं, तब दोस्ती होती है।''

मित्रताः– बिना कुंडली मिलाए, बिना पंडित से पूछे, बिना गुण मिलाए बिना ईष्ट आराध्य के स्थापित होने और आजीवन रहने वाला सम्बन्ध – मित्रता।

दोस्तः– दोस्त दवा से भी ज्यादा अच्छे होते हैं, क्योंकि अच्छी दोस्ती की कोई एक्सपायरी डेट नहीं होती है।

मित्रों में ऐसी कौनसी विशेषता है जो रिश्तेदारों से भी बढ़कर है उत्तर मिला– वे सगे चचेरे, ममेरे, फूफरे मौसरे और सातेले नहीं होते हैं।

दोस्ती का गणित भी कुछ अलग है साहब, दो में से एक गया तो कुछ भी नहीं।

दिल की बात हर किसी को नहीं बताई जाती जख्मों से चादर हर किसी के सामने हटाई नहीं जाती मगर दोस्त तो आईने होते हैं और आईने से कोई बात छुपाई नहीं जाती है।

वैज्ञानिक प्रमाण बता रहे हैं कि दोस्ती हमारी सेहत के लिए एक बहुत अच्छी चीज है यदि हमारे पास अच्छे मित्र हैं तो इस बात की संभावना अधिक है कि हम उच्च रक्तचाप, मधुमेह, उच्च कोलेस्ट्रोल जैसी चीजों से काफी हद तक बचे रहेंगे। जिन लोगों के दोस्त होते हैं, उनकी मृत्यु दर कम हो जाती है, फिर चाहे स्वस्थ है या अस्वस्थ। इससे वे लोग भी शामिल है जिन्हें हृदय संबधी बीमारी हो या कैंसर हो आखिर दोस्त और उनकी दोस्ती हमारी तनाव नियंत्रण प्रक्रिया का एक हिस्सा जो है।

शोध में सामने आया है कि दोस्ती न होना हमारे लिए बहुत हानिकारक है। जिस व्यक्ति का कोई दोस्त नहीं होता वह अकेलेपन और अवसाद की भावना का शिकार हो जाता है, इस तरह की भावना से तनाव और अन्य बीमारियों पनपती है जैसे हार्टअटेक, अस्थमा, विभिन्न प्रकार के कैंसर, डायबिटिज, सिर दर्द, सामान्य सर्दी, ब्लड प्रेशर आदि।

केलीफोर्निया की एक यूनिवर्सिटी ने महिलाओं को सलाह दी है कि उन्हें सहेलियाँ बनानी चाहिए। ऐसी सहेलियाँ जो उनके मन की बातें बांट सके। अनुसंधानकर्त्ताओं की शिकायत है कि सुपर वुमन सिन्ट्रोम के कारण आजकल औरतों में सखियाँ बनाने की प्रक्रिया कम हो गई है वैसे हम अमेरिकी अनुमान पर न जाए। परिस्थतियों के आईने में उक्त तथ्य की जाँच करें तो भी हम पाएँगे कि भारतीय स्त्रियाँ सखियाँ कम बना पाती हैं, पतियों के दोस्त भारतीय समाज में अधिक स्वीकृत होते हैं, बजाए पत्नियों की सहेलियों के। बहरहाल हम इस बहस में न जाए तो भी यह सच है कि स्त्री हो या पुरुष उनके लिए मित्र स्वास्थ्य को अच्छा रखने में मददगार साबित होते हैं। मित्र बनाना और उनके संपर्क में रहना आपकी भावनात्मक और शारीरिक सेहत के लिए अच्छा है भले फिर आप रूबरू न मिल पाएँ तो संचार सुविधाओं के इस जमाने में मोबाइल, चिट्‌ठी, ई–मेल, व्हाट्सअप के जरिए मित्रों के संपर्क में रहे तो अच्छा है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए सुबह की सैर, व्यायाम, पोषण युक्त भोजन, पारिवारिक शाँति के साथ मित्रता की भी आवश्यकता है।

आपने कुछ लोगों को देखा होगा जो हमेशा हँसते–मुस्कुराते मिलेंगे ऐसे लोग जिन्दगी के हर लम्हें को जीना चाहते हैं उनकी खुशी का राज बनाने के लिए उनके सामाजिक दायरे को टटोलिए तो आपको मालूम होगा कि उनके पास कुछ ऐसे दोस्त हैं जो उन्हें हमेशा ऊर्जावान बनाए रखते हैं अपने इर्द–गिर्द आपको इस तरह के कई उदाहरण मिल जाएँगे जहाँ अच्छे दोस्त का महत्त्व आदमी के चेहरे की मुस्कान के रूप में सामने आता है, वर्तमान की आपाधापी, भागदौड़ व तनाव भरी जिंदगी में अच्छे दोस्त/सहेली की उपस्थिति और भी जरूरी हो गई है।

मित्र, सहयोगी, संगी, साथी, सहेली एक ऐसा रिश्ता है जो स्वयं बनाते हैं लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि मित्रता को जीवित एवं स्थिर रखना उसे विकसित करना। संसार में सच्चे मित्रों की कमी नहीं परंतु मित्रता को जीवित कैसे रखा जाए उसे दिनों–दिन मधुर एवं गहरा कैसे बनाया जाए? इस ज्ञान के अभाव में मिले हुए मित्र दूर हो जाते हैं, जहाँ स्वार्थ लोभ की कामना रहती है, वहाँ मित्रता टिक नहीं सकती।

जीवन यात्रा का पथ बहुत लम्बा होता है, इसमें अनेक उतार–चढ़ाव, परिवर्तन, अनुकूल परिस्थितियाँ आती हैं, जिनमें चलना साधारण लोगों के लिए बहुत कठिन हो जाता है, खुशी के समय को व्यक्त करने हेतु साथी चाहिए। अन्यथा आपकी खुशी–आनंद किसे बताएँ? साथी की आवश्यकता मानव जीवन का एक अनिवार्य पहलू है।

संसार के रिश्ते सम्बंधों का मूल कारण भी यही है मानव के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़े हुए जीवन में मित्रों का सहयोग न मिलने पर जीवन के अनेक कार्य सफल नहीं होते हैं अनेक व्यक्तियों से संपर्क बना कर व्यक्ति अपने आपको पूर्ण बनाने का प्रयत्न करता है। मनुष्य को जीवन में अभिन्न एवं योग्य मित्र मिल जाना ईश्वरीय वरदान है। डॉ. नरेश पुरोहित ने बहुत ही अच्छी बात कही है, सच्चा मित्र संसार की सबसे बड़ी सम्पत्ति एवं जीवन की सफलता का आधार होता है, सचमुच वे लोग बहुत भाग्य शाली हैं, जिन्हें

अच्छे मित्र मिल जाते हैं, मित्रता के लिए महत्त्वपूर्ण गुण है हृदय की विशालता, महानता एवं उदारता। इसके कारण गरीबी एवं विपत्ति में भी मित्रों की कमी नहीं रहती है। हृदय की इस विकसित अवस्था से जंगल में भी मित्र मिल जाते हैं, एक दूसरे की समस्याओं को समझते हुए बिना माँगे, कहे, स्वेच्छा से एक-दूसरे का उदारता पूर्वक सहयोग करना ही सच्ची मित्रता का आधार है कठिनाई के समय ही मित्रता की परीक्षा होती है, मित्रता में एक ही व्यथा, दूसरे की व्यथा तथा एक का दुःख, दूसरे का दुःख हो जाता है।

मित्रता में किसी प्रकार की आशा आकांक्षा नहीं रखनी चाहिए क्योंकि संभव है वे पूर्ण न हो सकें एवं व्यक्ति को निराशा का सामना करना पड़े। मित्रों में जहाँ तक संभव हो किसी प्रकार की माँगे पेश नहीं की जाए, मित्रता आंतरिक खुशी की वृद्धि, स्वतः सुखाय मनोभूमि हेतु एक सामाजिक संयोग है, बाहरी स्वार्थ, लाभ, आशा, आकांक्षाओं के लिए उसमें कोई स्थान नहीं है, वस्तुतः मानसिक एवं नैतिक क्षेत्र, समानता, एकता, सामंजस्य का नाम ही मित्रता है।

जीवन में दोस्त/सहेली की भूमिका :-

1. आप अपने मन की बात खुलकर बांट सकते हैं।
2. बुरे दिनों में दोस्त का सहारा लिया जा सकता है।
3. किसी भी विषय पर वाद-विवाद रहित बहस करना आसान है।
4. बुरी संगत में पड़ने से रोकने में दोस्त की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती हैं।
5. किसी भी असमंजस की स्थिति से निकलने के लिए दोस्त काम आ सकते हैं।
6. अच्छे दोस्त व सहेली के साथ आप वे बाते भी कर सकती हैं, जो पति या पत्नी के सामने नहीं कर सकते हैं।
7. तनाव की स्थिति में दोस्त की हिदायतें बातें किसी दवा या मलहम से कम नहीं होगी।

तृप्ति बंदा रोड,
भवानी मण्डी (राज.)-326502
मोः 9783333796

लोकजीवन और राजस्थानी लोकगीत

❐ डॉ. दयाराम

राजस्थान में लोकगीतों की परम्परा बहुत प्राचीन है। लोकगीत किसी भी क्षेत्र के जनसमुदाय की स्वाभाविक चेतना, जीवन की आशा, संस्कृति, रीति-रिवाज का अटूट प्रतीक होते हैं। इन्हें लोकसंस्कृति का पर्याय भी कहा जाता है। मानव जाति के विकास के साथ ही लोकगीत विकसित होते रहते हैं। युगों-युगों से ये गीत मनोरंजन के साथ सुखों व दुखों को व्यक्त करने का माध्यम भी रहे हैं। 'लोक' शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'स्थान विशेष जिसका बोध प्राणी को हो', 'जगत', 'प्रदेश', 'जन' अर्थात् जो क्षेत्र विशेष के जन समुदाय को देखने का कार्य करता है 'लोक' कहलाता है तथा 'गीत' मनुष्य के हृदय की भावात्मक अभिव्यक्ति है। 'समस्त जन-समाज में चेतन-अचेतन रूप में जो भावनाएँ गीत-बद्ध होकर व्यक्त हुई, उनके लिए लोकगीत उपयुक्त शब्द है।' लोकगीतों की मुख्य विशेषता यह होती है कि ये जीवन के साथ घुले-मिले रहते हैं। 'गीत जीवन के साथ तादात्म्य होकर चलते हैं। लोक इनकी आत्मा है और ये लोक की आत्मा हैं।' इनकी उपलबधता मुख्य रूप से मौखिक होती है। राजस्थानी जन-जीवन में ग्रामीण नारी सैकड़ों गीतों को मौखिक रूप से याद रखती है तथा यथा अवसर उनका गान अपनी मधुर वाणी से करती है। लोकगीतों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक होता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक गाए जाने वाले लोकगीत राजस्थान में मिलते हैं, जिनके अलग-अलग नाम भी होते हैं। देवी-देवता के गीत, पितरों के गीत, सोलह संस्कारों के गीत, तीज, गणगौर, होली आदि त्योहारों के गीत, पारिवारिक आपसी संबंधों के गीत आदि मुख्य प्रकार है।

राजस्थान वीरों की भूमि मानी जाती है। वीरों की इस भूमि का लोकजीवन भी विविध रंगों से भरा है। यहाँ के लोकगीत राजस्थानी संस्कृति की छटा को बिखेरते नजर आते हैं। राजस्थानी जीवन की प्रथम झलक यहाँ के देवी-देवताओं के गीतों में देखी जा सकती है। विभिन्न प्रकार के त्योहारों, विवाह, रातीजोगा, जागरण आदि में लोकदेवता, लोकदेवी, पितरजी, भोमियाजी आदि की स्तुति करते हुए गीत गाए जाते है।

देवी की वंदना का एक गीत-

माता काळी सी बदळी भवांनी
बीजळी चमकै अ माय
माता बीजळी चमकै भवांनी
मेहलासा बरसै अ माय
माता मेहलासा बरसै भवांनी
थारै ताल छिलीजै अ माय
माता ताल छिलीजै भवांनी
डेडर डरपै अ माय।

काली माता के भवन का लोकगीत में चित्रण-

ऊंचे परबत भवन बणायो मां
उपर लगी जाळी
भवन में जागो ऐ काळी
मिंदर में जागो ऐ काळी।
बिरमा उपायो, बिसनु उपायो
और उपायो जटाधारी
काळे भेरूं गो आगो ले लियो
बोही बड़ो जाळी।
भवन में जागो ऐ काळी
मिंदर में जागो ए काळी।

रामदेवजी का भजन-

आप राम देजी रूणेचै पधारयो
नेतळदे सागे चालसी
घरे नेतळ म्हारे धीवड़या गो साथ,
दोना ग जाया ना सरे।

भैरूंजी की भी स्तुति का भजन-

चालां ए सहेल्या,
बाबे भैरूं ने मनावो राज,
कालो हींडे, गोरो हींडे,
हींडे रे मतवालो राज...
आचण लागी, मोचण लागी,
लागी लाल लुहारण राज
छाणा चुगती छींपण लागी,
थान भरे असवारी राज....

राजस्थानी लोक गीतों में जन्म के अवसर

पर गाए जाने वाली गीत धेनड़िया कहलाते हैं। इन गीतों के माध्यम से जच्चा (प्रसूती स्त्री) को संबोधित इस प्रकार किया जाता है–

उठ जेचां राणी बारे आ
सूरज ने मुखड़ो दिखा ए जेचां
दाई गो नेक चुका ऐ जेचां।

सौभाग्यवती जच्चा को पीला ओढ़ाया जाता है जो उत्सव के रूप में मनाया जाता है–

उदयपुर से तो सायबा पीलौ मंगावो जी
तो नानीसी बंधण बंधावो गाढा मारुजी
पीला तो पल्ला साहेबा बंधण बंधावौ जी
तो अधबिच चांद छपावौ गाढा मारुजी

राजस्थानी लोकजीवन में लड़के–लड़की की शादी की तिथि निश्चित की जाती है, उसे टीका की रस्म व पीला चावल करना कहते हैं। इस अवसर पर पीले चावल करते हैं जिन्हें मांगलिक माना जाता है। इस अवसर पर विनायक जी की वंदना कर आशीर्वाद लिया जाता है–

चालो बिनायक आपां जोसी घर चालां
आच्छो–आच्छो साहो कढासयां औ राज
बिरध बिनायक म्हारो देवअ
मदरी गोडी गो कामण गारो औ राज
म्हारो बिरध बिनायक बिरध बिनायक
म्हारो देवअ बिनायक।।

जिस लड़के की शादी होती है उसे बनड़ा कहते हैं तथा लड़की को बनड़ी कहा जाता है। बनड़ा–बनड़ी के गीत हास्य–व्यंग्य, लज्जा, श्रृंगार के भावों से भरे होते हैं जो विवाह वाले घर में सुबह–दोपहर–रात में आनंद के साथ गाए जाते हैं। इन गीतों की धुन पर लोकनृत्य भी किया जाता है।

बनड़ा लोकगीत–

बनड़ो खड्यो कमरअ में
हाँसे मन मन में,
खुशी उस गै दिल में साजन घर जाणा है,
होए रही देर संभल गै, बरदी बदल गै,
साजण घर जाणा है।

बनड़ी लोकगीत–

बनड़ी तो उभी रंग महल में
दादा जी सुणियो, नाज न भावअ ए
बनड़ी सिंघोड़ा भावअ।
म्हानअ ना बेरो ए
बनड़ी लाड़ली वे कठअ निपज्य?

मेहन्दी सुहाग की एक निशानी है, दाम्पत्य जीवन का श्रृंगार है। औरते विवाह की पहली रात इसे लगाकर रातीजगा रखती है–

मेंहदी बाही बाही बालूड़ा री रेत,
प्रेम–रस मेंहदी राचणी,
मेंहदी सींची सींची जळ जमुना रै नीर,
प्रेम–रस मेंहदी राचणी

शादी की अनेक रस्मों व रिवाजों को लोकगीतों में देखा जा सकता है। हल्दी–तेल की उबटन, कन्यादान, फेरे, बारात का स्वागत, भोजन आदि का जीवंत चित्रण लोकगीतों में मिलता है। विवाह के बाद जीजा–साली का संवाद गाली–गलौच वाला भी रसयुक्त होता है, जिसका कोई बुरा नहीं मानता है–

थे ओ जीजा थारी माउ
नेअ बदळा लियाओ।
काळी है तो रोगन करवा लियाओ,
गोरी है तो पालिस करवा लियाओ।
थे ओ जीजा थारी माउ
नेअ बदळा लियाओ।
ठाडी है तो रन्दो लगा लियाओ
पतली है तो रूई भरवा लियाओ
थे ओ जीजा थारी माउ
नेअ बदळा लियाओ।

लड़की की विदाई के अवसर का समय हृदय विदारक होता है जिसको देखकर आँखों में आंसुओं की अविरल धारा प्रवाहित होने लगती है। कोयलड़ी, ओल्यूं, सुवटो आदि लोकगीत करुणा युक्त है।

इतरो बाबोसा रो लाड
कोयल बाई सिध चाली
हे आयो बागां रो सूवटो,
ले गयो टोली मांय सू टाल
कोयल बाई सिध चाली।

राजस्थानी लोक जीवन में धार्मिक पर्व एवं उत्सव भी लोकगीतों में विविध रूप लेकर झलकते हैं। गणगौर और तीज राजस्थान के प्रसिद्ध लोक उत्सव है जिनकी सुंदर छटा लोकगीतों में मिलती है। गणगौर का एक दृश्य द्रष्टव्य है–

खेलण दौ गिणगौर भंवर,
म्हांनै पूजण दौ गिणगौर
ओ जी म्हारी सैयां जोवै बाट
भंवर म्हांनै खेलण दौ गिणगौर
कै दिन री गिणगौर,
थारै कै दिन री गिणगौर
ओ जी थांनै कितरा दिन रौ चाव
भंवर म्हांनै पूजण दो गिणगौर

सावन व भाद्रपद (भादवा) की तीज राजस्थान में लोकप्रिय है जिसे देखने के लिए विदेशी लोग भी आते हैं। इस दिन सवारिया निकाली जाती है, स्त्रियाँ व्रत रखती है, झुले–झुलती है तथा गीत गाती है–

आज सावणियां री तीज गो
म्हे हिन्डो मांडयो रे हिन्डण चालआं रे।
गुरु मरयादा पगला मेलो,
नेम पक्का झालो रे हिन्डण चालआं रे।

होली की फाग भी अत्यंत लोकप्रिय है। होली के रंगों में रंगदार ही धमाल गाई जाती है। फाग का यह उत्सव महीने भर चलता है। सभी लोग आपस में हँसी-विनोद करते हैं तथा आपसी मनमुटाव भूला कर सद्भावना का परिचय देते हैं। देवर-भाभी की नोक-झोंक होली को शृंगारिक बना देती है-

ओ देवर म्हारो रे ओ हरिये रूमाल वालो रे
बाजूबंद घड़वायदे देवर, घर में थारो सारो रे
दाम तो सुसरे जी रा लागे, नाम थारो रे...

राजस्थानी जनजीवन में मृत्यु को भी उत्सव माना जाता है। बुजुर्ग की मृत्यु होने पर हरजस गाए जाते हैं। हरजस में भगवान का नाम किसी न किसी रूप में लिया जाता है अर्थात् हरि का यश गाया जाता है-

थांनै रांम जी बुलावै ओ बडेरां,
थै माइनै सूं बारै आव जावांला द्वारका
थै दस दिन भगवत धीरज धरौ,
म्हारा कंवरां ने लैवां समझाय
थे दस दिन भगवत धीरज धरौ,
म्हारी माया नै लेउं सुळझाय
थै सुणज्यो हो कंवरां इग्याकारी,
म्हारौ पीछौ दीज्यौ सुधार
थांनै प्रभु जी बुलावे बडेरां,
थै माइनै सूं बारै आव

लोकगीतों के संवर्धन में स्त्री जाति का विशेष योगदान है। राजस्थानी स्त्रियाँ अनेक गीतों को कंठस्थ रखती है। इसी के साथ राजस्थानी लोकगीतों में नारी के विशाल हृदय, प्रेम, विरह, दाम्पत्य को चित्रित किया गया है। कौवे के माध्यम से विरह वेदना का एक दृश्य प्रस्तुत है-

उड़ उड़ रै म्हारा काला रे कागला
कद म्हारा पिवजी घर आवै
खीर-खांड रा जिमण जिमाऊ
सोने में चोंच मंढाऊ रै कागा...

'घूमर' लोकनृत्य व लोकगीत राजस्थान की मिट्टी की पहचान है जो कण-कण में बसा गीत है-

म्हारी घूमर छै नखराळी ए
माय घूमर रमवा म्है ज्यांस्यां,
ए जी म्हाने रमता ने काल
टिकी लाध्या ए माय....

स्त्री हृदय की वेदना भी लोकगीतों में करुणा, वियोग के साथ मार्मिक रूप में व्यक्त होती है। एक स्त्री धैर्य के साथ कहती है-

म्हारी जोड़ी बणती सी बणजासी
चुण चुण कंकरी मैल बणायो
बैठण री रूत आसी
चुग चुग कळियां सेज बिछाई
पौढ़ण री रूत आसी
म्हारी जोड़ी बणती सी बणजासी

'बालम छोटो सो' गीत लोक जगत का मधुर गीत है-

बारा बरस रौ बालमौ,
पच्चीसा ढळ गई नार,
बालम छोटौ सौ
अस्सी कळयां रौ घाघरौ,
वौ लावण में लुक जाय
खातीड़ै रै जातां ढोलौ हठ पड़ियौ,
म्हनै गाडुलौ घड़ादे नार
गाडुलौ घड़ावै थांरौ बापजी,
म्हनै लाजां मती मारे भरतार
छोटौ छोटौ तू मत करे,
अब राख मरद री कांण मोटौ होय जासी

लोकगीत ज्ञान, व्यवहार, संस्कार और आदर्शों की निधि है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी को सद्मार्ग देते हुए आगे बढ़ते हैं। लोकगीत मानव-समाज को आपसी भाईचारे, सद्भावना के बंधन में बाँधते हैं। इनमें मानव-समाज के विविध दृश्यों का चित्रण मिलता है जो नयी पीढ़ी को प्राचीन गौरव, रीति-रिवाजों, लोक सांस्कृतिक ज्ञान का बोध कराते हैं। 'ये गीत दुख-सुख भरे जीवन के इन्द्रधनुष हैं। इनकी मौलिकता, विशेषता, आह्लाद, आह्वान और मर्म अपने ही निरालेपन में लवलीन हैं। लोकगीत मानव को मिट्टी से जोड़ने का जमीनी कार्य करते हैं। इनकी भाषा जनभाषा होती है जिससे क्षेत्र विशेष के लोग सरलता से इनसे जुड़ जाते हैं और इनका आनंद उठाते हैं।

व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
लिखमीसर, हनुमानगढ़ (राजस्थान)-335802
मो: 09649247309

यथार्थ बोध

❐ अनूप सैनी 'बेबाक'

अरे, विकास, सुशील, मोहन भाईजी... उठो सब..पाँच बज गए हैं, याद है न आज पाँच जून है....विश्व पर्यावरण दिवस...रामनिवास बाग नहीं चलना है क्या? मेरा इतना कहना था कि आठ बजे के बाद उठने वाले हमारे साथी झटपट तैयार हो कर चल पड़े। किसी ने मुँह धोया किसी ने वो भी नहीं।

जब तक हम रामनिवास बाग पहुँचे तब तक वो गाड़ी आ चुकी थी जिसमें पर्यावरण दिवस पर बाँटने के लिए टीशर्ट-टोपियाँ आयी थीं। भीड़ के साथ हम भी उन पर टूट पड़े...

अरे भाई साब...वो....वो मुझे एक्सल साइज देना...और हाँ वो टोपी भी..।

औ हाँ...प्लीज...एक वो...डबल एक्स एल वाली भी....दादाजी के लिए प्लीज... प्लीज...

और हाँ वो...वो....छोटी वाली भी दें ही बच्चों के लिए और इस तरह हमने खूब वाक् चातुर्य का इस्तेमाल किया। बाँटने वाले बेचारे भीड़ के आगे बेबस दिखे और हम में से हर कोई पाँच, कोई दस टी शर्ट और टोपियाँ लेकर वापिस आया।

वापस आकर टीशर्ट और टोपियाँ अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों में बाँट दी। इसके बाद मैंने भी एक टी शर्ट और टोपी पहनी और एक इको फ्रेंडली सेल्फी पे पोस्ट की...और इस तरह मैंने पर्यावरण दिवस मनाया।

व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय,
कोठाज, तह. कोटड़ी, भीलवाड़ा (राज.)
मो: 9680989560

श्रवणशक्ति को गैजेट्स से खतरे

❐ सीमा शर्मा

ज्ञानेन्द्रियों का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है। आँख, नाक, कान, जीभ तथा त्वचा द्वारा हम बाह्य जगत की अनुभूतियाँ कर सकते हैं। हमारी प्रत्येक ज्ञानेन्द्री हमारे शरीर के बाहरी व भीतरी अंगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। अतः ज्ञानेन्द्रियों की सुरक्षा आवश्यक है। यहाँ हम श्रवण सम्बन्धी ज्ञानेन्द्री 'कर्ण' के बारे में चर्चा करेंगे।

कर्ण (कान) हमारी महत्त्वपूर्ण ज्ञानेन्द्री है जिसके द्वारा हम हमारी श्रवण सम्बन्धी प्रक्रिया सम्पादित होती है। मानव कर्ण के तीन भाग होते हैं। बाहरी कर्ण को हम 'पिन्ना' कहते हैं। यह 2-3 सेमी लम्बे मार्ग 'कर्णनाल' द्वारा कर्णपट्ट्ह (इयरड्रम) झिल्ली से जड़ा होता है। मध्यकर्ण तीन कोमल अस्थियों Hammer, Anvil एवं Stirrup से निर्मित होता है जो परस्पर एक दूसरे से जुड़ी होती है। मध्यकर्ण का निचला हिस्सा एक संकरी नली Eustachians Tube से जुड़ा होता है जिसका सम्बन्ध गले से होता है।

कर्ण का तीसरा भाग आंतरिक कर्ण कहलाता है। इसमें एक कुण्डलाकार नली 'Cochica' होती है जिसमें तरलद्रव भरा होता है। इस द्रव में संवेदी तंत्रिका कोशिकाएँ उपस्थित होती हैं। Cochiea का दूसरा सिरा श्रवण तंत्रिका से जुड़ा होता है जो मस्तिष्क तक जाती है।

बाह्य कर्ण से ध्वनि कर्णनाल में होती हुई Eardrum पर कम्पन्न पैदा करती है। यहाँ से ध्वनि मध्यकर्ण में होती हुई आंतरिक कर्ण में प्रवेश करती है। आर्तरिक कर्ण के तरल द्रव में मौजूद तंत्रिका कोशिकाओं में इससे विद्युत आवेग पैदा होते हैं। श्रवण तंत्रिका के माध्यम से ये आवेग मस्तिष्क तक पहुँचते हैं और हमें स्पष्ट सुनाई पड़ता है।

मनुष्यों में श्रवण शक्ति की सीमा 20 से 20000 हर्ट्ज के मध्य हैं। आज मल्टीमीडिया जरनेशन का युग है। आज का विद्यार्थी भी किसी न किसी गजैट्स को पाने को लालायित रहता है। आज के विद्यार्थी भी आइपोस, हैंडसेट्स, वीडियो गेम, टी.वी, आदि के साथ अपना समय व्यतीत करते नजर आते हैं।

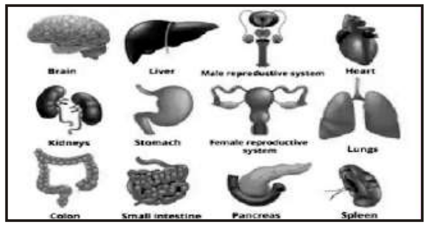

बसों में यात्रा करते समय अथवा बाइक चलाते समय भी लोग कानों में हेडफोन या ईयरफोन लगाए रहते हैं। कभी-कभी उनका यह शौक सड़क दुर्घटना का सबब बनता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक सर्वे के अनुसार ईयरफोन, हेडफोन तथा ब्लूटूथ के अत्यधिक इस्तेमाल से दुनिया के 1.1 अरब युवा बहरेपन का शिकार हो रहे हैं।

ईयरफोन का उपयोग एक लम्बे समय तक करने से कान का परदा हिलने लगता है। जिससे स्पष्ट नहीं सुन पाने, सिरदर्द, कानदर्द व अनिद्रा रोग जैसी समस्याएँ पैदा होती हैं। कभी-कभी व्यक्ति बहरा भी हो जाता है।

ईयरफोन के उपयोग से कान पूरी तरह बंद हो जाता है जिससे कान में हवा प्रवेश नहीं (कुछ बजने की आवाज) का खतरा बढ़ जाता है। कभी-कभी कान सुन्न भी पड़ जाता है। इससे विद्यार्थियों का अधिगम भी बुरी तरह प्रभावित होता है। ईयरफोन से निकलने वाले रेडियेशन के कारा से व्यक्ति कैंसर से भी पीड़ित हो सकता है। अतः हमें ईयरफोन का उपयोग अत्यंत सीमित मात्रा में करना चाहि। कानों की नियमित स्वच्छता पर ध्यान देते हुए अधिक शोरगुल से बचना चाहिए। कानों सम्बन्धी कोई रोग होने पर 'कान-नाक-गला' के विशेषज्ञ से निदान करवाकर उनके परार्शानुसार ही चिकित्सा करवानी चाहिए। ध्यान रहे कान हमारी महत्त्वपूर्ण ज्ञानेन्द्री है जिसके द्वारा हम विभिन्न सुरों के संगीतों का आनंद प्राप्त कर मनोरंजन की दुनिया से जुड़ पाते हैं तथा स्पष्ट श्रवण के बाद ही हम किसी व्यक्ति से संवाद स्थापित कर पाते हैं।

W/o श्री भगवती लाल शर्मा
पो. गिलूण्ड, राजसमन्द-313207
मो: 9610706749

अनमोल मिट्टी

❐ ललिता शर्मा

एक राजा था। उसने अपने राज्य में ऐलान कराया (ढिंढोरा पिटाया)। जो भी व्यक्ति इस दुनिया की सबसे अनमोल वस्तु लेकर आएगा उसे इनाम दिया जाएगा।

सभी व्यक्ति हीरे जवाहरात लेकर राजा के दरबार में पहुँचे और कहने लगे इन से बढ़ कर इस संसार में कोई अमूल्य वस्तु नहीं है।

उन्हीं व्यक्तियों के बीच में एक किसान हाथ में मिट्टी लिए बैठा था। तब किसान ने राजा की अनुमति माँगी और कहाँ मेरी दृष्टि में सबसे अनमोल मिट्टी है। जो पैरों द्वारा रौंदे जाने पर भी हमारा पालन पोषण करती है। हमारी आवश्यकता पूर्ति की वस्तुएँ धरती से प्राप्त होती हैं। जिन धातुओं को तुम अनमोल साबित कर रहे हो वह अनमोल धातु सोना चाँदी कीमती रत्न मिट्टी ही उगलती है।

अगर यह मिट्टी नहीं होती। हमारा जीना दुर्लभ हो जाता। यहाँ तक कि हमारा शरीर मरने के बाद मिट्टी में मिल जाता है। राजा किसान की बात से प्रभावित हुआ। उसने किसान को पुरस्कार दिया।

सारः मिट्टी सबसे अनमोल रत्न इसके बिना जीना असंभव।

रा.उ.मा.वि., घण्डेला, आबूरोड,
जिला-सिरोही
मो: 7726061570

भारत का स्विट्जरलैण्ड : कौसानी

❒ विजय सिंह माली

''इन पहाड़ों में प्राकृतिक सौन्दर्य की मेहमाननवाजी के आगे मानव द्वारा किया गया कोई भी सत्कार फीका है। मैं आश्चर्य के साथ सोचता हूँ कि इन पर्वतों के सौन्दर्य और जलवायु से बढ़कर किसी और जगह का होना तो दूर, इनकी बराबरी भी संसार का कोई सौन्दर्य स्थल नहीं कर सकता। अल्मोड़ा के पहाड़ों में करीब तीन सप्ताह का समय बिताने के बाद मैं बहुत ज्यादा आश्चर्यचकित हूँ कि हमारे यहाँ के लोग बेहतर स्वास्थ्य की चाह में यूरोप क्यों जाते हैं जबकि यहीं भारत का स्विट्ज़रलैण्ड मौजूद है।''

–महात्मा गाँधी (यंग इण्डिया, 11 जुलाई, 1992)

महाकवि कालिदास के कालजयी ग्रंथ कुमारसंभव में नगाधिराज कहे गए हिमालय को बेहद करीब से निहारता और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा 'भारत का स्विट्जरलैण्ड' कहा गया 'कौसानी' देश के चुनिंदा प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत-प्रोत रमणीक पर्वतीय पर्यटक स्थलों में से एक है। महात्मा गाँधी को अपनी नीरवता और शाँति से गीता का गूढ़ रहस्यों का ज्ञान कराने और अनासक्ति योग 'ग्रंथ की रचना कराने वाली और प्रकृति के सुकुमार छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत की जन्म भूमि 'कौसानी' आदि-अनादि काल से वर्तमान तक प्रकृति प्रेमियों का पसंदीदा स्थान रही है। यहाँ दूर तक कौसी, गोमती, गगास नदियों के बीच फैली कल्युर, बोरारो व कैडारों घाटियों के बीच लहलहाती धान व आलू की खेती, हरे कालीन से बिछे चाय के बागानों और शीतलता बिखेरते देवदार व चीड़ के दरख्तों के बीच पर्वतराज हिमालय को अपनी स्वर्णिम आभा रंगते सूर्योदय और सूर्यास्त के स्वर्णिम आभा बिखेरते मनोहारी दृश्य सौन्दर्य के वशीभूत सैलानियों को न केवल आकर्षित करते वरन् अपना बना लेते हैं। यहाँ से आप हिमालय के 350 कि.मी. लम्बे नजारे को एक साथ देख सकते हैं। यहाँ से देखने पर ऐसा लगता है जैसे त्रिशूल, नन्दा देवी, पंचपुली जैसी चोटियाँ आपके एक कदम करीब आकर खड़ी हो गई हो।

बेशक कौसानी में पहाड़ों की चोटियों पर सूर्य को डूबते देखना एक खूबसूरत अनुभव होता है। लेकिन कौसानी की असली खासियत उसका सूर्यास्त नहीं, सूर्योदय है। कुमायूं में यह मान्यता है कि सूर्योदय सबसे पहले कौसानी में ही होता है। सुबह जब पूरी घाटी में अंधेरा छाया होता है। दूर ऊँची चोटियों के पीछे से लालिमा झाँकने लगती है। फिर थोड़ी ही देर में एक चोटी के पीछे से सूर्य अपना सिर झुकाता है। पूरी घाटी जैसे रोशनी से नहा उठती है। ऊँचे पहाड़ों चीड़ के पेड़, हरी-भरी ढलान, सीढ़ीनुमा खेत अभी तक जो अंधियारा दिख रहा था, वह सब अचानक ही रंग-बिरंगे दिखने लगते हैं। पर्यटक भी प्रकृति के इस अद्भुत नजारे को अपने कैमरे में कैद करने से नहीं चूकते।

समुद्रतल से 1890 मीटर की ऊँचाई पर उत्तराखण्ड के कुमायूं मंडल में पहाड़ की चोटी पर बसे कौसानी के दोनों ओर दूर-दूर तक फैली हरी-भरी घाटी है अगस्त-सितम्बर माह में रंग बिरंगे फूल और उनकी गंध घाटी में चारों ओर फैल जाती है।

आगुंतक आश्चर्यचकित सा फूलों के इंद्रधनुषी संसार को देख प्रकृति की इस अद्भुत चित्रकारी पर ठगा सा रह जाता है। कौसानी के कण-कण में सौन्दर्य बिखरा पड़ा है। यहाँ आकर उदासी और निराशा से भरे चेहरे भी खिल उठते हैं। दूर तक फैली घाटी, सघन वन, सोख फूलों की छटा, बादलों की लुकाछिपी के बीच सरल जनजीवन सैलानियों का मन मोह लेता है। इसलिए तो इसे 'भारत का स्विट्जरलैण्ड' कहा जाता है। सचमुच उत्तराखण्ड में कौसानी उन गिनी-चुनी जगहों में से है जहाँ से हिमालय का निर्बाध नजारा देखने को मिलता है। खूबसूरती ऐसी कि यहाँ पर पहुँच कर हमारी तबीयत हरी-भरी हो जाती है। उत्तराखण्ड में बागेश्वर जिले में स्थित हिल स्टेशन कौसानी को कुमायूं का स्वर्ग भी कहा जाता है। साहित्यकार धर्मवीर भारती ने अपने प्रसिद्ध निबंध 'ठेले पर हिमालय' में कौसानी की खूबसूरती को अनेक कोनों से उकेरा है। प्राचीन काल में कौशिक ऋषि ने यहाँ तप किया था, ऐसी मान्यता है। कौसानी मालूशाही प्रेम गाथा के गायक गोपीदास की कर्मभूमि है।

कैसे पहुँचें–

वायुमार्ग–यहाँ का नज़दीकी हवाई अड्डा पंत नगर है। यहाँ से टेक्सी द्वारा कौसानी पहुँच सकते हैं।

रेलमार्ग: नज़दीकी रेलवे स्टेशन काठगोदाम है जो यहाँ से 141 कि.मी. की दूरी पर है। उत्तराखण्ड सम्पर्क क्रान्ति और रानीखेत एक्सप्रेस से काठगोदाम तक पहुँच सकते हैं। यहाँ से स्थानीय बस या टेक्सी की सुविधा ली जा सकती है।

सड़क मार्ग– दिल्ली से कौसानी की दूरी लगभग 431 कि.मी. है। दिल्ली के आनन्द बिहार बस स्टेण्ड से उत्तराखण्ड रोडवेज की बसें कौसानी के लिए दिन भर चलती रहती है।

कहाँ ठहरे– कौसानी कुमायूं मंडल का बेहद लोकप्रिय हिल स्टेशन है। इस कारण यहाँ ठहरने की भी काफी अच्छी व्यवस्था है। यहाँ कुमायूं मंडल विकास निगम का टूरिस्ट गेस्ट हाउस है यहाँ का बेस्ट सीजन अप्रेल से जून और सितम्बर से नवम्बर होता है। बुकिंग पहले करा लेना बेहतर होता है। स्टेट बंगला, फोरेस्ट गेस्ट हाउस, अनासक्ति आश्रम, कृष्णा माउण्ट व्यू सन एण्ड स्नो, स्टेवेल रिजार्ड, होटल सागर, त्रिशूल स्टेट हाउस, जैसे ठहरने के दर्जनों ठिकाने है, अधिक जानकारी के लिए कुमायूं मंडल की वेबसाइट www-kmvn.net.in पर लॉगिन कर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

क्या देखें– (1) अनासक्ति आश्रम– सन् 1929 में गाँधी जी ने यहाँ रह कर अनासक्ति योग नाम से गीता की भूमिका लिखी इसलिए उनके नाम से सन् 1967 में अनासक्ति आश्रम बनाया गया। 1929 में जून के अंतिम सप्ताह में गाँधी जी अपनी पत्नी कस्तूरबा, पुत्र देवदास, भतीजे प्रभुदास व अंग्रेज शिष्या मीरा बैन के साथ कौसानी डाक बंगले में पहुँचे।

(2) लक्ष्मी आश्रम – गाँधी निकटतम सहयोगी और रचनात्मक कार्यकर्ता केथरीन मेरी हाइलाइन (सरलवाहन) 1930 में भारत आई और 1946 में कौसानी अनासक्ति आश्रम के सम्मुख इसी चोटी पर कस्तूरबा महिला

उत्थानामंडल नामक संस्था की स्थापना की जो लक्ष्मी आश्रम कहलाता है।

(3) सुमित्रानंदन पंत संग्रहालय– सुमित्रानंदन पंत की जन्मभूमि कौसानी में स्थित है। सुमित्रानंदन पंत संग्रहालय में सुमित्रानंदन से जुड़ी स्मृतियों से परिचित होने तथा उनके व्यक्तित्व–कृतित्व को जाना जा सकता है।

(4) चाय के बागान – यहाँ के चाय के बागान खुशबुदार चाय के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ से अमेरिका, जापान, जर्मनी, कोरिया भी चाय निर्यात होती है। यहाँ आप चाय के बागान व चाय की फैक्ट्री का अवलोकन कर सकते हैं।

(5) बैजनाथ – कौसानी से 40 कि.मी. दूरी पर स्थित ऐतिहासिक स्थल बैजनाथ में 12वीं शताब्दी का मन्दिर बना हुआ है। जहाँ शिव, पार्वती, गणेश, चंद्रिका, कुबेर, सूर्य, ब्रह्मा की सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित हैं। यहाँ पर मध्यम गति से चलता गोमती नदी का जल भी आकर्षित करता है।

(6) बागेश्वर – कौसानी से 40 कि.मी. की दूरी पर गोमती व सरयू नदी के संगम में बागनाथ का ऐतिहासिक मन्दिर है। यहाँ शिवरात्रि का मेला लगता है।

(7) पिंडारी ग्लेशियर – कौसानी से 93 कि.मी. दूर पिंडारी ग्लेशियर व अवलोकन किए बिना पर्यटकों का मन नहीं भरता।

(8) रुद्रधारी मन्दिर – कौसानी से पश्चिम की ओर 10 कि.मी. पर गुफा में बना हुआ पौराणिक शिव मन्दिर है।

(9) पिनाकेश्वर शिव मन्दिर – कौसानी से पश्चिम की ओर पिनाथ की चोटी पर स्थित है। कौसानी समुद्र तल से 1890 मीटर की दूरी पर स्थित है। यदि हम आगामी छुट्टियों में कहीं जाने की योजना बना रहे हैं तो हमें कौसानी को प्राथमिकता जरूर देनी चाहिए। हम स्विट्जरलैण्ड जैसी खूबसूरती दिलकश नज़ारों का आनन्द ले सकें। कवि रमेश कौशिक के शब्दों में–

पर्वत की पेशानी
चीड़ बुरास, अखरोट, अबुचा
देवदारी मीठा पासर और खुबानी
दो चार घरों की छिटपुट सी बस्ती
यह कौसानी
तासीर हवाओं में ऐसी
अपने आप लोग बन जाते इसमें
कवि, वैरागी सेनानी
बाकी सब बातें बेमानी।
यह कौसानी।।

प्रधानाचार्य
सुथारों का गुड़ा तह. देसुरी,
जिला–पाली (राज.)
मो: 9829285914

मैं कुछ बन पाऊँगी

❒ रतन लाल जाट

'मम्मी! भाई स्कूल में पढ़ता नहीं है और न ही घर पर तब भी आप इसे कुछ भी नहीं कहती हो।'

वह अपनी पुस्तक के पन्ने बदलती हुई कहती है। उसके पास ही बैठी हुई उसकी माँ गुस्से के साथ नाराजगी जताते हुए कहती है, 'कोई बात नहीं। तू खुद कितनी पढ़ती है? मुझे पता है। यह नहीं पढ़ेगा, तो भी भूखा नहीं मरेगा। तू अपना ध्यान रख।'

'मैं अपनी मर्जी से नहीं कह रही हूँ। स्कूल से शिकायत मिली है। पहले नोटबुक में लिखा और अब पापा के कॉल आया है।' उसने थोड़ा उदास होकर कहा। फिर बिना एक भी शब्द बोले अपना काम करने लग गई लेकिन माँ का बोलना जारी रहा, 'और तेरे स्कूल वालों ने कुछ नहीं कहा। तुझे तो जैसे सब कुछ आता है?' फिर जोर–से हँसने लगती है। तभी बाहर से दौड़ता हुआ एक बच्चा आता हुआ कहता है, 'मॉम! मुझे दस रुपये दो। मुझे कुछ चीज लेकर आना है।'

'अभी थोड़ा रुक जा। पहले चाय–दूध पी ले। मैं रुपये फिर बाद में दूँगी।' उसके सिर पर हाथ फेरते हुए माँ ने कहा था।

'इधर आ बाद में पढ़ लेना काम करना पड़ता है। लो बैठ गई किताब खोलकर। मैं सब्जी काट रही हूँ। इसलिए तू जल्दी दूध गरम कर दे।' यह सुनकर अनमने मन से वह उठ खड़ी हुई।

वह बारह–तेरह साल की लड़की है। जो अपने घर के पास ही राजकीय विद्यालय में पढ़ती है। जबकि उसका छोटा भाई है, जो एक शहरी निजी विद्यालय में पढ़ता है। उम्र में दो साल छोटा है। परन्तु पढ़ता चार क्लास पीछे है।

जब कभी वह घर में भाई के बारे में कुछ भी कहती है। तो माँ उसे डाँटती और कभी मार भी देती है। इसलिए उसने धीरे–धीरे इस बारे में जहाँ तक हो सके, बात करना ही बंद कर दिया।

अब वह समझदार हो गई है उम्र से भी कुछ अधिक। क्योंकि उसके साथ घर–परिवार में व्यवहार हमेशा बड़ों की तरह किया गया। कभी उसे छोटी मासूम बच्ची समझकर लाड–दुलार से नहीं समझाया गया। बात–बात पर टोकना और भला–बुरा कहना ही मम्मी–पापा की आदत बन गई था।

वह कभी–कभी स्कूल में अपने प्रिय सर या मैडम को कहा करती है, 'घर पर मुझे पढ़ाई के साथ–साथ अन्य कार्य भी करने पड़ते हैं। माँ कहती है कि पहले घर का काम करो, फिर बाद में दूसरा काम। यदि कुछ ज्यादा जिद करूँ। तो सब कहते कि एकाध साल और पढ़ लो, फिर बात करेंगे।'

फिर वह शिकायत भरे लहजे में कहती, 'सर आप तो कहते हो कि तुम खूब अच्छा पढ़ो। एक दिन जरूर कुछ बनोगी। क्या पढ़ाई छुड़ा देने के बाद भी मैं कुछ बन पाऊँगी?'

तब उसके अध्यापक समझाते हुए कहते थे, 'नहीं, तुम्हारी पढ़ाई कोई नहीं छुड़ाएगा। तुम सिर्फ पढ़ने पर ध्यान दो। मम्मी–पापा को हम समझा देंगे।'

यह बात सुनकर वह सब कुछ भूल जाती थी और खुश होकर अपनी पढ़ाई में लीन हो जाती थी। उसे इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि उसके परिवार वाले सर की बात मानेंगे या नहीं। परन्तु उसे विश्वास है कि मैं पढ़ाई कभी बीच में नहीं छोडूँगी।

लाखों का खेड़ा, पो.–भट्टों का बामनिया,
त.–कपासन, जिला–चित्तौड़गढ़ (राज.)–
312202
मो. 9636961409

विकास के दीप

❒ शिवनारायण शर्मा

पाँच सौ घरों की बस्ती वाला एक छोटा सा गाँव है मदनपुर। गाँव की कुल जनसंख्या पाँच हजार है। गाँव में अधिकांश संयुक्त परिवार हैं। गाँव में एक उच्च माध्यमिक विद्यालय, एक हॉस्पिटल, पंचायत भवन तथा पटवार भवन बने हैं।

पिछले कुछ वर्षों से जलस्तर अत्यधिक नीचे चले जाने के कारण गाँव के लोगों की आर्थिक स्थिति दयनीय बनी हुई थी। गाँव के अधिकांश लोगों का व्यवसाय कृषि है। गाँव के उच्च माध्यमिक विद्यालय में शिक्षकों की कमी के कारण बालकों का शिक्षण प्रभावित हो रहा था। सम्पन्न लोग अपने बालक-बालिकाओं को पढ़ने हेतु शहर के विद्यालयों में भिजवा रहे थे।

इस गाँव का प्रथम अधिस्नातक विद्यार्थी है अमन। यह सकारात्मक सोच का धनी नवयुवक है। वह सदैव गाँव के विकास के बारे में सोचता रहता है। उसने ग्रामीणों का सहयोग कर उन्हें अनेक सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाया था। यही कारण था कि पिछले सरपंच के चुनाव में ग्रामवासियों ने उसे गाँव का निर्विरोध सरपंच चुना था।

सरपंच के पद पर शपथ लेते समय उसने लोगों को विश्वास दिलाया था कि वह सदैव ग्राम के विकास कार्यों में लगा रहेगा तथा लोगों को नियमानुसार सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाएगा।

शीघ्र ही उसने गाँव के प्रबुद्ध लोगों तथा सरकारी कर्मचारियों के सहयोग से ग्राम विकास की योजना बनाकर उनकी प्रभावी क्रियान्विति प्रारम्भ की।

सर्वप्रथम उसने गाँव को स्वच्छ रखने तथा खुले में शौच से मुक्त करने का बीड़ा उठाया। गाँव में जगह-जगह कचरा पात्र रखवाए। कचरे तथा गोबर के घूरों से जैविक खाद बनाने की तकनीक लोगों को समझाई। सरकारी अनुदान से गाँव के प्रत्येक घर में शौचालय का निर्माण कराया। लोगों को पोलीथीन की जगह कपड़े की थैलियाँ उपयोग में लेने की नसीहत दी। उसके प्रयासों से उसकी ग्राम पंचायत ओ.डी.एफ. घोषित हो गई। कई वर्षों से गाँव में पेजयल संकट गहरा रहा था। तीन दिनों में एक बार मात्र आधे

घंटे के लिए नलों से जलापूर्ति होती थी। पेयजल के स्रोत तालाब, कुएँ तथा बावड़िया ग्रीष्म ऋतु आने से पूर्व ही सूख जाते थे। भूजल स्तर अत्यधिक नीचे चले जाने के कारण गाँव में लगे हैंडपम्प भी नकारा साबित हो रहे थे। अमन ने नरेगा में लगे मजदूरों द्वारा गाँव के तालाब को गहरा कराया तथा जल के परम्परागत स्रोतों तथा कुएँ, बावड़ियाँ तथा नदी नालों की अच्छी तरह सफाई करवाई। घरों में टेंक बनवाकर वर्षा ऋतु में घरों की छतों का पानी संचित कराया। उसके इन प्रयासों से पेयजल की समस्या छूमंतर हो गई। गाँव के आसपास सघन वृक्षारोपण कर उनकी सुरक्षा व सिंचाई के पुख्ता इंतजाम किए। गाँव में गंभीर बीमार लोगों तथा दुर्घटनाग्रस्त लोगों के लिए भामाशाहों के सहयोग से हॉस्पिटल में एक एम्बुलेंस भेंट कराई।

समय-समय पर गाँव की चौपाल पर वैज्ञानिक एवं प्रबुद्ध लोगों को आमंत्रित कर उनकी वार्ताएँ आयोजित करवाई। इससे लोगों का चिंतन सकारात्मक बना तथा लोग कुरीतियों तथा अंधविश्वासों से मुक्त हुए। अमन की प्रेरणा से गाँव के भामाशाहों ने विद्यालय को कुछ संदर्भ पुस्तकें, सत्रपर्यन्त पाँच अखबार, कुछ बालोपयोगी पाक्षिक तथा मासिक पत्रिकाएँ एवं दस कम्प्यूटर भेंट किए। शाला विकास कोष समिति ने भी अध्यापकों के रिक्त पदों पर मानदेय के आधार पर योग्यताधारी शिक्षक लगाए। इन सभी प्रयासों से बोर्ड का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा।

अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।

अमन ने सहकारी समिति के माध्यम से गाँव के किसानों को उचित मूल्य पर उत्तम किस्म के बीज, रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशक दवाएँ उपलब्ध करायी। अच्छी नस्ल की गायें व भैंसे खरीदने के लिए किसानों को सहकारी बैंक से ऋण दिलाया।

अमन के इस सकारात्मक प्रयासों से गाँव में श्वेत व हरित क्रांति का बिगुल बज उठा। गाँव के पटवारी व पंचायत के सचिव ने सरकारी योजनाओं के तहत लोगों से मधुमक्खी पालन, मुर्गीपालन, मत्स्य पालन तथा रेशमकीट पालन के उद्योग शुरू करवाए। गाँव को शहर से जोड़ने हेतु पक्की सड़क का निर्माण करवाकर रोडवेज बसों की सेवाएँ प्रारम्भ की। अमन के इन प्रयासों से गाँव के लोगो के आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक स्तर में काफी बदलाव आया।

पिछली दिवाली पर गाँव के लोगों ने गाँव की चौपाल पर एक विशाल सभा का आयोजन कर 'विकास पुरुष' के रूप में अमन का नागरिक अभिनंदन किया। उसे साफा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर व प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर पूरे गाँव को मिट्टी के दीपों, रंगबिरंगी कंदीलों तथा मर्करी दीपों से जगर-मगर किया। चौपाल पर सामूहिक रूप से लोगों ने 'वैभव लक्ष्मी' का पूजन किया। अमन ने इस दिन गाँव के बालकों को पटाखे, फुलझड़ियाँ, चकरी, अनार, रॉकेट आदि आतिशबाजी की सामग्री तथा मिठाई के पैकेट वितरित किए। आसपास के गाँवों के मुखियाओं ने भी अमन को अपना 'रोलमॉडल' मानते हुए विकास कार्यों की मुहिम छेड़ी।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
पोस्ट-गिलूण्ड, जिला-राजसमन्द-313207
मो. 8949255864

आदेश-परिपत्र : सितम्बर, 2019

1. पासपोर्ट हेतु विभागीय अनापत्ति प्रमाण पत्र (Annexure-B/Annexure-M) जारी किए जाने के सम्बन्ध में।
2. ड्रॉप आउट फ्री उजियारी पंचायत 2019-20 के ऑनलाइन आवेदन एवं भौतिक सत्यापन तथा घोषणा एवं सम्मान की संशोधित समयावधि एवं तिथियों के सम्बन्ध में।
3. मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना।
4. शिक्षा सत्र 2019-20 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का 'टाइम-फ्रेम'।
5. प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।
6. बजट परिपत्र।
7. शिक्षा विभागीय खेलकूद प्रतियोगिताएं, साहित्य-सांस्कृतिक प्रवृत्तियां आयोजन नियमावली एवं मार्गदर्शिका 2005 में उल्लेखित नियमों में संशोधन/ परिवर्द्धन हेतु।
8. ब्लॉक/जिला/राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2019 हेतु पात्र शिक्षकों से ऑन लाइन आवेदन लिए जाने बाबत।
9. शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2019 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने बाबत।

1. पासपोर्ट हेतु विभागीय अनापत्ति प्रमाण पत्र (Annexure-B/Annexure-M) जारी किए जाने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/साप्र/बी-1/3162-63/पारपत्र/पूर्व सूचना/15-16/25 दिनांक 23-7-2019 ● समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा ● विषय : पासपोर्ट हेतु विभागीय अनापत्ति प्रमाण पत्र (Annexure-B/Annexure-M) जारी किए जाने के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : मानव संसाधन मंत्रालय के परिपत्र एफ-3/(ख) (एस-436/88) अलोसेना/28981 दिनांक 11.03.2016 एवं इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 13.08.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा पासपोर्ट हेतु अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी करने हेतु प्रकरण निदेशालय को प्रेषित किए जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में लेख है कि इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 13.08.2016 के द्वारा आवश्यक निर्देश प्रदान किए जा चुके हैं कि पासपोर्ट हेतु विभागीय अनापत्ति प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं है। इस सम्बन्ध में पुनः मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा जारी परिपत्र दिनांक 11.03.2016 एवं इस कार्यालय का समसंख्यक पत्र दिनांक 13.08.2016 की प्रति प्रेषित कर निर्देशित किया जाता है कि उक्तानुसार कार्यवाही सम्पादित करावें।

संलग्न : उपर्युक्तानुसार

● **उप निदेशक** (प्रशासन) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

● No. VI/401/01/05/2014 ● **Government of India Ministry of External Affairs CPV Division** ● Patiala House Annexe, Tilak Marg, New Delhi 26th May, 2015 ● OFFICE MEMORANDUM ● Subject : Issuance of Ordinary Passport to Government Servants, PSU/Autonomous body employees, et. al.

In tune with the Government's objective of Minimum Government, Maximum Governance and with a view to simplifying the procedure for issuance of Passport to Government Servants, PSU/Autonomous body employees, et al, the matter has been reviewed. In order to facilitate issuance of Passport to Government employees, et al; who find difficulties to obtain identity Certificate (IC)/No. Objection Certificate (NOC) from their department, it has been decided to introduce a new feature which is termed as prior intimation latter to the controlling authority by the Passport applicant before Submission of a Passport application.

2. Basically, **Prior Intimation is a letter from the Passport applicant giving intimation to his/her Controlling/ Administrative Authority (employer) regarding submission of Passport application. This can be submitted by the applicant in the format of 'Annexure-N'.** After submission of Passport application by such an employee, the copy of this Prior Intimation would be sent to the same Controlling / Administrative Authority under which the employee is working. In case the employer has any objection regarding issuance of Passport to that employee, they may revert back to concerned Regional Passport Office mentioning the details of such objection. However, the final decision will be taken by the concerned Passport Issuing Authority. **If Prior Intimation is submitted by the applicant, Passport would be issued on the basis of Pre-Police Verification, however the Provisions of Police Verification in reissue cases will remain applicable.**

3. Henceforth, anyone of the following documents can be submitted by Government Servants, PSU/Autonomous body employees, et. al. for submission of application of Passports.

(a) Copy of Prior Intimation to Controlling/Administrative Authority; or

(b) No Objection Certificate from Controlling/ Administrative Authority; or

(c) Identity Certificate from Controlling/Administrative authority.

4. **No Objection Certificate (NOC) is issued in the format of 'Annexure-M'** by the Controlling/Administrative Authority of the employee working under them for obtaining Passport by any government Servants. PSU/Autonomous

body employees, et. al. **If NOC is submitted Passport will be issued on Post-Police Verification basis.**

5. **Identity Certificate (IC) is issued in the format of 'Annexure-B'** by the Controlling/Administrative Authority of the employee working under them for obtaining. Passport by any Government Servant, PSU/Autonomous body employees, et. al. **If IC is submitted Passport will be issued on No-Police Verification basis.** The spouse of such employees, and depandent children up to the age of 18 years, has an option to submit IC for expeditious issue of passport. In case of IC, the applicant is also required to submit 'Annexure-I'.

6. It may be noted that the following provisions will remain applicable as mentioned below:

(a) While IC should be issued preferably on Official Stationery (Ietterhead): NOC on plain paper with signature/stamp can be accepted, on the assumption that such offices are using plain paper for day to day correspondence. Prior Intimation (PI) is required to be submitted on plain paper by the Passport applicant.

(b) Telephone, fax and e-mail Id of the Controlling/ Administrative Office (to the extent available) should be indicated in all the three documents for the purpose of confirmation.

(c) Military personnel with c/o APO address (e.g. 56 APO/ 99 APO) may submit applications at their station of posting or at their permanent address, and write their permanent address in passport [against present address otherwise]. Spouse of such personnel [and adult children, when spouse has expired/divorced] may receive the passport, with authority letter, either by hand or by post. This would apply to similarly placed Air Force/Navy personnel as well.

(d) If Government/PSU employees. et. al. are transferred after submission of the passport application or passport is returned undelivered due to such transfer, the same be re-dispatched, on request (along with copy of transfer order), at the new address, after correction/endorsement of address. However, if police verification was required and was not completed, it will be done at the new place.

(e) The validity of the documents mentioned at para-3 will be six months from date of issue.

7. While the revised provisions deal only with passport issuance, **the requirement by the Government employees to obtain prior permission from his/her Department/Ministry for travelling abroad as per Conduct Rules will remain unchanged as per the instructions issued by the Department of Personnel & Training and respective authorities.**

8. Ministries of the Central Government, and the State Governments/Union Territories are requested to circulate these instructions to all the employees working under them, including those in attached and subordinate offices, and statutory bodies.

● **(Muktesh K. Pardeshi)** Joint Secretary (PSP) & Chief Passport Officer.

● पासपोर्ट हेतु विभागीय अनापत्ति प्रमाण पत्र (Annexure-B/ Annexure-M) जारी किये जाने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/मा./साप्र/बी-I/पारपत्र/विविध/15-16/03 दिनांक 13-8-2016 ● समस्त उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, प्रथम-द्वितीय माध्यमिक शिक्षा ● विषय : पासपोर्ट हेतु विभागीय अनापत्ति प्रमाण-पत्र (Annexure-B/ Annexure-M) जारी किए जाने के सम्बन्ध में ● प्रसंग : एफ-3 (ख) (एस-436/88) अलोसेना/28981 दिनांक 11.3.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक आदेश के क्रम में लेख है कि अतिरिक्त निदेशक (कार्मिक-II)राज. जयपुर ने अपने पत्र के साथ विदेश मंत्रालय भारत सरकार के आदेश दिनांक 26.05.2015 की प्रति संलग्न कर पासपोर्ट जारी करने की प्रक्रिया को सरलीकरण करते हुए पासपोर्ट आदेश की Prior Intimation की सुविधा लागू की है। इसके अनुसार अब अधिकारियों/कर्मचारियों को पासपोर्ट हेतु सीधे ही पासपोर्ट कार्यालय को आवेदन कर आवेदक द्वारा इस विभाग को Annexure-M में सूचित करना पर्याप्त है।

विदेश मंत्रालय भारत सरकार के आदेशानुसार पासपोर्ट आवेदन पत्र के साथ Annexure-B या Annexure-M संलग्न किया जाना अनिवार्य नहीं बताया है।

अतः इस पत्र के साथ राज्य सरकार व भारत सरकार का आदेश की प्रति संलग्न है। जिसके अनुसार विभागीय अनापत्ति प्रमाण-पत्र जारी करने की आवश्यकता नहीं है। शासन द्वारा जारी आदेशानुसार कार्यवाही करें तथा अनापत्ति प्रमाण-पत्र हेतु आवेदन पत्र निदेशालय बीकानेर को नहीं भेंजे।

● **(जगदीश चन्द्र पुरोहित)** आइ.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. ड्रॉप आउट फ्री उजियारी पंचायत 2019-20 के ऑनलाइन आवेदन एवं भौतिक सत्यापन तथा घोषणा एवं सम्मान की संशोधित समयावधि एवं तिथियों के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/माध्य-द/22492/प्रवेशोत्सव/2019-20/111 दिनांक 26-07-2019 ● 1. समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा। 2. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान। 3. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा। 4. समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक सन्दर्भ केन्द प्रभारी, समग्र शिक्षा अभियान। ● विषय : ड्रॉप आउट फ्री उजियारी पंचायत 2019-20 के ऑनलाइन आवेदन एवं भौतिक सत्यापन तथा घोषणा एवं सम्मान की संशोधित/समयावधि एवं तिथियों के सम्बन्ध में। ● प्रसंग : राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद जयपुर का पत्रांक समसा/जय/वै.शि./2019-20/उजियारी पंचायत/3866 दिनांक 19.7.19

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र

दिनांक 17.07.2019 द्वारा सत्र 2019-20 के लिए ड्रॉप आउट फ्री उजियारी पंचायत हेतु आवेदन एवं भौतिक सत्यापन तथा घोषणा एवं सम्मानित किए जाने हेतु समय सारिणी घोषित की गई है। प्रवेशोत्सव की तिथि बढ़ाए जाने के कारण ड्रॉप आउट फ्री उजियारी पंचायत 2019-20 के ऑनलाइन आवेदन एवं भौतिक सत्यापन की संशोधित समयावधि एवं तिथियाँ तथा सम्बन्धित अधिकारी द्वारा की जानी वाली कार्यवाही निम्नानुसार रहेगी :-

1. प्रवेशोत्सव अभियान में चिह्नित/नवप्रवेशित बालक-बालिकाओं का शालादर्पण पोर्टल पर अपडेशन-यह कार्य सीबीईओ/पीईईओ/संस्थाप्रधानों द्वारा बालक-बालिका के विद्यालय में प्रवेशित होने के तीन दिवस में किया जाना है।
2. चयनित पंचायत एक वर्ष के लिए उजियारी पंचायत घोषित की जाती है। अतः गत वर्ष घोषित उजियारी पंचायतों को उजियारी पंचायत 2019-20 के लिए नियत समयावधि में आवेदन करना होगा।
3. ग्राम सभा से अनुमोदित उजियारी पंचायत आवेदन मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी को प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि-06 अगस्त 2019।
4. सीबीईओ द्वारा शालादर्पण पोर्टल पर ऑनलाइन प्रविष्टि एवं उपखण्ड/ब्लॉकस्तरीय भौतिक जाँचः-

- आवेदन पत्र की प्राप्ति के दिन ही ग्राम पंचायत को शालादर्पण पोर्टल पर ऑनलाइन चिह्नित किया जाए।
- आवेदन पत्रों की संख्यानुसार ब्लॉकस्तरीय कमेटियों का गठन कर लिया जाए।
- शालादर्पण पोर्टल पर चिह्नित ग्राम पंचायतों की ब्लॉकस्तरीय समिति से तीन दिवस में जाँच करवाई जाए।
- जाँच की गई ग्राम पंचायत को शालादर्पण पोर्टल पर चिह्नित किया जाए।
- सभी आवेदित ग्राम पंचायतों की जाँच दिनांक 22 अगस्त, 2019 तक पूर्ण कर ली जाए।
- जाँच कार्य आवेदन प्राप्ति से दिनांक 22 अगस्त, 2019 तक नियमित रूप से किया जाए।

5. सीडीईओ द्वारा जिलास्तरीय भौतिक सत्यापन एवं जिला निष्पादन समिति द्वारा अनुमोदन :-

- शालादर्पण पोर्टल पर चिह्नित एवं ब्लॉकस्तरीय भौतिक जाँच की गई समस्त ग्राम प्रचायतों का जिलास्तरीय समिति द्वारा भौतिक सत्यापन किया जाएगा।
- शालादर्पण पोर्टल पर ब्लॉकवार चिह्नित ग्राम पंचायतों की संख्यानुसार जिलास्तरीय कमेटियों का गठन कर लिया जाए।
- ग्राम पंचायत के जिलास्तरीय भौतिक सत्यापन कार्य उसकी ब्लॉक स्तरीय जाँच के तुरंत बाद प्रारम्भ कर दिया जाए।
- जिलास्तरीय सत्यापन का कार्य ग्राम पंचायत के ब्लॉक स्तरीय जाँच होते ही प्रारम्भ कर दिया जाए एवं नियमित रूप से किया जाकर दिनांक 27 अगस्त, 2019 तक सभी आवेदित ग्राम प्रंचायत का सत्यापन कार्य पूर्ण कर लिया जाए।
- जिलास्तरीय भौतिक सत्यापन समिति द्वारा उजियारी घोषित की गई ग्राम पंचायत को शालादर्पण पोर्टल पर चिह्नित किया जाए।
- जिला निष्पादन समिति से दिनांक 29 अगस्त 2019 तक अनुमोदन प्राप्त कर लिया जाए।
- जिला निष्पादन समिति के अनुमोदन की प्रति परिषद कार्यालय की ई-मेल आई.डी. smsa.asfe@gmail.com पर दिनांक 02 सितम्बर 2019 तक प्रेषित की जाए।
- दिशा-निर्देशानुसार उजियारी पंचायत की घोषणा एवं सम्मान दिनांक 05 सितम्बर 2019 को शिक्षक दिवस पर किया जाएगा।

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं मुख्य ब्लॉक जिला शिक्षा अधिकारी उजियारी पंचायत की घोषणा हेतु आवेदन एवं घोषणा सम्बन्धित कार्यवाही उपर्युक्तानुसार निश्चित समयावधि में किया जाना सुनिश्चित करें।

●**उप निदेशक,** (माध्यमिक) शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/छात्रवृत्ति/सेल-ई/मु.ह.बे.यो./2019-20 दिनांक : 05-08-2019 ● विस्तृत दिशा-निर्देश वर्ष 2019-20 ●मुख्यमंत्री हमारी बेटियाँ योजना

1. पात्रता/शर्तें :-

A. **नवीन चयन की बालिकाओं हेतु-**

1. राजस्थान के राजकीय विद्यालयों की कक्षा 10 में नियमित अध्ययनरत रहते हुए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर की माध्यमिक परीक्षा में :-

- जिले में प्रथम तथा द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली दो मेधावी बालिकाएँ जिनके न्यूनतम अंक 75% हों। (कुल 66)
- जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बी.पी.एल. परिवार की एक बालिका जिसके न्यूनतम अंक 75% हों। (कुल 33)
- जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली एक अनाथ बालिका जिसके न्यूनतम अंक 75% हों। (कुल 33)

इस प्रकार राज्य से प्रतिवर्ष कुल 132 बालिकाओं का चयन किया जाएगा।

2. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर की माध्यमिक परीक्षा में बालिका की मेरिट की गणना उस जिले में होगी जिस जिले में वह कक्षा 10 में अध्ययनरत थी।
3. यदि जिले की स्थायी मेरिट में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा परिवर्तन करने से बालिका के प्रथम अथवा द्वितीय स्थान में बदलाव होता है तो उसी के अनुसार इस योजनान्तर्गत लाभान्वित होने वाली बालिका के स्थान में भी बदलाव किया जा सकेगा। किन्तु बदलाव होने तक वित्तीय लाभ ले चुकी बालिका से उस समय तक दी जा चुकी सहायता राशि वापस नहीं ली जाएगी।
4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर की माध्यमिक परीक्षा में बालिकाओं के समान अंक होने पर जिस बालिका के क्रमशः- गणित, विज्ञान, अंग्रेजी में अधिक अंक होंगे उसका चयन किया

जाएगा। इन विषयों में भी बालिकाओं के समान अंक होने पर अधिक उम्र वाली बालिका का चयन किया जाएगा।

ब. गत वर्षों की चयनित बालिकाओं हेतु–

बालिका द्वारा आगामी नवीन कक्षा/प्रशिक्षण में नियमित प्रवेश लेने का प्रमाण पत्र।

2. चयन–प्रक्रिया एवं देय राशि :–

- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर से प्राप्त जिले में प्रथम तीन तथा बी.पी.एल. श्रेणी की प्रथम तीन बालिकाओं की जिलेवार सूची प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–मुख्यालय को उपलब्ध करवाई जा रही है। प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–मुख्यालय योजना की पात्रता एवं शर्तों के अनुरूप इस सूची में से दो मेधावी तथा एक बीपीएल बालिका का चयन करेंगे साथ ही ये स्वयं के स्तर पर क्षेत्राधीन संस्थाप्रधानों से सम्पर्क कर अपने जिले में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली एक अनाथ बालिका का भी चयन करेंगे।
- प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–मुख्यालय अपने जिले की उपर्युक्त 04 चयनित पात्र बालिकाओं के अंतिम चयन की पुष्टि करेंगे।
- जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–मुख्यालय अंतिम रूप से चयनित 04 बालिकाओं की प्रपत्र–1 में सूचना तैयार कर पृथक पत्रावली संधारित करेंगे तथा प्रपत्र–1 की एक–एक प्रति निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर तथा बालिका शिक्षा फाउण्डेशन जयपुर को सूची प्राप्त होने के 15 दिवस में उपलब्ध करवाएँगे।
- चयनित मेधावी बालिकाओं को वित्तीय सहायता कक्षा–11/ व्यावसायिक शिक्षा/प्रशिक्षण से स्नातकोत्तर की शिक्षा/प्रशिक्षण प्राप्त करने तक प्रदान की जाएगी।

कक्षा	वार्षिक देय राशि का विवरण	
	एकमुश्त–पाठ्यपुस्तकें, स्टेशनरी, यूनिफॉर्म इत्यादि हेतु (बालिका के बैंक खाते में)	प्रतियोगी परिक्षाओं की तैयारी हेतु कोचिंग–छात्रावास का शुल्क (संबंधित संस्था के बैंक खाते में)
11 व 12/ समकक्ष	रु. 15,000/–	अधिकतम रु. 1,00,000/–
12 के बाद स्नातकोत्तर तक	रु. 25,000/–	अधिकतम रु. 2,00,000/–

3. सहायता राशि भुगतान प्रक्रिया :–

- जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–मुख्यालय अपने जिले की 04 बालिकाओं के चयन के पश्चात् 15 दिवस में बालिका से वांछित दस्तावेज प्राप्त करेंगे। तत्पश्चात् वे बालिका को एकमुश्त दी जाने वाली राशि की स्वीकृति 31 अगस्त 2019 से पूर्व जारी कर बालिका शिक्षा फाउण्डेशन, जयपुर को भेजते हुए प्रतिलिपि निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को देंगे। जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–मुख्यालय यह राशि बालिका के बैंक खाते में 30 सितम्बर, 2019 तक जमा करवाना सुनिश्चित करेंगे। बालिका द्वारा आगामी कक्षाओं/प्रशिक्षण में प्रवेश लेने पर भी यही प्रक्रिया अपनाई जाएगी।
- बालिका द्वारा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु कोचिंग–छात्रावास की शुल्क राशि का भुगतान करने हेतु आवेदन प्रपत्र–2 में संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक–मुख्यालय के समक्ष प्रस्तुत किया जावेगा। जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक–मुख्यालय द्वारा प्राप्त आवेदन का सत्यापन कर आवेदन प्राप्ति से 15 दिवस में दी जाने वाली राशि की स्वीकृति जारी कर बालिका शिक्षा फाउण्डेशन, जयपुर को भेजते हुए प्रतिलिपि निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को देंगे। सहायता राशि संस्था के बैंक खाते में तत्काल जमा करवाई जाएगी। यह प्रक्रिया प्रतिवर्ष अपनाई जाएगी।
- बालिका द्वारा प्रपत्र–2 में आवेदन वित्तीय वर्ष में एक से अधिक बार भी प्रस्तुत किया जा सकता है। परन्तु एक वित्तीय वर्ष में कुल स्वीकृत राशि कक्षा 11–12/समकक्ष प्रशिक्षण हेतु रु. 1 लाख तथा कक्षा 12 के बाद स्नातकोत्तर तक रु. 2 लाख से अधिक नहीं होगी।
- जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–मुख्यालय अपने जिले की गत वर्ष तक योजनान्तर्गत चयनित समस्त बालिकाओं को भी पात्रता का सत्यापन करते हुए उपर्युक्तानुसार एकमुश्त देय राशि/कोचिंग–छात्रावास शुल्क सहायता राशि की स्वीकृति जारी कर बालिका/संस्था के बैंक खाते में जमा करवाएँगे।
- प्रत्येक जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–मुख्यालय द्वारा वित्तीय–वर्ष में योजनान्तर्गत उपलब्ध करवाई गई राशि का उपयोगिता प्रमाणपत्र प्रतिवर्ष 07 अप्रेल तक सचिव बालिका शिक्षा फाउण्डेशन, जयपुर को प्रस्तुत करते हुए प्रति निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को प्रेषित करनी होगी।

4. आवेदन पत्र के साथ निम्नांकित दस्तावेज संलग्न करना आवश्यक है :–

प्रपत्र–1 के साथ–

1. बालिका की कक्षा 10 की अंकतालिका केवल पहली बार प्रपत्र–1 के साथ (स्वप्रमाणित प्रति)।
2. बालिका की पात्रता की पुष्टि का प्रमाणपत्र (जिशिअ, मा–मु द्वारा हस्ताक्षरित) केवल पहली बार प्रपत्र–1 के साथ।
3. बी.पी.एल. बालिका के लिए बी.पी.एल. सूची में परिवार सम्मिलित होने का साक्ष्य केवल पहली बार प्रपत्र–1 के साथ।
4. अनाथ बालिका के लिए माता–पिता का मृत्यु प्रमाणपत्र केवल पहली बार प्रपत्र–1 के साथ।
5. बालिका स्वयं की बैंक पासबुक की छायाप्रति केवल पहली बार प्रपत्र–1 के साथ (स्वप्रमाणित प्रति)।
6. बालिका के कक्षा 11वीं/व्यावसायिक शिक्षा में किसी भी शिक्षण/प्रशिक्षण संस्था में प्रवेश लेने का प्रमाणपत्र।

प्रपत्र–2 के साथ–

1. बालिका द्वारा आगामी कक्षाओं/व्यावसायिक प्रशिक्षण में प्रवेश लेने का प्रमाणपत्र (प्रतिवर्ष)।
2. बालिका द्वारा दिया जाने वाले शिक्षण/प्रशिक्षण/कोचिंग शुल्क का विवरण मय दस्तावेज (प्रतिवर्ष)।

5. आवश्यक पूरक निर्देश :–

- समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–मुख्यालय, शालादर्पण पोर्टल पर वांछित पूर्तियाँ पूर्व में जारी निर्देशों के क्रम में किया जाना सुनिश्चित करेंगे।
- समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–मुख्यालय, जिले के समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं संस्थाप्रधानों के माध्यम से इस योजना का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाना सुनिश्चित करें ताकि बालिकाएँ प्रेरित हो सकें।

● **(नथमल डिडेल)** आइ.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

4. शिक्षा सत्र 2019–20 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का 'टाइम–फ्रेम'।

● कार्यालय निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/सी.एफ./3664/सीएम घोषणा/शैक्षिक भ्रमण/2019–20/9 दिनांक 06–08–2019 ● (1) संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा (समस्त) (2) जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा (समस्त) ● विषय : शिक्षा सत्र 2019–20 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का 'टाइम–फ्रेम'।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक भ्रमण के संबंध में योजना एवं वित्तीय प्रावधान राज्य सरकार के पत्रांक पं. 1 (17)9 शिक्षा–1/प्राशि/2010 दिनांक 01.09.2011 के द्वारा स्वीकृत किया गया। इसकी पालना में सत्र 2019–20 के लिए शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का टाइम फ्रेम जारी किया जा रहा है। योजना के अनुसार राजकीय विद्यालयों में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। वित्तीय वर्ष 2019–20 में अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए स्वीकृत प्रावधान के अनुसार राशि अलग से जारी की जा रही है। अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण का दायित्व जिला शिक्षा अधिकारी, प्रारम्भिक शिक्षा तथा सर्किल ऑर्गनाइजर सीओ. स्काउट एवं गाईड (नोडल अधिकारी) को दिया जाता है। कार्यक्रम की क्रियान्विति निम्नानुसार की जानी है :–

क्र. सं.	कार्यक्रम	तिथि/अवधि
1.	जिशिअ मुख्यालय प्रारम्भिक शिक्षा कार्यालय में संस्थाप्रधान के माध्यम से छात्र–छात्राओं के आवेदन प्राप्त करना	13.09.2019 तक
2.	जिशिअ मुख्यालय प्राशि द्वारा प्राप्त आवेदन पत्रों में से वरीयता के आधार पर निर्धारित संख्या में छात्र–छात्राओं का चयन कर संबंधित को सूचित करना	30.09.2019 तक
3.	संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा से अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का अनुमोदन प्राप्त करना	10.10.2019 तक
4.	पाँच दिवसीय अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण की अवधि 'दीपावली अवकाश'	22.10.2019 से 26.10.2019 तक अथवा 30.10.2019 से 03.11.2019 तक

इसी क्रम में अतिरिक्त आयुक्त, राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर के पत्रांक : राप्राशिप/जय/औशि/2014–15/8519/दिनांक 20–08–14 (छाया प्रति संलग्न) के द्वारा छात्र–छात्राओं, को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाने में बरती जाने वाली सावधानियों के क्रम में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा जारी 28 जुलाई, 2014 को जारी किए गए दिशा–निर्देशों भी प्रसारित किए जाने है जिनमें संलग्न पत्र के अनुसार Standard Safety Measures के बिन्दु लिखे है। उक्त दिशा–निर्देशों की पालना में किसी प्रकार का लापरवाही नहीं बरती जावे। समय–समय पर कार्यक्रम की प्रगति के बारे में इस कार्यालय को अवगत करवाया जावे तथा शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम की समाप्ति के तत्काल पश्चात् लाभान्वित विद्यार्थियों की संख्या आगामी कार्य दिवस में इस कार्यालय को विभाग की ई–मेल आई.डी.–shakshikcelledu@gmail.com पर आवश्यक रूप से उपलब्ध करवाना सुनिश्चित करावे।

उपर्युक्तानुसार शैक्षिक भ्रमण योजना की क्रियान्विति सुनिश्चित करावें।

● **(ओम कसेरा)** आइ.ए.एस., निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा पं. राज. विभाग, बीकानेर।

5. प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।

● कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में योजना।

विद्यार्थियों को शैक्षिक ज्ञान के साथ–साथ राज्य के परिवेश, भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक स्थिति, ऐतिहासिक स्थल एवं सांस्कृतिक स्थलों की व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध करवाई जानी भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इस हेतु योजना निम्नानुसार है :–

क्र.सं.	शीर्षक	विवरण
1.	उद्देश्य	1. राज्य के ऐतिहासिक/सांस्कृतिक/प्राकृतिक धरोहरों से परिचित करवाना। 2. स्थापत्य कला की जानकारी कराना। 3. विद्यार्थियों को प्राकृतिक धरा का आनंद उठाने का अवसर प्रदान करना।

		4. विद्यार्थियों को सामुदायिक जीवन से ओत प्रोत करना। 5. विद्यार्थियों में पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त अन्य ज्ञान की वृद्धि करना।
2.	शैक्षिक भ्रमण	अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण एवं विद्यार्थी योग्यताः **1. भ्रमण अवधि :–** राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 7 व 8 के विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष दीपावली अवकाश में राज्य के अन्य जिले में 5 दिवसीय राजस्थान दर्शन कार्यक्रम अन्तर्गत शैक्षिक भ्रमण हेतु भेजा जाएगा। **2. विद्यार्थी योग्यता :–** (अ) राजकीय विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 7 व 8 के विद्यार्थी जिन्होंने गत परीक्षा कक्षा 6 व 7 में न्यूनतम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हो। (ब) राष्ट्रीय/राज्यस्तर पर सांस्कृतिक/साहित्यिक/खेलकूद/स्काउट एवं गाइड प्रतियोगिता में भाग लेकर सहभागी/विजेता रहे हों।
3.	विद्यार्थियों एवं अध्यापकों की संख्या	अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण–प्रत्येक जिले के 24 विद्यार्थी (कक्षा 7 के 12 व कक्षा 8 के 12) एवं 02 अध्यापक। नोट–मूल सूची के साथ जिलास्तर पर न्यूनतम 06 विद्यार्थियों की आरक्षित सूची भी तैयार की जाए ताकि मुख्य सूची में से कोई विद्यार्थी अपरिहार्य कारण से भ्रमण पर नहीं जा सके तो आरक्षित सूची में से छात्र का चयन कर भ्रमण पर ले जाया जा सके ताकि निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।
4.	मैरिट का निर्धारण	अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए विद्यार्थियों का चयन पूर्णत वस्तुनिष्ठ प्रणाली (objective pattern) के आधार पर निम्नानुसार किया जाएगा :– (अ) प्रतिभावान (Scholar) के आधार पर जिले की वरीयता से प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के 6+6 छात्र कुल 12 (प्रथम एवं द्वितीय तथा तृतीय) का चयन होगा। (ब) गतिविधियाँ (Activities) राज्य पुरस्कार/तृतीय सोपान प्राप्त स्काउट एवं गाइड प्रतियोगिताओं में सहभागिता के आधार पर 12 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। नोट–कुल 24 विद्यार्थियों का दल होगा। चयन हेतु छात्र–छात्रा द्वारा गत परीक्षा में प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर गणना की जाएगी।
5.	विद्यार्थियों से आवेदन प्राप्त करना एवं चयन प्रक्रिया	अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण :– जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारम्भिक शिक्षा द्वारा जिले में (संस्थाप्रधान) के माध्यम से प्रतिवर्ष विभाग द्वारा निर्धारित समय पर प्राप्त आवेदन पत्रों का अवलोकन कर निर्धारित मेरिट प्रक्रिया के द्वारा शैक्षिक भ्रमण हेतु विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। चयनित विद्यार्थियों को दीपावली अवकाश के समय राज्य के अन्य जिलों के लिए ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व के स्थानों पर 5 दिवस के लिए भ्रमण पर भेजा जावेगा।
6.	यात्रा व्यय	विद्यार्थियों की यात्रा का संपूर्ण व्यय राज्य सरकार वहन करेगी। इस हेतु बजट राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाया जाएगा। यह बजट संबंधित नोडल अधिकारी को आवंटित किया जाएगा जो संबंधित दिशा निर्देशों एवं वित्तीय नियमों की पालना करते हुए व्यय करेगा। अध्यापक की यात्रा का संपूर्ण व्यय यात्रा भत्ता नियमों के तहत राजकीय मद से देय होगा। यह विद्यार्थियों के व्यय में सम्मिलित नहीं होगा तथा समस्त लेखे विधिवत संधारित करते हुए व्यय विवरण सहायक लेखाधिकारी योजना एवं लेखाधिकारी बजट प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर को नियमानुसार यथासमय प्रस्तुत करेंगे।
7.	नोडल अधिकारी	अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण–जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय प्रारम्भिक शिक्षा तथा सर्किल ऑर्गनाइजर स्काउट/गाइड द्वारा भ्रमण की योजना का निर्माण किया जाएगा तथा अपने जिले में आने वाले दल के भ्रमण तथा आवास आदि की व्यवस्था की जावेगी।
8.	राजस्थान दर्शन एवं सांस्कृतिक यात्रा	प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन करने के संबंध में अनुमानित व्यय का विवरण :– (अ) विभिन्न मदो में अनुमानित व्यय हेतु विवरण प्रति विद्यार्थी प्रस्तावित व्यय (रुपयों में) किराया–1500/– भोजन–600/– अल्पाहार–300/– आवास–500/– स्टेशनरी–200/– अन्य व्यय–186 कुल प्रति विद्यार्थी 3266/– (ब) प्रतियोगिताओं में प्रथम से तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि निम्नानुसार देय होगी :–

		प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 350/- द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 250/- तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 200/-
9.	भ्रमण के दौरान ठहराव	भ्रमण के दौरान समस्त संभागी विद्यार्थी एवं एस्कोर्ट शिक्षक जिला मुख्यालय पर स्थित स्काउट हैड क्वार्टर पर ठहरेंगे।
10.	अध्यापक का चयन	अध्यापक का चयन-स्काउट/गाइड अध्यापक को प्राथमिकता दी जावेगी।
11.	यात्रा दलों की व्यवस्था एवं पर्यवेक्षण	संभाग स्तर पर संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा तथा सहायक राज्य संगठन आयुक्त (ए-एस ओ-सी) यात्राओं का अनुमोदन तथा उनके परिक्षेत्र में आने वाले दलों की यात्रा एवं व्यवस्था का परिवीक्षण करेंगे। व्यय का संपूर्ण समायोजन कर अपने कार्यालय के सहायक लेखाधिकारी से जाँचोंपरान्त प्रेषित करेंगे। एक जिले के दल व भ्रमण का कार्यक्रम निर्धारण संबंधित संभाग के संयुक्त निदेशक एवं सहायक राज्य संगठन आयुक्त द्वारा किया जाएगा।
12.	विभिन्न प्रतियोगिताएँ	भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों की कुछ प्रतियोगिताएँ यथा-भ्रमण आलेख, क्विज, सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ आदि भी आयोजित की जाए तथा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण भी किया जावेगा।
13.	प्रतिवेदन	अन्तर जिला दर्शन हेतु शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थी विधिवत यात्रा वृतान्त लिखेंगे, इस हेतु उन्हें एक डायरी एवं एक बॉलपैन उपलब्ध कराया जाएगा। सभी अध्यापक संभागीयों में से किसी एक को मुख्य प्रतिवेदक (Chief Reporter) यात्रा के प्रबंधक नोडल अधिकारी द्वारा नामित किया जाएगा जो यात्रा उपरान्त सभी यात्रा सहभागी अध्यापकों/विद्यार्थियों से उनकी रिपोर्ट प्राप्त कर समेकित प्रतिवेदन तैयार कर संबंधित नोडल अधिकारी को प्रस्तुत करेंगे।

● **(ओम कसेरा)** आइ.ए.एस., निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा एवं पं. राज. विभाग, बीकानेर

● **शिक्षा सत्र 2019-20 में कक्षा 7 व 8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के राजस्थान दर्शन शैक्षिक एवं सांस्कृतिक यात्रा हेतु छात्र/छात्रा आवेदन पत्र।**

(शैक्षिक सत्र 2018-19 की उपलब्धि के आधार पर)

(1) छात्र/छात्रा का नाम : ....

(2) पिता का नाम : ....

(3) जन्म तिथि : ....

(4) कक्षा (जिसमें अध्ययनरत है)..................

(5) विद्यालय का नाम.............................

(6) विद्यालय स्कॉलर रजिस्टर क्रमांक..............

फोटो

(7) घर का पत्र व्यवहार का पता : ....

(8) घर का फोन नं. .... मोबाइल नं. ....

(9) शैक्षिक सत्र 2018-19 में उत्तीर्ण परीक्षा का विवरण

कक्षा	कुल अंक	प्राप्तांक	उत्तीर्ण प्रतिशत
कक्षा 6 (कक्षा 7 में अध्ययनरत)			
कक्षा 7 (कक्षा 8 में अध्ययनरत)			

10. शैक्षिक सत्र 2018-19 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित खेलकूद गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करें):-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राष्ट्रस्तर		
2. राज्यस्तर		

11. शैक्षिक सत्र 2018-19 में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधि में सम्भागित्व (प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करे) :-

स्तर	गतिविधि का नाम	आयोजन स्थल
1. राष्ट्रस्तर		
2. राज्यस्तर		

आवेदन पत्र के साथ मेरे द्वारा आवश्यक प्रमाणित प्रमाण पत्र संलग्न कर दिए गए है। आवेदन पत्र में अंकित सभी तथ्य पूर्णतया सत्य है। मैं अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण हेतु जाना चाहता/चाहती हूँ।

छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

अभिभावक द्वारा सहमति

मैं नाम.....................अपने पुत्र/पुत्री नाम............... को विभाग द्वारा आयोजित अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण पाँच दिवसीय राजस्थान दर्शन यात्रा पर भेजने के लिए अपनी सहमति प्रदान करता हूँ। मेरा पुत्र/पुत्री यात्रा/हेतु पूर्णतया स्वस्थ है तथा किसी गंभीर रोग से ग्रसित नहीं है।

हस्ताक्षर

नाम अभिभावक

<u>संस्थाप्रधान द्वारा प्रमाणित</u>

आवेदन पत्र में अंकित सभी सूचनाओं एवं प्रलेखों की सत्यता की जाँच स्वयं मेरे द्वारा कर ली गई है। छात्र/छात्रा के अन्तर जिला शैक्षिक भ्रमण के लिए अनुशंषा की जाती है।

(हस्ताक्षर संस्थाप्रधान मय मोहर)

● **छात्र छात्राओं के शैक्षिक भ्रमण पर ले जाने में बरती जाने वाली सावधानियों के क्रम में।**

● राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्, द्वितीय व तृतीय तल, ब्लॉक-5, डॉ. एस. राधाकृष्णन शिक्षा संकुल, जवाहर लाल नेहरु मार्ग,

जयपुर ● क्रमांक : राप्राशिप/जय/औ.शि./2014-15/8519 दिनांक 20.08.2014 ● निदेशक, प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। ● विषय : छात्र छात्राओं के शैक्षिक भ्रमण पर ले जाने में बरती जाने वाली सावधानियों के क्रम में। ● संदर्भ : संयुक्त शासन सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली अ.शा. पत्रांक : 32-5/2014 & RMSA = I dated 28th July 2014 एवं संयुक्त शासन सचिव महोदय के पत्रांक : प.21(15) प्राशि/आयो/2014 दिनांक 08-08-2014।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि राजस्थान राज्य के समस्त राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के शैक्षिक भ्रमण के सम्बन्ध में भारत सरकार के पत्र में की गई सिफारिशों के सम्बन्ध में दिए गए सुरक्षा के तथ्यों के अनुक्रम में समस्त संस्थाप्रधानों को दिशा निर्देश जारी करवाने का श्रम करें। जारी किए गए दिशा निर्देशों की एक प्रति परिषद् कार्यालय को भी उपलब्ध करवाने का श्रम करें।

● **अतिरिक्त आयुक्त,** राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद।

6. बजट परिपत्र।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● आदेश ● क्रमांक : शिविरा माध्य/बजट/बी-4/25577/2019-20 ● दिनांक : 05.08.2019 बजट परिपत्र ● वित्तीय वर्ष 2020-21 के प्रतिबद्ध व्यय (राज्य निधि) एवं राज्य निधि तथा केन्द्रीय सहायता के आय व्ययक अनुमान एवं वर्ष 2019-20 हेतु संशोधित अनुमान राज्य सरकार को प्रस्तुत किए जाने हैं। प्रस्ताव तैयार करने के सम्बन्ध में संलग्न पत्र द्वारा विस्तृत निर्देश जारी किए गए हैं जो इस परिपत्र के साथ संलग्न है। इन्हें ध्यानपूर्वक अध्ययन कर तदनुसार आप अपने नियन्त्रणाधीन कार्यालय/विद्यालयों के सभी लेखामदों के संकलित प्रस्ताव तैयार कर प्रस्तुत करें। उक्त प्रस्ताव कार्यालय के लेखाधिकारी, सहायक लेखाधिकारी-I, सहायक लेखाधिकारी-II एवं सम्बन्धित विज्ञ लिपिक के साथ ही भिजवाए जावें जो इन प्रस्तावों के बारे में पूर्ण जानकारी रखते हों ताकि प्रस्तावों को अन्तिम रूप देने से पहले उनसे पूर्ण चर्चा की जा सके। आय के अनुमान पूर्ण विवरण सहित व्यय अनुमानों के साथ लेकर आवें।

समस्त लेखामदों प्रतिबद्ध व्यय (राज्य निधि) एवं राज्य निधि तथा केन्दीय सहायता के 01-संवेतन का चालू वित्तीय वर्ष 2019-20 व आगामी वर्ष 2020-21 का विद्यालयवार ऑफिस आइडी अंकित करते हुए संलग्न निर्देशों में दिए गए प्रपत्र में Excel में सॉफ्टकॉपी में तैयार कर लाना सुनिश्चित करावें। साथ ही विद्यालयवार बकाया यात्रा भत्ता, चिकित्सा व्यय, वर्दियाँ उपमद में होने वाले व्यय का ऑफिस आइडी सहित समस्त लेखामदों का प्रपत्र तैयार कर Excel में सॉफ्टकॉपी में साथ लाया जावे ताकि आगामी कार्यवाही की जा सके। **PEEO विद्यालयों के बजट प्रस्ताव मय स्वीकृत रिक्त पदों की सूचना PEEO की ऑफिस आइडी में तैयार कर (संचालित समस्त लेखामदों के) साथ ही लाने हैं।** बजट प्रस्ताव लेकर निदेशालय हेतु रवानगी से पूर्व संलग्न दिशा-निर्देशों में दी गई चैक लिस्ट से मिलान कर यह सुनिश्चित कर लेवें कि सम्पूर्ण सूचनाएं तैयार कर ली गई हैं।

● **(नथमल डिडेल),** आइ.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर।

● निर्देश : आय व्ययक अनुमान वर्ष 2020-21 एवं संशोधित अनुमान 2019-20 ● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर निर्देश आय व्ययक अनुमान वर्ष 2020-21 एवं संशोधित **अनुमान 2019-20 वर्ष, 2020-21 के लिए आय व्ययक अनुमान एवं 2019-20 के लिए संशोधित अनुमान प्रतिबद्ध व्यय (राज्य निधि) एवं राज्य निधि तथा केन्द्रीय सहायता के सम्बन्ध** में संलग्न तिथिक्रम के अनुसार निश्चित समय पर निदेशालय में संलग्न प्रपत्रों सहित प्रस्तुत हों, यह सुनिश्चित किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इसके अभाव में आप को यदि राशि का कम आवंटन होवें या नहीं होवें तो इसके लिए आप स्वयं उत्तरदायी होंगे। आय व्ययक अनमान 2020-21 एवं संशोधित अनुमान 2019-20 प्रस्तुत करने हेतु संक्षिप्त में निम्न बिन्दुओं को विशेष ध्यान में रखा जावें:-

1. समस्त स्वीकृत पदों का विवरण उपशीर्षकवार प्रपत्र-1(अ)(ब) में तैयार किया जावे। प्रपत्र-8 में रिक्त पदों हेतु कोई प्रावधान प्रस्तावित नहीं किया जावे। PEEO विद्यालयों के स्वीकृत पदों/रिक्त पदों का विवरण भी समस्त लेखामदों का लाना है।
2. **रिक्त पदों का सूचना पृथक रूप से विद्यालय की ऑफिस आइडी सहित लेखामदवार अतिरिक्त प्रति के साथ लावें।**
3. **यात्रा भत्ता एवं चिकित्सा व्यय :-** बकाया दावों तथा संभावित व्यय के लिए सूचियाँ प्रस्तुत करें।
4. बजट प्रस्ताव विज्ञ लेखा कार्मिक के साथ ही भिजवावें। **विद्यालय स्टाफ के साथ सुचनाएँ नहीं भिजवाई जावें।**
5. **समस्त जि.शि.अ. (मुख्यालय) अपने अधीनस्थ विद्यालयों के बजट प्रस्ताव अन्य सभी दर्शाये गए प्रपत्रों के साथ नीचे लिखे प्रपत्र में विद्यालयवार एवं लेखामदवार 01-संवेतन का विवरण पत्र आवश्यक रूप से तैयार कर सॉफ्टकॉपी एवं हार्ड कॉपी में लाया जाना सुनिश्चित करावें। इसके बिना बजट प्रस्ताव स्वीकार नहीं किए जावेंगे।**

प्रपत्र - 01

01-संवेतन की गणना/मांग पत्र

लेखामद (राशि लाखों में)

क्र.सं.	ऑफिस आइडी	विद्यालय का नाम	वित्तीय वर्ष 2019-20 में संवेतन में आवंटित राशि	जुलाई 2019 तक का वास्तविक व्यय	अगस्त, 2019 से मार्च, 2020 तक होने वाला अनुमानित व्यय	वित्तीय वर्ष में होने वाला कुल व्यय योग कॉलम (5+6)	वर्ष 2019-20 अतिरिक्त के लिए आवश्यकता योग कॉलम (4-7)	वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए अनुमान
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)

6. **बजट प्रस्ताव तैयार कर लेने के बाद अग्रलिखित चैकलिस्ट से आवश्यक रूप से मिलान कर लेने के बाद निदेशालय हेतु प्रस्थान करें।**

चैक लिस्ट

i. सभी मदों के लिये 01-संवेतन की गणना का उक्त प्रपत्र-1

विद्यालयों की ऑफिस आइडी सहित तैयार कर लिया गया है।

ii. कार्यालय/विद्यालय में स्वीकृत पदों तथा रिक्त पदों का विवरण पत्र लेखामदवार तैयार कर लिया गया है।

iii. कार्यालय में उपलब्ध कम्प्यूटर/प्रिन्टर/फोटोकॉपी का विवरण।

क्र. सं.	कार्यालय का नाम	उपलब्ध संख्या			विशेष विवरण
		कम्प्यूटर	प्रिन्टर	फोटोकॉपी	

iv. कार्यालय/विद्यालय के टेलीफोन का विवरण निर्धारित प्रपत्र 2 में तैयार कर लिया गया है।

v. कार्यालय/विद्यालय के स्वीकृत राजकीय वाहनों का विवरण निर्धारित प्रपत्र 4 अ में सभी कॉलमों की पूर्ति करते हुए तैयार कर लिया गया है।

vi. कार्यालय/विद्यालय के स्वीकृत किराए के वाहनों का विवरण निर्धारित प्रपत्र 4 ब में सभी कॉलमों की पूर्ति करते हुए तैयार कर लिया गया है।

vii. संवेतन की गणना के लिए निर्धारित प्रपत्र 8 तैयार कर लिया गया है।

viii. प्रपत्र 9 व पपत्र 10 भी तैयार कर लिए गए है।

ix PEED विद्यालयों का लेखामदकार बजट प्रस्ताव तथा स्वीकृत/रिक्त पदों का विवरण तैयार कर लिया गया है।

x राजस्व प्राप्ति के बजट अनुमान संकलित कर निर्धारित पपत्र को तैयार कर लिए हैं।

7. जो विद्यालय किराये के भवन में चल रहे हैं उनके माहवार किराये की गणना R.E. एवं B.E. के लिए अलग-अलग कर साथ लावें। यदि किराये में कोई वृद्धि हुई है तो आदेश भी साथ लावें।

8. अपलेखन मद में यदि किसी विद्यालय की मांग हो तो पूर्ण विवरण सहित प्रस्ताव साथ लावें।

●**वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

मण्डलवार आय व्ययक अनुमान प्रस्तुत करने का तिथिक्रम

1. आय एवं व्यय के अनुमान निम्न कार्यक्रम के अनुसार व्यक्तिशः प्रस्तुत किए जावें :-

वर्ष 2019-20	**जिला**	**कार्यालय का नाम**
निर्धारित दिनांक		
18.09.19 से 20.09.19 तक	अजमेर	1. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा (संभाग कार्यालय), अजमेर 2. जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, अजमेर 3. राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान, अजमेर 4. राजकीय सीनियर माध्यमिक अन्ध विद्यालय, अजमेर
	भीलवाड़ा	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, भीलवाड़ा
	नागौर	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, नागौर
	टोंक	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, टोंक
	उदयपुर	1. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा (संभाग कार्यालय), उदयपुर 2. जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, उदयपुर 3. प्रज्ञा चक्षु अंध विद्यालय, उदयपुर
	चित्तौड़गढ़	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, चित्तौड़गढ़
	बांसवाड़ा	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, बांसवाड़ा
	डूंगरपुर	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, डूंगरपुर
	राजमसन्द	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, राजसमन्द
	प्रतापगढ़	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, प्रतापगढ़
23.09.19 से 24.09.19 तक	**कोटा**	1. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा (संभाग कार्यालय), कोटा 2. जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, कोटा
	बूंदी	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, बूंदी
	झालावाड़	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, झालावाड़
	बारां	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, बारां
26.9.19 से 27.09.19 तक	**जयपुर**	1. उप निदेशक (माध्यमिक) शिक्षा विभाग, जयपुर 2. जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, जयपुर 3. जिला शिक्षा अधिकारी (विधि), जयपुर 4. मैनेजर, गुरु नानक भवन संस्थान, जयपुर
	अलवर	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, अलवर
	सीकर	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, सीकर
	दौसा	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, दौसा
30.09.19 से 01.10.19 तक	**जोधपुर**	1. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा (संभाग कार्यालय), जोधपुर 2. जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, जोधपुर

		3. शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय, जोधपुर 4. जिला शिक्षा अधिकारी (विधि), जोधपुर 5. गौशाला क्रीड़ा केन्द्र, जोधपुर 6. राजकीय अंध विद्यालय, जोधपुर
	पाली	संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा (संभाग कार्यालय), पाली
	पाली	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, पाली
	बाड़मेर	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, बाड़मेर
	जैसलमेर	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, जैसलमेर
	जालौर	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, जालौर
	सिरोही	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, सिरोही
	भरतपुर	1. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा (संभाग कार्यालय), भरतपुर 2. जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, भरतपुर
	करौली	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, करौली
	सवाईमाधोपुर	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, सवाईमाधोपुर
	धौलपुर	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, धौलपुर
03.10.19 से 04.10.19 तक	**बीकानेर**	1. उप निदेशक (प्रशासन), माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर 2. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा (संभाग कार्यालय), बीकानेर 3. उप निदेशक (समाज शिक्षा) बीकानेर 4. जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) बीकानेर 5. सादुल स्पोटर्स स्कूल, बीकानेर 6. राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर 7. नेत्रहीन छात्रावासित विद्यालय, बीकानेर 8. मूक बधिर विद्यालय, बीकानेर
	चूरू	1. संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा (संभाग कार्यालय), चूरू 2. जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, चूरू
	श्री गंगानगर	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, श्री गंगानगर
	हनुमानगढ़	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, हनुमानगढ़
	झुंझुनूं	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय), माध्यमिक शिक्षा, झुंझुनूं

नोट :– आय–व्यय अनुमान बताई गई दिनांक तक आवश्यक रूप से पहुँचाना सुनिश्चित करावें।

●**वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर।

7. शिक्षा विभागीय खेलकूद प्रतियोगिताएं, साहित्य–सांस्कृतिक प्रवृत्तियां आयोजन नियमावली एवं मार्गदर्शिका 2005 में उल्लेखित नियमों में संशोधन/परिवर्द्धन हेतु।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर ● कार्यालय आदेश ● इस कार्यालय के द्वारा प्रसारित आदेश क्रमाक : शिविरा–माध्य/खेलकूद–3/36101/वा.पं./2011–12/46 दिनांक 31.05.11 के अन्तर्गत शिक्षा विभागीय खेलकूद प्रतियोगिताएं, साहित्य–सांस्कृतिक प्रवृत्तियां आयोजन नियमावली एवं मार्गदर्शिका 2005 में उल्लेखित नियमों में निम्नानुसार संशोधन/परिवर्द्धन किया जाता हैं :–

क्र. सं.	नियमावली		विषय	संशोधन/परिवर्द्धन	
	नियम संख्या	पृष्ठ संख्या		पूर्व निर्धारित दर	संशोधित दर
01	12.3.5	34	क्षेत्रीय/जिला/राज्य विद्यालय खेलकूल प्रतियोगिता/प्रशिक्षण शिविर शिविर (राज्य प्रतियोगिता हेतु) एवं राष्ट्रीय प्रतियोगितार्थ आयोज्या पूर्व प्रशिक्षण शिविर में खिलाड़ियों को वर्तमान में देय दैनिक भता/खुराक भत्ता प्रति खिलाड़ी प्रति दिन।	100/–रु. प्रति खिलाड़ी प्रति दिन	150/–रु. प्रति खिलाड़ी प्रति दिन
02	12.6.2	34	जिला/राज्यस्तर पर विद्यार्थियों की खेल प्रतियोगिताओं में खेल गणवेश की अधिकतम सीमा 1000/–रु. प्रति होगी। उसमें से 50 प्रतिशत राशि स्वयं विद्यार्थी खिलाड़ी (प्रति खिलाड़ी) वहन करेगा तथा 50 प्रतिशत राशि संबंधित विद्यालय के छात्र कोष से प्रति खिलाड़ी व्यय की जावेगी, जो 500/- रु. से अधिक नहीं होगी। उक्त गणवेश राशि का निर्धारण खेल विशेष हेतु आवश्यक खेल गणवेश के आधार पर संस्थाप्रधान द्वारा किया जावे।	750/–रु. प्रति खिलाड़ी	1000/–रु. प्रति खिलाड़ी

03	12.3.6	34	राष्ट्रीय प्रतियोगिता अवधि एवं इस संबंधी यात्रा अवधि के दौरान खिलाड़ियों को वर्तमान में देय दैनिक भत्ता/खुराक भत्ता प्रति खिलाड़ी प्रति दिन।	200/-रु. प्रति खिलाड़ी प्रति दिन	250/-रु. प्रति खिलाड़ी प्रति दिन
04	-	-	राष्ट्रीय प्रतियोगिता हेतु खिलाड़ियों को दी जाने वाली प्रति खिलाड़ी गणवेश राशि।	1000/-रु. प्रति खिलाड़ी	1500/-रु. प्रति खिलाड़ी
05	-	-	पंजीकरण शुल्क (राष्ट्रीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले राज्य के छात्र-छात्रा खिलाड़ियों का पंजीकरण शुल्क-जो S.G.F.I को देय होता है।)	130/-रु. प्रति खिलाड़ी	200/-रु. प्रति खिलाड़ी

उपरोक्तानुसार समस्त संशोधन/परिवर्द्धन एवं दरें सत्र 2019-20 से प्रभावी होंगे। शेष नियम/निर्देश यथावत रहेंगे।

● **(नथमल डिडेल)**, आइ.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

● राजस्थान सकार शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग क्रमांक प. 4 (6) शिक्षा-1/2016 पार्ट जयपुर ● परिपत्र ● दिनांक : 19.08.2019 परिपत्र राज्य सरकार के पत्र दिनांक 05.06.1999 एवं 23.06.1999 द्वारा के विद्यालय क्रमोन्नति के दिशा-निर्देशों को अधिकमित करते हुए राज्य में वर्तमान परिस्थितियों एवं शिक्षा में किए जा रहे व्यापक सुधारों के प्रकाश में नियम/मानदण्ड निम्नानुसार जारी किए जाते हैं :-

क्र. सं.	**श्रेणी**	**विद्यालय की श्रेणी वितरण**	**कक्षा 8वीं/10वीं में विद्यार्थी संख्या**		**जनसंख्या**		**दूरी एवं अन्य मानदण्ड**
			छात्र	**छात्रा**	**छात्र विद्यालयों हेतु**	**छात्रा विद्यालयों हेतु**	
1.	सामान्य क्षेत्र	राउप्रावि से रामावि में क्रमोन्नति के वर्तमान में प्रचलित मानदण्ड	30	20	2500	300	दूरी 5 किमी. तक की परिधि में कोई भी रामावि संचालित नहीं हो एवं फीडर विद्यालयों की संख्या न्यूनतम 2 हो।
		राउप्रावि से रामावि में क्रमोन्नति के नवीन प्रस्तावित मानदण्ड	30	20	1500	2000	पूर्व में 5 किमी तक की परिधि में कोई भी रामावि या राउमावि संचालित नहीं है तथा क्रमोन्नत होने वाले विद्यालय के अतिरिक्त कम से कम एक राउप्रावि फीडर विद्यालय हो।
2.	रेगिस्तानी पहाड़ी/नदी नाले/जनजाति/मेवात क्षेत्र	राउप्रावि से रामावि में क्रमोन्नति के वर्तमान में प्रचलित मानदण्ड	20	20	2000	2500	दूरी 5 किमी. तक की परिधि में कोई भी रामावि संचालित नहीं हो एवं फीडर विद्यालयों की संख्या न्यूनतम 2 हो।
		राउप्रावि से रामावि में क्रमोन्नति के नवीन प्रस्तावित मानदण्ड	20	20	1000	1500	पूर्व में 3 किमी तक की परिधि में कोई भी रामावि या राउमावि संचालित नहीं है तथा क्रमोन्नत होने वाले विद्यालय के अतिरिक्त कम से कम एक राउप्रावि फीडर विद्यालय हो।
3.	सामान्य क्षेत्र	रामावि से राउमावि में क्रमोन्नति के वर्तमान में प्रचलित मानदण्ड	50	40	4000	5000	दूरी 8 किमी. तक की परिधि में कोई भी राउमावि संचालित नहीं हो एवं फीडर विद्यालयों की संख्या न्यूनतम 2 हो।
		रामावि से राउमावि में क्रमोन्नति के नवीन प्रस्तावित मानदण्ड	40	30	2500	3500	पूर्व में 7 किमी तक की परिधि में कोई भी राउमावि संचालित नहीं है तथा क्रमोन्नत होने वाले विद्यालय के अतिरिक्त कम से कम एक रामावि फीडर विद्यालय हो।

4.	रेगिस्तानी/ पहाड़ी नदी नाले/	रामावि से राउमावि में क्रमोन्नति के वर्तमान में प्रचलित मानदण्ड	30	25	3000	4000	दूरी 8 किमी. तक की परिधि में कोई भी राउमावि संचालित नहीं हो एवं फीडर विद्यालयों की संख्या न्यूनतम हो।
	जनजाति/ मेवात क्षेत्र	रामावि से राउमावि में क्रमोन्नति के नवीन प्रस्तावित मानदण्ड	25	20	1500	2500	पूर्व में 5 किमी तक की परिधि में कोई भी राउमावि संचालित नहीं है तथा क्रमोन्नत होने वाले विद्यालय के अतिरिक्त कम से कम एक रामावि फीडर विद्यालय हो।

- बालिका विद्यालय को माध्यमिक स्तर/उच्च माध्यमिक स्तर पर क्रमोन्नत करने के लिए उस स्थान पर माध्यमिक स्तर/उच्च माध्यमिक स्तर का सह-शिक्षा का विद्यालय पूर्व से ही संचालित होना आवश्यक होगा। साथ ही दूरी की गणना में ग्राम पंचायत/वार्ड/ब्लॉक/ जिले की सीमा की बाध्यता नहीं होगी।
- स्थानीय आवश्यकता के आधार पर जनप्रतिनिधियों की राय से जिला शिक्षा अधिकारियों से प्राप्त प्रस्तावों के अनुसार राज्य सरकार स्तर से आदेश जारी किए जा सकेंगे।
- क्रमोन्नति के उपरोक्त मानदण्डों में राज्य सरकार द्वारा शिथिलन प्रदान कर विद्यालय क्रमोन्नत किया जा सकेगा।

● **अशोक कुमार त्रिवेदी,** शासन उप सचिव-प्रथम

8. ब्लॉक/जिला/राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2019 हेतु पात्र शिक्षकों से ऑन लाइन आवेदन लिए जाने बाबत।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/मा-ब/22803/SAT-19/2018-19 ● दिनांक : 09.08.2019 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान। ● 2. समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं पदेन ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा अभियान। ● विषय : ब्लॉक/जिला/राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2019 हेतु पात्र शिक्षकों से ऑनलाइन आवेदन लिए जाने बाबत। ● प्रसंग : शासन का पत्रांक : प.18(1) शिक्षा-2/2019 जयपुर, ● दिनांक 09.08.2019 ● उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक शासकीय स्वीकृति के क्रम में लेख है कि शिक्षा विभाग में अध्ययन-अध्यापन की उत्कृष्टता में सतत सुधार एवं प्रोत्साहन हेतु इस वर्ष से पात्र शिक्षकों के चयन में सम्पूर्ण पारदर्शिता तथा प्रत्येक श्रेणी के शिक्षकों को पुरस्कार चयन में समान अवसर प्रदान किए जाने के दृष्टिगत ब्लॉक/जिला/राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह-2019 का आयोजन अग्रांकित प्रक्रियात्मक, संख्यात्मक एवं आयोजन तिथियों में परिवर्तन करते हुए किया जाना निश्चित किया गया है, जिसका विवरण अग्रानुसार है :-

1. विभिन्न स्तरो पर शिक्षक सम्मान समारोह आयोजन की योजना :-

क्र. सं.	विवरण	कक्षा वर्ग	शिक्षक सम्मान समारोह का स्तर		
			ब्लॉक स्तर	**जिला स्तर**	**राज्य स्तर**
1.	सम्मान हेतु निर्धारित शिक्षकों की संख्या	कक्षा 1 से 5	01	01	01
		कक्षा 6 से 8	01	01	01
		कक्षा 9 से 12	01	01	01
2.	आवेदन हेतु न्यूनतम शिक्षक अनुभव		न्यूनतम तीन वर्ष का कक्षा शिक्षण अनुभव /सेवावधि आवेदन पात्रता हेतु निर्धारित किया जाता है।	न्यूनतम तीन वर्ष का कक्षा शिक्षण अनुभव/सेवावधि आवेदन पात्रता हेतु निर्धारित किया जाता है।	वर्तमान में सेवावधि/शिक्षण अनुभव संस्थाप्रधान एवं अन्य शिक्षकों हेतु क्रमशः 20 एवं 15 वर्ष निर्धारित है संशोधन उपरांत दोनों हेतु न्यूनतम सेवावधि/शिक्षण अनुभव 3 वर्ष निर्धारित किया जाता है।
3.	पुरस्कार का स्वरूप		5100/- प्रति शिक्षक पुरस्कार राशि एवं प्रमाण पत्र	11000/- प्रति शिक्षक शिक्षक पुरस्कार राशि एवं प्रमाण पत्र	21000/- प्रति शिक्षक पुरस्कार राशि एवं प्रमाण पत्र
4.	आयोजन तिथि		02 अक्टूबर (गाँधी जयंती) के अवसर पर	02 अक्टूबर (गाँधी जयंती के अवसर पर)	5 सितम्बर (शिक्षक दिवस के अवसर पर)

2. पुरस्कृत किए जाने वाले शिक्षकों की कुल संख्या :-

a - ब्लॉकस्तर पर कुल पुरस्कृत शिक्षकों की संख्या = 301 x 3 = 903

b - जिलास्तर पर कुल पुरस्कृत शिक्षकों की संख्या = 33 x 3 = 99

c - राज्यस्तर पर कुल पुरस्कृत शिक्षकों की संख्या = 33 x 3 = 99

कुल योग = 903+99+99 = 1101

3. समय सारिणी :–

क्र.सं.	उत्तरदायी व्यक्ति/कार्यालय	विवरण	निर्धारित तिथि/समयावधि
1.	आवेदन प्रस्तुत करने वाले शिक्षक के लिए	आवेदन हेतु तैयार तथा वांछित दस्तावेज संकलन, प्रमाणीकरण इत्यादि।	दिनांक 13.08.19 से पूर्व तक।
		शाला दर्पण के माध्यम से ऑन-लाइन आवेदन।	दिनांक 13.08.19 से 16.08.19 मध्यरात्रि तक।
		आवेदन प्रति की हार्ड कॉपी एवं वांछित दस्तावेजों की पंजिका तैयार कर CBEO कार्यालय में जमा करवाना (तीन प्रतियों में)।	दिनांक 14.08.19 से 17.08.19 प्रातः 10.00 बजे तक **(वाहक स्तर पर)**
2.	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (CBEO) कार्यालय	प्राप्त आवेदनों की जाँच, साक्ष्यों का विश्लेषण एवं भौतिक सत्यापन।	दिनांक 17.08.19 से 19.08.19 तक।
		प्रत्येक कक्षा वर्ग से तीन उच्च वरीयता वाले शिक्षकों का चयन कर प्रथम दो वरीयता वाले प्रस्तावों का CDEO कार्यालय को ऑनलाइन अग्रेषण।	दिनांक 20.08.19 मध्यरात्रि तक।
		प्रत्येक कक्षा वर्ग से अग्रेषित दोनों प्रस्तावों की हार्ड कॉपी मय वांछित संलग्नक CDEO कार्यालय में (दो प्रतियों में) प्रेषित करना।	दिनांक 21.08.19 प्रातः 10:00 बजे तक। **(वाहक स्तर पर)**
3.	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (CDEO) कार्यालय	CBEO कार्यालय से कक्षा वर्गवार प्राप्त प्रस्तावों की संवीक्षा उपरांत प्रत्येक वर्ग से उच्चतम वरीयता वाले प्रस्ताव का ऑनलाइन अग्रेषण निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को करना।	दिनांक 22.08.19 की मध्यरात्रि तक
		प्रत्येक कक्षा वर्ग से अग्रेषित तीन-तीन प्रस्ताव की हार्ड कॉपी मय वांछित संलग्नक निदेशालय को (एक प्रति में) प्रेषित करना।	दिनांक 23.08.19 को प्रातः 10:00 बजे तक **(वाहक स्तर पर)**

4. कक्षा वर्ग का निर्धारण :–

- शिक्षक के कक्षा वर्ग का निर्धारण उसके द्वारा अध्यापन करवाई जाने वाली कक्षाओं के आधार पर संस्था प्रधान द्वारा किया जाएगा। **(विद्यालय के कक्षावार कालांश विवरण एवं समय-विभाग चक्र की प्रति आवेदन के संलग्न की जाएगी।)**
- संस्थाप्रधान स्वयं के द्वारा आवेदन किए जाने की स्थिति में उसके द्वारा विद्यालय में अध्यापन करवाई जाने वाली कक्षाओं (विद्यालय के कक्षावार कालांश विवरण एवं समय-विभाग चक्र की प्रति आवेदन के संलग्न की जाएगी) के आधार पर कक्षा वर्ग निर्धारित करते हुए सूक्ष्म अंक योजना में परीक्षा परिणाम की गणना विद्यालय की कक्षा-5 एवं 8 में विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त ग्रेड तथा कक्षा 10 एवं 12 के बोर्ड परीक्षा परिणाम का कुल औसत निकाला जाकर की जाएगी।
- उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षक द्वारा कक्षा 6 से 8 के वर्ग तथा माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शारीरिक शिक्षक द्वारा कक्षा 9 से 12 के वर्ग में आवेदन किया जाएगा।

5. आवेदन प्रक्रिया

- इस वर्ष शिक्षकों द्वारा स्वयं ऑनलाइन आवेदन शाला दर्पण पोर्टल के माध्यम से किया जाएगा।
- उक्त आवेदन की ऑनलाइन पूर्ति उपरांत आवेदन की हार्ड कॉपी निकाली जाएगी, जिसे संबंधित संस्थाप्रधान द्वारा आवेदन पत्र से संबंधित समस्त संलग्नकों/साक्ष्यों सहित तीन प्रतियों में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय को प्रमाणीकरण उपरान्त वाहकस्तर पर जमा करवाया जाएगा।
- उक्त आवेदन हेतु नव निर्मित मॉड्यूल दिनांकः 13.08.2019 को शाला दर्पण पोर्टल पर लाइव होगा तथा दिनांक 16.8.19 की मध्यरात्रि तक पात्र शिक्षक ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे।
- प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधीन कार्यरत शिक्षक शाला दर्पण पोर्टल के स्टाफ कॉर्नर पर शिक्षक सम्मान लिंक पर स्वयं के लॉगिन द्वारा पंजीकरण उपरान्त आवेदन कर सकेंगे। ऐसे विद्यालय, जिनकी मेपिंग शाला दर्पण पोर्टल पर नहीं है, में कार्यरत शिक्षक शाला दर्पण पर शिक्षक सम्मान से संबंधित लिंक पर पंजीकरण उपरान्त दिनांक 16.08.19 को रात्रि 12.00 बजे तक ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे।
- संबंधित संस्थाप्रधान/पी.ई.ई.ओ./नियंत्रण अधिकारी द्वारा उक्तानुरूप शाला दर्पण पर अपलोड किए गए उक्त आवेदन की हार्ड कॉपी मय समस्त वांछित संलग्नक पंजिका (तीन प्रतियों में) दिनांक 17.08.19 तक प्रमाणित कर संबंधित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय को वाहकस्तर पर आवश्यक रूप से

जमा करवायी जाएगी।

- मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वारा प्राप्त आवेदनों का भौतिक साक्ष्यों एवं दस्तावेजों के आधार पर सत्यापन उपरान्त दिनांक 20.08.19 तक प्राप्त आवेदनों में से उपर्युक्त वर्णित तीनों वर्गो से उच्चतम वरीयता वाले तीन आवेदनों का चयन किया जाएगा।
- आवेदनों की वरीयता का निर्धारण संलग्न प्रेषित 100 अंकों की सूक्ष्म अंक योजना में प्राप्तांकों के आधार पर किया जाएगा तथा उक्तानुरूप अंकों की प्रविष्टि ऑनलाइन शाला दर्पण पर C.B.E.O. लॉगिन से की जाएगी।
- ब्लॉकस्तर पर प्रत्येक कक्षा वर्ग में उच्चतम वरीयता के तीन शिक्षकों का चयन अग्रांकित ब्लॉक स्तरीय चयन समिति द्वारा किया जाएगा।

क्र. सं.	अधिकारी का पदनाम	चयन समिति में दायित्व
1	मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी	अध्यक्ष
2	अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी-प्रथम	सदस्य
3	अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी-द्वितीय	सदस्य सचिव

- उपर्युक्त समिति ब्लॉक क्षेत्राधिकार में प्राप्त समस्त ऑनलाइन आवेदनों को भौतिक साक्ष्यों एवं दस्तावेजों (आवेदन की प्रमाणीकृत हार्ड कॉपी संस्थाप्रधान द्वारा प्रेषित) के आधार पर मूल्यांकन 100 अंकों की सूक्ष्म अंक योजना (ग्राउण्ड एसेसमेंट सहित) के आधार पर करने हेतु उत्तरदायी होगी।
- उक्त समिति से संबंधित सदस्य के पद रिक्त होने की अवस्था में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी/कार्यवाहक मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी क्षेत्राधिकार में पदस्थापित प्रधानाचार्य समकक्ष अधिकारी मनोनयन करने हेतु अधिकृत होंगे।
- उपर्युक्त समिति प्रत्येक कक्षा वर्ग में से उच्चतम वरीयता के तीन-तीन शिक्षकों का चयन कर उनमें से प्रत्येक वर्ग में प्रथम दो वरीयता वाले आवेदन मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को अग्रेषित करेगी।

6. मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा आवेदनों का अग्रेषण:

- अधीनस्थ ब्लॉक कार्यालयों द्वारा तीनों कक्षा वर्गो से अग्रेषित दो-दो शिक्षकों के आवेदन का दिनांक 21.08.19 को ही आवश्यक रूप से समेकन मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय द्वारा किया जाएगा।
- तत्पश्चात् उक्त आवेदनों की समुचित संवीक्षा उपरान्त जिले में प्रत्येक वर्ग से उच्चतम वरीयता के तीन-तीन आवेदन का निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर को दिनांक 22.08.19 को शाला दर्पण पर C.D.E.O.लॉगिन से ऑनलाइन अग्रेषण किया जाना मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा सुनिश्चित किया जाएगा।
- अधीनस्थ ब्लॉक कार्यालयों द्वारा अग्रेषित आवेदनों की समुचित संवीक्षा एवं राज्यस्तरीय समिति को प्रत्येक कक्षा वर्ग से एक-एक अग्रेषित किए जाने वाले आवेदनों के चयन हेतु अग्रांकित विवरणानुसार जिलास्तरीय चयन समिति का गठन किया जाता है-

क्र. सं.	अधिकारी का पदनाम	चयन समिति में दायित्व
1	मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	अध्यक्ष
2	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक	सदस्य
3	जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-प्रारंभिक	सदस्य
4	संबंधित जिले में राष्ट्रस्तरीय शिक्षक सम्मान प्राप्त शिक्षक	सदस्य
5	सहायक निदेशक, कार्यालय मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी	सदस्य सचिव

- उपर्युक्त सदस्यों में से पद रिक्त होने अथवा पात्र सदस्य के अभाव में उसके स्थान पर समिति अध्यक्ष जिला क्षेत्राधिकार में किसी प्रधानाचार्य समकक्ष शिक्षाधिकारी का मनोनयन कर सकेंगे।

7. राज्यस्तरीय चयन समितिः-

- मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयों द्वारा तीनों कक्षा वर्ग से तीन-तीन शिक्षकों के चयन के अनुरूप समस्त 33 जिलों से राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान हेतु अग्रेषित कुल 297 आवेदनों की पात्रता जाँच एवं संवीक्षा उपरान्त अग्रांकित राज्यस्तरीय चयन समिति द्वारा राज्यस्तरीय सम्मान समारोह हेतु 99 शिक्षकों का अंतिम चयन किया जाएगा।

क्र. सं.	अधिकारी का पदनाम	चयन समिति में दायित्व
1	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।	अध्यक्ष
2	प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर।	सदस्य
3	प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, अजमेर।	सदस्य
4	उप निदेशक (माध्यमिक), कार्यालय हाजा	सदस्य सचिव

- उपर्युक्त समिति द्वारा चयनित 99 शिक्षकों को शासकीय अनुमोदनोपरांत दिनांक 05 सितम्बर 2019 को शिक्षक दिवस के अवसर पर जयपुर में आयोज्य भव्य राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में पुरस्कृत किया जाएगा।

8. ब्लॉक/जिलास्तरीय शिक्षक सम्मान समारोहः-

- नवीन शिक्षक सम्मान योजना के अनुसार आवेदित शिक्षकों में से ब्लॉक स्तर पर श्रेणीवार तीन-तीन शिक्षकों (कक्षा 1 से 5 को पढ़ाने वाले-3, कक्षा 6 से 8 को पढ़ाने वाले -3 तथा कक्षा 9 से 12 को पढ़ाने वाले-3) का चयन किया जाना है। इस तरह से कुल 2709 (3x3x301) शिक्षक ब्लॉकस्तर पर चिह्नित/सूचीबद्ध किए जाएँगे।
- ब्लॉकस्तर पर चिह्नित शिक्षकों में से प्रत्येक वर्ग से उच्च वरीयता वाले दो-दो शिक्षकों के नाम जिलास्तर पर अग्रेषित किए जाएँगे। इस प्रकार जिलास्तर पर कुल 1806 (2x3x301) नाम चिह्नित किए जाएँगे। इन 1806 में से प्रत्येक जिले से प्रत्येक श्रेणी के तीन

नाम अर्थात् कुल 297 (3x3x33) नाम राज्यस्तर पर अग्रेषित किए जाने हैं।

- राज्यस्तर पर प्राप्त 297 प्रस्तावों में से प्रत्येक श्रेणी का प्रस्ताव अर्थात् कुल 99 प्रस्ताव (3x33) राज्यस्तरीय सम्मान हेतु भेजे जाएँगे, जिनका अंकन जिले एवं ब्लॉक पर पूर्व में ही हो चुका है।
- जिलास्तर पर राज्य से लौटाए गए (198) तथा पूर्व में अग्रेषित नहीं किए गए 1608 (1806-198) चिह्नित आवेदनों में से उच्च वरीयता वाले तीन आवेदन, प्रत्येक श्रेणी से एक-एक अर्थात कुल 99 (3x33) जिलास्तर पर शिक्षक सम्मान हेतु चयनित किए जाएँगे एवं शेष 1509 (1608-99) आवेदन ब्लॉकस्तर पर लौटाए जाएँगे, जिनमें से प्रत्येक श्रेणी में से शेष में से सर्वोच्च वरीयता वाले एक-एक (राज्य एवं जिलास्तर पर चयनित के अतिरिक्त शेष में से), कुल 903 (3×301) शिक्षकों को ब्लॉकस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में सम्मानित किया जाना है।
- उक्तानुरूप ब्लॉक/जिलास्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह गाँधी जयंती के अवसर पर दिनांक 02 अक्टूबर 2019 को आयोजित किए जाने हैं। उक्त समारोह के आयोजन पेटे प्रति ब्लॉक दस हजार रु. तथा प्रति जिला एक लाख रु. की राशि राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रदान की जाएगी।

पात्रता :-

- नियमित कार्यरत शिक्षक/संस्थाप्रधान जिन्हें न्यूनतम तीन वर्ष का विद्यालयी शिक्षक अनुभव (आधार तिथि-30 जून, 2019) है, उक्त पुरस्कार हेतु ऑनलाइन आवेदन करने के पात्र होंगे।
- संबंधित संस्थाप्रधान/नियंत्रण अधिकारी आवेदन के अग्रेषण से पूर्व यह भली प्रकार जाँच लेवें कि आवेदक के विरुद्ध किसी भी प्रकार की विभागीय जाँच/कार्यवाही वर्तमान में लंबित नहीं है तथा सेवाभिलेख के अनुसार पूर्व में भी किसी भी प्रकार की दंडनीय/निलंबन की कार्यवाही नहीं की गई है तथा आरोप-पत्र नहीं दिया गया है।

उपर्युक्त निर्देशों का क्षेत्राधिकार में अधिकाधिक प्रसार-प्रचार हेतु समुचित कार्यवाही सम्पादित करते हुए निर्धारित समयावधि में पात्र शिक्षकों के शाला दर्पण के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन की सुनिश्चितता करावें। सहज संदर्भ हेतु ऑन लाइन आवेदन की हार्ड-कॉपी तथा सूक्ष्म अंक योजना (सामान्य शिक्षक/शारीरिक शिक्षक/विशेष शिक्षक हेतु पृथक-पृथक) अग्रिम तौर पर प्रेषित की जा रही है।

● **(नथमल डिडेल)**, IAS निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

9. शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2019 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने बाबत।

● कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक-शिविरा/माध्य/मा/स/22448/गायत्री परिवार/2014-19/25 ● दिनांक : 06.08.2019 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा अभियान ● विषय : शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2019 के आयोजन में सहयोग प्रदान करने बाबत। ● प्रसंग : राज्य सरकार का पत्रांकः प.16(36) शिक्षा-6/2004, जयपुर, दिनांकः23.09.14 एवं जिला सचिव, भा.सं.ज्ञा. परीक्षा प्रकोष्ठ, बीकानेर का पत्रांक : भासंज्ञाप/2019/02 दि. 19.07.2019 उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार द्वारा प्रासंगिक पत्र में पूर्व प्रदत्त निर्देशों के क्रम में जिला सचिव, भा.सं.ज्ञा. परीक्षा प्रकोष्ठ, बीकानेर द्वारा अवगत करवाया गया है कि भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2019 का आयोजन दिनांक : **11 अक्टूबर, 2019 (शुक्रवार) को दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक** किया जाएगा, जिसमें कक्षा-5 से 12 तक के विद्यार्थी भाग ले सकेंगे।

शासन के प्रासंगिक निर्देशों के क्रम में लेख है कि अधीनस्थ संस्था प्रधानों को विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी उक्त परीक्षा के सुचारू संचालन हेतु आयोजकों को वांछित सहयोग प्रदान करने हेतु निर्देशित करें।

●**उप निदेशक** (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

आवश्यक सूचना

- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**
- **कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें।**

-वरिष्ठ संपादक

माह : सितम्बर, 2019

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
02.09.2019	सोमवार	बीकानेर	11	हिन्दी (अनिवार्य)	1	हिन्दी कहानी की विकास यात्रा
03.09.2019	मंगलवार	जयपुर	6	विज्ञान	1	भोजन के स्रोत
04.09.2019	बुधवार	उदयपुर	9	सामाजिक विज्ञान	5	विश्व की प्रमुख घटनाएँ
05.09.2019	गुरुवार	जोधपुर	गैरपाठयक्रम			शिक्षक दिवस (उत्सव)
06.09.2019	शुक्रवार	बीकानेर	गैरपाठयक्रम			रामदेव जयंती/तेजा दशमी
07.09.2019	शनिवार	जयपुर	गैरपाठयक्रम			विश्व साक्षरता दिवस
09.09.2019	सोमवार	उदयपुर	8	सामाजिक विज्ञान	7	जनसंख्या
11.09.2019	बुधवार	जोधपुर	7	हिन्दी	2	लवकुश (कहानी)
12.09.2019	गुरुवार	बीकानेर	9	हिन्दी	2	सूरदास
13.09.2019	शुक्रवार	जयपुर	10	हिन्दी	2	तुलसीदास लक्ष्मण परशुराम संवाद
14.09.2019	शनिवार	उदयपुर	गैरपाठयक्रम			हिन्दी दिवस (उत्सव)
16.09.2019	सोमवार	जोधपुर	7	विज्ञान	3	पदार्थों का पृथक्करण
17.09.2019	मंगलवार	बीकानेर	10	सामाजिक विज्ञान	7	राज्य सरकार
18.09.2019	बुधवार	जयपुर	5	हिन्दी	2	मेहनत की कमाई (कहानी)
19.09.2019	गुरुवार	उदयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	8	जलसंसाधन
23.09.2019	सोमवार	जोधपुर	10	संस्कृत	4	जृम्भस्व सिंह दन्तांस्ते गणयिष्ये
24.09.2019	मंगलवार	बीकानेर	7	हिन्दी	8	चन्द्रशेखर आजाद
25.09.2019	बुधवार	जयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	2	मित्रता
26.09.2019	गुरुवार	उदयपुर	8	विज्ञान	8	हमारा स्वास्थ्य बीमारियाँ व बचाव
27.09.2019	शुक्रवार	जोधपुर	11	हिन्दी (अनिवार्य)	5	देशभक्त पाण्डेय बैचन शर्मा
28.09.2019	शनिवार	बीकानेर	4	हिन्दी	10	कूड़ेदान की कहानी अपनी जुबानी (आत्म कथा)
30.09.2019	सोमवार	जयपुर	8	विज्ञान	3	संश्लेषित रेशे और प्लास्टिक

शिविरा पञ्चाङ्ग

सितम्बर-2019

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

कार्य दिवस–22, रविवार–05, अवकाश–03, उत्सव–04 ● **1 से 5 सितम्बर**–प्रथम समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (अधिकतम 4 दिन)। **5 सितम्बर**–शिक्षक दिवस (उत्सव)–राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत शिक्षक दिवस पर झण्डियों की बिक्री का शुभारम्भ। **5 से 9 सितम्बर**–द्वितीय समूह की जिला स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन (अधिकतम 4 दिन)। **8 सितम्बर**–विश्व साक्षरता दिवस (उत्सव), रामदेव जयन्ती/तेजा दशमी (अवकाश–उत्सव)। **10 सितम्बर**–मोहर्रम (अवकाश–चन्द्र दर्शनानुसार)। **13 से 18 सितम्बर**–प्रथम समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन। **14 सितम्बर**–हिन्दी दिवस (उत्सव), सामुदायिक बाल सभा आयोजन (विद्यालय परिसर में)। **17 से 18 सितम्बर**–जिला स्तरीय रोल प्ले एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता (RSCERT)। **20 से 21 सितम्बर**–जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश)। **21 से 27 सितम्बर**–द्वितीय समूह की राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन। **22 से 24 सितम्बर**–प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता (ब्लॉक स्तरीय)। **23 सितम्बर**–किशोर जागृति दिवस (RSCERT)। **25 से 27 सितम्बर**–प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता (जिला स्तरीय)। **26 सितम्बर से 2 अक्टूबर**–सार्वजनिक जीवन में सादा जीवन, उच्च विचार, स्वदेशी आंदोलन तथा चरखा, आत्मिक शुद्धि के लिए उपवास, अहिंसात्मक विरोध 'सत्याग्रह' तथा गाँधीवादी सिद्धान्तों पर विभिन्न प्रकार की नाट्य प्रतियोगिता, वाद–विवाद एवं आशुभाषण प्रतियोगिता का विद्यालय एवं जिला स्तर पर आयोजन। ('गाँधी सार्ध शताब्दी महोत्सव' के समापन सप्ताह में)। **28 सितम्बर**–सामुदायिक बाल सभा का आयोजन–सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर आयोज्य। **29 सितम्बर**–नवरात्र स्थापना (अवकाश)। **30 सितम्बर**–1. राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान के अन्तर्गत झंडियों की बिक्री से प्राप्त राशि का बैंक ड्राफ्ट सचिव, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर के नाम से बनाकर प्रेषित करना। 2. SDMC की कार्यकारिणी समिति में अनुमोदित कार्ययोजना के अनुरूप विद्यार्थी कोष/विकास कोष के माध्यम से किए जाने वाले कार्य/क्रय कार्यवाही पूर्ण करना। **नोट**–1. प्रथम योगात्मक आकलन का आयोजन–CCE/SIQE सचांलित विद्यालयों में (माह के अन्तिम सप्ताह में)। 2. 24 सितम्बर–राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस (जिन विद्यालयों में यह योजना संचालित है)। 3. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का ब्लॉक स्तर पर आयोजन। ● प्रत्येक सोमवार–WIFS नीली गोली (कक्षा 6–12), WIFS पिंक गोली (कक्षा 1–5)।

संगू

❒ अंजीव कुमार रावत

उसका नाम था संगू। साँवला रंग, दुबला-पतला बदन। उम्र तकरीबन ग्यारह वर्ष। कक्षा चार की छात्रा थी। हाथ में ज्योमेट्री बॉक्स ऐसे चिपका रहता, जैसे विधाता ने उसे ही सौंपा हो। विद्यालय प्रवेश द्वार पर बनी लोहे के पाईपों की रैलिंग उसका प्रिय स्थान था। जहाँ अन्य बच्चे कण्टु-कोंडुआ, गेंद-बल्ला, कंचा के खेल में मस्त होते थे, वहीं सर्दी, गर्मी व बरसात के नियम की तरह रेलिंग के पाइप को पकड़कर अक्सर झूलती दिखाई देती। अन्य बच्चों से अलग वह अपनी मस्ती में मस्त रहती। उसे झूलते देखकर मुझे शेक्सपीयर के नाटक में झूलते भूत की याद आती।

यह जीवन भी एक नाटक है, हम सभी इसके किरदार हैं। लेकिन कुछ किरदार चेतना के बिम्ब बनकर यादों की वीणा को झंकृत करते रहते हैं। बस संगू ऐसी ही थी। उसका रहन-सहन, हाव-भाव और चेष्टाएँ उसे अन्य बच्चों से पृथक कर देती थीं। वह शर्ट और पेंट पहनती थी। हालांकि उन शर्ट और पेंट में से झाँकती उधड़ती गरीबी को बाँधने का व्यर्थ प्रयास ही कुछ रंग-बिरंगे धागों द्वारा किया जाता था। इसी प्रकार पेंट था, गाढ़े कत्थई रंग का। लेकिन घिसाव के स्वर कई स्थानों पर उसमें हल्की सफेदी भरते थे। पेंट टखनों में ऊँची होती थी। अतः उसके वे पतले-दुबले पाँव बड़ी बेशर्मी से बाहर को झाँकते हुए नजर आते थे। उसके नीचे काले-फटे जूते, नाजुक पंजों की अंगुलियों को शीत, गर्मी और धूल-मिट्टी से बचाते थे। कई बार जूते सूतली से बंधे होते, लेकिन अक्सर मैंने उसको खुले जूते पहने ही देखा था। शर्ट को वह जिस तरह से पेंट में ठूँसती थी, उससे लगता शर्ट को पल भर में ही लील जाएगी। क्या मजाल संगू की शर्ट तिल भर को भी पेंट से बाहर निकल जाए। इस बाने को वह पल-पल संवारती। तब उसे देखकर शौकीन डुकरिया चटाई का लहंगा वाली उक्ति चरितार्थ होती। शौक के लिए वह अन्य साधनों का प्रयोग भी करती। सीधे हाथ की कलाई पर उसके लाल-पीले मोली के धागे बंधे होते, जिनमें दो-चार स्टील के चमचमाते नग होते। कभी-कभी वह सस्ते मोतियों का हार भी गले में डालकर आती थी। उस दिन वह स्वयँ को किसी राजकुमारी से कम नहीं समझती थी। राजकुमारी तो वह थी, अपने कोमल मन की, अपने विचारों की, अपने संकल्पों की। यही कारण था उसका चेहरा, उसकी बोली की मिठास जब विश्वास में भरकर किसी के सम्मुख उभरती तो मन में धँसती चली जाती। सुधा बिन्दुओं को समेटने वाला जब उस पतले लम्बे चेहरे को अपनी निगाहों से स्पर्श करता तो एक सामान्य ललाट पर धनुषाकार पतली-पतली भौंहे, उनके नीचे अथाह समुद्र को समेटे पनीयल कंचे जैसी काली-भूरी स्नेह तरल आँखे जिसमें विश्वास की चमक किसी नव दिवस का आगाज करती। भौंहों के मध्य घड़ी के पेण्डुलम सी लटकती पतली-लम्बी नाक, जिसके नीचे हल्के लाल रंग में भीगे पतले मुस्कराते होंठ, एक छोटी सुंदर ठुड्डी को देखकर लगता कि किसी कुशल शिल्पी ने अपनी उत्कृष्ट छवि को मुलायम मक्खन के लोधों पर उकेर दिया है। उसकी हँसी में मुख से अनार के चमकीले सफेद दानों सी सफेद दंत पंक्ति झलक कर चेहरे की सुंदरता में चार चाँद लगा देती।

अन्य देहाती बच्चों के काले-भूरे, रूखे और अनसुलझे बालों से अलग संगू के बाल काले नाग की तरह चिकने और चमकदार लगते थे। साथ ही कंघे से उन्हें पट्टियों में वह इस प्रकार ढाल देती थी कि क्या मजाल कि वे अपना स्थान छोड़ दें। लड़कियों के बालों की तरह संगू के बालों को बढ़ने, चोटी की शक्ल में बँधने, गूँथने का अधिकार नहीं था। उन तेल से सिक्त बालों से ढके कानों का आभास उस गुलाबी मोती की चमक से होता था जो ताँबे के तारे में अनगढ़ता से बाँधकर लटका दिया था। वे समस्त तत्व उस छवि को सुंदर बनाते थे। या बिगाड़ते थे। यह हरेक सोचने वाले का नजरिया होगा। लेकिन उसकी कोकिल कण्ठ वाणी उद्विग्न, कटु पट पर बासंती महुआ की मधुकणों सी शीतलता बिखरने में सक्षम होती। यह मैंने कई बार स्वयं पर अनुभव किया था। उसकी आवाज गाँव के बच्चों की तरह पूरे गले को फाड़कर किसी उद्घोष का रूप नहीं होती थी। वह खर्च किया करती थी। शब्दों को, किसी कंजूस सेठ की तरह, पूरे मोल-भाव से वह खर्च किया करती। 'हिए तराजू तोल के तब मुख बाहर आनि' का सबक और सलीका उसने कहाँ से सीखा, यह मेरे लिए एक प्रश्न ही था।

कक्षा में वह सभी बच्चों से अलग बैठती थी। किसी अनुष्ठान में बैठे भक्त की तरह वह ज्ञान की माला को फेरती दिखाई देती थी। उसके सामने बस्ते के नाम पर एक सफेद प्लास्टिक का बैग होता जिसमें विद्यालयी अनुदान में मिली कुछ किताबें और दो-चार अधमरी कॉपियाँ रखी होती। किताबों को सलीके से रखने में उसे महारत थी। गुजरे विधानसभा चुनावों के पोस्टरों से उसने अपनी किताबों को बड़े सलीके से सजाया था। वह जब पुस्तक खोलती तो उसकी नाजुक पतली एवं लम्बी अंगुलियाँ बड़ी सावधानी से एक-एक पन्ने को पलटती थी। अन्य बच्चे जहाँ कुछ ही माह में किताबों में दुस्साहस जैसा व्यवहार करती वहीं संगू तारनहार थी, अपनी किताबों-कॉपियों की। उसके पास कुछ छोटी पेंसिले और एक दो बिना ढक्कन के पेन भी थे, जिन्हें वह ज्योमेट्री बॉक्स में रखती थी। जो कि हाथों के जरिए मुँह से खुलता-बंद होता।

मुझे उसी कक्षा में पढ़ाना था। अतः सुबह दस बजे से सायं चार बजे तक कक्षा में हर स्थिति पर स्वयं को टिकना था और उन बच्चों को टिकाना था। पहली बार जब मैं कक्षा में पहुँचा तो हो-हल्ला, छीना-झपटी की स्थिति पर नियंत्रण के लिए मैंने बल का प्रयोग करते हुए पुस्तकें खोलने का निर्देश दिया। तभी संगू की मधुर वाणी मेरे कानों को छू गई 'सर जी! आपई पढ़ाविंगै हमकूँ?' मधुरता की एक धार मन में धँसती चली गई। कक्षा में पूरे सौलह बच्चे थे।

इन स्थितियों का सामना करना मेरे लिए आसान था। लेकिन मुश्किलें थीं जो कक्षा में एक के बाद एक पहलवान की तरह मुझसे मुकाबला करतीं। उस कक्षा के बच्चे उद्दण्डी थे। हाथ-लात घूँसे जैसी दर्द विदारक क्रियाएँ ही उनकी भाषा थी। बात-बात में पाले खिंच जाते। तना-तनी होती। मेरी अनुपस्थिति में गाली-गलौच के

साथ-साथ, हाथ-पाँव का पूर्ण उपयोग होता, लेकिन मैं जब पहुँचता तो बिना किसी हानि के शिकायतों पर शिकायतें शुरू हो जातीं। उन पल-पल में घटित महाभारतों के कारणों से अनभिज्ञ में उन्हें किसी प्रसंग के जरिए सभ्यता का पाठ पढ़ाता, तब इसके बदले 'हो-हो, ही-ही' कर वे मेरा मजाक उड़ाने में नहीं चूकते थे। उस समय वे मुझे कंस के रिश्तेदार अकासुर और वकासुर से कम नहीं लगते थे। शायद वे इसी व्रत को धारण कर रोजाना विद्यालय आते थे। तब वहाँ मुझे अपना दम घुटता सा लगता। लेकिन इस हिरण्याकशिपु की सभा में उस कोमल हृदय प्रहलाद को देखकर मेरी उद्विग्नता, ताप व क्रोध ऐसे खो जाता जैसे कोई जादूगर पलक झपकते ही रूमाल से चिड़िया को गायब कर देता है। शायद संगू में कोई दैवीय शक्ति थी। ऐसा उसे देखकर मैं अक्सर सोचता था।

बच्चों को कक्षा में जो भी पढ़ाया जाता था उसका अभ्यास रोजाना होता था। प्रश्नों के उत्तर याद करने को दिए जाते। एक-दो बच्चे उन्हें याद करते, शेष के लिए तो न सावन हरे न भादों सूखे वाली कहावत चरितार्थ थी। उन्हें क्रियाकलापों से ही फुर्सत नहीं मिलती थी। फिर उन्हें पढ़ाया भी कैसे जाए, पूरे चिकने घड़े थे, वह भी उल्टे पड़े। पढ़ाई का उनका कोसों दूर का रिश्ता था। फिर भी किताब को छाती से चिपकाए एक गति से आगे-पीछे का दोलन करती हुई संगू को अक्सर मैंने पाठ याद करते देखा था। बार-बार शब्दों की आवृत्ति से पाठ याद हो ही जाता। उसकी लगन से मेरे पढ़ाने का उत्साह दुगुना हो जाता। जब कक्षा में प्रश्नों के उत्तर पूछे जाते तो संगू के सिवा सभी के तोते उड़ जाते। उस समय उन उत्पातियों की गर्दन किताबों पर ऐसे टिक जाती कि वे अभी कालिदास बन जाएँगे। उस समय मेरे प्रश्न और संगू के उत्तर होते।

एक दिन मैंने कक्षा के सभी बच्चों से पूछा, ''तुम बड़े होकर क्या बनोगे?''

कक्षा का कोई बच्चा जवाब नहीं दे सका, लेकिन संगू ने दृढ़तापूर्वक कहा, ''सरजी! मैं बड़ी हैयके डॉक्टरजी बनूँगी अरु सबन्नकौ इलाज करूँगी।'' उस समय उसकी आँखों में वर्तमान की चमक थी तो बोली मैं भविष्य का स्वरूप। उसकी दृढ़ता में मुझे एक नई संगू नजर आने लगी। लेकिन विधाता के करम कुछ अलग होते हैं, जैसा हम चाहते हैं वह तो स्वप्नों का महल होता है। जो समय की फूँक के साथ उड़ जाता है। ऐसा ही उस नन्हीं जान के साथ हुआ।

वह कई दिनों से बुझी-बुझी रहने लगी थी। समय से विद्यालय आना भी कम हो गया। जिससे रेलिंग पर झूलना भी स्वतः बंद हो गया। उस समय उसके मन में कौनसा भूकम्प उथल-पुथल मचा रहा था। इसका मुझे भान न हो सका। शायद इसका कारण उन अकासुरों, वकासुरों का हो-हल्ला और कुछ स्कूली कार्यों की व्यस्तता थी। उस दिन मैंने संगू से कुछ प्रश्न पूछे। संगू बुत बनी खड़ी रही। एक पल मुझे देख, उसने गर्दन झुका ली। शायद उसने स्वयँ को दोषी स्वीकार कर लिया था। मैंने उसे सिर्फ डाँटा, लेकिन कई दिनों तक यही क्रम रहा। मेरे प्रश्नों पर वह खामोश बुत सी खड़ी हो जाती, उसकी आँखों में तैरती आत्मविश्वास की चमक अब अमावस के चंदा की तरह किसी कुहासे में विलीन हो चुकी थी। मुझे लगा खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदल रहा है। संगू अब लापरवाही करने लगी है। अगले दिन जब मैंने उसे देखा उसके चेहरे पर भय का भाव उभरा हुआ था। अजीब सी कसमसाहट मैंने उसमें महसूस की थी। जैसे उसकी गुड़िया की शादी में आने वाला गुड्डू रूठ कर जाने कहीं खो गया है। जब मैं कक्षा में पहुँचा वह निर्मूक टकटकी लगाए खिड़की से बाहर कुछ ढूँढ़ रही थी। उसकी निगाहें तालाब के पानी की तरह पूर्ण शांत थीं। कक्षा में घटित वानर युद्ध का उस पर कोई प्रभाव नहीं था। उसका थैला अपने नियत स्थान पर रखा था। लेकिन उसके हाथ में ज्योमेट्री बॉक्स न होना किसी भूल का परिणाम होगा। मुझे देखकर विचरते बवण्डर में शांति आ गई। समस्त तत्व दरी पट्टियों पर टूटे पत्तों से आ ठहरे, लेकिन वह इस स्थिति से अनभिज्ञ कुछ देर बुत बनी खड़ी रही। उसका तन कक्षा में था, लेकिन मन......पता नहीं।

बच्चों की एक अलग दुनिया होती है और उसमें बच्चा हरेक वस्तु, व्यक्ति, जीव से अपना अलग सम्बन्ध बनाता है। कुछ पाने पर उसका हर्ष, उल्लास चरम पर होता है और खोने पर यादों में लिप्त मायूसी। शायद उसका ज्योमेट्री बॉक्स खो गया होगा। मेरा आभास होने पर वह बैठ गई। आज उसने गृहकार्य भी नहीं किया था। पूरे दिन अनमनी रहकर वह विद्यालय से ऐसे गई कि फिर कई दिनों तक वह कक्षा में दिखाई नहीं दी। उसे पूरा सप्ताह गुजर गया था। कक्षा में उसकी अनुपस्थिति खलने लगी थी।

संगू एक सप्ताह तक विद्यालय नहीं आई। मेरे पूछने पर एक बच्चे ने बताया ''संगू के पापा के सिर पर फोड़ा हुआ है। उनको फरीदाबाद ले गए हैं। संगू के घर के सभी गए हैं, अकेले संगू ही रह गई हैं।'' सुनकर मन में पश्चाताप होने लगा। घर पर आई विपत्ति में वह बच्ची भी बराबर की हिस्सेदार है। तभी तो पढ़ाई को छोड़कर आज घर का सहारा बन बैठी है। मेरे मन में पश्चाताप था, लेकिन अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत। मुझे अब संगू का इंतजार था। समय की रफ्तार कभी तेज तो कभी धीमी लगती है। जो कुछ गुजरा था, वह बीते स्टेशन बनकर सारा आँखों में रील की तरह गुजरने लगा।

बीस दिन के लम्बे अंतराल के बाद मैंने संगू को पुनः रेलिंग के पास देखा। चेहरा बुझे दीपक सा दर्द के अंधकार में डूबा हुआ था। कमजोरी से चेहरे की हड्डियाँ उभर आई थीं। सूखे चेहरे पर बड़ी-बड़ी आँखें किसी बुझे बल्ब सा आभास दे रहीं थीं। होठों की मुस्कुराहट पर वेदना का पहरा था। गले के कौओं के उभार असमय ही प्रकट हो गए थे। उसका बाना समय की मार को पचाने में सक्षम रहा था। जब उसने मुझे देखा तो सर्दी की कुनकुनी धूप उसकी आँखों पर गिर रही थी। उसने एक पल को आँखें मींच लीं, लेकिन अगले ही पल भौहों को आँखों पर तानकर उसने मुझे पहचाना। संवेदना के तार एक पल में जुड़ गए। उसने सिर झुका लिया और पाँवों से धरती को कुरेदने लगी। मैंने उसके पिता के विषय में जानना चाहा।

'सरजी!' कहकर वह कुछ देर शांत आवरण में छिप गयी, फिर उसने अपना मुँह बाँयी दिशा में ऐसा घुमाया मानो किसी ने इस प्रश्न का उत्तर उधर चॉक से लिख दिया हो और वह पढ़ते हुए बोली हो, 'पापाई तो मरि गए।'

मैं अफसोस के अतिरिक्त क्या प्रकट कर पाता, समझ नहीं पाया। कुछ दुःख व्यक्त कर मैंने समस्त घटना को सुना। उसके बताने के उपक्रम में पहले मुँह में जो कुछ भी था उसे गटका और फिर बताने लगी।

''पापाइन के सिर पे फोड़ा भयौ। खेत में काम करिबे की मना करी फिरहू नाए माने भुस

की गठरिया कूँसिर पे रखिके घर चले आए। जा बजै ते फोड़ा बढ़ितौ गयौ अरु पेट ताहू आय गयौ।''

डसन हाथों की चेष्टाओं से बताया, 'मथुरा ते फरीदाबाद तक विनकौ इलाज भयौ परि डाक्टर ने वापस घर भेज दिए। घर पे पापाइन के भौत दर्द होतौ। दर्द में रौबते, चीखते कबहू तो खाट ते उठि के भाजते , परि भाजिबै की सम्हाई कहाँ की। दर्द में कबहूँ वे बेहोश है जाते। पिछिल्ले मंगल कूँ शाम पापा के भौत दर्द भयो। पापा भौत रोए। हाथ पांमन कूँ इते बिते मारिबे लगे। चाचा डॉक्टर कूँ बुलायबै जाते, वाते पहले ही पापा बेहोश है गए। हाथ पाम वहीं के महीं। जैसे सोय गए हों। सब कह रहे पापा नांय रहे।' इतना कहकर वह शांत हो गई।

मैं एक पल उसके चेहरे की कोरी स्लेट पर भाव की चॉक से उभरे शब्दों को पढ़ने लगा। उन पर न कोई वेग था न ही उफान। तूफान के बाद की शांति छायी थी। सिर्फ उजड़े हालातों का दर्द जमा था। मेरी समझ में आया वह फोड़ा नहीं कैंसर था। मैं संगू के प्रति सहानुभूति ही जता पाया। घर के अन्य सदस्यों की जानकारी भी ली। तब मैंने उसे पुनः विद्यालय आने और पढ़ाई पर ध्यान देने को कहा। इस पर संगू ने तुरंत ही मेरी बात को काट दिया। इस बार उसकी बोली में दृढ़ता थी, लेकिन धारा का प्रवाह पूर्णतया विपरीत हो चुका था। वह बोली, 'नांय सरजी! अब मैं नांय पढ़ूँगी। मैं अब नाना के यहाँ रहूँगी।''

मैंने पूछ ही लिया, ''तो क्या तुम नाना के यहाँ पढ़ोगी?''

''नांय नाना मना करि रहे, कह रहे, लड़की की जात है, पढ़िकै का करैगी? मैं घर में रहूँगी, घर के काम काज करूँगी। नाना यही चाहें। मामा हें कि पराए घर में जाही काम ते नाम होयगो। पढ़िकै कौनसी कलेक्ट्री करनी है हमें।''

''लेकिन तुम तो पढ़ कर डॉक्टर बनोगी।'' मैंने इस प्रश्न से उसमें आत्मविश्वास जगाने का प्रयास किया। ''नांय सरजी! मैं पढ़िकै का करूँगी? पढ़िकै कौनसी...?'' बाकी बचे शब्द उसके गले में ही अटके रहे और मेरी अनदेखी कर वह धीरे-धीरे विद्यालय से बाहर निकल गयी। मैं चाहकर भी उसे नहीं रोक सका। मैं स्वयं दिशा दिखाता था, लेकिन आज बदलती दिशा का मैं स्वय एक दर्शक बना खड़ा रहा। मैं देख रहा था, एक फोड़ा बढ़ते-बढ़ते एक जिंदगी को लील गया और अब पुनः एक फोड़ा जन्म ले चुका था। उस जिज्ञासु दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वासी मन को लीलने के लिए।

संगू चली गई। बहुत कुछ यहीं छोड़कर। अपना वह सफेद प्लास्टिक का थैली भी लेकर नहीं गयी। वह थैला मैंने ऑफिस में रख दिया है जो आज भी स्मृति की रेखाओं में रंग भर रहा है। संगू कैसी है, कहाँ है, क्या कर रही होगी? मैंने बच्चों से कई बार जानना चाहा। लेकिन संतोषजनक जवाब नहीं मिला। क्या अब वह समाज की चाल से चल रही है या अपनी चाल से चलने का प्रयास कर रही है? इसका उत्तर तो अब कभी उससे मुलाकात होगी तभी प्राप्त होगा।

2/38, राज. हा. बोर्ड
गुप्तेश्वर रोड, दौसा-303303
मो:8979352330

स्वतंत्रता, शौर्य का प्रतीक : सारनाथ सिंह-शीर्ष

❑ पुष्पा शर्मा

भारत महान वीर सपूतों की स्थली के रूप में अपनी विश्व में पहचान रखता है। इतिहास से ज्ञात होता है कि आर्यवर्त के सपूतों ने अपनी जननी की रक्षार्थ, स्वतंत्रता की अलख प्रदीप्त रखने के खातिर हँसते-हँसते प्राण न्यौछावर कर दिए। भारत के प्राचीन इतिहास, शिल्पकला एवं अन्य तथ्यों से ज्ञात होता है कि लगभग 272-273 ई.पू. सम्राट अशोक ने भारत को अखंड स्वरूप प्रदान किया। अशोक के काल में स्थापित सिंह शीर्ष को भारत सरकार ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में स्वीकार किया।

मौर्यकालीन स्तम्भ एकाश्मक पाषाण द्वारा निर्मित है, जिनकी ऊपरी तह पर चमकदार पॉलिश की गई है। इस स्तम्भ भाग को सिंह चतुर्मुख भी कहा जाता है। इतिहासकार स्मिथ के अनुसार इस स्तम्भ में जिस प्रकार की कला प्रदर्शन (शिल्पांकित) है, विश्व में कहीं भी इतनी सुन्दर कला का प्रदर्शन नहीं है। यह स्तम्भ बलुआ एकाश्मक पाषाण खण्ड से निर्मित है जिसका आकार 213.5 सेमी (ऊँचाई) है। सम्राट अशोक कालीन सिंह-शीर्ष जो कि सारनाथ के पुरातत्व संग्रहालय में संग्रहीत है, जिसे महान अशोक सम्राट ने तीसरी शताब्दी ई.पू. सारनाथ

के हिरण पार्क में मृगादावा में स्थापित कराया था। पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा उक्त शीर्ष को 1905 ई. में उत्खनन में प्राप्त हुआ। उक्त सिंह-शीर्ष के नीचे पशु दौड़ती हुई मुद्रा में उत्कीर्ण किए गए है- वृषभ (बैल), अश्व (घोड़ा), गज (हाथी) एवं सिंह तथा मध्य में चक्र शिल्पित है, सभी पशु आकृतियाँ आत्म-बल, शौर्य को संदर्शित करते हैं। कुल चार पशु-आकृतियाँ, चक्र चौकी पर आवृत्त किए गए हैं, प्रत्येक चक्र में 24 आरे चित्रित हैं, जो प्रगति का द्योतक है। स्तम्भ पर स्थित चारों पशु मानों चार दिग्पाल प्रतीत होते हैं। इस कला परम्परा को दीर्घ निकाय में चक्ररत्न कहा जाता है। चौकी के ऊपर चार सिंह चारों दिशाओं में मुख किए कुकडू बैठे है जो राष्ट्र की शक्ति को इंगित कर रहे हैं। जब स्वतंत्र भारत की मुद्रा सीरिज का प्रारम्भ हुआ तब भारत सरकार ने अपनी मुद्राओं में इसे स्वतंत्रता एवं वैभव के प्रतीक रूप में टंकित करवाया। हमारे राष्ट्र की प्राचीन शिल्पकला राष्ट्र के उन्नत होने का प्रमाण है। पूर्वकाल से वर्तमान तक भारत की गौरवगाथा, वैभव एवं शौर्य का गान कर रही है।

C/o बृज किशोर शर्मा, सापुन्दा रोड, ज्योति कॉलोनी,
केकड़ी, अजमेर (राज.)-305404
मो: 9829377057

जल नाम सत् है

❐ गिरिराज व्यास

मुंगेरी भैया जब भी अपनी कलुई भैंस को रगड़-रगड़कर पाइप से नहलाते, भाभी उन पर बरस पड़ती-''तुम से कितनी बार कहा है कि पानी को बेकार मत गंवाओ। पता है एक-एक बूंद अनमोल है। लोग बेचारे पानी की खातिर मारे-मारे फिर रहे हैं। रेडियो, टी.वी. और अखबार वाले रोज बता रहे हैं कि जल जीवन है, जल अमृत है, जल है तो जहान है, मगर पता नहीं तुम्हारी आँखें कब खुलेंगी...।'' भाभी खूब बिगड़ती मगर भैया जरा भी नहीं सुधरते।

कल अपने भैया विजया कुछ ज्यादा ही जमा हो गए। सोते-सोते ही आँख लग गई। अब मुंगेरी भैया तो ठहरे सपनों की दुनिया में रमने वाले बस आँख का लगना था कि सपना शुरू।

भैया क्या देखते हैं कि कोई सज्जन उनके द्वार पर खड़े डोरबेल बजा रहे हैं। भैया ने झट से खड़े होकर दरवाजा खोला।

''अरे राम खिलावन बाबू! आज कैसे रास्ता भूल गए।''

''अरे, मुंगेरी! तुम यहाँ पड़े सुस्ता रहे हो और वहाँ देवकी बुआ रामशरण होने की तैयारी में है।''

''का कहत हो?''

''अरे ना ही तो का? अरे मुंगेरी! डागदर बाबू कहत है कि जल्दी से तीन बोतल पानी चढ़ाना होना ना हो तो बुआ रामशरण हुई समझों। अब भैया तुम्हें ही सब इंतजाम करना पड़ेगा।''

''हाँ-हाँ क्यों नहीं? अरे चलो मेरे साथ।

वो'ब्लडबैंक' के सामने ही जो 'वॉटरबैंक' खुला है, वहाँ ये ले आते हैं।'' दोनों जल्दी-जल्दी 'वॉटर-बैंक' पहुँचे मगर मुसीबत क्या एक तरफ से आती है? वहाँ भी पानी की एक ही बोतल मिल पाई। अब क्या करते? दोनों दौड़े-दौड़े डॉ. बाबू के पास आए। सारा हाल सुनाकर भैया बोल हमारे शरीर से पानी निकालकर बुआ को चढ़ा देवें, मगर डॉ. बाबू ने बताया कि अभी तक दूसरों के शरीर खून लेने की प्रक्रिया विज्ञान ने खोज रखी है, मगर दूसरे के शरीर से पानी निकालने की प्रक्रिया तो किसी ने खोजी ही नहीं।

अभी डॉ. बाबू की बात पूरी हुई नहीं थी कि रामखिलावन बाबू गला फाड़कर रोने लगे। बुआ रामशरण हो गई थी। मुंगेरी भैया मुँह लटकाए अपने घर लौट आए। लेकिन उनके मन में एक ही विचार आ रहा था कि मानव के शरीर में खून से ज्यादा पानी होता है, फिर भला वैज्ञानिकों ने खून लेने की प्रक्रिया से पहले शरीर से पानी निकालने की फॉमूला क्यों नहीं खोजा? अगर ऐसा कर लिया होता तो आज बुआ रामशरण नहीं होती। बस यही बात उन्हें परेशान किए जा रही थी, तभी बाहर से लोगों की आवाज सुनाई दी ''राम नाम सत् है।'' भैया ने बाहर झाँका। बुआ की अर्थी ले जाई जा रही थी। भैया भी झट से खड़े हुए और बाहर निकलकर बुआ की अंतिम यात्रा में शामिल हो गए। लोगों की आवाज में आवाज मिलाते हुए भैया के मुख से ''राम नाम सत् है।' की जगह ''जल नाम सत् है'' फूट पड़ा। भैया नींद में ही जोर-जोर से कहने लगे ''जल नाम सत् है.....।''

भाभी यह देखकर दौड़ी आई और तुरंत एक लौटा पानी लाकर भैया के मुँह पर छाँटे मारे कि भैया की आँखें खुल गई।

''खुल गई आपकी आँखें!''

हाँ, भगवान! खुल गई-बिल्कुल खुल गई। तुम सोलह आने ठीक कहती हो। जल जीवन है। जल है तो जहान है। इसे बेकार नहीं गंवाना चाहिए। ई का तुमने लगाने के लिए फिर इक लौटा पानी खराब कर दिया। ना-भगवान-ना, इक लौटा जल से तो इक जान बच सकत है। वह इक लौटा पानी होता तो बुआ रामशरण नहीं होती। तुम्हें मेरी सो जो अब कभी मुझे जगाने के लिए जरा भी पानी गंवाया। तुम मुझे चिकोटी भर कर जगा देना, भले ही जूते-बेलन मारकर जगा देना, मगर पानी मत गंवाना।

भैया की बातों से भाभी को लगा कि उनकी भी आँखें थोड़ी-थोड़ी और खुल रही हैं। भाभी के मुँह से भी सहसा फूट पड़ा

''जल नाम सत् है।''

हाथी चौक, नागौर-34001

मोः 6350292941

चार स्नातक अपने विषयों में निष्णात होकर साथ-साथ घर वापस लौट रहे थे। चारों को अपनी विद्या पर बहुत गर्व था। रास्ते में पड़ाव डाला और भोजन बनाने का प्रबंध किया। तर्कशास्त्री आटा लेने बाजार गया। लौटा तो सोचने लगा कि पात्र वरिष्ठ है या आटा। तथ्य जानने के लिए उसने बरतन को उलटा तो आटा रेत में बिखर गया। कलाशास्त्री लकड़ी काटने गया। सुंदर हरे-भरे वृक्ष पर मुग्ध होकर उसने गीली टहनी को काट लिया। गीली लकड़ी से जैसे-तैसे चूल्हा जला, थोड़ा चावल जो पास में था उसी को बटलोई में किसी प्रकार पकाया जाने लगा। भात पका तो उसमें से खुद-बुद की आवाज होने लगी। चौथे ने उबलने पर उठने वाले खुद-बुद शब्दों को ध्यानपूर्वक सुना और व्याकरण के हिसाब से इस उच्चारण को गलत बताकर एक डंडा ही जड़ दिया। भात चूल्हे में फैल गया। चारों विद्वान भूखे सोने लगे तो पास में लेटे एक ग्रामीण ने अपनी पोटली में से नमक-सत्तू निकालकर खिलाया और कहा- ''पुस्तकीय ज्ञान की तुलना में व्यावहारिक अनुभव का मूल्य अधिक है।''

साभार : अखण्ड ज्योति, सितम्बर, 2019, पृष्ठ संख्या 10

वीरता पुरस्कार

❑ महेश कुमार चतुर्वेदी

शनिवार का दिन। विद्यालय में बाल सभा का दिन। बाल-सभा में सभी प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती। कविता, कहानी, चुटकुले, संगीत, अंत्याक्षरी, नाटक, एकाभिनय आदि कई सारे कार्यक्रमों में बालक उत्साह से बढ़-चढ़कर भाग लेते। इससे बालकों का ज्ञानवर्धन होता और मनोरंजन भी।

आज शनिवार था। बालसभा में बारहवीं कक्षा के बालकों की प्रतियोगिता का आयोजन था। 'भविष्य में आप बड़े होकर क्या बनोगे?' इस विषय पर सभी छात्रों को अपनी अभिव्यक्ति हावभाव के साथ देनी थी। इसलिए छात्रगण अलग-अलग वेशभूषा में तैयार होकर आए थे।

नियत समय पर सभी प्रार्थना हाल में एकत्रित हुए। तीन अध्यापकों को निर्णायक बनाया गया। प्रधानाध्यापक चन्द्रशेखरजी ने घोषणा की कि प्रथम आने वाले छात्र को उनकी ओर से पाँच सौ एक रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार की घोषणा से कार्यक्रम और भी रोचक और मजेदार बन गया था।

सर्वप्रथम माँ शारदा की प्रार्थना के बाद प्रतियोगिता आरम्भ हुई। शीला साहु ने अध्यापिका का रोल किया। अंकित शर्मा वकील बना। राहुल ने डॉक्टर का अभिनय किया। सतीश व्यापारी तो रेखा वैज्ञानिक बनी। रघुवीर ने भगवान राम का तो कमली ने कुशल गृहिणी का एवं मदन दिलावर ने किसान का अभिनय किया। इस तरह सभी छात्रों ने अलग-अलग मनपसंद किरदारों का रोल किया। उन्होंने अपने भावी जीवन के सपनों को बालसभा के रंगमंच पर उकेरा।

अंत में आदित्य उठा। मुश्तैदी से शरीर तना हुआ। अकड़ कर चलता हुआ वह बोला- ''मेरे गुरुजन और साथियों! मैं भारत माँ का लाल सैनिक बन उसकी रक्षा करूँगा। मैं बनूँगा वीर जवान, चाहे चली जाए मेरी जान।'' घुटनों के बल थोड़ा झुक कर उसने दोनों हाथों को अंगुलियों से बंदूक बनायी और उसे छोड़ने का नाटक करते हुए मुँह से आवाज निकाली- ठायं..ठायं...ठायं। फिर सावधान की मुद्रा में सीधा खड़ा हो सैल्युट कर बोला- 'जयहिन्द।'

जाने से पहले उसने तीन बार नारे लगवाएँ। 'भारत माता की जय। भारत माता की जय। भारत माता की जय।' वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, वन्दे मातरम।'

तालियों की गड़गड़ाहट से सभा हाल गूँज उठा। सभी बच्चों के चेहरे खिले हुए थे। सभी प्रसन्न थे। शायद उन्हें सैनिक का रोल अच्छा लगा। थोड़ी ही देर में प्रतियोगिता का परिणाम आया। आदित्य-सैनिक प्रथम रहा। प्रधानाध्यापक जी ने उसे मंच पर बुलाया। उसकी पीठ थपथपायी और उसे पाँच सौ एक रुपये का नकद पुरस्कार दिया। सभा विसर्जन हुई। सभी बच्चे अपने-अपने घर जाने लगे। सभी के जुबान पर एक ही नाम था-'सैनिक आदित्य।' सोमवार को स्कूल खुला। आदित्य अकेले में प्रधानाध्यापक से मिलना चाहता था। मौका देख वह उनके पास जा पहुँचा और बोला-'सर! मैं आपसे कुछ निवेदन करना चाहता हूँ। क्या आप मेरी मदद करेंगे? ''बोल बेटा बोल! मुझसे मदद..! कैसी मदद...? एक बार बोल कर तो देख। मैं तेरी हर तरह से मदद करूँगा।''

आदित्य ने विनम्रता से कहा-सर! भविष्य में मैं सैनिक बनना चाहता हूँ। मुझे आपका आशीर्वाद, मदद एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता है। उस छोटे से किशोर बालक की देशभक्ति का जज्बा देख एक बार तो प्रधानाध्यापकजी स्तब्ध रह गए फिर संयत हो बोले-'मुझे तुझ पर गर्व है बेटे! मैं तेरी हर संभव मदद करूँगा।' अब आदित्य का सैनिक बनने का हौसला और भी बुलंद हो गया। उसने फिर प्रधानाध्यापक जी से प्रश्न किया- 'सर, मुझे इसके लिए क्या करना होगा?'

प्रधानाध्यापक ने उसे विस्तार से समझाते हुए कहा-बेटा! सबसे पहले तुम्हें अपने माता-पिता और परिजनों की स्वीकृति लेनी होगी। फिर हम स्टेप बाय स्टेप आगे बढ़ेंगे।' 'मैं समझा नहीं सर। कैसे आगे बढ़ेंगे।?' 'सीधी सी बात है। सैनिक बनने के लिए ताकत, साहस और हिम्मत चाहिए। इसके लिए तुम्हें सुबह दौड़ पर जाना होगा। जिम (कसरत) पर जाकर अपने मसल्स को बढ़ाना होगा। इसके साथ ही शाम सुबह दूध और फलों का सेवन करना होगा।'

'सर मैं यह नहीं कर सकता।' वह निराश होकर बोला। 'क्यों-क्यों-क्यों नही कर सकते? प्रधानाध्यापक जी ने तपाक से पूछा। मैं बहुत गरीब हूँ सर! जिम, दूध और फल मेरे बस की बात नहीं।' 'तुम चिंता मत करो। वह मैं सब तुम्हें उपलब्ध कराऊँगा और तुम्हें एक अच्छा निशानेबाज भी बनाऊँगा। प्रधानाध्यापक ने फिर उसकी पीठ थपथपायी। आदित्य उछलता-कूदता-कूलांचे मारता खुशी से अपनी कक्षा की ओर चला गया।

कुछ दिन बाद आदित्य का जन्म दिन आया। गरीबी के कारण उसका जन्म दिन नहीं मनाया। उसने स्वयं आगे बढ़ अपने माता-पिता के चरण स्पर्श किए।

घरवालों ने कहा-'बेटा! हम तुम्हें उपहार में तो कुछ दे नहीं सकते। हाँ हमारा यही आशीर्वाद है कि तुम बड़े होकर अच्छे इंसान बनो और तरक्की करो।' मौका देख वह बोला- 'मेरी एक हार्दिक इच्छा है। क्या उसे पूरी करेंगे?' 'बोल, बेटा बोल! हमारे बस की बात होगी तो हम तेरे लिए आसमान से तारे भी तोड़ कर ला देंगे। बोल तुझे क्या चाहिए।' 'माँ-पिताजी! मैं बड़ा होकर सैनिक बनना चाहता हूँ। मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए।' 'सैनिक, वाह मेरे बेटे वाह! हमें तुम पर गर्व है।' यह कहकर उन्होंने अपने लाड़ले को गले में लगा लिया।

उनकी आँखें सजल हो उठी।

अब तो आदित्य के लिए खुशियों का पार नहीं था। मानों उसकी उम्मीदों के पर लग गए हो। वह वहाँ से सीधे प्रधानाध्यापक के घर पहुँचा और अपने जन्मदिन की घटना का सारा हाल उन्हें सुनाया और यह भी बताया कि घरवालों ने उसे सैनिक बनने की इजाजत दे दी है।

बस फिर क्या था। प्रधानाध्यापक जी के निर्देशन में वह सैनिक बनने का अनौपचारिक प्रशिक्षण लेने लगा। सुबह दौड़ना, जिम जाना, सीना फुलाना, उछल-कूद करना, निशाना लगाना आदि कार्य नियत समय पर करने लगा। दो-तीन साल में ही आदित्य हट्टा-कट्टा गबरू नौजवान बन गया था। सैनिक भर्ती के लिए जब विज्ञप्ति निकली तो उसने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सारी परीक्षा और प्रशिक्षण में वह सफल रहा। कुछ ही दिनों बाद उसे प्रशिक्षण के लिए बुला लिया। वर्षों के कठोर प्रशिक्षण के बाद वह सचमुच में सैनिक बन चुका था। सैनिक बनने के बाद उसकी ड्यूटी अटारी बोर्डर के पास एक फौजी टुकड़ी में लगाई गई। उसकी मेहनत, लगन, हिम्मत और हौंसले को देख उसे सेना टुकड़ी का कमाण्डर बना दिया।

कुछ दिन तो सबकुछ अच्छा चलता रहा। किन्तु दुश्मनों की ओर से आए दिन आक्रमण का सिलसिला जारी रहने लगा। आतंकवादियों ने भी इसमें कोई कसर नहीं छोड़ी। एक दिन आतंकवादियों ने सेना टुकड़ी पर बम फेंका। भयंकर विस्फोट के साथ चालीस पचास जवान शहीद हो गए। देश में मातम छा गया। देशवासियों का खून खौलने लगा। ऐसे समय में सेना लेफ्टिनेंट ने आतंकवादियों से बदला लेने की जिम्मेदारी वीर जवान आदित्य को सौंपी। बस फिर क्या था? आदित्य ने अपनी गुप्त रीति-नीति से अपने साथियों के साथ, दुश्मनों पर आक्रमण कर दिया। बम, मिसाइल, राइफल आदि से उसने दुश्मनों के अड्डों को नेस्तनाबूद (तहस-नहस) कर दिया। दुश्मनों के छक्के छूट गए। वे पीठ दिखाकर भाग गए।

दूसरे दिन अखबार में कमाण्डर आदित्य के शौर्य, वीरता और साहस के किस्से थे। टी.वी. चैनलों एवं रेडियो पर बस एक ही नाम था-भारत का वीर सपूत जांबाज कमाण्डर-आदित्य।' शौर्य और वीरता की मिसाल। सवा सौ करोड़ देशवासियों पर जिसे गर्व है वह था सेना का वीर जवान-आदित्य।

युद्ध विराम के कुछ दिनों बाद जब शांति स्थापित हो गई तो भारत सरकार ने जवान आदित्य को वीरता पुरस्कार देने की घोषणा की। नियत तिथि को विशाल जनसमुदाय के सामने आदित्य और अन्य वीर जवानों को पुरस्कार देने का आयोजन रखा। जिसमें इनके परिजन भी शामिल हुए। आदित्य ने पूरे आग्रह के साथ प्रधानाध्यापक जी को भी बुलाया। जब अंत में आदित्य को पुरस्कार दिया जाने लगा तो उसने माइक पर अपनी तरफ से कुछ बोलने की अधिकारियों से स्वीकृति चाही। स्वीकृति मिलने के पश्चात् वह बोला-''भाइयों और बहिनों! और मेरे देशवासियों! आपने जिस सम्मान से मुझे नवाजा उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। आपको मालूम होना चाहिए कि मैं आज जिस मुकाम पर पहुँचा हूँ उसके पीछे मेरे प्रधानाध्यापक जी चन्द्र शेखर जी का हाथ है। उनकी प्रेरणा एवं मदद से ही मैं इस मुकाम तक यहाँ पहुँचा हूँ। कैसे? संक्षेप में उसने बाल सभा से लेकर सैनिक बनने की कहानी सुनाई और कहा- ''मैं इस पुरस्कार को प्राप्त करने से पहले प्रधानाध्यापक जी को मंच पर बुलाकर उनका सम्मान करना चाहता हूँ। वे पधारे और मुझे आशीर्वाद दे।

आदित्य ने प्रधानाध्यापक जी को माला पहनाकर उन्हें प्रणाम किया। तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी। जन समुदाय में उपस्थित लोग नारे लगा रहे थे। भारत माता की जय! वन्दे मातरम! आदित्य जिन्दाबाद! आदित्य जिन्दाबाद

प्रधानाध्यापक जी चन्द्रशेखर जी का सीना गर्व से फूल उठा। उन्होंने आगे बढ़ आदित्य की पीठ थपथपायी और उसे गले से लगा लिया।

राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत
देवेन्द्र टॉकीज के पीछे, छोटीसादड़ी,
जिला-प्रतापगढ़ (राजस्थान)

हम सुधरेंगे,
युग सुधरेगा।
हम बदलेंगे,
युग बदलेगा।

वंचित लहर

❒ सतीश चन्द्र श्रीमाली

है अभिव्यक्ति
लहरों की
मन में उठे
अधिकारों की...
आती है
टकराने तट से
फिर लौट जाती है...
रहकर मर्यादा में
अपनी अभिलाषा
कह जाती है...
लेकिन,
नहीं साथ पाकर
तूफान का करके उल्लंघन
तट का...
शहरों-गाँवों
गलियों-नगरों में
धूम मचाती
विध्वंशक-हृदय विदारक दृश्य
उपस्थित कर देती है...
लहर क्या जाने
कलुषाई तूफान की
जो, छोड़ उसे
मझधार में
विलुप्त हो जाता है...
तब, रह जाती है
वंचित लहर की पवित्रता
बनकर कीचड़
फैलाने दुर्गन्ध
बस दुर्गन्ध....
तब अवसाद भरा
विवाद सुनाई देता है
अपवित्र बनी लहर का
न साथ दो कभी
तूफान का....

जस्सुसर गेट रोड,
धर्म कांटे के पास, बीकानेर
मो. 9414144456

अश्रुदीप

❐ हिम्मत राज शर्मा

वह रुलाई का वेग और अधिक नहीं संभाल सका। तकिए में मुँह छिपाया और फूट पड़ा। कमरे में केवल वह था, उसकी सिसकियाँ थी, उच्छवास थे और थे निरंतर प्रवाहित उसके आँसू। न जाने क्यों आज दिन भर से उसका जी रोने-रोने को हो रहा था। रह-रह कर जी भर आता और आँसू फूट पड़ते। न जाने कौन सी कसक थी जो उसके हृदय में चुभ रही थी। उसकी नन्ही-नन्ही आँखों में आर्द्रता थी और होंठ रह-रहकर काँप उठते थे। वह सोच नहीं पाया यह आज ऐसा क्यों हो रहा था। कल तक तो कुछ भी नहीं था। कहीं कोई दर्द नहीं, कोई उद्वेग नहीं। फिर आज ही यह सब क्यों?

कल तक तो न जाने कितने स्वप्न उसकी आँखों ने संजोए थे। न जाने कितने रंगीन चित्र उसकी बाल कल्पना ने बनाए और मिटाए थे। न जाने कितनी रातों से वह नींद आने तक सोचता रहता। कैसे-कैसे स्वप्न देखता। कल तक कितना उल्लास था उसके मन में। खिलौने होंगे, पटाखे होंगे, मिठाई आएगी, लक्ष्मीजी का रंगीन, चिकना पूजा वाला पाना आएगा, मखाने, बताशे, माला वगैरह आएँगे। और हाँ, उसके लिए लाल रेशम का नया झब्बा और सफेद लट्ठे का पजामा आएगा। इस बार वह जरी की वो पीली वाली टोपी भी पहनेगा जो उसने कुंता जीजी के ब्याह में पहनी थी। फिर पूजा होगी, पटाखे छूटेंगे-फूलझड़ी, जमीन-चकरी, हवाई, लक्ष्मी बम और न जाने क्या-क्या। पर इस बार वह एक भी पटाखा भोलू को नहीं देगा। देखा नहीं कल खेल में कितनी बदमाशी कर रहा था। जो कहा तो कैसी गाली देने लगा। वह उसके हाथ कभी खेलेगा भी नहीं। माँ कहती है-जो गाली देता है वह गन्दा लड़का होता है। भोलू भी गन्दा लड़का है। बिहारी भी कम शैतान नहीं। यूँ तो अकड़ -अकड़ कर चलेगा पर दिवाली के दिन झट से फूल-झड़ी माँगने चला आएगा। कैसी-कैसी खुशामद करेगा। वह करवट बदल लेता है। स्वप्न चल रहा है। कल्पनाएँ दौड़ रही हैं। पर हाँ लीला को वह एक अनार जरूर देगा। शैतान तो वह भी कम नहीं। उस दिन उसकी कलाई पर घड़ी बनाने का कह कर कितनी जोर से काटा था? पर है वह सीधी लड़की। उसका कहना भी बहुत मानती है। सोचते-सोचते न जाने कब उसकी आँख लग गई।

वह रोज अपनी अंगुलियों पर गिनता- एक, दो, तीन....छह, सात- हाँ अब सात दिन बचे हैं। कल छह, परसो पाँच और तरसो...। अपने साथियों को वह रोज उस पिस्तौल के बारे में बताता जो उसके अनुमान से उसकी माँ उसे बाजार से लाकर देगी। उसमें चटर-पटर की रील डालते ही न जाने कितनी ही गोलियाँ चल सकती है। आवाज ऐसी कि शेर भी डर जाए। असली बन्दूक से भी अच्छी। यह सब बताते हुए उसकी आँखों में चमक आ जाती और उसके साथियों की आँखों में जिज्ञासा। कई प्रश्न पूछे जाते.... उसमें गोली कैसे भरते हैं? क्या उससे शेर भी मर सकता है? अपने करीम चाचा की बन्दूक जैसी ही है क्या? और तब वह बड़े गर्व से सबके उत्तर देता।

एक-एक कर दिन कम होते गए। वह देखता सबके मकान पुत रहे हैं। भोलू के बापू ने उसके लिए नया कुर्ता सिलवा दिया है जिसमें चमचमाते गिलट के बटन लगे हुए हैं। लीला की माँ ने भी उसको पीले छींट की कुर्ती सिलवा दी है। मोहन ने अभी से चुट-पुट छोड़नी शुरू कर दी है। आज तो बिहारी भी कह रहा था कि उसके काका शहर गए हैं। आज छोटी दीवाली है और कल बड़ी दीवाली है सो उसके लिए मिठाई लाने गए हैं।

वहम मन का मैल है। यह अज्ञान, अविश्वास एवं मूढ़ता का प्रतीक है। जैसे 'अमुक तिथि को घर से प्रस्थान नहीं करना चाहिए।' 'छींकने पर कोई भयंकर घटना घटित होने वाली है।' 'छिपकली शरीर पर गिर गई अतः मृत्यु अवश्यंभावी है।' 'जन्मपत्री नहीं मिलती अतः दांपत्य जीवन में रोग, शोक एवं कटुता होना ही चाहिए।' हमारी ऐसी ही वहमी धारणाएँ मानसिक निर्बलता का द्योतक हैं।

अरे? दीवाली कल ही है, पर दीवाली कल कैसे हो सकती है? अभी तो उसका घर भी नहीं पुता। अभी तो उसके घर में कोई तैयारी भी नहीं हुई। न खाजे-पापड़ी बने, न चने-फूली आए। हर साल राधा काकी मिट्टी के दिवले दे जाती है पर इस साल तो अभी तक वह दिवले भी नहीं लाई। बाती के लिए नसीमा बुआ भी अभी तक रुई नहीं लाई है। नहीं, कल दीवाली नहीं हो सकती। बिहारी झूठ बोल रहा है। वह बिहारी का प्रतिवाद करता है।

''अरे जा-जा। कल ही तो है। देखता नहीं, हमारे घर आज छोटी दीवाली के दिए जल रहे हैं।'' बिहारी सिद्ध कर देता है। पर उसे अब भी विश्वास नहीं होता। जरूर कोई गलती है। वह अपनी माँ से पूछेगा।

वह घर की ओर भागता है। वह देहलीज से ही चिल्लाता है-''माँ, ओ माँ।'' पर उसकी माँ रो रही है। उसकी दादी उसकी माँ को गोद में लिए रो रही है। वह कुछ समझ नहीं पाता। उसकी दादी उसको देखे उसे अपने अंक में भर लेती है और धाड़ मार कर रो पड़ती है। उसकी माँ की हिचकियाँ बँध जाती है। न जाने क्यों वह भी रो पड़ता है। उसके सारे प्रश्न दब जाते हैं। वह दादी की गोद में ही रोते-रोते सो जाता है। उसकी माँ तब भी रोती रहती है। दीवाली ने उसके सोए हुए घाव को कुरेद दिया है। साल भर के पहले ही स्मृतियाँ उसे पिघलाए दे रही हैं। वह अपने बेटे की मासूम सूरत देखती है और रोती रहती है।

हाँ, एक साल पहले ही की बात है। दीवाली पर कितना उल्लास था। खुशियाँ फूटी पड़ रही थी। उसका फौजी पति दो साल बाद घर लौट कर आ रहा था। उसने लिखा था-''मेरी छुट्टी मंजूर हो गयी है। दीवाली पर घर आऊँगा, लिखना तुम्हारे लिए क्या लाऊँ।'' उसने शरमाते हुए परदे की ओट से डाक बाबू को कहा था- ''काका, लिखदो मुझे कुछ नहीं चाहिए, आप राजी खुशी घर पधार जाओ, बस। पर, हाँ, टैम मिले तो काँच की लाल चूड़ियों लेते आना।''

कितने उत्साह से उसने लहक-लहक कर सारा घर साफ किया था। आँगना लीप कर गेरु और खड्डी से मांडने बनाए थे। रंगोली बनाई

थी। रोज सोचती-वे आएँगे तो यह बनाऊँगी, वह बनाऊँगी, यह करूँगी, वह करूँगी। आखिर एक दिन दीवाली आ गयी पर वे नहीं आए। हाँ, एक फोन आया जो उसकी पुरानी चूड़ियाँ भी तोड़ गया। आतंकवादियों के हैवानी हाथों ने उसकी माँग का सिंदूर पोंछ दिया था। सारे दिए बुझ गए थे। अँधेरा छा गया था। उसके मुँह से एक चीख निकली और वह बेसुध होकर गिर पड़ी थी।

उस बात को पूरा एक साल हो गया था और आज फिर दीवाली आ गयी। सवेरे वह उठा तो उसकी नन्हीं आँखें सूजी हुई थी। वह दिन भर कहीं नहीं निकला। न जाने क्यों उसे रुलाई आती रही। शाम को वह छत पर चढ़ गया। देखा सबके घरों पर जगमग दिए जल रहे थे। हर घर रोशन हो रहा था। बिहारी ने एक हवाई छोड़ी थी जो आकाश के अँधेरे को चीरती हुई ऊपर चली गई थी। लीला पीले छींट की कुर्ती पहने इधर-उधर झमक रही थी।

बिहारी ने यह दूसरी हवाई छोड़ी थी। दूर तक उसकी चमचमाती पूँछ एक चमकती रेखा बनाती हुई आसमान में उठ गई थी और ऊपर जाकर एक विस्फोट के साथ हजारों चिंगारियाँ उगल कर बुझ गई थी। एक क्षण के लिए उसकी आँखों में एक हसरत भरी चमक आई पर तुरंत ही वह फिर उदास हो गया। उसे फिर रुलाई आ रही थी। माँ पर गुस्सा भी आ रहा था। उसके लिए एक भी पटाखा नहीं लाया गया। उसने दादी से पटाखे लाने को कहा तो उसने भी झिड़क दिया था। दादी कहती है कि वह अभागा है। यह अभागा क्या होता है? क्या अभागे दीवाली नहीं मनाते? मन कुछ हल्का होते ही वही नीचे उतर आता है। वह सोचता है-एक बार फिर माँ से बात करेगा। शायद...? देखता है कि माँ ओसारे में बैठी है-गुमसुम, चुप! वह रो नहीं रही थी। शायद आँसू चुक गए थे। वह हिम्मत करके माँ के पास जाता है।

''माँ, क्या सच्ची में तू पटाखे नहीं दिलाएगी?'' पर माँ की सूनी आँखे उसके चेहरे पर अटक जाती है। वह कुछ बोलती नहीं। वह सहम जाता है। शायद दादी कुछ कर सके। वह दादी के पास जाता है। दादी एक कोने में बैठी हुई माला फेर रही थी।

''देख दादी, बिहारी कित्ते पटाखे लाया है। जमीन-चकरी, हवाई, अनार और देख भोलू भी...।'' पर उसकी बात पूरी हो उसके पहले ही दादी चिल्ला उठती है- ''सवेरे से पटाखे-पटाखे कर रहा है। कह जो दिया एक बार-नहीं है पटाखे।''

वह सहम जाता है। उसे दादी पर कितना भरोसा था। कितना पक्ष लिया करती थी उसका। माँ से जब भी वह पिटता था तब दादी ही उसे बचाती थी। वह माँ को डाँटती थी-''खबरदार मेरे छोरे को हाथ लगाया तो। बड़ी आई मारने वाली।'' और आज वही दादी.....?

पर नहीं दादी इतनी कठोर नहीं हो सकती। वह तो शायद यूँ ही चिढ़ा रही है। मन में एक लालसा दबी हुई है- कहीं एक हवाई या अनार ही मिल जाए तो कैसा रहे। दादी कम से कम एक फूलझड़ी तो दिला ही सकती है।

''पर दादी...?''

दादी इस बार सच्ची गुस्सा हो जाती है। ''ले-यह पटाखा, यह ले और ले....यह रही मिठाई। आज के दिन बाप मरा है और इसको पटाखे चाहिए। अभागा मर भी नहीं जाता। ले, और ले।' वह पिट रहा है और उसकी माँ सूनी आँखों से देखे जा रही है।

''हाय, इस अभागे की इतनी सी लालसा भी वह पूरी नहीं कर पा रही है। पर वह अभागा क्यों है? उसका बाप मरा कहाँ है? वह तो शहीद हुआ है। उसने सारे देश में अपने बलिदान से रोशनी फैलाई है। तो फिर आप उसके घर में अँधेरा क्यों?''

माँ के विचारों में नई उत्तेजना आती है। उसकी जड़ता टूटती है। वह अभी तक पिट रहा है। वह तेजी से उठती है। उसे दादी से छुड़ा कर अपने अंक में भर लेती है। उसे अपनी सास का उसे बार-बार अभागा कहना जचता नहीं। वह तेजी से ओसारे में घुस जाती है-पैसे लाने के लिए। वह भी पटाखे छोड़ेगा। उसके घर में भी रोशनी होगी। उसके घर में भी जगमग होगी। शहीद के घर में अँधेरा कैसा? वह अवाक है। उसे कुछ भी समझ में नहीं आता। पर हाँ, उसकी आँखों में एक अनोखी सी चमक आ जाती है और आँसुओं के बीच दीवाली के असंख्य दीप झिलमिला जाते हैं।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
पंचवटी कॉलोनी, सोजत, 306103
मो: 9929602057

बचपन के दो पहलू

❒ बबीता आसवानी

कहीं मुसकाता बचपन, कहीं सिसकता बचपन
कहीं खिलखिलाता बचपन, कहीं सुबकता बचपन
कहीं उड़ता बचपन, कहीं दुबकता बचपन
कहीं चहकता बचपन, कहीं कुम्हलाता बचपन
कहीं पोषित बचपन, कहीं कुपोषित बचपन
कहीं इठलाता बचपन, कहीं सिमटता बचपन
कहीं झूमता बचपन, कहीं झिझकता बचपन
कहीं शरमाता बचपन, कहीं झुंझलाता बचपन
कहीं महकता बचपन, कहीं अलसाता बचपन
कहीं मचलता बचपन, कहीं तरसता बचपन
कहीं पुष्पित बचपन, कहीं मुरझाता बचपन
कहीं दमकता बचपन, कहीं सुलगता बचपन
कहीं अंगड़ाता बचपन, कहीं उनींदा बचपन
कहीं दुलारा बचपन, कहीं बेचारा बचपन
कहीं कोहिनूर बचपन, कहीं बेनूर बचपन
कहीं झिलमिल बचपन, कहीं बोझिल बचपन
कहीं आफत बचपन, कहीं नाकामयाब बचपन
कहीं तेजस बचपन, कहीं बेबस बचपन
कहीं सुलझता बचपन, कहीं उलझता बचपन
कहीं छलकता बचपन, कहीं ललचाता बचपन
कहीं संवरता बचपन, कहीं बिखरता बचपन
कहीं साकार बचपन, कहीं लाचार बचपन
कहीं स्नेहिल बचपन, कहीं भटकता बचपन
कहीं मासूम बचपन, कहीं गुमसुम बचपन

व.अ. (विज्ञान)
रा.बा.उ.मा.वि., मंगरोप, भीलवाड़ा
मो. 9413631738

तोड़ना या खोलना

❒ डॉ. चेतना उपाध्याय

राजू ने खिलौने को हाथ लगाया ही था कि अजय नाराज हो जोर से चिल्ला पड़े..... खबरदार जो तूने इस खिलौने को हाथ लगाया तो। हाथ तोड़कर गले में लटका दूँगा। तेरे तोड़ने के लिए नहीं लाता मैं इतने महंगे-महंगे खिलौने। हम बच्चा समझकर खेलने देते हैं तो यह कबाड़ी सर पर ही चढ़ा जा रहा है। चल निकल हमारे घर से। उन्होंने गुस्से में बोलते हुए उसे बाहर की तरफ धकेल दिया और स्वयं अपने कार्यालय चल दिए। चलते-चलते मुझे भी हिदायत देते गए कि ध्यान रखना जरा कहीं निगाह बचाकर यह भी तोड़ न दे।

इनकी गाड़ी रवाना होने तक राजू वहाँ दीवार के सहारे बुत बना खड़ा रहा, फिर जब गाड़ी आँखों से ओझल हो गई तो दौड़ता हुआ मेरे पास आया और बोला आन्टी आप समझाइए ना अंकल को...वो समझते ही नहीं हैं और मुझे बेमतलब के डाँटते रहते हैं। उनको समझ ही नहीं आता कितनी बार समझाया मैंने तोड़ना अलग होता है, खोलना अलग। मैंने उस खिलौने को खोला था यह देखने के लिए कि वो कैसे काम करता है। उसको, तोड़ना थोड़े ही कहते है। आपको पता है मैंने उसको देखकर बिल्कुल वैसा ही दूसरा खिलौना बना भी लिया। आपके खिलौने को जोड़ रहा था कि अंकल ने देख लिया, दो थप्पड़ मारे और खिलौना मुझसे छीन लिया, पूरा जोड़ने भी नहीं दिया। मैंने बहुत बार बोला मुझे जोड़ने दो मैं पूरा जोड़ दूँगा, पीछे-पीछे गया भी उनके, पर वो मुझे धमकाते रहे, मेरी बात भी नहीं सुनी। अधूरे खिलौने को वहाँ ऊपर दुछत्ती पर डाल दिया और पता है उसके पेंच भी रास्ते में गिरा दिए। मैं पीछे-पीछे आ रहा था तो दो पेंच मुझे दिख गए तो मैंने उठा लिए... वह धारा प्रवाह बोले जा रहा था निडरता...उसने झुकाकर पेंच उठाने की एक्टिंग की तो मुझे उसकी मासूमियत पर हँसी आ गई।

मेरे चेहरे की मुस्कान उसके लिए प्रेरणास्रोत का कार्य कर गई। वह भी मुस्कराते हुआ बोला, आन्टी आप मुझ पर विश्वास करते हो ना? इसीलिए तो मैं आपको सब सच-सच बता रहा हूँ। नहीं तो अंकल पर इतना गुस्सा आ

रहा था कि मैं कभी नहीं बताऊँगा कि उस वाले खिलौने के दो पेंच मेरे पास हैं। ना जाने कितने और उन्होंने रास्ते में गिरा दिए होंगे। उनको खुद को भी नहीं पता तो जोड़ेंगे कैसे? आप ही देख लो वो वाला खिलौना तक भी वहीं वैसा का वैसा पड़ा है। मुझे थोड़ी देर काम करने देते तो मैं उसी वक्त जोड़ देता। इतना प्यारा खिलौना देखो अंकल की वजह से यों अटाले में पड़ा है। राजू ने गर्व से कहा।

उसके इस रोबिले अन्दाज को देखकर मुझे पुनः हँसी आ गई। इतने छोटे से बच्चे में इतना गजब का आत्मविश्वास, मेरा रोम-रोम पुलकित सा हो गया। फिर मैंने उसकी परीक्षा लेने के उद्देश्य से पूछा, तुम जोड़ सकते हो उसे? जैसा वह पहले था वैसे का वैसा ही। हाँ-हाँ आन्टी, आधा घण्टे में जोड़ दूँगा। पर आप अंकल को समझा देना मुझे थप्पड़ नहीं मारे। वो बहुत जोर से मारते हैं। दो दिन तक मेरे गालों पर निशान लाल-लाल लगे हुए थे। वो गालों को सहलाते हुए बोला।

हाँ बेटा तुम सही कर रहे हो। पर अंकल, मुम्बई से वह खिलौना लाए थे। बहुत महंगा था वो, इसलिए उन्हें गुस्सा आ गया होगा तुम पर। अब देखो ना वह नया का नया खिलौना वहाँ धूल खा रहा है। कितने मन से लाए थे वे छोटू के लिए। छोटू, ठीक से दो दिन भी नहीं खेल पाया। तो अंकल को गुस्सा आना ही था।

अरे आन्टी गुस्सा करने से क्या होता है। थोड़ा दिमाग लगाते तो काम बनता ना। देखो मैंने दिमाग लगाया तो बिना पैसे के बिल्कुल वैसा का वैसा खिलौना बना भी लिया। अंकल तो खाली पैसा कमाने में ही अपना दिमाग लगाते है। उस बन्दर (खिलौना) को जोड़ने में लगाते तो वो भी जुड़ जाता और छोटू भी उससे मजे से खेलता। आपको सबूत दिखाऊँ?

ठीक है दिखाओ, मेरी स्वीकारोक्ति मिलते ही वह सरपट दौड़ गया अपने घर। थोड़ी देर में ही वापस उछलता हुआ खिलौना साथ ले लौट आया मेरे पास... अरे वाह, यह हू-ब-हू बिल्कुल वैसा ही है। हाँ आन्टी आगे भी देखिए मेरा कमाल... कहते हुए उसने फर्श साफ किया बन्दर को देखने की जगह बनाई। फिर अपने छोटे-छोटे हाथों से उसमें चाबी घुमाई और बन्दर को फर्श पर आहिस्ता से रख दिया....अरे वाह बन्दर जोर से उछल एक बार हाथ में लगी डफली बजायी और तीन गुलाटियां मारी उसके बाद बन्दर हाथों से डफली बजाते-बजाते उछलता-उछलता दूर दीवार तक चला गया। वहाँ फिर से तीन गुलाटी मारी। फिर एक गुलाटी मारी, डफली बजाई और रूक गया।

राजू भी साथ में ताली बजाते-बजाते उछलते हुए खिलखिलाने लगा। उसकी निश्छल हँसी व मासूमियत देख मेरा भी रोम-रोम पुलकित हो गया, उसे बाँहों में जकड़ चूमते हुए कहा शाबाश बेटा तुम बहुत होशियार हो।

वास्तव में उसके द्वारा बनाया बन्दर हू-ब-हू वैसा ही था और वैसी कलाबाजियाँ कर रहा था जैसा हमारे वाला खिलौना था। मैंने तुरन्त ही उससे पूछा कैसे बनाया तुमने? मैं तो आश्चर्य चकित हो उसे देखती ही रह गई। रसोई में गैस पर चढ़ा। दूध का भगोना भूल गई। दूध बहता हुआ बरामदे में आ गया तब ध्यान गया वहाँ।

राजू ने झट से मेरा हाथ पकड़ पुनः बरामदे में खींच लिया और बोला दूध तो उफन चुका, गैस मैंने ऑफ कर दिया है। आप सफाई बाद में करते रहना। पहले देख लो मैंने कैसे बनाया है। नहीं तो अंकल वापस घर आ गए तो बन्दर फिर से अधूरा ही छूट जाएगा। मुझे तिपाई पर बैठाते हुए बोला अब बताओ? कैसे बनाया...

हाँ बेटा बताओ... देखो आन्टी सबसे पहले तो मैंने आपके वाला बन्दर ध्यान से देखा।

चाबी लगाकर देखा और सबकुछ लिखता गया। फिर मैंने स्क्रू से उसके पेंच खोले। अन्दर से देखा और समझा कि कैसे उसमें स्प्रींग काम करती है। जब मैं सब समझ गया तो वहाँ से हमारे स्टोर में गया वहाँ से सामान ढूँढ़ा, फिर वो सुबह-सुबह वो कबाड़ी अंकल आते हैं कबाड़ी सामान, टूटा-फूटा सामान जो खरीदते हैं। उनके ठेले पर ढूँढ़ा, वो हमारे घर पर अखबार की रद्दी तोल रहे थे। हिसाब पूरा करते-करते वो मम्मी से लेन देन पर जिरह करते रहे और मैंने तब तक उस ठेले पर से बन्दर का सिर टूटा पड़ा था उठा लिया। एक गिररी भी उठा ली, थोड़ी स्प्रींग भी मिल गई। फिर अंकल से पूछा ले लूँ, उन्होंने कहा ले लो। मम्मी ने डाँटा टूटी-फूटी स्प्रींग हाथ में लग आएगी। मत उठा और यह टूटा हुआ बन्दर के सिर का क्या अचार डालेगा। रख दे वहीं वापस, पर मैंने मना कर दिया। अरे मम्मी आपको नहीं पता, मैं क्या कमाल दिखाने वाला हूँ। कहकर मैंने मम्मी को भी समझा दिया। कबाड़ी अंकल बोले अरे जाने भी दो, बाल गोपाल हैं। पता नहीं कब ईश्वर इनके रूप में अपना रूप दिखा जाए। टूटा सिर है। मेरे किसी काम का नहीं, खेलने दो बच्चे को.... उनका हिसाब पूरा हुआ तो वो आगे चले गए। मम्मी अपने रसोई के काम में लग गई और मैं वहाँ बरामदे में बैठकर चुपचाप अकेले में यह खिलौना बनाने लगा। मेरा खिलौना बन गया, पूरा दिन लग गया। फिर आपका वाला वापस जोड़ रहा था कि इतने में अंकल की नजर पड़ गई।

बे मतलब ही मेरी पिटाई हो गई और आपका वाला खिलौना अधूरा ही रह गया। यह सब अंकल की ही गलती है। मेरी गलती नहीं है, उसने सफाई पेश करते हुए कहा। राजू ने तो मुझे बिल्कुल निःशब्द ही कर दिया था। मात्र 8-9 साल का बच्चा इतनी फुर्ती से सब कुछ साफ-साफ बता रहा था। सबूत के तौर उसके द्वारा बनाया बन्दर उछल-उछल कर उसकी सफाई पेश कर रहा था। मैं असमंजस में थी कि पति की आज्ञा का पालन करूँ? या इस तेजस्वी ऊर्जावान बालक की हौंसला अफजाई करूँ?... बालक राजू तो जैसे मेरे दिलो दिमाग पर छाया हुआ था। अजय तो शाम को लौटेंगे। खिलौना पुनः जुड़ गया तो बन्दर की कलाबाजियाँ देखकर उनका गुस्सा भी रफूचक्कर हो जाएगा। छोटू भी अपने खिलौने की उछल-कूद देखकर कितना खुश होगा और राजू के आत्मविश्वास में भी थोड़ा-सा और सकारात्मक परिवर्तन आ जाएगा, यह सोच मैंने उसे दुछत्ती पर से टूटे हुए, अरे नहीं-नहीं खुले हुए बन्दर को उठाकर लाने और उसे जोड़ने सहमति दे दी।

कुछ ही देर में उसने इधर-उधर जुगाड़ बैठाकर उछलता, कूदता बन्दर तैयार कर दिया और अपनी उपलब्धि पर खुद ने ही तालियाँ बजाई। मेरे हाथ भी कब उसके सुर में सुर मिलाते हुए ताली बजाने लगे पता हीं नहीं चला। एक सहज खुशी जो जीवन में मैंने पहली बार महसूस की। आँखों से खुशी के आँसू टपक पड़े।

राजू बोला आन्टी अब क्यू रोते हो? आपका महंगा वाला खिलौना जुड़ गया और बिल्कुल पहले जैसा ही लग रहा है। अरे बेटा यह तो खुशी के आँसू है। अच्छा...? तो आँसू दो प्रकार के होते हैं एक खुशी के दूसरे गम के। अच्छा आन्टी अब मैं चलता हूँ। मेरा काम अंकल के आने से पहले ही पूरा हो गया।

पर हाँ अंकल को अच्छे से समझा देना मेरे से पंगा नहीं लेने का, क्या?....और दूसरी बात यह कि खोलना अलग होता है तोड़ना अलग। खामखा मेरे ऊपर हाथ न उठाए। राजू ने हमारा खिलौना मेरे हाथ में पकड़ाया, अपना खिलौना उठाया और अपने घर की तरफ सरपट

दौड़ गया।

शाम को अजय की गाड़ी आने की आहट पाते ही राजू पुनः दौड़ते हुए आया मेरे पास और बोला..याद है ना आन्टी, अंकल को क्या समझाना है। देखो तोड़ना अलग है, खोलना अलग। खोलने में दिमाग लगाना पड़ता है फिर जोड़ने में दिमाग के साथ-साथ जुगाड़ भी लगाना होता है। आप वो दूसरा वाला खिलौना भी मुझे खोलने देना। मैं एक और खिलौना वैसा भी बनाऊँगा। बिना पैसे में अच्छे-अच्छे खिलौने बनाकर गरीब बच्चों में बाटूँगा। मैं निरुत्तरित सी उसे देखती ही रह गई, इतना छोटा सा बालक किसी बड़ी सोच रखता है। खुद अपने लिए खिलौना चाहने वाली उम्र में दूसरे गरीब बच्चों को खिलौने बनाकर देने की चाहत....। फिर नवीन खिलौने की निर्माण तकनीक को भी स्वयं ही समझना, बगैर किसी अन्य तकनीकी जानकर की सहायता के स्वप्रेरित रूप में कार्य की तत्परता, कर्मठता, बुद्धिमत्ता भी गजब की, ओह... यह तो कोई बिरला ही बालक है।

अजय ने भी घर में प्रवेश करते ही उस खिलौने को देखा तो अवाक देखते ही रह गए। अरे वाह...मैंने झट से चाबी घुमाकर उसकी कलाबाजियाँ भी शुरू कर दी। छोटू के साथ ये भी खुशी के मारे उछल गए। मुझसे पूछा कैसे किया?

यह राजू ने किया है मेरे सामने। ओह मैंने बड़े जोर से थप्पड़ मारे थे उसे तो। पता है वह नन्हा सा राजू खिलौने से खेलने की बजाय बगैर पैसे खिलौने बनाकर गरीब बच्चों को देने की चाहत रखता है। मैंने बताया तो वे भी भाव विभोर उठे और बोले इस महान बालक का हमें विशेष ध्यान रखना होगा कि इसे उचित मार्गदर्शन, हौंसला अफजाई व कार्य के साथ-साथ अकादमिक शिक्षा के भी समान अवसर मिलते रहे। हम ऐसा प्रयास करेंगे और मैं कल ही बाजार में दो खिलौने और लाकर उसे दूँगा प्रायश्चित के तौर पर। दो खिलौने हौंसला अफजाई। इस तरह कल ही उसे चार खिलौने दूँगा। यह मेरा अपने से वादा है। मैं राजू को बताऊँगा कि मैं अब समझ गया हूँ तोड़ना अलग होता है खोलना अलग होता है।

49, गोपाल पथ, कृष्णा विहार
सुन्दर नगर, अजमेर-305001
मो: 9828186706

आज़ादी

❒ घनश्याम पारीक

देर रात तक ध्वनि प्रदूषण कर पड़ौसियों की नींद हराम करना, बीच सड़क पर कचरा फेंकना, सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाना, अकारण दूसरों का अपमान करना, गालियाँ देना, पालतु जानवरों को खुलेआम गलियों में विचरण हेतु छोड़ना, बस में धूम्रपान करना, कमजोर को सताना, दूसरों की न सुनना, हार पर बहाने बनाना, गलती स्वीकार न करना, बेलगाम होना, तिल का ताड़ बनाना, राई का पहाड़ बनाना, जले पर नमक छिड़कना इत्यादि आज़ादी नहीं है।

आजादी का सम्बन्ध सकारात्मकता से है इसकी दिशा ऊर्ध्वगामी होती है। आजादी के अर्थ में नकारात्मकता निहित नहीं हो सकती। यदि कोई इसे नकारात्मकता से जोड़ता है तो यह केवल संस्कारों का पतन है, अराजकता फैलाना है संसार को अवनति के गर्त में धकेलना है।

आजादी की राह कठिन है, इस पर वही चल सकता है जिसमें त्याग, तप, संयम का बल है, सेवा का भाव है, देशभक्ति का जज्बा है, संविधान एवं मर्यादा पालन में निष्ठा है।

आजाद वह है जिसका मन पर नियंत्रण है धीर-गंभीर है, बाधाओं से डटकर मुकाबला करने की हिम्मत है परोपकार एवं संसार के कल्याण के लिए अपना सब कुछ कुर्बान करने को तत्पर है। मन व पानी की राह अधिकतर अधोगामी होती है इस पर चलना आसान है, लेकिन यह जानते हुए भी कि अच्छाई स्वाभिमान, देश सेवा, मानव सेवा, संस्कृति की रक्षा, मानव धर्म की प्रतिष्ठा आदि की राह दुर्गम है, फिर भी इस पर जो चलने को दृढ़ प्रतिज्ञ है वास्तव में वे आजाद हैं।

आजाद महाराणा प्रताप थे, मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की, स्वाभिमान की खातिर वन-वन भटकना स्वीकार किया।

आजाद-महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य थे, जिनका जन्म धनाढ्य परिवार में हुआ। सांसारिक सुख भोग सकते थे लेकिन परोपकार एवं सत्य के लिए संघर्ष भरी राह चुनी और दुनिया को एक नई दिशा दी।

आजाद महर्षि दधीचि थे, देवताओं की रक्षा हेतु अपनी हड्डियों का भी दान कर दिया। आजाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर, रामप्रसाद बिस्मिल, मदनलाल धींगरा, हेमू कालाणी आदि शहीद थे जो सांसारिक मोह माया तथा युवावस्था के आकर्षण में नहीं फँसे तथा हँसते-हँसते अपने प्राणों को देश की खातिर न्यौछावर कर दिया। आजाद भगवान राम थे पिता की आज्ञा को सहज स्वीकार कर वनवास चले गए। आजाद राजा हरिश्चन्द्र थे जिन्होंने सत्यता, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता के लिए पुत्र के दाह-संस्कार को भी रोक दिया। आजाद मीरा थी कृष्ण पर विश्वास के बल पर। सच्ची आजादी बहस से तकरार से अहंवृत्ति से नहीं मिल सकती इसके लिए जरूरी है प्रेम समर्पण का भाव।

आइए! सद्व्यवहार एवं सत्कर्मों के सहारे हम भी आजाद बनें तथा ईश्वर प्रदत्त अनमोल उपहार, मानव जीवन की सार्थकता सिद्ध करे।

सेवगों का मौहल्ला, मेड़ता सिटी,
नागौर (राज.)-341510
मो: 9413761361

गुरु जीवन सँवारते

❒ विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'

पढ़ाते हैं गुरु हमें, भविष्य में सँवारते।
स्नेह आशीर्वाद सारा, शिष्यों पर है वारते।।
बाल पौधे सींचते हैं, अपने पसीने से,
सबको सिखाते, लगाते वो सीने से।
शिष्य और पुत्र में, भेद नहीं विचारते....
नित नई बातें विद्यालय में सुनाते हैं,
अपने ज्ञानानुभव से आगे हमें बढ़ाते हैं।
हैं वो मार्गदर्शक, बाधाओं को टारते....
जले स्वयं परमार्थ हित, शिक्षक वो दीप है,
रत्न जो पैदा करे, शिक्षक वो सीप हैं।
ज्ञान के आलोक से, अज्ञान तम संहारते...

प्राध्यापक (हिन्दी)
मु. बोदिया, पो. मादलदा, त. गढ़ी,
जि. बांसवाड़ा-327034
मो. 9928699344

सफर रेलगाड़ी का

❒ विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'

मैं पटरी पर चलती रोज
लगता मुझे कभी ना बोझ
मैं बैठा सबको ले जाती
मंजिल पर उनको पहुँचाती
मेरा सफर सुहाना लगता
आना-जाना प्यारा लगता
मेरी यात्रा सुरक्षित होती
प्यार की मणियां मैं पिरोती
बच्चों को सुहाती हूँ मैं
जंगल शहर घुमाती हूँ मैं
समय बचत करती हूँ मैं
राजकोष भरती हूँ मैं।

कर्मचारी कॉलोनी, बचपन स्कूल के पास
गंगापुर सिटी, सवाईमाधोपुर (राज.) 322201
मो. 9549165579

मुस्कुराने के अर्थ में

❒ सूर्य प्रकाश जीनगर

मेरी मरु माटी में
चैत का रंग छाया है
कंट-कंटीली कैर की झाड़ियों पर
मुळक रहे हैं लाल-लाल फूल
नवजात शिशु जैसी
काया नाजुक फूलों को
दुलारता हूँ अपने हाथों से देखता हूँ
उनके भीतर जीवन का रंग
रिश्तों में घोलते हैं वे प्रेम की महक
काँटों के बीच मुस्कुराने के अर्थ में।

हरि सदन, इन्दिरा कॉलोनी
फलोदी, जिला-जोधपुर (राज.)
मो. 9413966175

शिक्षक कौन!

❒ दमन त्रिपाठी

बेटा! मत पूछ कि शिक्षक कौन है?
तेरे प्रश्न का सटीक उत्तर
तो मेरा मौन है।
शिक्षक न पद है न पेशा है
न व्यवसाय है।
ना ही गृहस्थी चलाने वाली
कोई आय है।
शिक्षक सभी धर्मों से ऊँचा धर्म है।
गीता में उपदिशित
''मा फलेषु'' वाला कर्म है।
शिक्षक एक प्रवाह है।
मंज़िल नहीं राह है।
शिक्षक पवित्र है
महक फैलाने वाला इत्र है
शिक्षक स्वयम् जिज्ञासा है।
खुद कुआँ है पर प्यासा है।
वह डालता है चाँद सितारों
तक को तुम्हारी झोली में।
वह बोलता है बिल्कुल,
तुम्हारी बोली में।
वह कभी मित्र कभी माँ तो,
कभी पिता का हाथ है।
साथ ना रहते हुए भी,
ताउम्र का साथ है।
वह नायक, खलनायक
तो कभी विदूषक बन जाता है।
तुम्हारे लिए न जाने
कितने मुखौटे लगाता है।
इतने मुखौटों के बाद भी,
वह समभाव है।
क्योंकि यही तो उसका
सहज स्वभाव है।
शिक्षक कबीर के गोविंद से
बहुत ऊँचा है।
कहो भला कौन,
उस तक पहुँचा है।
वह न वृक्ष है,
न पत्तियाँ है, न फल है,
वह केवल खाद है।
वह खाद बनकर
हजारों को पनपाता है।
और खुद मिट कर
उन सब में लहराता है।
शिक्षक एक विचार है।
दर्पण है, संस्कार है।
शिक्षक न दीपक है,
न बाती है, न रोशनी है।
वह स्निग्ध तेल है।
क्योंकि उसी पर
दीपक का सारा खेल है।
शिक्षक तुम हो, तुम्हारे भीतर की
प्रत्येक अभिव्यक्ति है।
कैसे कह सकते हो
कि वह केवल एक व्यक्ति है।
शिक्षक चाणक्य, सांदीपनी,
तो कभी विश्वामित्र है।
गुरु और शिष्य की
प्रवाही परम्परा का चित्र है।
शिक्षक भाषा का मर्म है।
अपने शिष्यों के लिए वर्म है।
साक्षी और साक्ष्य है।
चिर अन्वेषित लक्ष्य है।
शिक्षक अनुभूत सत्य है।
स्वयं एक तथ्य है।
शिक्षक ऊसर को
उर्वरा करने की हिम्मत है।
स्व की आहुतियों के द्वारा
पर के विकास की कीमत है।
वह इंद्रधनुष है
जिसमें सभी रंग है।
कभी सागर है, कभी तरंग है।
वह रोज़ छोटे-छोटे
सपनों से मिलता है।
मानो उनके बहाने
स्वयं खिलता है।
वह राष्ट्रपति होकर भी
पहले शिक्षक होने का गौरव है।
वह पुष्प का बाह्य सौंदर्य नहीं,
कभी न मिटने वाली सौरभ है।
वह भोजन पकाता है,
झाड़ू निकालता है,
दूध और फल लाता है।
इसके बावजूद अपनी मुख्य
भूमिका को बखूबी निभाता है।
बदलते परिवेश की आंधियों में,
अपनी उड़ान को
जिंदा रखने वाली पतंग है।
अनपढ़ और बिखरे
विचारों के दौर में
मात्राओं के दायरे में बद्ध
भावों को अभिव्यक्त
करने वाला छंद है।
हाँ अगर ढूंढोगे तो उसमें
सैकड़ों कमियाँ नज़र आएगी।
तुम्हारे आसपास जैसी ही
कोई सूरत नज़र आएगी।
लेकिन यकीन मानो जब वह
अपनी भूमिका में होता है।
तब जमीन का होकर भी
वह आसमान सा होता है।
अगर चाहते हो उसे जानना।
ठीक-ठीक पहचानना।
तो सारे पूर्वाग्रहों को
मिट्टी में गाड़ दो।
अपनी आस्तीन पे लगी
अहम् की रेत झाड़ दो।
फाड़ दो वे पन्ने जिन में,
बेतुकी शिकायतें हैं।
उखाड़ दो वे जड़ें,
जिनमें छुपे निजी फायदे है।
फिर वह धीरे-धीरे स्वतः
समझ आने लगेगा।
अपने सत्य स्वरूप के साथ
तुम में समाने लगेगा।

व्याख्याता हिन्दी
रा.बा.उ.मा. विद्यालय,
पंचपदरा, बालोतरा, बाड़मेर
मो. 9414913569

स्वच्छ है वतन

❒ गणपतसिंह 'मुग्धेश'

स्वच्छ बदन स्वच्छ मन, स्वच्छ रख भवन
स्वच्छ गाँव शहर तो, स्वच्छ है वतन।
प्रयत्न हम सब करें, स्वच्छता रहे
गंदगी में कोई, न घुटता रहे।
स्वच्छता का अपना, न टूटे परन।।
स्वच्छ गाँव शहर तो, स्वच्छ है वतन।
शौचालय बनाएँ, घर में जरूर
इसका हो उपयोग, जाना न दूर।
स्वास्थ्य शील स्त्रियों का, रूके हर पतन।।
स्वच्छ गाँव शहर तो, स्वच्छ है वतन।
स्वच्छता जहाँ रही, ख़ुशी झूमती
बीमारी कहीं भी, नहीं फटकती।
निज हेतु अन्य हेतु, करें यह जतन।।
स्वच्छ गाँव शहर तो, स्वच्छ है वतन।
स्वच्छ ठौर ठौर तो, स्वच्छ है समा।
निवास स्वच्छता में, रमा का थमा।
स्वच्छता में खिलता, दिवाली जश्न।।
स्वच्छ गाँव शहर तो, स्वच्छ है वतन।
फ़र्ज़ सभी का रखें, स्वच्छ घर बार
अगर कहीं गंदगी, हटे हर बार।
स्वर्ग से श्रेष्ठ हिन्द, बनें यह कथन।।
स्वच्छ गाँव शहर तो, स्वच्छ है वतन।

सेंदरिया-ब्यावर (राज.)
मो. 09460708360

ख़ुशियाँ

❒ फहमीदा बानु

ख़ुशियाँ मैं ढूँढ़ती फिरी, यहाँ-वहाँ
ख़ुशियाँ मैं माँगती फिरी कहाँ-कहाँ?
पद में, पैसे में,
लोगों में, रिश्तों में
न जाने कहाँ-कहाँ?
पर ख़ुशियाँ मिली मुझे
मेरे विद्यार्थियों में
छोटे-छोटे बाल गोपालों में
जो मेरे आस-पास ही मंडराते हैं।
उनकी मुस्कान में, निश्छल प्रेम में।
ख़ुशियाँ मेरे आस-पास ही थी।
मेरे बाल गोपाल
सोने चाँदी की बनावट से दूर
सने हैं मिट्टी से।
ये मेरे गीत हैं, मन के मीत हैं।
मेरे मोती हैं, कोहिनूर हैं।
मेरी ख़ुशियों के खजाने हैं मेरे विद्यार्थी।

व.अ.
रा.उ.मा.वि., बडौलीघाटा,
तह. निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)

पीले पत्ते

❒ ब्रजमोहन सिंह चौहान

जो पत्ते पीले हो गए हैं अब तो उनको झड़ने दो।
जो ढल रहे हैं अब तो उनको ढलने दो।।
नये जोश नई रोशनी का अब
तो सूर्य उदय होने दो।
नई उमंग की किरण को अब तो
इस धरा पर फैलने दो।।
शंका सन्देह करना छोड़ो,
नवप्रभात में पल्लवों को
हुनर की हुंकार भरने दो।
जो पत्ते पीले हो गए हैं......
पतझड़ तो आएगा, आ कर फिर चला जाएगा।
प्रकृति से खिलवाड़ मत कर,
सामर्थ्यवान को आने दो।।
जो पत्ते पीले हो गए हैं......
अब वसंती बहारों को
अपना कौशल दिखलाने दो।
हक किसी का छीनों मत, जीओ और जीने दो।
जो पत्ते पीले हो गए हैं......
हम भी उस वृक्ष के हिस्से थे,
उनको भी तुम साज दो।
जो पत्ते पीले हो गए हैं......

अध्यापक
रा.आ.उ.मा.वि., कांकड़वाला
(लूणकरणसर), बीकानेर

बेटी

❒ रानू गोठवाल

घर आंगन के शजर की चिड़िया है बेटी, उल्फत की अनमोल गगरिया है बेटी
बेटी से ही घर की रौनक बनती है, नटखट शोख सुहानी गुड़िया है बेटी
वापस घर को आ जाए तो चैन मिले, कुन्द समय में खुली किवड़िया है बेटी
बेटी बिन सब सूना-सूना लगता है, खुशहाली की जैसे पुड़िया है बेटी
इसको भी उन्मुक्त गगन में उड़ने दो, बन्द घरों की खुली अटरिया है बेटी
एक नहीं दो घर में खुशियाँ लाती है, मानो तो जन्नत की डगरिया है बेटी
सोना इसकी दुनिया बड़ी सुहानी है, खुशियों की अलमस्त नगरिया है बेटी

प्रधानाचार्य, रा.आ.उ.मा.वि., चूड़ियावास, लवाण, जिला-दौसा (राज.)
मो. 7790999172

छात्र विदाई गीत

❒ पूनम शर्मा

विदा में दें क्या उपहार,
शत-शत आशीष हमारा है,
सफलता सदा कदम चूमें,
यही आगाज हमारा है।
जो कलियाँ हमने सजाई हैं,
वो बगियाँ तुम्हें लगानी है।
जो फूल हमसे मुरझाए,
वो फूल तुम्हें खिलाने हैं।
हम माली हैं इस उपवन के,
ये गुलिस्तां ही तुम्हारा है।
सफलता.....
ये अक्षरधाम है शाला
ये विद्या का घराना है,
तुम आशा के दीप हो,
तुम सत्य के राही हो
हम सृजनकार है इस मंच के,
ये रंगमंच ही तुम्हारा हो।
सफलता.....
पढ़ लिखकर बनें नेक बंदे
ये संकल्प आज से लो,
कोई पद मिले ना मिले,
तुम मानवता के अधिकारी बनो
तुम भविष्य हो इस दुनिया के,
ये उन्नत संसार तुम्हारा है।
सफलता....

वरिष्ठ अध्यापक
रा.मा.वि. कुम्हेर, भरतपुर (राज.)

अनुरक्त दीप जलाएँ

❒ सम्पत लाल शर्मा 'सागर'

प्रेम के दीप बने,
घृणा का तिमिर मिटायें।
कुल के दीप बने,
दिलों के दिए जलायें।
ज्योतिर्बीज बनकर,
अंधकार को हर जायें।
तमोहारी बनकर के,
उर में आलोक फैलायें।
अमावस की तमस्वती में,
तमिनाथ बन जायें।
ज्ञान के तमोमणि बन,
तमस को दूर भगायें।
राष्ट्र के क्षितिज से,
भ्रष्टाचार जड़ से मिटायें।
दिवाली की अकषी पर,
जगात का लाभ उठायें।
दीन व अनीस को,
खुशी से गले लगायें।
कीचड़ में अंभोज बन,
सुन्दर से खिल जायें।
दीपक की लौ बनकर,
अनुरंजन की ज्योति जलायें।
दीपक की लपझप रोशनी में,
कंचन अभिलाषी हो जायें।
अंशुमान की अंशुमाला से,
अनुरक्त दीप जलायें।।

प्राध्यापक
रा.आ.उ.मा.वि. जवासिया,
पो. गिलूण्ड, जि. राजसमन्द (राज.) 313207
मो. 8003264828

जिन्दगी बनाता स्कूल

❒ सुखविन्द्र सिंह मेघाना

स्कूल ही जिन्दगी बनाता है हम सबकी ....
स्कूल ही..
बच्चा भी ज्ञान पाता है, स्कूल ही जिन्दगी...
5 वर्ष के बच्चे के स्कूल भेजना
उसके संग हँसना उसके संग खेलना
प्यार से ही बच्चा आगे बढ़ता जाता है...
स्कूल ही....
गुरु को भी चाहिए हर किसी मिलना
उनके सुख-दुख में साथ-साथ चलना
समाज में वो ही शिक्षक मान पाता है....
स्कूल ही....
बच्चे को भी चाहिए सभी का आदर करना
छोटों से प्यार और बड़ों से डरना
संस्कारवान वो ही बन पाता है....
स्कूल ही...
देश हित की बात जिसमें
वो ही काम करना...
देश में अनपढ़ नहीं कोई रहना
भारत में अनपढ़ नहीं कोई रहना,
गुरु और शिष्य का बेजोड़ नाता है....
स्कूल ही जिन्दगी बनाता है...
हम सबकी
स्कूल ही जिन्दगी बनाता है...
स्कूल ही जिन्दगी बनाता है।

प्रधानाध्यापक
रा.उ.प्रा.वि. खोपड़ा
त.-नोहर (हनुमानगढ़)
मो. 9783420499

मंजिल की आस

❒ गौरव कुमार शर्मा

मंजिल की आस
उफनता सा जीवन मेरा
ऊँची नीची लहरें है।
तूफानों से लड़ कर आगे
मंजिल तक मुझको जाना है।
जीवन पथ पर भटक न जाऊँ
इसका ही अंदेशा है।
हर ठोकर में मुखरित होता
एक अजब संदेशा है।
अंधकार है राह में मेरे
हाथ को हाथ नहीं सूझता।
इस शक्ति का प्रतिरूप
आशा तू ही ज्योति बन जा।
हर कलश हर हाल में
मंजिल के शीश चढ़ाना है।
सागर की लहरों पर चल कर
मुझको पार लगाना है।
उठ जाग मुसाफिर आगे बढ़
मंजिल को तेरी आस है।
लहु लुहान है कदम ये मेरे
पर मन में विश्वास है।।

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि. निभेरा
तह. रूपबास,
जिला भरतपुर (राज.)

गुरुजी की इच्छा

❒ उत्सव जैन

गुरुजी की इच्छा रहती सभी शिष्य उत्तीर्ण हो।
पढ़ लिख कर आगे बढ़े देश का नाम रोशन हो।।

कोई कुशल किसान बने इससे सबका भला हो।
कोई अच्छा राजनेता बने देश का विकास हो।।

ऊँचे पद पर जावे शिष्य शिक्षा का
घर-घर प्रचार हो।
गुरुजी की इच्छा रहती मेरी मेहनत
शिष्यों पर न्यौछावर हो।।

हरित क्रान्ति श्वेत क्रान्ति सब में
सबका सहयोग हो।
गुरुजी खुद मेहनत करते उनका
आदर सत्कार हो।।

गुरुजी को देखकर नम्रता आती शिष्यों को
ज्ञान लेने की तमन्ना हो।
वह ज्ञान देने को लिए तैयार है हम ज्ञान
पिपासू बनकर तैयार हो।।

गुरुजी देना चाहते आशीष हम सदा तैयार हो।
'उत्सव जैन' कहता वही शिष्य आगे बढ़ते
जो गुरुओं का आदर करते हो।।

वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि.
बागीदौरा, जिला-बांसवाड़ा (राज.)
मो. 9460021783

हे शारदे माँ वरदान दो!

❒ डॉ. कृष्णा आचार्य

हे शारदे माँ वरदान दो,
करूँ प्रार्थना वो ज्ञान दो।
हर कंठ अमृत झरे, ऐसा अनुपम गान दो।
है कामना इतनी मेरी
मेरे मन की रिक्तता दूर हो
मुझे शक्ति दो, सामर्थ्य दो,
करूँ वंदना वो ध्यान दो।
हम उलझ रहे इस जगत में
मोह-माया के जाल में
मुझे सद्‌कर्म की वो खान दो।
मेरा गीत गूंजे तान दो।
नादान हूँ जानू नहीं
तेरी अर्चना कैसे करूँ
मेरे अंतर तम का हरण कर
उजास की वो किरण दो।
तेरा वास हो हर बाग में
चेतना हो हर वास में
मैं रच सकूँ उस भाव को
संवेदना का संज्ञान दो।
करूँ हाथ जोड़ ये प्रार्थना
अर्पण मेरी सब साधना
लो अपनी शरण में मुझे
एक नई पहचान दो।

आचार्य चौक की ढलान के नीचे,
उस्ताबारी, बीकानेर (राज.)

मैं नारी कमजोर नहीं

❒ सत्यनारायण पारीक

मैं नारी कमजोर नहीं, मैं अब तक हारी, अब और नहीं।
मैं अब तक रही लाचारी, मैं दुखियारी, अब और नहीं। मैं नारी कमजोर नहीं।।
क्योंकि मेरी ममता की लाचारी, मेरे जीवन में पड़ी सदा ही भारी,
जब जब भी मैनें अपनापन दिखलाया, पुरुष वर्ग ने हर रूप में मुझे अपनाया,
फिर ठुकराया, अब मैंने छोड़ी सदा के लिए लाचारी,
क्योंकि मैं अब सभी कार्य क्षेत्रों में,
पुरुष वर्ग से आगे बढ़कर पड़ रही हूँ भारी,
मैं अब तक अत्याचार जुल्म, सहती आई हूँ।
अत्याचार, जुल्म सहने की पुनरावृति अब ओर नहीं। मैं नारी कमजोर नहीं।।
मैं अब तक सहती आई हूँ, पुरुष वर्ग द्वारा किया अहंकार
और अपमान, लेकिन समर्थ, सबला नारी बनकर
अब न सहूँगी अत्याचार और अपमान,
क्योंकि मैं हूँ कर्मशील, कर्त्तव्यपालन में अग्रणी सक्षम, सबला, शक्ति का अवतार
मैने अब बदले रूप से अत्याचारियों का,
शक्ति स्वरूपा दुर्गा बनकर करूँगी संहार।
क्योंकि, सती के नाम पर मुझे जलाया,
मीरां के नाम पर जहर पिलाया, दहेज के नाम पर मुझे सताया,
सता सता कर फिर मुझे जलाया, जबकि मैने अपना नारी धर्म निभाया,
पत्नी बन पति को परमेश्वर माना, पति परमेश्वर की खूब सेवा करना,
सदा अपना परम कर्त्तव्य माना, लेकिन पति परमेश्वर ने मुझे सदा अपना नहीं माना।
मेरा साथ देकर मेरी रक्षा करने की बजाय, अपनों से दूर किया,
गेरों को अपना माना, मैं अब तक अत्याचार सहन करते करते,
रही मैं जीवन भर बेचारी, दुखियारी, अब और नहीं, मैं नारी कमजोर नहीं।।

से.नि. व्याख्याता
मु.पो. रूपाहेली कलां (हुरड़ा), जिला-भीलवाड़ा-311021
मो. 8239228148

दोहे

❒ लियाकत अली खाँ 'भावुक'

सदा मेरे वजूद का, होता है इम्तिहान।
फिरता यहाँ इतराता, झूठा मेरा गुमान।।

प्रीत के गीत गुम हुए, मोल तोल का दौर।
सत्य का सम्मान नहीं, छल कपट चहुँओर।।

रिश्तों की दीवार में, आ गई है दरार।
दरार तो भरती नहीं, नित नित है तकरार।।

ओढ़ा और बिछाया जिसे, वह है मेरा गीत।
चकाचौंध में आज की, भूला गायन रीत।।

जुगनू चाहे जैसा हो सूरज नहीं बन पाय।
पलभर के प्रकाश से, तमस दूर नहीं जाय।।

समझ ताकत अपनी तू, करना फिर प्रयास।
खुद से खुद की चुनौती करे तेरा विकास।।

दुर्जन आवत देख कर, सज्जन करे सलाम।
इस युग की नव रीत का, करें पालन तमाम।।

तेरे मेरे बीच में, बस इतनी सी रार।
मैं बोलूं नबी जिसको, तू कहता अवतार।।

हासिल उम्र से तजुर्बा, देता हमको सीख।
नवाचार करें हम सब, नई खींच दे लीक।।

नर और नारी जग को, देते हैं स्वरूप।
नर तो है यह छांव सा, नारी खिली सी धूप।।

जिला शिक्षा अधिकारी (से.नि.)
ग्राम पोस्ट, भीमसर (झुंझुनूं)-333001
मो. 9460784521

मार्गदर्शक

❒ दिनेश शर्मा

खुद से ही अनजान था,
हर बात में नादान था।
अस्तित्व न था मेरा अपना,
बस नाम का ही इंसान था।
गिरना तो फितरत होती है,
पर उठना ना सीखा था कभी।
कूड़ा हो, बेकार तुम,
ऐसा मुझसे कहते थे सभी...।
चहुँ ओर अंधकार था,
हर बार और बेजार था।
शरण भी लेता तो किसकी,
बैरी सब संसार था।
एक अनजान, फिर एक अनजान दिन,
बोला पास आकर मेरे।
गिरना कोई बुरी बात नहीं,
पर उठने की कोशिश तो कर।
उस अनजान की बातों का,
जाने क्या दिल पर हुआ असर।
खत्म हुआ सिलसिला गिरने का,
चलने का शुरू हुआ सफर।
दिखता तो था इंसान मगर,
सच बोलूं तो फरिश्ता था।
हर बात उसकी लगती थी सही,
जाने ये क्या रिश्ता था।
हर सफर सफलता का, तुमसे ही होता है शुरू।
जग में तुम बिन कोई अर्थ नहीं,
हो धन्य तुम, हो धन्य गुरु।।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि., नयानगर,
तह. बिजौलिया, जिला भीलवाड़ा

शिक्षक की भूमिका

❒ पूजा दहिया

जब पैदा हुए तो हमें
प्रथम गुरु के रूप में माँ मिली,
जब-जब समय बदला
गुरु की अलग-अलग पहचान मिली।
यों तो अनेक गुरु हुए,
पर माँ सदा गुरु रही।
उसकी महिमा का नूर रहा,
उससे ही जीवन रूपी झरना बहा।
विद्यालय में अच्छे गुरु मिले,
उनकी सीख से आगे बढ़े।
ज्ञान दिया हमको ऐसा,
सफलता की चोटी पर चढ़ें।
जैसे-जैसे समय बदला,
गुरु की परिभाषा बदली।
सद्गुरु मिलना मुश्किल हुआ,
सद्ज्ञान अब दुर्लभ हुआ।
अब नए गुरु से मिलके,
लगा ऐसा कि दिन बदले।
डिजिटल हुआ ऐसा अब सब,
गूगल गुरु बनकर आया।
गूगल गुरु से हर समाधान पाया,
पर समय को हमने खोया पाया।
भले ही घड़ियाँ बंधी हो हाथों पर,
पकड़ में एक पल भी नहीं आया।
आखिर में ये समझ आया,
समय गुरु बनकर आया।
समय ने हमें जो सिखाया,
वे कोई और सिखा नहीं पाया।

स्नातक (विज्ञान)
राजकीय महाविद्यालय
मेड़ता सिटी (नागौर)

सच की राह

❒ लालाराम जांगिड़ 'मोहित'

सच की राहों पे चलते हो
कांटों से फिर घबराना क्या?
बेईमानों की फौज यहाँ
नित उछल-उछल कर आती है
सच को नीचा दिखलाने को
हर हथकंडे अपनाती है।
लेकिन सच का इतिहास अमर
झूठों का यहाँ ठिकाना क्या? सच की...
सच तेज आग में जलता है
आँधी, तूफां को सहता है
सच स्वयं परीक्षा देता है
सच रोज परीक्षा लेता है
हो तेज झूठ की आँच बहुत
लेकिन सच का मुरझाना क्या? सच की...
सच साफ, पाक, निर्मल कितना
और झूठ बदलता रंग कई
सच एक राह पर चलता है
होते हैं झूठ के ढंग कई
सच अडिग, अटल, स्थिर, राही
झूठों से फिर हिल जाना क्या?
सच की राहों पे चलते हो
कांटों से फिर घबराना क्या? सच की...

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि. आलनियावास
तहसील-रियाँबड़ी, जिला-नागौर-341513
मो. 9982157745

गुरु जी

❐ किशन गोपाल व्यास

एक प्यारा सा कोमल एहसास,
किसी मखमली सेज के सुखान्त स्पर्श सा,
हर पल चंचलमय इस दिल में,
उर मध्य छिपे प्रतीत के भावुक मर्म सा,
घनघोर घटा में अनगुञ्जित आहट सी है।
रश्मियां सूर्य ने फैलाई इस रिश्ते की पहिचान से,
स्वीकृति नक्षत्रों ने दिखलाई मधुर मुस्कान से,
रग रग में पनपा है, आपसे नेह का एहसास
दूर हदों से नज़रों की, पर हर पल दिल के पास,
तीव्रता है पवन वेग सी, मन में लिए विश्वास
दृढ़ता प्रकृति सी है, लिए मन में आपका साथ
शिथिलता जो आंगन में
धवल चन्द्रमा सा अस्तित्व,
माधुर्य है सौन्दर्य संग
चपलतापूर्ण आपका व्यक्तित्व,
ओजपूर्ण, शून्य से परे,
निर्मल सा भव्य है व्यक्तित्व,
अब राज दिल के रिश्ते का बेपर्दा मैं कर रहा,
है कौन आप परिचय आपका दिल से
अब सुर्दा कर रहा,
धड़कनों के संग आप हैं, हर खुशी का अंग आप हैं,
इस जीवन के कर्मयोग का नींव का प्रस्तर आप हैं,
इस माटी की अमूर्त काया के मूर्तिकार आप हैं।
गुरु है नाम आपका, हर पल चाहूँ,
कनक रंग आप हैं।
गुरु है नाम आपका, हर पल चाहूँ,
कनक रंग आप हैं।।

पुत्र श्री सीताराम जी व्यास
एफ, 742-43, बाबा रामदेव मंदिर के पास,
मुरलीधर व्यास कॉलोनी, बीकानेर
मो. 9414147499

शिक्षक का सम्मान

❐ विद्यानिधि त्रिवेदी

*शिक्षक का सम्मान सृजन है,
अन्य मान का क्या करना।
ज्ञान दीप जब रहे प्रज्वलित,
अंधियारों से क्या डरना।
सूरज अपने शैशव में भी,
कब बादल से डरता है।
अंकित है जो काल पृष्ठ पर,
वर्षों में कब मरता है।
मुश्किलें है, जीवन कसौटी,
हर ठोकर पाठ पढ़ाती है।
बाधाओं से टकराकर,
हमको चलना सिखलाती है।
शब्दों के हाथों से ही तो,
मन सहलाया जाता है।
कठिन राह पर चल कर ही,
मंजिल को पाया जाता है।
उड़ान जितनी ऊँची हो,
थकान उतनी ही होती है।
जो गहराई में उतरा है,
हाथ में उसके मोती है।
श्रम ज्योति हाथ लेकर,
चलो हम साथ चलते हैं।
श्रम सीकरों से ही तो,
लक्ष्यों के वृक्ष फलते हैं।*

एन.के.प.उ.मा. विद्यालय,
आर्यनगर, मुरलीपुरा, जयपुर-39

मन मिलते लोग

❐ सुरेश कुमार

सही समय पर कब मिलते हैं, मन मिलते लोग वे आते हैं, इतने बेआवाज कि पत्ता तक न हिले,
और पता ही न चले; जाते हैं तो चले जाते हैं, सौ-सौ सैलाब कभी-कभी तो उन्हें आते-आते
हो जाती है इतनी देर कि उनका न आना ही आने से बेहतर लगता है
फिर भी अपने आपको किन्ही अपनी सी आँखों के आइने में
देखने के लिए चाहे देर से ही सही बहुत जरूरी है जीवन में उनका आना...।

अध्यापक, रा.बा.उ. प्राथमिक विद्यालय,
तिहावली, पं. फतेहपुर जिला-सीकर (राज.), **मो. 9414541743**

महिमा देश की

❐ हाजी साबिर हुसैन 'शुक्रिया'

हम सबका यह प्यारा देश
राणा व सूरी का देश
पूजा व पन्ना का देश
गाँधी, गौतम, महावीर का
गंगा के पवित्र नीर का
ख्वाजा व मस्तान का देश
इससे बढ़कर नहीं जहाँ में
हम सबका यह प्यारा देश
तरह-तरह के धर्मों वाला
मैत्री भाव दर्शाने वाला
वीरों की है खान यहाँ पर
स्वाभिमान पर जान यहाँ पर
मीरा व तुलसी का देश
रैदास व रसखान का देश
कृष्ण सुदामा का है परिवेश
इससे बढ़कर नहीं जहाँ में
हम सबका यह प्यारा देश
लहराते हैं खेत यहाँ पर
हर गलियारे में गीत यहाँ पर
चंग-ढोलक की थाप यहाँ पर
भजनों की भरमार यहाँ पर
काव्य जगत का यहाँ करिश्मा
मानवता का सबसे रिश्ता
शान्ति प्रिय है मेरा देश।
इससे.....

सेवा निवृत्त शिक्षक
नाथद्वारा, जिला-राजसमन्द (राज.)

भारती मेरी माँ का नाम

❐ वेद प्रकाश कुमावत

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, सभी धर्म यहाँ पलते।
गीता कुरान ग्रन्थ साहिब और बाईबिल के उपदेश यहाँ हैं चलते।
गंगा-जमुनी संस्कृति यहाँ की, यहाँ की रीत निराली।
हिन्दू जहाँ पर ईद मनाते, मुस्लिम मनाते दीवाली।
जाति अलग है, धर्म अलग है, पर सब जपते मानवता की माला।
भारती मेरी माँ का नाम, बाप मेरा हिमाला।।
देवालयों में ईश-वंदना, होती मस्जिदों में अजान।
गिरिजों में कामना सर्वमंगल की, गुरुद्वारों में गुरु ग्रन्थ का ज्ञान।।
होली पर सब गुलाल लगाते, ईद पर करते दुआ-सलाम।
राष्ट्र धर्म की शिक्षा दी, ऐसे थे हमारे अब्दुल कलाम।।
विश्व धरा पर अमन चाहें हम, सबका मन शिवाला।
भारती मेरी माँ का नाम, बाप मेरा हिमाला।।
गौरी आया, बाबर आया और फिरंगी आया।
अतिथि देवो भव के वशीभूत, हमने सबको गले लगाया।।
अहिंसा को जब कायरता समझा, माँ की छाती पर खंजर चलाया।
हम हमीद, हकीम, शिवा बने तब, बनाकर भेष विकराला।
भारती मेरी माँ का नाम, बाप मेरा हिमाला।।
रसखान जैसे कृष्ण भक्त हुए यहाँ, रहीम जैसे दानी।
गाँधी जैसे महात्मा हुए और चंद्रशेखर, भगत सरीखे बलिदानी।।
प्रताप जैसे शूरवीर यहाँ, शिवाजी से प्रजावत्सल स्वाभिमानी।
विवेक के आनंद हुए और जग में किया उजाला।
भारती मेरी माँ का नाम, बाप मेरा हिमाला।।
कहीं पे पर्वत, कहीं पे घाटी, कहीं पे नदियाँ गहरी।
दक्षिण में सागर सैनिक सा, उत्तर में हिमालय सा प्रहरी।।
कल-कल करते झरने बहते, धरती ओढ़े चूनर धानी।
कहीं पे बोले मोर-पपीहा, कहीं पे कोयल राग सुहानी।।
सबके मन को मोहने वाला, भारत माँ का रूप निराला।
भारती मेरी माँ का नाम, बाप मेरा हिमाला।।
जिस धरा पर जन्म लिया, उस पर वारि जाएँ।
संकट आन पड़े जननी पर, राष्ट्र धर्म निभा पाएँ।।
जिस माता से जीवन पाया, उस पर बलिदानी हो जाएँ।
बुद्ध महावीर ने जो पथ दिखाया, उस पर पद चिह्न अंकित कर पाएँ।।
हे प्रभु तुम हमको भी देना, ऐसा हृदय विशाला।
भारती मेरी माँ का नाम, बाप मेरा हिमाला।।

अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी-द्वितीय
लूणकरणसर, जिला-बीकानेर
मो. 9829485108

स्वच्छ पर्यावरण शुभम्

❐ जगदीश प्रसाद त्रिवेदी

(1)
अम्बर-वितान से वसुधा तक,
पावन पर्यावरण रचावें।
पानी, पावक, पवन तत्त्व को,
प्रदूषण से अवश्य बचावें।।

(2)
पृथ्वी, माँ के अंचल सम है,
जल जीवन, तो वायु प्राण है।
वन-उपवन में आनन्द-मंगल,
पितु का साया आसमान है।।

(3)
नहीं कभी भी हुए प्रदूषित,
जल, थल, गगन और अनल-पवन।
संरक्षित रखते थे इनको,
करके महर्षिगण यज्ञ-हवन।।

(4)
पंचतत्त्व ही प्रकृति-तत्त्व हैं,
इनसे ही सचराचर पोषित।
सभी समझते महत्त्व इनका,
फिर भी हम कर रहे प्रदूषित।।

(5)
अस्वच्छ मृदा संग नीर से,
पैदा होता भूमि-प्रदूषण।
गंध, ध्वनि, रज, ईंधन-धूम्र से,
बढ़ता रहता वायु-प्रदूषण।।

(6)
जंगल में मंगल बसे सदा,
सो नहीं उजाड़ें वन-उपवन।
वन्य-प्रकृति संतुलित रहेगी,
तो मिला करेगी शुद्ध पवन।।

(7)
अशुद्ध वायु को लेकर वृक्ष,
शुद्ध पवन जीवों को देंगे।
पादप कभी न काटे जावें,
पेड़ प्रदूषण दूर करेंगे।।

(8)
शुद्ध पवन ही प्राणवायु है,
करती सबका जीवन-पोषण।
तरुओं से ही मिलती है यह,
अस्तु करें हम पौधारोपण।।

पूर्व प्राध्यापक
2 ख-17, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
फोन : 0744-2503486

मैं विद्यालय जाऊँगी

❒ कान्ता चाडा

ढोर चराँवती राधा बोली
बापू मैं हूँ तेरी लाडली
मैं भी पढ़ने जाऊँगी
गायें, भैंसे खूब चराई
भेड़ें नहीं चराऊँगी
चूल्हा चौका करूँ सफाई
अब कैसे मैं करूँ पढ़ाई
उलझे उलझे बाल है मेरे
मैले कुचैले कपड़े हैं
लाल गुलाबी रिब्बन लादे
दो दो चोटियाँ गूँथूंगी
कांधे पर बस्ता लटकाए
मैं विद्यालय जाऊँगी

वरिष्ठ अध्यापिका अंग्रेजी
इन्द्रलोक, हनुमानहत्था, बीकानेर
मो. 9983047047

ग़ज़ल

❒ राजेन्द्र कुमार टेलर

संतों ने ग्रन्थों में मन की परतें खोली है,
जीवन में सुख दुख साथी हैं हमजोली हैं।
खुशियों से वंचित रखना तो नाइंसाफी है,
घर में ज्यों त्योहारों जैसी रंगोली है।
वो इन्सां बुलंदी पा के ही रहेगा इक दिन,
अपनी आँखों में मंजिल जिसने सँजो ली है।
ये साझा तहजीबों की थाती संभाले रखना,
वो ईदी बैशाखी दीवाली औ होली है।
ख्वाबों को पूरा करना है अपनी जिम्मेदारी,
खाली ना रह जाए अरमानों की झोली है।
उन नाजुक औ दिलकश लफ्ज़ों का शुक्रिया शुक्रिया,
जिनसे अपनी ग़ज़लों में मिसरी सी घोली है।

प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि., रायपुर पाटन,
सीकर (राज.) 332718
मो. 9680183886

भारत माता की पुकार

❒ बस्तीराम जाट

हे! मेरे प्यारे लाल।
करती मैं तुझसे एक सवाल।।

अगर करते हो मुझसे प्यार।
तो मिटा दो बेईमानी भ्रष्टाचार।।

मिलजुल कर तुम करो प्रयास।
होगा तभी हमारा विकास।।

जग में होगा अपना नाम।
तब चमक उठेगा यह धाम।।

निभाये राष्ट्र-निर्माण में भागीदारी।
पनपेगी इसी से यहाँ ईमानदारी।।

फैलेगा प्रकाश मिटेगा अँधकार।
होगा तभी मेरा सपना साकार।।

अध्यापक
रा.उ.मा.वि. ग्वालू (मूण्डवा) नागौर
मो. 9983202162

हे! शारदे माँ

❒ मुकेश बोहरा अमन

आज हमको शारदे माँ।
ज्ञान का वरदान दे माँ।।
चल सके सच की डगर हम,
झूठ से हो बेखबर हम
छूट जाए प्राण सच पर,
ऐसा हमको ज्ञान दे माँ।
आज हमको शारदे माँ...।।
प्रेम के पथ के पथिक हम,
आप-से ना है अधिक हम
प्यार बाँटे दुनिया भर में,
ऐसे चरण गतिमान दे माँ।
आज हमको शारदे माँ...।।
दीन न कोई दुःखी हो,
दुनिया में सब ही सुखी हो,
प्रेम से हिलमिल रहे सब,
हर चेहरे मुस्कान दे माँ।
आज हमको शारदे माँ...।।

अमन भवन, महावीर सर्किल
बाड़मेर-344001 राजस्थान
मो. 8104123345

वो कर ही दिखलाएगा

❒ शालू मिश्रा

कोशिश करना मुश्किल
है नामुमकिन कुछ न हो पाएगा।
राह मिले ना भले तुझे
पर पथ पे आगे बढ़ जाएगा।
कांटों की परवाह को
छोड़ फूलों को चुनता जाएगा।
सागर जैसा आगे बढ़ता
तू निरंतर ही बहता जाएगा।
बीज लगाया है जैसा तूने।
वैसा ही फल तू पाएगा।
जो बीत गया सो चला गया
अब नया सवेरा आएगा।
मुझे यकीन है तुझ पर
कि तू खाली हाथ न आएगा।
कहते है सब इस बार
यही कि वो कर ही दिखलाएगा।
आशीष तेरे संग में है सबका
तू जीत के ही घर आएगा।

नोहर (हनुमानगढ़), राजस्थान
मो. 9024370954

मौन चीखती प्यास

❒ राजकुमार बुनकर

धरती प्यासी, अम्बर सूना
प्यासा हर इंसान है।
इस तप्त धरा को देखो अब
एक बादल की आस है।
बूँद-बूँद को तरसती धरा
इसे वृक्षों की चाह है।
दिन में तपते इस अम्बर को
शीतल चाँदनी की प्यास है।
काले काले उड़ते बादलों की
प्यारी सी अब मांग है।
नदियाँ सूखी कूएँ सूखे,
सूखी बावड़ी की तरसती आह है।
त्रस्त हृदय से निकल रही
मौन चीखती प्यास है।
इस प्यासेपन का दोष किसे
दोषी तो हर इंसान है।

प्रधानाचार्य
रा.आ.उ.मा.वि., धानोता, शाहपुरा, जयपुर
मो. 9001311562

लौटा दो मेरा बचपन

❒ परमानन्द शर्मा 'प्रमोद'

गंगा की निर्मल लहरों सी, मेरे बचपन की धारा।
ना जाने कब हुई प्रवाहित, लेकर जीवन रस सारा।।
उस धारा में बहते बहते, धन्य वही जो डूब गए।
जिनको आया तनिक तैरना, वे सचमुच ही ऊब गए।।
बचपन की सरपट सड़कों पर, मची हुई होड़ा होड़ी।
यहाँ किसी के घुटने फूटे, और कहीं कुहनी फोड़ी।।
किन्तु वेदना नहीं हृदय में, नव उमंग उल्लास भरा।
छल-छद्मों से बहुत दूर मन, निश्चित ही कचनार हरा।।
ठोकर से गिर जाते थे, पर गिरने से था क्या होना।
कोई अगर देख कर हँस दे, तो आ जाता था रोना।।
जाति-पाँत का ज्ञान नहीं था, ऊँच-नीच किसने जानी।
देख पराए मुख में गोली, छीन-छीन कर थी खानी।।
छुआछुत का रोग नहीं था, सबके घर आना जाना।
नहीं पराया था कोई भी, सबको अपना ही माना।।
बिठा पीठ पर दादा हमको, बन जाते पल में घोड़ा।
तभी पिताजी आकर मानों, अटका देते थे रोड़ा।।
जब तक नींद न आ जाती थी, दादी सिर सहलाती थी।
परियों वाली कथा सुनाकर, मीठी लोरी गाती थी।
तुतली भाषा समझ न पाते, माँ के सिवा अन्य कोई।
बातों में थी मिसरी माँ के, जब मलती हम पर लोई।।
परमहंस बन जाते पल में, नील गगन में बादल देख।
मन चंचल हो उठता क्षण भर, जब चमके बिजली की रेख।।
मन करता था बादल ऊपर, बैठ गगन की सैर करूँ।
चाँद सितारे तोड़ के सारे, दादीजी के हाथ धरूँ।।
नहीं किसी से कमतर थे हम, सबके राजदुलारे थे।
हँसते हुए मनोहर थे तो, रोने पर भी प्यारे थे।।
कहाँ गया वह नटखट बचपन, कहाँ गई वह शैतानी।
नहीं रहे संयुक्त कबीले, नहीं रही दादी नानी।।
चौपालें अदृश्य हो गई, सिमट गया घर का आँगन।
अब तो बचपन प्रौढ़ हो गया, बीत गया जैसे सावन।।
हे ईश्वर! अब विनय निवेदन, ना चाहूँ यश वैभव धन।
सब कुछ ले लो मुझसे लेकिन, लौटा दो मेरा बचपन।।

राधाकृष्ण महाकालेश्वर मन्दिर के सामने,
आदर्श नगर, गुलाबपुरा, जिला-भीलवाड़ा
मो. 9413704555

पानी

❒ राम गोपाल राही

प्राणों का आधार जगत में,
जीवन रक्षक पानी है।
हर प्राणी को जीवन देता,
समझो अमृत पानी है।
काम सभी के आता हरदम,
बहु उपयोगी पानी है।
हर प्राणी की प्रथम जरूरत,
होता समझो पानी है।
पानी के अतिरिक्त घरों में,
काम में आता पानी है।
बिन पानी के काम चले ना,
दिनचर्या में पानी है।
सृष्टि जीव जगत में होता,
मुख्य समझो पानी है।
प्रकृति का सृजन जीव का,
जीवनदानी पानी है।
ईश्वर का वरदान जग में,
देन सभी को पानी है।
प्राकृतिक सौगात सभी को,
तत्व अनोखा पानी है।
सागर नदी, सरोवर इनका,
रूप निहारो पानी है।
इन सबका भी जीवन दाता,
सचमुच मानो पानी है।
पंचतत्व में प्रमुख तत्व भी,
होता समझो पानी है।
प्राणी मात्र की आवश्यकता,
प्रमुख रूप से पानी है।
पंचतत्व की इस काया को,
पवित्र बनाता पानी है।
जल से ही अन्न पैदा होता,
जीवन रक्षक पानी है।
प्राणी मात्र की सख्त जरूरत,
सचमुच समझो पानी है।
कुदरत का वरदान वस्तुतः,
प्राण बचाता पानी है।
प्राण देह की सभी जरूरत,
पूरी करता पानी है।
रोम रोम संजीव-चेतना,
करे प्रभावित पानी है।
पानी से ही खाना पीना,
नहाने में भी पानी है।
साफ सफाई कपड़े धोना,
काम में आता पानी है।
पर होता दुरुपयोग आज तो,
कारें धोता पानी है।
फेक्ट्रियों में सब से ज्यादा,
दुरुपयोग में पानी है।
जल संकट का हल भी पानी,
रहें-बचावें पानी है।
क्यों न हम बचावें पानी,
हमें बचाता पानी है।
पानी कम जनसंख्या अधिक,
रोज बचाना पानी है।
सबको पानी मिले व्यर्थ न,
कभी बहाना पानी है।

सेवानिवृत व्याख्याता
वार्ड-4, लाखेरी, बूँदी (राज.)-323615
मो. 9982491519

सलीका

❐ बाल कृष्ण शर्मा

सलीका न आया, बोलने का कभी,
सलीका न आया, चुप रहने का कभी।
वक्त के थपेड़ो ने रूलाया कभी,
वक्त के थपेड़ो ने हँसाया कभी।
सहजने का, सलीका न आया,
सलीका बिगड़ने का भी न आया।
समझ से परे है, जिन्दगी की किताब।
कभी फुर्सत हो तो, पढ़ियेगा जनाब!
चलते चलते वो मुकाम आया,
कुछ भी कहे लोग, कान में तेल डाल आया।
न की परवाह, किसी की, सब तरफ घूम आया।
खूब समझाया जहाँ ने मुझको।
खुद ब खुद अब समझ आया।
लगती थी चिढ़, कभी उन से।
लगता है वो ही मंजिल पे ले आया।
नसीहत देते नहीं थकते लोग,
ठोकरे खाई जहाँ की तो समझ आया!

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी
प्रकाश द्वीप शिक्षक कॉलोनी,
कलिजरी गेट, शाहपुरा, भीलवाड़ा-311404
मो. 9414615821

दूध की कहानी

❐ लक्ष्मीकान्त शर्मा 'कृष्ण कली'

दूध की कहानी है वर्षा की जुबानी है
दूध नहीं ये पानी है नानी बड़ी सयानी है।
दूध में फैट का झमेला है
यही इसकी कीमत का खेल है।
गाय-भैंस का दूध नहीं
डेयरियों का मेला है।
दूध की कहानी है वर्षा की जुबानी है।
दूध में प्रोटीन विटामिनों का रेला है।
तभी तो ये संतुलित आहार अकेला है।
दूध की कहानी है वर्षा की जुबानी है
अन्नपूर्णा दुग्ध योजना की कहानी है।
दूध-दूध से होती हड्डियाँ मजबूत हैं
इसको पीने से दिल दिमाग
दोनों रहते तंदूरस्त है।
दूध की कहानी है वर्षा की जुबानी है।
जय बोलो सरकार की जिसकी ये देन है
इसको पीने से कठिन गणित भी
सरल हो जाएगा
और तुम्हारी तकदीर बुलंदिया छू पाएगीं।

42/27 शिव कॉलोनी
बदनपुरा मौहल्ला चौमूँ,
जिला - जयपुर
मो. 9784132269

सरदी में कैसे जाऊँ शाला

❐ पारस चन्द जैन

दीदी दे रही मुझको बार-बार आवाज
क्या शाला नहीं जाना है, तुझको भैया आज
शाला की घण्टी बज रही है टन टन टन टन
बिस्तर से उठने को नहीं कर रहा मेरा मन
कैसे नहाऊँ, सरदी याद
दिला रही मुझको नानी
हाय राम, कितना ठण्डा हो गया है पानी
हाथ पैर धोकर ही, शाला मैं चला जाऊँ
कह रही मेरी दादी और कह रहे मेरे ताऊ
दूध और नाश्ता ले ले बेटा, कह रही मम्मी
इतनी सरदी में भी, तक रही है बिल्ली पम्मी
होकर जल्दी से तैयार,
मैं जाता हूँ अब शाला
देर हुयी तो पड़ेगा गुरुजी की डाँट से पाला
क्यों कोई ऐसा काम करूँ,
कह रहे हैं मेरे पापा
जिससे फिर शाला में गुरुजी को
खोना पड़े आपा
सरदी तो आती ही रहेगी,
भाई साल दर साल
समय पर शाला पहुँच कर,
मिशाल सबके लिए बनूँ
दीदी दे रही मुझको, बार बार आवाज
क्या शाला नहीं जाना है, भैया तुमको आज
हाय राम इस सरदी में, कैसे जाऊँ शाला
क्यों होती है सुबह
और क्यों उगते है सूरज लाला।

से.नि. जिला शिक्षा अधिकारी
जनता कॉलोनी, देवली,
जिला-टोंक (राज.) 304804
मो. 9413603345

स्कूल जाते बच्चे

❐ दिनेश विजयवर्गीय

गर्मी की छुट्टियों के बाद
नन्हें बच्चे जाने लगते हैं स्कूल।
रिक्शे में ठसा-ठस भर जाते
गिरते पड़ते तय कर लेते हैं
लटक कर स्कूल का सफर।
वे करते नहीं चिंता
तेजी से चलते रिक्शे से गिर जाने की
और करते नहीं शिकायत कभी
जगह नहीं मिलने की
चिलचिलाती धूप और वर्षा की
वे तो मम्मी-पापा से
टाटा बाई वाला हाथ उठा
नई ड्रेस के उत्साह में
पहुँच जाते हैं स्कूल।
वे दे जाते हैं-ढेरों खुशियाँ
मन ही मन मुस्काने की
उन्हें होती नहीं चिंता
अपने भविष्य की
खेल छुट्टी में
वे किलकारियों भर
खुशी से नाच उठते हैं
और लंच बॉक्स से जोड़ते हैं
अपनी भूख का रिश्ता।
मित्रों के संग खेलते-कूदते
वे भूल जाते हैं
अपनी माँ की हिदायतों को।
वे बगिया में ताजा खिले फूलों की तरह
महका देते हैं माता-पिता के सपनों को।
वे बिना किसी जिद के हर दिन
हाथ में पानी की केटली थामें
और पीठ पर बोझिल बेग झुलाए
चले जाते हैं - स्कूल

215 मार्ग-4
रजत कॉलोनी, बून्दी (राज.)
मो. 9413128514

रिश्ते

❒ अरनी राबर्टस

रिश्ते जिस तरह दरक रहे हैं
वह इस बात को
दर्शा रहे हैं कि
जीवन साथी को
समझना लोग चाहते ही नहीं
इन सबके बीच
अपने-अपने अहम
लेकर बैठ जाते हैं
वे मुँह बाए हुए।
पुरानी इमारतों पर दृष्टिपात करो
चाहे बिजलियाँ गिरें
या आएं तूफ़ान
वे रहती हैं अप्रभावित,
अडिग और स्थिर
शान से सिर ऊपर
उठाए हुए।
पुराने रिश्ते भी ऐसे
ही होते हैं
वे समझदारी की नींव
पर टिके होते हैं
जीवन में चाहे कैसे
भी झंझावत आए
वे रहते हैं चट्टान की
तरह मजबूत और दृढ़।
समझ में आना चाहिए
रिश्तों की अहमियत
रिश्तों में जब मजबूती आएगी
तब समाज भी दृढ़ होगा
फिर न सहारों की दरकार होगी
और न टूटन की चुबन

पो. आ. रोड
भीमगजमंडी, कोटा
मो. 9414939850

हिन्दी है भारत की शान

❒ सुरेन्द्र कुमार चेजारा

मातृ-भाषा है हिन्दी हमारी, हिन्दी है भारत की शान।
युगों-युगों से दुनिया में है, भारत की सच्ची पहचान।।
दुनिया में है, देश अनेक, भारत इसका पावन धाम।
अजर-अमर हो हिन्दी भाषा, युगों-युगों तक इसका नाम।।
सच्चे हिन्दुस्तानी हो तो, हम सबका यह पहला काम।
मर मिट जाएँ इसकी खातिर, रहे दुनिया में इसका नाम।।
हिन्दी बोले हिन्दी अपनाएँ, तभी बढ़ेगा इसका मान।
जिस दिन हम सब बोले हिन्दी, हिन्दी का सच्चा सम्मान।।
हिन्दी हमारी भाषा ही नहीं, भारत माँ की बिन्दी है।
गर्व से कहो हमारी मातृ-भाषा हिन्दी है।।
एक भूमि है एक राष्ट्र है, एक हमारी भाषा हो।
सब मिलकर जब बोले हिन्दी, पूर्ण हमारी आशा हो।।
जहाँ कहीं भी जाकर अपने, भारत का गुणगान करें।
सबसे पहले लेकिन अपनी भाषा हिन्दी का सम्मान करें।।
हिन्दी का मान बढ़ाने में, लग जाएँ सभी जी जान से।
करें प्रतिज्ञा आज सभी हम, हिन्दी बोले शान से।।
तभी कह सकें हम सब, गर्व और अभिमान से।
कोई देश नहीं दुनियाँ में, बढ़कर हिन्दुस्तान स

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.वि., होल्या बास, सीकर, मो. 9461044090

जीवन एक चुनौती

❒ उम्मेद सिंह भाटी 'सूरज'

जीवन एक चुनौती है, कर इसे तू स्वीकार। बढ़ता चल जीवन पथ में, कभी ना तू हिम्मत हार।।
निरन्तर निष्ठा से अपना कर्त्तव्य कर, मिलेंगे तुझे स्वतः अधिकार।
अपने स्वार्थ की खातिर जीना, पशु-तुल्य जीवन बेकार।।
कर सर्वस्व समर्पित अपना, मातृभूमि का कर उपकार।
जो नहीं अपनी मातृभूमि का, उसे कोटि-कोटि धिक्कार।।
जीवन एक चुनौती है, कर इसे तू सहज स्वीकार। बढ़ता चल जीवन पथ में, कभी ना तू हिम्मत हार।।
अपना लक्ष्य निरन्तर ध्यान, जाना है तुझे चक्रव्यूह पार।
जीवन के इस महासमर में, बनेगी कई घटनाएँ दीवार।।
आत्म-विश्वास के तीक्ष्ण बाणों से, कर अपना तू लक्ष्य पार।
करते रहो निरन्तर कर्म, फल की इच्छा है निरसार।।
जीवन एक चुनौती है, कर इसे तू सहज स्वीकार।
बढ़ता चल जीवन पथ में, कभी ना तू हिम्मत हार।।
बड़े धैर्य से चलना होगा, अपने जीवन पथ पर।
बना सारथी अपने पोरुष को, बैठ महासमर के रथ पर।।
उठा आत्मबल का गाण्डीव, भेदन कर सब विषय विकार।
गले लगा ले दुःखी जनों को, मानवता कर रही पुकार।।
जीवन एक चुनौती है, कर इसे तू सहज स्वीकार। बढ़ता चल जीवन पथ में, कभी ना तू हिम्मत हार।।

व्याख्याता हिन्दी
रा.उ.मा.वि. मेड़ता रोड (नागौर), **मो. 9414673660**

सरकारी स्कूल है जी

❐ अनुराधा जीनगर

मेरी मस्त स्कूल है जी
जैसे नवोदित फूल है जी
सरकारी स्कूल है जी
सबसे प्यारी स्कूल है जी
नन्हें बच्चे रोज हैं आते
पढ़ते लिखते गुनगुनाते
खेल-खेल में सीखते जाते
आते-जाते आते-जाते
सबको लगता कूल है जी
सरकारी स्कूल है जी
प्रार्थना रोज सुबह होती
सब चमकते ज्यों मोती
विनती सब मन से करते
अवगुण हटा गुण को भरते
शिक्षण विधा अनुकूल है जी
देखो सफाई का राज यहाँ
ठीक समय पर काज यहाँ
मस्त शिक्षण होता रोज यहाँ
योग्य टीचर्स की फौज यहाँ
संस्था के प्रधान है मूल जी
सरकारी स्कूल है जी

व्याख्याता चित्रकला
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
जयमलसर, बीकानेर
मो. 8239728052

आह्वान तुम्हारा

❐ डॉ. विद्या रजनीकांत पालीवाल

**आओ-आओ है आह्वान तुम्हारा
सुना है भक्त की पुकार पर
तुम दौड़े चले आते हो
फन फन पर नाचकर
विष वमन करवाते हो।
यहाँ ज़िन्दगी फटी है
पैबन्द कहाँ कहाँ लगाएँ
मानव पशु की मौत मरता है
जागिए प्रभो
अब मानव शिशु द्वार खड़ा
चलाइये चक्र
नीति के लिए
मान मर्यादा के लिए
लुट न जाए यह उद्यान तुम्हारा
आओ-आओ है आह्वान तुम्हारा
(जन्माष्टमी की मंगल वेला में)**

22, बृज बिहार पुलाँ,
(धाय भाईजी की बाड़ी) उदयपुर (राज.)
मो. 9351549041

स्वस्थ सभी हम भारत में

❐ मनमोहन गुप्ता

स्वच्छ रहें सब हमारे भाई
बीमारी नहीं आए,
खाना-खाने जब भी बैठें
मम्मी हाथ धुलाए।
रोज करें स्नान सभी हम
फिर जाएँ स्कूल,
छींक आए रूमाल लगाना
नहीं जाएँ हम भूल।
बचें धूल-दुर्गन्ध सभी से
स्वच्छ रखें हम अपने को,
घूमें सुबह पार्क में जाकर
साकार करें सब सपने को।
कॉलोनी को स्वच्छ रखें सब
मिलकर के सब ही श्रमदान,
कर भारत निर्माण स्वच्छ हम
सफल करें राष्ट्र-अभियान।
जन-जागृति हम पैदा करके
स्वच्छ रखें सबके मन को,
जाति धर्म का मैल हटाकर
स्वस्थ रखें हर जन-जन को।
कोई भी अवरोध न होगा,
प्रगति शिखर के मारग में,
स्वच्छ रहेंगे तभी तो होंगे
स्वस्थ सभी हम भारत में।

गुप्ता सदन
एस.बी.के. गर्ल्स हायर सैकेण्डरी स्कूल के पास,
मंडी अटलबंध, भरतपुर-321001
मो. 6378262325

आत्मशक्ति का पूर्ण समर्पण

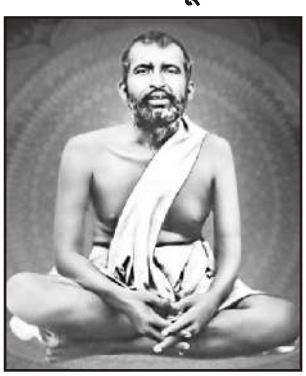

श्रीरामकृष्ण परमंहस शिष्यों को उपदेश दे रहे थे। वे समझा रहे थे कि जीवन में आए अवसरों का महत्त्व व्यक्ति साहस तथा गान की कमी के कारण नहीं समझ पाते। समझकर भी उनके पूरे लाभों का ज्ञान न होने से उनमें अपने आप को पूरी शक्ति से लगा नहीं पाते। शिष्यों की समझ में उनकी यह बात ठीक ढंग से न आ सकी।

तब श्रीरामकृष्ण देव बोले-''नरेंद्र! कल्पना कर कि तू एक मक्खी है। सामने एक कटोरे में अमृत भरा रखा है। तुझे यह पता है कि यह अमृत है, बता उसमें एकदम कूद पड़ेगा या किनारे बैठकर उसे स्पर्श करने का प्रयास करेगा।'' उत्तर मिला-''किनारे बैठकर स्पर्श का प्रयास करूँगा। बीच में एकदम कूद पड़ने से अपने जीवन-अस्तित्व के लिए संकट उपस्थित हो सकता है।''

साथियों ने नरेंद्र की विचारशीलता को सराहा, किंतु परमंहस जी हँस पड़े और बोले-''मूर्ख! जिसके स्पर्श से तू अमरता की कल्पना करता है, उसके बीच में कूदकर उसमें स्नान करके सराबोर होकर भी मृत्यु से भयभीत होता है।'' चाहे भौतिक उन्नति हो या आध्यात्मिक-जब एक आत्मशक्ति का पूर्ण समर्पण नहीं होता, तब तक सफलता नहीं मिलती।

साभार : अखण्ड ज्योति, सितम्बर, 2019, पृष्ठ संख्या 45

आओ मिलकर करें अर्चना

❒ दीप सिंह भाटी

आओ मिलकर करें अर्चना, अपने राष्ट्र महान की।
हमको अपनी जान से प्यारी, माटी हिन्दुस्तान की।।

सोन चिरैया शस्य श्यामला, भारत मां कहलाती थी।
हीरा पन्ना माणक मोती, जवाहरात उगलाती थी।
घृत दूध की बहती नदियाँ, यह जननी भगवान की।
हमको अपनी जान से प्यारी, माटी हिन्दुस्तान की।।

गौरवशाली अतीत अपना, उज्ज्वल जग इतिहास है।
वीरों के शोणित से सिंचित, कण कण में उल्लास है।
गूंज रही है तान गगन में, जन गन मन यशगान की।
हमको अपनी जान से प्यारी, माटी हिन्दुस्तान की।।

कर्मठ वीर किसान यहां का, अन्न देव उपजाता है।
खून पसीना खूब बहाकर, अन्नदाता कहलाता है।
भूखा रहकर भूख मिटाता, धरती के इन्सान की।
हमको अपनी जान से प्यारी, माटी हिन्दुस्तान की।।

अपने वैज्ञानिक अलबेले, ऊंचे यान उड़ाते हैं।
नित्य नयी तकनीक खोजकर, दुश्मन को दहलाते हैं।
चन्द्रयान इक चमत्कार है, जय भारत विज्ञान की।
हमको अपनी जान से प्यारी, माटी हिन्दुस्तान की।।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, सैनिक बढ़ता जाता है।
कारगिल के उच्च शिखर पर, तिरंगा फहराता है।
'दीप' अमर है गौरव गाथा, बत्रा के बलिदान की।
हमको अपनी जान से प्यारी, माटी हिन्दुस्तान की।।

प्राध्यापक रा.उ.मा.वि. सणाऊ,
(चोहटन) बाड़मेर

एक लकड़ी पानी के किनारे पड़ी थी। उसे तीन जीव खींच रहे थे। मछली नीचे ले जाना चाहती थी। बतख ऊपर उड़ा ले जाने की फिक्र में थी। कछुआ जमीन पर घसीट रहा था। तीनों पूरा जोर लगा रहे थे, पर वह जहाँ-की-तहाँ रही। एक इंच भी आगे न बढ़ सकी। उसी प्रकार मन, बुद्धि और चित्त जीवन की गाड़ी को अपनी-अपनी दिशा में ले जाना चाहते हैं, पर लक्ष्य एक न होने के कारण जीवन जहाँ-का-तहाँ ही बना रहता है और प्रगति जरा भी नहीं हो पाती।

यही बात जीवन के हर पहलू पर लागू होती है। प्रगति हेतु दिमाग खाली रखना, अविज्ञात को जानने का प्रयास करना, पूर्वाग्रहों से बचना एवं हर प्रयास को बिना निराश हुए खाली न जाने देना अनिवार्य है।

हाँ मैं शिक्षक हूँ

❒ कुमार जितेन्द्र

हाँ मैं शिक्षक हूँ, विद्यालय को पूरा समर्पित हूँ,
विद्यार्थियों में नवाचारों की अलख जगाता हूँ,
विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच विकसित करता हूँ,
विद्यार्थियों को सही-गलत की राह दिखलाता हूँ,
हाँ मैं शिक्षक हूँ.....
विद्यालय को पूरा पमर्पित हूँ,
विद्यार्थियों के शारीरिक विकास के लिए खेलों में में रूचि बढ़ाता हूँ,
विद्यार्थियों के मानसिक विकास के लिए प्रेरणात्मक सीख देता हूँ,
विद्यार्थियों के स्वास्थ्य के लिए जाँच करवाता हूँ,
हाँ मैं शिक्षक हूँ.....
विद्यालय को पूरा समर्पित हूँ,
विद्यालय के वातावरण को हरा-भरा रखता हूँ,
विद्यालय का लेखा-जोखा रखता हूँ,
हाँ मैं शिक्षक हूँ.....
विद्यालय को पूरा समर्पित हूँ,
समय-समय पर अभिभावक बैठक बुलाता हूँ,
विद्यार्थियों के सीखने की स्तर प्रकिया बतलाता हूँ,
हाँ मैं शिक्षक हूँ.....
विद्यालय को पूरा समर्पित हूँ,
देश के महापुरुषों, क्रांतिकारियों की जानकारी देता हूँ,
विद्यालयों में देशभक्ति की भावना जागृत करता हूँ,
विद्यार्थियों को सार्वजनिक सम्पति सुरक्षा की सीख देता हूँ,
हाँ मैं शिक्षक हूँ.....
विद्यालय को पूरा समर्पित हूँ,
समय-समय पर आपदा कार्यों में सहायक बनता हूँ,
समय-समय पर सूचनाओं का आदान-प्रदान करता हूँ,
हाँ मैं शिक्षक हूँ.....
विद्यालय को पूरा समर्पित हूँ,
भविष्य की उड़ान भरने के लिए पंख तैयार करता हूँ,
हाँ मैं शिक्षक हूँ.....
विद्यालय को पूरा समर्पित हूँ।

वरिष्ठ अध्यापक
रा.बा.उ.मा.वि, साईं निवास,
मोकलसर, तह. सिवाना, जिला-बाड़मेर
मो. 9784853785

उछाव

❒ भीखालाल व्यास

जसोदा उण दिन बैगी इज उठगी ही.. यूं व्हा रोजीना बैगी इज उठ जावै। बुढ़ापा में यूं ई नींद कम इज आवै सो नागाजी रो टंकोरो बाजतां ई व्हा उठ जावै। मांचा माथै बैठी परभातियां अर भजन गावती रेवै। पैंली डील में गाढ़ हौ जद घट्टी फेरवा बैठती... परभातियौ तारौ उगतां पांण उठ जावती अर माणौ भरियौ पीस लेवती। पण हमें गाढ़ ई है कोनी अर खावणा हाळा ई दोय जिणा... सो कितरौक तो आटो चाहिजै... अर गांव में आटा री चक्कियां ई लागगी सो कुण घट्टी फेरै... सीधौ पीसणौ चक्की माथै...।

थोड़ौ उजाळौ हुवण लागै जद व्हा उठ'र घर रा कांम-झाडू निकाळणौ... पांणी छांणणै... मटकियां अर ढक्कण-लोटा धोवणा करै जितरै वीरो बा ई उठ जावै। दोन्यू जीव अेकला दिन भर कोई कांम करण नै नीं...। दिन रां आडौस-पाडौस री लुगायां हथाई करण नै आय जावै जद जसोदा रौ दिन निकळ जावै अर वीरो बा तावडौ तपै जितरै सभा में बैठा हथायां करै।

जसोदा रै दोय छोर्यां अर अेक छोरौ...। छोर्यां आपौ-आप रै ससुराल अर छोरा रे सप्लाई रौ कांम हुवण सूं डांग माथै डेरा...आज उठै तो कालै वठै...। उणै सैर में मकांन लियौ हौ जठै रे वतौ हौ।

बेटौ आपरी मा नै साथै चालण रौ घणोई केवतो अर तीन-च्यार वेळा जसोदा अर वीरौ बा सैर गया ई हा पण वठै उणां रौ मन नीं लागतौ! पूरी उमर जिणां गांव मांय निकाळी हुवै उणां नै तो गांव मांय इज आसंगै भलांई गांव मांय सुविधावां नीं हुवौ पण तोई वांकी-चांकी तो ई गेंहुओं री रोटी... सो गांव में उणां रौ टैम आराम सूं निकळै..।

बेटौ कदैक पांच-सात दिन सारू गाँव आवतो जदै वीरो बा अर डोकरी में अणूतौ उछाव आय जावतौ। उण रै आवण सूं दस पनरै दिन पैंली इज भांगण-घड़ण लागता अर आयां पछै पोता-पोती साथै दिन निकळतौ करै उग्यौ अर करै आथामियौ ठा ई नीं पड़ती.. दिनभर टाबरां री वंतळ...पोतौ तो वीरो बा रौ केड़ौ ई नीं छोड़ै। डोकरौ ई उणनै खनै बिठाय'र वातां मांडता..अेक ही मिनकी..। व्हा रसोई मांय गई.. रसोई में पडियो हौं तांमणियौ... तांमणिया में पड्यौ हौ दूध.. मिनकी मांय मुंडो घाल्यो तो मुंडौ...? पोतो कैवतौ- मांय फंसग्यौ... वीरो बा आगे केवता- मिनकी जोर करियौ तो तांमणियौ फुटग्यौ अर गळा में रेयग्यौ...?

पोतौ केवतौ-गांगरखो.. वीरो बा आगे केवता- पछै मिनकी बारै आई तो सांमी मिळियो..

पोतौ केवतौ-ऊंदरौ.. वीरो बा केवता.. ऊंदरै पूछ्यौ-मिनी मासी, मिनी मासी सिद जावौ हौ?

मूं तो जावूं... हरिद्वार.. गंगाजी री फेरूलां माळा.. गळा में पेरियौ गांगरखो...म्हैं तो पाप कीदा घणा...म्हैं तो ऊंदरा मारिया घणा... हमें गंगाजी जावूंला अर वठै इज माळा फेरूंला।

ऊंदरै कह्यौ-म्हैं ई चालू मासी? मिनकी बोली-चाल भलांई... थारी मरजी हुवै तो आवरौ...

अर आगै आगै मिनकी...लारै..लारै ऊंदरौ.... अर इण तरै सूं वीरो बा पोता नै कहाणियां सुणावता पोतौ दादा रै खनै चिपक्योड़ौ सुणतो अर सुय जावतो।

हमार चारैक बरस हुया पोतौ गाँव आयौ नीं हौ। च्यार बरसां में तो व्हो आठ बरस रो हुयग्यौ व्हैला..च्यार बरस रो हौ जरै लारली वेळा आयौ हौ..हमें तो थोड़ौ बड़ौ हुयग्यो हुवैला...वीरो बा सोचता...।

वीरो बा अर जसोदा दोन्यूं में आज अणूतौ उछाव हौ। डोकरी आज उठ'र परभातियां के भजन ई नीं कर्‌या...उणरौ जीव नीं लागतो हौ। हमार दस बज जावैला अर पोता-पोती अर बहू-बेटौ आवैला.. इण उमंग में व्हा फटाफट कांम करती ही। उणै ग्वाड़ी री सफाई करी..पांणी छांण्यौ अर बेटा नै उड़ीकण लागी।

वीरो बा ई सोचता हा... हमकाळै पोतौ पांच-सात दिन रेवैला..जरै उणनै कई-कई वातां सुणावूलां...डोकरा मन में कई भांगता अर घड़ता हा।

...पोतौ आवतां इज केवैला...दादा वात मांडौ...ऊंदरा-मिनकी री वात तो कई वेळा सुणली...कोई दूजी वात मांडौ... अर डोकरौ मन में सोचतो हौ के हमकाळै किसी नुंवी वात सुणावूंला...।

आठ बजतां-बजतां तो जसोदा घर रौ सारौ कांम निवेड़ अर बारै आयनै बैठगी। खनै हुय'र जावती वरजूड़ी बूझ्यौ मासी आज बारै बेगा आय'र बैठग्या।

वरजूड़ी रौ नांनांणौ अर जसोदा रौ पीहर अेक इज गांव में हुवण सूं वरजूड़ी उणांनै मासी केयनै बुलावै। आज मोवनियौ अर उणरा पापा आवण हाळा है...जसोदा मन री खुशी चेहरा माथै लावतां बोली। जरै इज आज मासी रा पग जमीं माथै नीं पड़रह्या है.. जांणै पगां में इलेस्टिक लाग्यौड़ो हुवै। व्हा मुळकी।

करै आवैला?

हमार सोजत हांळी बस मांय..।

पण व्हा तो दस बजियां आवैला नीं..

तो कांई हुयौ हमार दस बजै... हमें सोजत सूं तो रवांनै हुयगी हुवैला... रस्ता में दोय इज तो मोटा गाँव आवै... रोहट अर भाद्राजून.. जठै थोड़ी थमै है।

तोई मासी हाल तो टैम घणी है...

है तो है...मासी बात काटी।

वीरो बा ई आज टाबरां नै मिळण सारु अणूंता उछाव सूं भर्‌या हा... आज तो पोता खनै सारौ दिन वातां करांला। पोतौ तो हमें मोटौ हुयग्यौ हुवैला। पैली तो नागौ फिरतौ हौ पण हमें...वीरो बा री आंख्यां में पोता री तस्वीर उतरण लागी।

खनै हुय'र जावतै डूंगरियै आवाज दीवी-वीरोबा

हाँ भाई....

आज चालौ कोनी...सभा मायै..

नीं आज कोनी आवूं...

पण सभा री ऊद तो पड़ी है नीं.... आज वरदिंगजी रै पांवणा आयोड़ा है... सो सभा है। थांनै ठा कोनी?

हाँ, ऊद तो म्हैं ई सुणी है... पण आज म्हारै आवै ज्यूं कोनी...

क्यूं आज कांई वात है?

आज म्हारै बेटौ अर पोतौ आवै है रे भाई.. पछै सभा में बैठां पछै तो यूं इज है...टैम लाग जावै..।

मरजी रावळी.. अर डूंगरियौ वहीर हुयग्यौ।

नव वजतां-वजतां तो डोकरा-डोकरी रै टैम काटणौ भारी पड़ण लागग्यौ। आंख्यां बस रा मारग कांनी इज लाग्यौड़ी अर कांन बस रौ होर्न सुणण कांनी। दस वजियां ई बस नीं आई तो डोकरी जसोदा बोली-आज बस नै ई ठा नीं कांई लाइणौ लागौ है..। रोजीना तो इण टेम रा आय जावै पण आज हाल कठै ई दिखै इज कोनी...।

आवती हुवैला रै बेटी री बाप... मोटरडियां है... रस्ता में खराब ई हुय जावै.. पिंचर ई हुय जावै... कांई भरोसो..! वीरो बा थावस बंधावता।

बस नै ई आज इज खराब हुवणौ हौ...बस-हाळा ई खाली भाड़ौ वसूलवा में इज रेवै.. यूं नीं के बस नै ठीक करावां नै त्यार राखां.. सब रुळियार रासौ है...।

पण बस तो टेम हुवै जरै आवै नीं। डोकरी आंख्यां फाड़-फाड़ नै भाद्राजून रा मारग सांमी देखण लागी। डोकरी ने बस स्टैण्ड माथै बैठां घण्टा भर सूं ऊपर हुयग्यौ हौ। दोय-च्यार सवारियां ई बस नै उड़ीकती ही।

इतराक में आगा सूं बस आवती दिखी। डोकरी आंख्यां फाड़ नै देखण लागी पण नैड़ी आयां कोई बोल्यौ...आ तो जोधपुर हाळी है... सोजत हाळी कोनी.. व्हा तो हमें आवैला।

डोकरी पाछौ निसांसौ नांख्यौ।

थोड़ी ताळ पछै बस आई। डोकरी उतरती सवारियां नै देखण लागी। जसोदा रौ बेटौ रांमौ बस सूं उतर्‌या.. लारै-लारै बींदणी अर आंगळी पकड़ नै मोवनियौ..उण रौ पोतौ।

रांमै डोकरी ने नमस्कार कर्‌या-बींदणी ई पगै लागी अर बेटा नै कह्यौ-बेटा दादी को नमस्कार करो। छौरै डोकरी सांमी देख्यौ...अर झिझक्यौ। बेटे, ये आपके पापा की मम्मी है..इन्हें नमस्कार करो। बहू पाछौ कह्यौ। जसोदा पोता रै माथै हाथ फेर्‌यौ अर बूझ्यौ-लाडू आई कोनी? लाडू उणरी पोती रौ लाड़रौ नांम हौ। नीं...व्हा केवै....गाँव में मन लागै कोनी सो नांनाणै गई है... रांमै पड़ूतर दियौ।

डोकरी पाछौ पोता सांमी देख्यौ..खासौ मोटौ हुयग्यौ है।

बेटा...दादी को 'हाय' कहो। बींदणी पाछौ कह्यौ

-हाय आँटी... पोतौ बोल्यौ।

'हाय' और फेर कांई हुवै... अर 'आंटी' दादी नै आंटी केवै कांई? जसोदा रौ उछाव ठंडौ पड़ण लाग्यौ। कठै तो उणै सोच्यौ हौ के पोतौ बस सूं उतरतां पांण उणरै खनै दोड़्यौ आवैला... खोळा में लेवण सारु तेड़ण सारु हठ करैला अर कठै औ हाय आंटी 'अर लाडूं तो आई इज कोनी... पण कीं नीं बोली।

बस सूं सांमांन उतार अर घरै पूगा 'वीरो बा बेटा नै उड़ीकता बारै ऊभा हा।

रांमै कह्यौ..बेटा, ये दादा है....इनको भी 'हाय' करो...।

हाय दादा...छोरौ बोल्यौ

वीरो बा रै जांणै कांन में उकळतौ तेल पड़्यौ-हाय...हाय...!

पण कीं नीं बोल्या।

पोतै आवतां इज मम्मी रौ मोबाइल झटप लियौ अर मोबाइल माथै आंगळियां फिरावण लाग्यौ। थोड़ी देर दादा से बात करो....दादी से बातें करो... फिर मोबाइल से खेलना। बिंदणी कह्यौ। पण उणै तो कांन ई नीं दियौ।

डोकरी बेटा-पोता सारू घाट बणाई ही... दही ई जमायौ हौ...केर-कुमटिया ई लाया हा... साग बणावण सारू पण जद पोता नै घाट परोसी तो उणै कह्यौ-मैं तो ये नहीं खाऊंगा।

बेटा थोड़ी चाख तो सही...दादी बोली।

नहीं....नहीं...मुझे ये नहीं भाती... मेगीं बनाओ, न मम्मी... मोवनियै जिद करी। और चिप्स भी उणै कह्यौ।

अर बींदणी थैला मांय सं मैगी रो पैकेट निकाळ अर बणावण लागी।

सिंझ्या रा ब्याळू कर नै डोकरै ग्वाड़ी में मांचौ बिछायौ अर माथै बैठे-बैठे सोच्यौ-हमार पोतौ आवैला अर केवैला-दादा वात मांडो...।

पण पोतै तो दादा कांनी मुंडौ ई नीं कर्‌यौ। रात-दिन मोबाइल में मस्त...। डोकरी दूजै दिन सुबै उठ'र न्हा-धोय'र ठाकुर द्वारे जावण लागी तो पोता नै कह्यौ-चालै म्हारै साथै ठाकुर द्वारे..। पैली तो छोरौ उठतांई जिद करतौ...दादी चालौ नी ठाकुर द्वारे..

-हमार चाला हां बेटा.. सिनांन तो करण दे... डोकरी केवती।

-झट करौ नीं दादी... पोतो रट लगावतौ। अर पोतौ डोकरी री आंगळी पकड़ नै त्यार..। दादी, चुग्गौ म्हैं पकड़ूंला... म्हनैं पकड़ावौ...पोतौ जिद करतौ। थूं ढोळ देवैला बेटा... दादी ना देवती। नीं ढोळू...नीं ढोळूं अर व्हौ मांडांणी दादी रै हाथ मांय सूं चुग्गा री कटोरी लेय लेवतौ।

अर मिन्दर रा चबूतरा माथै ई व्हौ इज नांखतौ। डोकरी गावती-चुगो-चुगो अे चिड़कल्यां...इन्द्रापुरी घर करौ...। अर गाय नै रोटी ई व्हौ इज देवतौ अर पछै गाय रै मुंडै रे हाथ फेर नै नमस्कार करतौ। डोकरी गाय री पूंछ उणरा माथा माथै फेरती अर गावती- गऊओं देरावो गरीब ब्राह्मण नै...पूंछड़ै पार उतरसां...

पण आज तो उणै मांछौ ई नीं छोड़्यौ... सूतो रह्यौ। डोकरी अर बींदणी कई वार उठावण री कोशिश कर पण उण रो तो अेक इज जवाब-सोने दो न मम्मी अर उठतांई पाछौ मोबाइल।

डोकरी पाछौ ठाकुर द्वारे चालण रौ कह्यौ तो व्हौ सफा नटग्यौ...नहीं..मुझे नहीं जाना है। डोकरी चुपचाप कबूतरों रे चुग्गो अर गायर रै रोटी लेय नै रवाना हुयगी। रांमौ पांच दिन री छुट्‌टी में आयौ हौ। इण पांच दिनों में दादा-दादी खनै पोतै पांच घड़ी ई नीं बिताई। डोकरा-डोकरी खाली पोता नै देखता रेवता। नीं व्हौ इण पांच दिनो में दादा-दादी रै खनै ई बैठौ-नीं भेळौ जिमियौ...नीं खनै सुतौ...नीं कोई बात मांडण रौ ई कह्यौ..बस... दिन-रात मोबाइल भलौ नै व्हौ भलौ।

आजू रामां रै पाछौ जावणो हौ। सुबै नव वजियां हाळी बस सूं। रांमौ त्यार हुयग्यौ... डोकरौ-डोकरी, बस माथै छोड़ण नै आया। बस आयी। रांमौ, उणरी जोड़ायत अर पोतौ मांय चढ़्या। बिंदणी कह्यौ-बेटा, दादा-दादी को बाय करो....।

बाय-दादा...

बाय... दादी...टाटा...टाटा।

अर बस डोकरा-डोकरी रै सगळै उछाव माथै धूड़ उड़ावती रवाना हुयगी।

जिला शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
खण्डप (बाड़मेर)
मो: 9460087837

विटळ बूढ़ापो बापड़ो

❐ कल्पना गिरी

जूनी अर नुंवी पीढ़ी में तालमेल री अबखाई जतावती एकांकी

(भागमभाग भरी आज री आफळती जिनगाणी। रेल रा सफर में ई कनै कुण बैठो, कोई सरोकार नही। रोजगार रा रोकड़िया भेळा करतां निन्याणवे रा फेर में आज री औलाद आपरौ खूंटो अर जड़ां बूढ़ा माईतां नै ही बिसार दिया। होड़ री दौड़ में सेवना री आस बांध्यां बूढ़ला आज वृद्ध आश्रम में औलाद री उड़ीक में ई ऊमर पूरी करलै। नकारा साबित हुवती बूढ़ली पीढ़ी री जिम्मेवार आज री आपाधापी वाली औलाद- इणी भाव नै दरसावतौ यौ एकांकी)

पात्र

शारदा- पैसंठ पार एक वृद्धा माँ

शर्मा जी- सित्तर रै लगे टगै एक बुजुर्ग

शारदा रौ एकाएक बेटो (नेपथ्य में, पर्दा लारै बोलती आवाज)

नवागंतुक- एक वृद्ध

पहलो दरसाव

(पर्दो ऊठ्यां एक वृद्धाश्रम रौ नाम लिख्यौ कमरौ निगे आवै। गुरु ज्येष्ठ धाम आपणौ नीड़) कमरा में दोय पलंग बिछ्या थका। अर बीच में तिपाई में पड़यौ बेसिक फोन रौ सेट-एक बुजुर्ग पहलां सूं पलंग में अधलेट्यो थकौ। उणी टेम एक वृद्धा रौ भी आवणौ)

शर्मा जी (ऊभो होय)-नमस्ते जी, म्हनै शर्मा कैवै।

शारदा (पड़ूतर में हाथ जोड़ती)-जी, नमस्ते म्हारौ नाम शारदा है, बस दो एक दिन सारू अठै आयी हूँ- घरे म्हारी सेवा चाकरी सारू दूजो कोई नहीं, इणी कारण म्हारै बेटे म्हनै इण ठौड़ मेल दी। (कनै पड्या खाली पलंग पे बैठ जावै)

शर्मा जी (बात धकै बधावतां)-यूं काम कांई करै है आपरौ बेटो?

शारदा- (फोन हाथ में लेय जवाब देवती)-एक मोटी कम्पनी में बड़ो ओहदेदार है म्हारौ बेटो, सुण्यो? (रूकता थकां, फोन पे

आपरा बेटा सूं बात करतां)...फोन लगाय नै पूछ तो लूं-हाँ, हलो बेटा, तैं टिफिण मायलौ खाणौ तो खाय लियो? (पर्दा लारै सूं फोन पे बेटा री आवाज सुणाइ जै)-

माँ, अबार मीटिंग चाल रही है- थोड़ी जेज पछै आपने फोन करूंला, माँ। (शारदा उदास होय फोन धर देवै)

शर्मा जी-कांई कयो थारै लाडलै?

शारदा- (थोड़ी बेराजी हुवतां)-किसी बात करौ हो थे? म्हारौ बेटो, म्हारौ बेटो म्हारां सू अणूतो हेज राखे है समझ्या?

शर्मा जी-(उपहास सूं)-तो देखली जो शारदा जी, कितरा बेगा आप ई म्हारै ज्यूं वृद्धाश्रम री इण दिनचर्या में एकमेव हुय जावेला।

शारदा जी (कुढ़ती थकी)- बस, बस चुप करौ। देख लिया म्हैं थांनै।

शर्मा जी- जिसी थांरी सोच शारदा जी। म्हारा सारू तो बस अठै शान्ति है नेठाव है। दोन्यूं टेम खाणौ अर चाय नाश्तो मिल जावै, (रूकतो थकौ) टेम पड़्यां नर्स कंपोडर दवा देय जावे- फेर किण चीज री चावना। हाँ, कोई कोई नुवा दोस्त भी बण जाया करै-बस।

(इणी बीच शारदा जी आपरा लड़का नै फोन लगावण री कोशिश करती देखीजे। पण पर्दा लारै नो रिप्लाई री टोन सुणीजै)

(पर्दो पड़ै)

दूजा दरसाव

(नेपथ्य में सुणी जे-इणी उड़ीक में दस दिन बीत जावै-एक लाचार माँ आपरा एकाएक बेटा री ममता में बंधी फोन पे फोन लगावती देखी जे। पण जितरी वेण फोन उठावै, बेटा रौ एक ई पड़ूतर सुणी जै)

एक बार-हाँ माँ, म्है थोड़ी जेज पछै फोन करूँ।

दो बार-हाँ, हाँ माँ, म्हैं कयो नी के म्है थने अबार आपोआप फोन कर दूंला।

(शर्मा जी माँ री आ उतावळ देख हँस पड़ै-हा-हा-हा...।)

शारदा जी (थोड़ी तपती थकी)-सुणौ शर्मा जी! म्हनै कैणो तो नी चाईजे पण तो ही आपनै कहणौ पड़सी के आपने म्हारा सूं ईसको होयग्यो है। कयूंके आपनै अठै पूछणियौ ही कोई नहीं, समझ्या?

शर्मा जी- अबे रैवण दयौ शारदा जी! तेल देखो तेल री धार देखो। (इणी बीच शारदा फोन पे फेरूं ट्राइ करै। अर पर्दा लारै उणरा बेटा री आवाज सुणाइ जै)

बेटो (नेपथ्य में)-हाँ, माँ, म्हैं अबार कार ड्राइव कर रह्यौ हूँ-थोड़ी जेज सूं जवाब देऊं। (फोन कट जावै)

(शारदा जी मूंडो बिगाड़तां) शर्मा जी कानी आडी आंख्यां देखती बेठै जावै)

शर्मा जी- शारदा जी, सुणल्यौ थांनै म्हारी बातां बेजा लागै? अरे बहन जी, आस उम्मीद पाल्यां कीं हासिल नीं हुवणौ। जिण ठौड़ आपनै मेल्या है उणने मंजूर करो अर जो होयग्यौ उणंनै मान लौ। आपणी ढळती ऊमर री आ ई किस्मत। किणनै दोष देवणो, बोलो?

शारदा (कूड़ी आसरा उणी गुमेज में)- नसीब आपरो बुरौ हुवैला... (रूकती थकी) देखली जो। म्हारौ बेटो तो म्हनै लेवण आवे लाई- पछै म्हैं बताऊं ला आपनै, कहो किसी रही, हाँ! (रूकती थकी)

म्हंने तो बस इण बात री फिकर है के

म्हारो बेटो म्हारा बिना किया रैवतो हुसी?

शर्मा- देखो शारदा जी, म्है भी चाहूं के आपरौ बेटो आपने लेवण आय जावै। पण म्हनै पक्की पिछाण हुयगी है के इण वृद्ध आश्रम में एकण कोई आयग्यौ तो सारे सांस पाछौ कोनी जावै।

शारदा जी- (लाल पीली हुवती ऊभी होय जावै)-हाँ, हाँ आप बेजां बातां मत करौ शर्मा जी! म्हनै कोनी रेवणौ आपरै इण वृद्ध आश्रम में। (रूकती थकी)-म्हैं अबार फोन करूं म्हारा बेटा नै। देख जो, वो आज ई-म्हनै लेय जासी अठा सूं। (फोन लगावती देखाइ जै) (नेपथ्य में पर्दा लारै फोन पे बेटा री आवाज सुणण में आवे)

बेटो- हाँ माँ, हलो! काम री मार, प्रैशर अणूतौ है। म्हैं थांनै कह रह्यौ हूँ के आप थोड़ा दिन भलै उण ठौड़ ई अेडजस्ट करलौ... (अर फोन राखण री आवाज सुणी जै)-शारदा रा उणियारा पे सून्यायो पसर जावै-वा निदाल होय पलंग में पड़ै परी)

(पर्दो पड़े)

तीसरौ दरसाव

(इणी गताधम में पूरौ महीनौ निकल जावे- शारदा जी री तबियत बिगड़ती देखीजण में आवे। शारदा जी पलंग पे पड़्या थका छाती में हाथ रख जोर जोर सूं मसलता देखी-जे)

शर्मा जी-(शारदा ने तड़पतां देखनै)- शारदाजी, शारदा जी!! संभाळौ आपो आपनै। हिम्मत राखौ। आपरो बेटा आय जासी शारदा जी!।

शारदा जी- म्हारी टेम आयगी शर्मा जी! म्हारा बेटा नै एक फोन थे ई लगाय दो। (शर्मा जी फोन लगावै पण फोन के तो कट जावे, के नो रिप्लाई हुय जावै)

शर्मा जी- फोन तो कटग्यौ शारदा जी!

शारदा-तो, म्हनै म्हारा बेटा री फोटू ई देय दयो! म्हैं इणी में धावस कर ले सूं।

(शर्मा जी बेटे रो फोटू पकड़ावै-शारदा जी जोर जोर सूं ऊखड़ती सांसा लेवती आपरा बेटा रै फोटू ने जोय छाती सूं लगाय लै)

(मौन-स्तब्धता-सन्नाटो-सून्यापो)

शर्मा जी- (आ सगळी हकीकत देखतां)-शारदा जी, शारदा जी! (शारदा री गर्दन एकण कानी टिक जावै अर आंख्यां पथरी जै परी)

शारदा-बेटा....थूं आयग्यौ....बे...टा।

(अर सां सां थम जावै)

शर्मा जी- (माथा पे हाथ देवतां)-आज ओ कोई पहली वेळा कोनी हुयो म्हारै सागे। (रूकतां थकां)-ठा नी पड़ै, क्यूं इतरी उम्मीदां राख मेली ही एक माँ! अरे उम्मीदां तो पीड़ा देवे पीड़ा।

(भळै रूकतां थकां)-छिः क्यूं छोड़ जावै म्हां बूढ़लां नै म्हारी आपरी ई औलाद? अठै नित रोज तिल तिल कर मरण नै? (आगे आवेश में)-अरे है कोई अठै? जाओ अर शारदा जी रा घण कमाऊ बेटा नै जाय कहद्यो-अरे काम पूरो हुयग्यो। होवे तो आय जावै अर लेय जावै उणरी ममतामयी मां री आस, उम्मीद अर सामान, सै। अरे न जोगा! तार-तार कर दियो थै ममता रा आँचल ने, छिः (सिसकियां अर रुलाई)

(पर्दो पड़े)

दरसाव चौथौ

(फेरूं एक नुवै मिनख रौ आवणौ)

शर्मा जी- एक गयौ नीं के दूजो आयग्यौ।

नुवो मिनख- म्हैं तो बस एक हफ्ता सारू अठै आयौ हूँ। इण पछे म्हने म्हारौ बेटो आय लेय जासी, समझ्या?

शर्मा जी- हाँ, भाई समझग्यौ-करमाय नमः। परालब्ध पहले भया, पीछे भया शरीर। (नेपथ्य में शारदा जी री आवाज सुणी जै)- देख जो शर्मा जी, म्हारो बेटो अवस आवेला अर म्हनै लेय जावैला।

(शर्मा जी हतप्रभ हुवतां)-

शर्मा जी- कैड़ी टेम आयगी है... एक बाप आपरा चार बेटां ने पाल लेवे पण चार बेटा मिलनै एक बाप ने नीं पाल सकै...(हाथ उठावता) हे भगवान....आज री इण औलाद सूं तो ना औलाद ही चोखा।

(माथौ पकड़ बैठ जावे)

(पर्दो पड़े)

70, मरुधर केसरी नगर, सोभावतों की ढाणी, जोधपुर
मो: 8696042491

विश्वास

❒ शांति कुमारी डोम

आप कर मैंह
जिण समाज मांय जी रया हां
उण रा भी असूल है।
कै,
मिनख, मिनख रो मान करै,
ऐक दूजे पर विश्वास करै,
उपकार करै।
सहयोग
स्नेह, प्रेम प्रीति रो सेतु बाँधे,
उण ऊपर
जीवण पार करै।।
सुख-दुःख रा साथीड़ा
पास पड़ौसी, राजी हौसी, जद
जाण ला उणरा हाल।
थप्प थपावां
उणरा उतीरयोड़ै चेहरैरा,
पीला पड़ियोड़ा गाल।।
मन हलको हो जावेला कैवेला
आपरै मनड़ै री बात।
क्यूं नी कटी नींद बिन
रात, वो राज,
जिण सूँ दुःखी है आज,
आपरी सांत्वना सूँ
चैहरो मुळकन लागै,
भाग फैरू जागै,
जे आप पैदा कर सकौ विश्वास।
सब काम सौरो है।
पर विश्वास पैदा करनो दौरो है।

व्याख्याता
रा.बा.उ.मा.वि, सिणधरी
मो. 9587522433

हड़कवा

❒ भोगीलाल पाटीदार

हवार नुं खावा करीनै हाथ मांय कांदो नै रोटलो लईनै उतावरै पोगै घर थकी नेकरी ग्यो। नदी कने कचरो मली ग्यो। 'घणं दाड़ै देखवा मल्यो। आसकाल क्यं काम करे है।'

अबार थानिया ठेकेदार कने हूँ। आयं काम न्हें मले तौर स्हैर आड़ै जऊं। आजे मोडू थई ग्यू है ते माथे पड़वाना हैं।

हिकमण आलतो ओय अैम कचरे क्यू 'टेम परमणे जावु। केंम मोडू कर्‌यु?'

लखमो उदास थतो थको बोल्यो 'जाणी ने मोडू नती कर्‌यु। अमारै गांम ना मुखी अे मोडू करी आल्यु। गांम ना आदमी भेगा कर्‌या अता ते अैयं ग्यो अतो। अवे मुखी तौ र्‌या न्हें हैं पण लोकं पेलं वारू मान आलै हैं। पाछा पईसं वारा हैं ते भीड़ पड्ये काम काड़ी आलै अेटले मनख बीयै हैं। गांम ना कोहरखेम सारू हवन नै भजन मंडली कराब्बी है। अैणा खरचा नो चंदो करवानी वात अती। बार मईनं मांय जेटला तेत–तेवार आवै अैनी उजवणी बदले फाळो उगरावै। नबरू नै हजडू सब नो हरको फाळो। मुखी अे बे च्यार आदमी आपड़ी आड़ै करी मैल्या हैं। ई हुंकारो भर लयं। कारैये हिसाब न्हें वताड़ै। गरीब टकै लावे ने टकै खाय ई हर फेरे हरको फाळो हरते आले? कायो थइलो अेक आदमी अे एतराज कर्‌यो। मुखी अे अैने टरकावते थके क्यू के गांम नुं धरम नुं काम है। कुतरा वजु कैम भौके है? अेक आदमी पोगै खुड़ो अतो अैणे क्यु 'कुतरू तमैं राखो ते तमैं जाणो। आमै तौ हीदी वात करं हं।

मुखी आंखें काड़ी ने हामो थ्यो। 'कुतरु पाळवा ना घणा फायदा हैं। घोर नुं रखवारु राखे। रातरे यमदूत देखी ने रौवे। अैणा थकी खबर पड़े के कैक मौत थवानी है। हुंगारे थकी चोर पकड़े। अेटले पुलिस वारा अे कुतरा ने राखै।' तईवरै नबरा आदमी भी ऊभा थई ग्या। कैवा लागा के 'हड़काया कुतरा वजू तौ तमैं करो हौ। धरम ना नामे तोड़ी खावा नुं काम करो हौ। कारैक हड़कायु कुतरु देखोगा तारै खबर पड़ेगा।' पछै तौ हा हौ थई ग्यौ। दांम आदमी वखैराई ग्या। अेटले मोडू थई ग्यू।' लखमे अेक हा मांय कोई दीधु।

खखारो खाई ने कचरे क्यु 'म्हूं अे कुतरं थकी हेराण थई ग्यो हूँ। घर मांय पाट माथे रोटला मेलीला खाई जयं। डांडै हीकु बांध्यु है अैये कुदको मारै हैं। रातरे घर मांय उतापो थाय ते आंगणा मांय हुवु हूँ। पैल भमभम करतं मसरं तवा करै। पछै कुतरं रफोरे चढ़ै। आखी रातर जप न्हें पड़वा देतं हैं। अेक दन तौ हड़कायु कुतरु आव्यु अतु के हुं तो आखी रातर कुतरं भौक्यं अतं।

कचरा सांमु जौईने लखमे पूछ्यु 'हड़काया कुतरा ना हुं लखण ओय?'

कचरो मुंडा माते रमोझ लावतो थको बोल्यो 'हड़कायु कुतरु बीजं ने केड़वा दौड़े। मनखं ओय के सोपु। मुंडा थकी लार नेकरै। भमतु थकु दौड़े नै नेंचे पड़ी जाय। अैणी लार मांय रेबीज वायरस ओयं। रेबीज वायरस जैने खून मांय जयं अैने हड़कवा उपड़े। टेंम माते टीका लगवाड़ी दो तौ कोय न्हें थाय। म्हारी ब्हेन ने गांम मांय हड़कायु कुतरु तण मनखं ने चोट्यु अतु। 'बे जणै पेट नी डूटी माते टीका लगवाड़ी दीधा। अेक आदमी बे दन पूठै ग्यो अतो तै दवा खतम अती।' बीजे दवाखाने न्हें ग्यो ठसक मांय रई ग्यो। अैने हड़कवा उपड्यो। हांकेर थकी बांधी दीधो अतो। अवे तौ मनखं जागरूक थई ग्यं हैं। अवे तौ दवा भी दवाखाने न्हें मले तौ दुकाने मली जाय है।' वातै करतै बे वाटं नं बेवटं आवी ग्यं। बे जणै आपड़ी वाट हाई लीधी।

लखमो काम माते आवी ग्यो अतो। मजूर रासं लईनै काम करतं अतं। तईवरै आखला गुदा वजू ताडूको सांभर्‌यो 'अेकतरे नै चौथे दाड़े मोड़ो आवे है तै म्हारै कारीगर खोटी थयं हैं। काल थकी आवै नखै। बीजो आदमी करी लयं।'

धीरे–धीरे अचकातो थको मजूर बोल्यो 'आजे म्हारै सोपं नी कोड मांय कुतरु पेही ग्यु अतु। कोड़ ना खोणा मांय जाईनै बैही ग्यु अतु। काड़वा जातं सांमु केड़वा आवतु अतु। बे आदमीयं ने हाद्यु तारै जैम तैम करीनै काड्यु। ई उपलाफला आड़ै ग्यु। कुंण जाणै हड़कायु अतु के हुं? जतै–जतै नानी रेड़ी ने बचकू भरतु ग्यु। रेड़ी ने दवाखाने लईनै जऊं हूँ। आजे कामे न्हें आवु अैम कैवा आव्यो हूँ।'

उपलाफला नुं नाम कानं मांय लखमो घभराई ग्यो। आखा डीळ माते झाबं–झाबं थई ग्यं। कुतरु म्हारै गांम आड़ै ग्यु है। वालकी ने ताव आव्यो है तै ई हुती औगा नै छोरं बायणे रमतं ऊंगा। कमाड़ हाचवीलु ओय तोय हाटीयुं नुं है। नै अेक ठेंकणे टूटीलु है। घर मांय पेही ग्यु तौ? हेता डील माते सरोरीया चढ़ी ग्या। अजुरीयो झाटकी नै मुंडू लुयू। अेक मजूर ने केई ने घेरै जवा नेकरी ग्यो।

गाड़ा वाटे जऊं तौ घणुं लांबु पड़े। अैटले पगवाटे खेतरं वेचै दौड़ माड़ी। थाकतं मांय धीमो पड़तो। पोगं मांय ठारा पड़ी ग्या। कुतरा नी याद आवतं मांय पाछो जौर लगावी ने डोट मारतो। घर गांम ना झांप मांय अतु। आंगणा मांय पूग्यौ तारै ऊभो र्‌यो। कमाड़ हाचवीलु अतु। धको मारी ने उगाड़ी ने हांपतो थको घर मांय पैठो वालकी टूटी खाटली माते घुसो ओढ़ी ने गोसरु वराई ने हुती अती। कमाड़ नो टुआंटो थतं मांय घुसो उगाड़ी ने जौयु। घरवारा ने देखतं मांय भभड़ावी ने ऊभी थई गई। अैने फाळ पड़ी गई तै कोय बोलणु न्हें। हुका लाकड़ा वजू ठट ऊभी रई। हांपते थकी लखमो बोल्यौ 'छोरं कैयं हैं?'

ताव थकी हहड़ती लखमा ने देखी ने वालकी डसराई गई अती। मुंडा थकी हा न्हें नेकर्‌यो। हाथ ना इसारा थकी रमतं छोरं वताड़ी दीधं। पछे फुटा हांडला जैवी वायका वालकी ने मुंडा थकी नेकरी ''तमै हांपी केंम र्‌या हौ? कोय वात थई है के हूं? परहेवे थकी तमारं छेतरं पलरी ग्यं हैं नै मुंडा थकी रैला र्‌या हैं। बैही जौ खाटला माते।'

बायणे वाट आड़ै निगै नाखी ने लखमो नेंचे बैही ग्यो। वालकी अे कळीयो भरी ने पाणी आल्यु तौ अेक हा मांय पी ग्यो। मन मांय सांति पड़ी तारै बोल्यौ 'म्हें वात सांभरी है के आपड़े गांम आड़ै हड़कायु कुतरु आव्यु है। तनै ताव आव्यो है नै छोरं आमनं तैमनं फरतं ऊंगा तौ किये कुतरु केड़ी खाई ग्यु तौ उपादी थायेगा। अैटले काम माते थकी दौड़तो थको आव्यो हूँ।'

पाहे बैही ने वेजणे थकी वायरो करती

वालकीये क्यु 'अटला आखा केंम बीयो हौ? गांम मांय अैवु कुतरु आवे तौ बोमाबोम थई जाय। दांम मनख सैती जयं। तमैं स्हैर ग्या अता तारै रातरे कोक आव्यु अतु। गांम मांय मनख जागी ग्यं अतं पण कोय देखणु न्हें। मुखी ना कुतरा ने कान माते केड़ी खाई ग्यु अतु। उठो न्हाई नाखो। डील नो मार वेराई जाय।

लखमो न्हावा सारू ऊभो थ्यो तौ गांम मांय काहाबोह सांभर्या। बाण्णे नेकरी ने जौयु। एक आदमी दौड़तो जता अतो। अैणे केयु के हड़कायु कुतरु आव्यु है। लखमे हाथ मांय लाकेड़ लीधी। वालकी ने कमाड़ भीड़वानुं कैतो थको मनखं कने पूगी ग्यो। मनखं नो मेलो थई ग्यो अतो।

सोपं बांधीला डागरा नेंचे ऊं नेकरी ने कुतरु पाहे घरा ना टूटीला कमाड़ ने माथु मारी ने मांय पेही ग्यु। घर मांय खाटला माते जापा वारू बईरू हुतू अतु। कमाड़ ना काणा थकी जौयु तौ खाटला नेंचे बैठू अतु। अैणा घर नं छोरं ने आदमी आंगणे सीहासी करै नै घर मांय बईरू रौवे। बईरा ने लगार कमाड़ उगाड़ी ने इसारा थकी समझावी दीधी। आंगणा मांय आदमी लाकेड़े नै दामणा ना फंदा लईनै ऊभा अता अैणं ने छाना करी दीधा। कुतरा ने काड़वा कुंणे घर मांय पेहवा त्यार न्हें थ्यो। कुतरु खाटला नेंचे लबड़ती डोरीयं ने मुंडे थकी खेंचे ने खाटला ना पाईया सांमु डाचू मारतू अतु।

तईवरै माथा माते धोरो फेटो, धोरू धोतीयु नै धोरू कमीज पेरीलु हाथ मांय बंदूक लईनै मुखी खेमो काको आवी ने मूंछे आमरता थका बोल्या 'कैनुक नुं पालतू कुतरु औगा तौ लफरू थायेगा। पुलिस ने फोन करो।'

अेक आदमी बोल्यो 'पुलिस ने फोन कर्‌यो तौ उतोर मल्यो के आमै मनख पकड़ं हैं कुतरं न्हें। आ काम वन विभाग नुं है। वन विभाग ने घंटी करी तौ रोकड़ो जवाब मल्यो के कुतरु जंगल नुं जिनावर न्हें है। सोपं ना डागटर ने हादौ। सब बीजा माते ढोरै हैं। गोर जैवु मीठू उगते तौ वना नुंतरे माखं भमतं।'

बंदूक कांधा माते हाईनै मुखी बोल्या 'तमनै पुरी खबर है के कुतरु हड़कायु है। न्हें तौ जीव हत्या थायेगा।'

बीजा गांम थकी आवीले आदमी अे क्यू 'होव! आ हड़कायु कुतरु है। अमारै गांम मांय घणं मनखं नै सोपं ने कैड़ी ने आंय आव्यु है। हंता कुकड़ी करे है ई तमैं देखता नती। तमारै पारेला कुतरा ने हड़कवा उपड़े तौ ई भी तमनै कैड़ी खायेगा। कारैये भरोसे न्हें रैता। आ सब आदमी कुतरा ने हाईनै बांधवा नुं करी र्‌या हैं। ताकि वधारै वगाड़ो न्हें करे। कोसीस करते थकी भी मरी ग्यु तौ भगवन नी मरजी।'

मुखी अे क्यु 'तारे पछे तमैं बाण्णे वोर ना हकाईया थईनै केंम ऊभा हो? अेक कुतरा सांमा सब हिजड़ा बणी ग्या। बंदूक नो भड़ाको करी दऊं पण मांय जापा वारी बाई है। म्हारै मोती ने लावु तौ फैंदी नाखै पण बायणे काड़ो तारै।'

ठाबे आदमी अे डाबा जमणी निगै नाखी पण जोवान छोरो कुणे न्हें अतो। पछे लखमा ने क्यु 'तू घर माते चढ़ी जा। थापड़का ऊगाड़ी ने वांहडा थकी गोखो मार। कमाड़ उगाड़ू राखं अबार नेकरी जाय।' लखमा ने ना न्हें कैवणु। घर माते चढ़ी ग्यो। थापड़का उगाड़ीनै लांबो वांहडो उतार्‌यो तारै कुतरु गार नी कोठीयं वैंचे पेही ग्यु। कोठीयं कने थापड़का उगाड़ी ने वांहड़ा नो गोखो मार्‌यो तौ काऊ-काऊ करीनै बैही र्‌यु। फेर गोखो मार्‌यो तारै काऊकेड़ा करतु घर मांय थकी हेंसणा वजू नेकर्‌यु तै बाण्णे हाथं मयं फंदा ने लाकेड़े लईनै ऊभा अता अैणं ने हाथं मांय रई ग्यं। सब आम तैम फापं मारवा लागा के कई आड़ै ग्यु।

आदमी आम तैम जौता अता तईवरै मुखी ने घेरै कुतरा ना काऊकेड़ा सांभर्‌या। मुखी नो पारेलो कुतरो मोती वाघ जैवो जबरो अतो। गांम नं कुतरं अैने देखीनै भौंकतं छानं थई जतं के नाही जतं। मनखे जाण्यु के मोती अे कुतरा ने आडू पाडी नाख्यु। पाणी ना हेंडोरा वजू दांम मनख अैयं पूगी ग्यं। मनख जातं मयं कुतरु चढ़ाव थकी मेढ़ी माते चढ़ी ग्यु। हांकेरे बांधीलो मोती भौंकतो अतो। अवे मुखी नी हलवणी। ठसक ना भरीला सब ने डूखरावता अता पण अबार अैणं नुं धोतीयु ढीलु थई ग्यु अतु। तईवरै मनखं मांय थकी आवाज आवी 'मुखी नो मोती छोड़ी दो। अबार खेंची ने नेंचे लावे।'

जे गांम वारं ने टरकावतो नै मोटी-मोटी सुलतो अतो अैने पोगं मांय पड्‌यु तौ मन मांय जाळ फूटी गई। करोध थकी बुटकारो करीनै मुखी बोल्यो 'कुणं है रै? अेक फरो फेर बोलजै। तमारै हेत्त नी फाटे है नै मोतीया नी वात करो हौ। लखमा ने क्यु-तू रेहणी लावी ने गोखड़ा थकी मेढ़ी मो चढ़। तनै हटूटी है। जै उपा करवो पड़े ई करीनै कुतरा ने नेंचे उतार। म्हूं नेंचे बंदूक लईनै ऊभो हूं। आजे अैनुं म्हारै हाथै मौत है।''

गरीब नी वऊ गांम नी भाभी। लखमा ने फेर आफत आवी। मनखं सांमु ना हरतै कै। रेहणी मैली ने कांपतो थको ग्यो। मुखी अे मनखं ने अेकी आड़ै करी दीधं। हाथ मांय बंदूक हाईनै ऊभो र्‌यो। पगतिअं थकी काऊ-काऊ करतु कुतरु अतरतु अतु। मुखी अे जाण्यु के दौड़ी ने नाही जाहै। अैम करीनै नेंचे वारा पगतिअ थकी च्यार हाथ मौरे भड़ाको कर्‌या। कुतरु पगतिअं कने पैल अथड़ाई पड्‌यु अतु। बंदूक ना धमाका थकी उठीनै नाही ग्यु। वांहे आदमी दौड्‌या। गांम बाण्णे थुवोर नी वाड़ ना फाके थईनै डूंगरी नी झाड़ीय मांय पेही ग्यु। आदमीअं ने सांती मली के गांम मयं कोय वगाड़ो न्हे थ्यो। कुतरा वांहे धागड़ीयो करतै अंधारू पड़ी ग्यु। आदमी पाछा अता तईवरै वात मली के मोती तो मुखी ने कैड़वा दौड़े है।

दांम आदमी मुखी ने घेरै आव्या। अैणं नुं मुंडू उदासी थकी विलाईला फूल वजू थई ग्यु अतु। मोती हांकेर कैड़तो ने घड़ीक कुंडारा मांय फरतो जाईनै भौंकतो। सब ने खबर पड़ी गई के हड़कवा उपड्‌यो है। हड़कवा सबद नो अरथ आजे मुखी ने हमझ मांय आवी ग्यो अतो।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
किसनपुरा रोड, सीमलवाड़ा,
जि. डूंगरपुर (राज.)-314403
मो: 9783371267

रेल

❒ रामस्वरूप रैगर

सब मिलकर खेलेंगे खेल
चलो सब बन जायें रेल,
पो! पो करती सीटी देती
सबको मंजिल तक पहुँचाती,
सबके गाँव घरों से आती
संग में सारी खुशिया लाती।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय आ.उ.मा.वि., इयोढी
सांभरलेक, जयपुर
मो. 9079234256

मरुधर में घणमोल मोर

❒ ईसराराम पंवार

मोरां सू मतवाली धरती मरुधर भारत देश मांय आपरी अलग पिछाण राखै। मरुधर मांय घणां पंछी वास करै, पण मोर मरुधर में घणमोल है राष्ट्र पंछी मोर ने केकी, मोर, मोरियो, मोरो, मोरूड़ो, नीलकंठ, मोरराजा, मोरध्वज, मोरधन राजा आद नाम सूं पुकारीजै। मोर घणौ सुंदर पंछी है मोर तालर-मगरा तलाव रै पाड़ै घणकरा देखीजै। रात रा झाड़ रै माथै विसराम करै। मरुधर में मोर रो घणौ मैतव है। मोर राजस्थानी संस्कृति रो अभिन्न अंग है। कई साहित्यकार, गीतकार आपरी कलम सू मोर रो बखान करियौ। मरुधर में लुगाइयां आपरै घर री भीत माथै मोर रा मांडणा मांडै। मरुधर में घणकरां रो नांम भी मोरा, मोरकी, मोरी देवी, मोरध्वज, मोरधन राखै। राजस्थान रै हर जिला में एक आध गांव रो नांव भी मोर माथै मिले। जोधपुर में रोहट माय मोरियो गाँव, जालोर जिले में मोर सीम गाँव है। जोधपुर रै किला रौ नांव भी पैला मयूरध्वज गढ़ हो। मारवाड़ में पैला लुगाइया माथौ गुंथावती जिणरौ एक प्रकार मोर मिंडी हो। एक वाद्य यंत्र जो मरुधर रै धोरौ मांय घणौ वाजै 'मोरचंग'। मोर री वाणी तो घणी व्हाली है। मोर माथै घणी कहावतां, दोहा, मुहावरा है ज्यौं-मोरिया रा पग करणा।

- कांकरा कंवला व्हैता तो मोरिया कदै ही चुगता।
- मोरिया बोलाया।
- मोर मारियौ, मन रा मोर नाचै
- मन रा मोर बोलै।

घर-घर प्रवेश द्वार, फाटक, ट्रेक्टर री ट्रोली माथै मोर रा चित्राम बणावै। समन्दर हिलौले जद माटौ लावै उण माथै ही मोर रा फूटरा चित्राम उकेरै। लुगाइयौ रै पहनावा माथै ही मोरिया रा चित्राम भांत भंतिला बेल-बूटो साथै उकैरीजे।

मोरिया माथै कई गीत है

- आबू रै पहाड़ौ मांय मोर बोलै।
- मोरुड़ा फागण महीने मीठो मीठो बोलियौ
- मै न म्हारा जेठजी मोरियो पालियौ
- ठाली भूली जेठानी मोर मारियौ
- मीठी वाणी रो वा वा मीठी वाणी रो
- मोरिया मोटोड़ी छांटो रौ बरसे मेह
- मोरिया बोलियो रे सिल्लर भरिया तलाव
- आज ध्रुव ने धुंधली रै मोरिया
- मोरिया रै जठै चौमासो लागौ रे
- जठै सियालौ लागौ रे
- मोरया पीउ-पीउ री वाणी छोड़ दे

घणकरा गीत मरुधरा माथै गाळीजै।

विदाई री वेला रो एक गीत-मोरियो ए मां, म्हारी काकोसा री भतीजी चाली सासरै हो मां।

मोरियो गायों गीतों रो छेह आयो।

खेती में सबसूं अंत में खेत रै दोनों ओर हळाव ने मोर सोम कहै हा। मारवाड़ी में मोर सांय एक कहावत बणगी मतलब काम पूरौ व्हियौ।

5, संजाड़ा रोड़, देवनगर मजल
तह. समदड़ी, बाड़मेर- 344021
मो: 9983413969

म्हारो देस सगळा देसां सूं न्यारो है

❒ ओमदत्त जोशी

म्हारो देस सगळा देसां सूं न्यारो है,
इण रो कण-कण म्हाने जान सूं प्यारो है।
इण मांये लुक्योड़ी अगणित कुरबानी है,
इण रा इतिहास मांये दब्योड़ी
वीरांरी कहाणी है

औ लागै म्हाने पियारो अर दुलारो है,
औ देस सगळा देसां सूं नियारो है,
इण रो कण-कण म्हाने जान सूं प्यारो है।

वेदां मांये दरसन, जोतिस, परकीती पूजा,
रीसी-मुनियां रा ग्यान री समता करै नी दूजा।
भारत री संस्करति मांये अजूबो मेला है,
वेद, आसरम, वरण, पुरसारथ रो भेल है।

म्है इण रा हाँ और औ म्हारो है,
औ देस सगळा देसां सू न्यारो है,
इण रो कण-कण म्हाने जान सूं पियारो है।

पर सेवा खातिर अपणी काया रो दान कर्‌यो,
जग मांये नी कोई मिनख जो इस्यो
अणूतो काम कर्‌यो।
निसुवारथ अर धीरता री अजब कहाणी है,
इण री लुलताई ने आखो जग सनमानी है।

इण री नदियां रा इमरत सूं ही उघ्घारो है,
औ देस सगळा देसां सूं न्यारो है,
इण रो कण-कण म्हाने जान सूं प्यारो है।

वेदां री रिचांवा सूं देवां ने रिजावणो,
रोजा मांये सहरी रा मीठा बोल सूं गावणो।
गुरु ग्रंथ साब री वाणी लागै सुहावणी,
ईसा री पराथना करै परेम री बरसावणी।

भाँत-भाँत रा धरमां रो अजब निजारो है,
औ देस सगळा देसां सूं न्यारो है,
इण रो कण-कण म्हाने जान सूं प्यारो है।

गीता रा ग्यान अर कुरान रो इमान है अठै,
ईसा रो परेम, महावीर री अहिंसा
रो गुणगाण है अठै।
बौद्ध री दया अर सतसीरी अकाल
रो गुंजान है अठै,
सगळा धरमां मांये सहिसणुता
रो बखान है अठै।

इण मांथे निपजी वनसपतियां
जीवण रो सहारो है,
औ देस सगळा देसा सूं न्यारो है,
इण रो कण-कण म्हाने जान सूं प्यारो है।
औ देस सगळा देसां सूं न्यारो है।

'साहित्य-सदन'
वर्द्धमान कॉलेज के पास, ब्यावर, अजमेर
(राज.)-305901
मो: 9309353637

कूंत - एक नवोदित कवि री

❒ शंभूदान बारहठ

सत ऊजळ संदेस, उदेराज ऊजळ अखै
दीपै वांरा देस, ज्यांरा साहित जगमगै।।

सूरां पूरां री धरती राजस्थान अठै रणवीर भी हुया तो कवीसरां री खाण भी मरुधरा रहती आई है। मायड़ भोम अर भाषा दोन्यूं री जोत सदा चेतन। केई कवीसर नामचीन हुया तो घणकरा कवियां आपरी फूल पांखड़ी मायड़ भाषा नै चढ़ाय सरावण जोग काम तो कियो ई।

इणी पंगत में राजस्थानी री सेवना रौ एक खिलतो महकतो पुहुप भाई ईसरा राम भी। कवि हृदय ईसरा राम पैशे सूं शिक्षक, पण मरुधरा री माटी री महक यां रै अंतस में ऊण्डी जमी थकी। यां री कवितावां मरुधरा री प्रकृति, रूंख, रीतां अर गीतां री उण्डी ओळख राखै।

एक-एक कविता निजरां सांमी सांप्रत चित्र उकेर देवै। कलम री कोरणी यां रै हृदय पक्ष नै संजीवण कर सांप्रत दरसाव री मठोठ राखै। सिरजण री सीर भरी यां री कवितावां में कवि रौ अचूंभौ सगळां ने सोचण री लवना जगाय देवै-

हालरिया, फागणिया,
मनवारां रा, सिणगारा रा,
अणगिणत गीतड़ला
मायड़ भाषा में।
अचरज औ है
कुण हौ इण गीतड़ला रौ
सिरजण हार!

एक बानगी औखं देखण अर गुणण जोग-

कुण रोपियां रूंख?
मेह बरसियौ-
म्हूँ बैठ्यौ जाल नीचै
देखूँ-ऊग्या नैना-नैना नीम
ठा पड्यौ-
धरती बीज नीं गमावै।।

नवोदित कवि भाई ईसराराम री कवितावां में भी मायड़ भाषा री रीतां चीतां सांप्रत सै' चन्नण हुवती लागै-

डीकरी नै दी सीख-
लुगायां मोरियो गायो।
गीतां रौ छेह आयौ।
वा बेटी बोली रह-
घर री मेलो,
अर पराई ल्यावो।

कवि री कवितावां रौ कलेवर सफा छोटो पण अरथाव उण्डो अर मोटो। पाठक री चेतना नै जाणै झंझोड़ तो सो-

नई नेवली नार
नीपी फूटरी गार
इण आंगणै!!
दादी सुणायी कहाण्यां, औखाणा
गाया हालरिया,
बखत रै मुजब।
आकार अर रूप बदलग्यो
रीत रो रायतो हुय्ग्यो।

इण रीतां नै चीतां तो नुवी पीढ़ी नै नीं तो हालरिया री जाण अर नी काबर पंखी री पिछाण। वो तो चमगूंगो होय इण ने पुरातन री पोटली मान बैठै।

कुदरत री मरुधरा री इण आबो हवा नै आज री दौड़ती हाण-फाण जिनगाणी रा जवानां नै नीं तो ओरण री ठा पड़ै, अर नीं तोरण री-

ओरण-
सिल्लर भरयो तलाव।
घण करा ऊभा झाड़
रोहिड़ा, खेजड़ी, बोरड़ी, जाल।।
गाउर बकरी चरै-

रातो साफो,
हाथ मांय डांग
नीचो भाल
लारै ऊभो एक ग्वाल
इण ओरण मांय।।

ईसरा राम री कविता में मरु भोम री सौंधी महक है। काळ-दुकाळ अबखी झेलण री जीवट सिरजणा है-

बोली तामणी सुणले डोयला
क्यूं नी खीच पकोणा-
के कोनी पाक्या दाणा।
मारवाड़ सूं गया मालवै
घणा-घणा घराणा-
के कोनी पाक्या दाणा।।

आयै बरस अकाल री आ अबखी मरुधरा री थाती बण बोलती सी लागै-इण नै कैवै इतिहास री पैणी पिछाण। प्रकृति री पकड़ आप री न्यारी ओलखाण करावै। यां री मुक्त छन्द री कवितावां में भाव, भाषा, मठोठ अर असर च्यारूं एकण सागे देखी जे। कुछ एक हाइकू शैली री पंक्तियाँ में भाव री भरमार अर व्यंग्य री बानगी दोन्यूं एकण सागे मिलै-

नेता-
कर-कर झूठा वादा
लगाय रह्या है
बावळियां रै बोर!

राजस्थान री रम्मतां आज रा बालकां में अलोप ई हुयगी। पण कवि रै बालपणा रा खेल वां री कविता-'वडेरां रा खेल' में फेरूं ओळखाइज्या है-

अळी गळी सतोलियो, झण्डा बूटी जाळ।
गिल्ली डण्डा, बावडी-कबड़ी रमता खाल।।

कैवण नै घणी बातां। पण शब्दां री ई एक सीमा हुवै। भाई ईसरा राम रौ मायड़ भाषा राजस्थानी रौ औ पैलड़ौ प्रयास अणूतो उजास भर्यो। माँ सरस्वती यां री लेखनी नै कलम री कूंची नै, समाज री परख नै, संस्कृति री ओळखाण नै यूं ही बणाई राखै।

व्याख्याता
रा.उ.माध्य.विद्यालय, गुढ़ामालानी
मो: 9413507922

जग चावो थळवट रो पशु मेळो-तिलवाड़ा

❐ हनुमान सिंह भाटी

राजस्थान री थळवट धरती बाड़मेर। इणी रै उगूणै कांठे मरुधरा री गंगा लूणी रौ बहाव। चौमासा री टेम बांडी सूकड़ी अर जोजरी तीन्यूं बरसाती नदियां भी आपरौ उफाण लूणी मेलो कर सांयत करै। नय्यड़ रै इण कांठै गोहिल राजपूतां रो तीरथ धाम रहयो रणछोड़ राम मंदिर। अर इणी सूं जुड़तो गाँव तिलवाड़ा। मारवाड़ रौ मशहूर पशु मेले री जगजावी धरती लूणी कांठौ। सन्त अर सूरमा रै परचे रा धणी रह्या मल्लीनाथ जी रा नाम सूं आयै बरस चैत महीना में इण रौ जस आज सूं कोई दोय दशक पैलां तांई तो ठरकै वाळौ रह्यौ। पण प्रशासन की अनदेखी अर खेती रा कामां में पशुधन री जरूरत अबे नीं रैवण सूं इण मैळै री मठोठ मगसी अर मथरी पड़ती आज लकीर री फकीर बण नै रैयगी। तिलवाड़ा पशु मेळे री राजसी दिल्ली अबे फकीरां जोगी हुयगी। तो इणी भगती अर जुगती री जुनी राजधानी भड़कोट रै भिड़तौ भक्तमाल राणी रूपांदे रौ, मन्दिर-पाळियै नाम सूं न्यारी निरवाळी ओलख बणी थकी। वो ई टैम हौ अर वे ही बातां। होली बीततांई बळदां, ऊँटा रो टोळा अर काठियावाड़ी घोड़ा री रेलम पेल गाँव गळी गुवाड नीसरती निगे आवती। नागोरी बलदां रा डील माखी पितल कै जिसा चीकणा मतवाला। मालगाड़ी रे डिब्बा में तिलवाड़ा मेला में पूगण सूं पैला केई केई टेसणां पे बलद अर घोड़ा भर्‌या-भर्‌या धणियां सागे निजर आवता। सरकार री तरफ सूं भी मेळा मैदान तांई रेल लाइन पूगती करयोड़ी।

मेळा रै मैदान में देश रा हर खूणा री नामचीन चीजां, सामान बिक्री सारू दूकांना री लैणा लागती। पुलिस रौ पुख्ता बंदोबस्त तो खावण-पीवण अर नाचण-गावण री तंबू वाली दूकानां सज-जावती गैणा गांठा नै किराणा री बिकरी भरपूर हुवती। नामचीन सोनी जी खुदरा पोहरे दारे सागे सोने चाँदी री गहणा री दूकानां भी सजावता। जाबता सारू जोखिम री चीजां जमी में बक्सो गाड़ नै माथे सेठ आपे आप सूबता।

सन्त सूरमा मल्लीनाथ जी रा परचा सूं नदी री बाळू में खुराळी करतां पाण पीठो पाणी त्यारा इणी परचे रै कारण मेळै री महिमा दिनो-दिन चौगणी पसरती गयी। पाणी तो अबे भी नीकळौ पण फैक्टरियां रा एसिड रै स्वाद वाळौ। राज नै इणी कारण पाणी रौ दूजो जुगाड़ करणौ पड़ै।

भांत-भांत री मिठाइयां में एक महाराज ऐडा भी जिका ऊकळता पाणी में बूँदी बणाय चासणी में डुबोय नुगती रा लाडू मूंगे भाव बेचण में पाटक दैखीज्या। तिलवाड़ा मेळे री मोटी मिसाल सेक्योड़ा चणा अर मीठा झीणा मखाणां री भर पेट प्रसाद। जातरू आं रौ भोजन अर टाबरां सारू सैलाणी। अबे फकत बातां रैयगी है। भैंस भादरवौ चीतारै तो आज ई ढौलै बैठ जावै। इणी जग जावै पशुमेळे री आस्था भरी भक्ति सूं सराबोर सांवरिया री शरणां पूगण री विगत री ई जाण पड़णी सिरे रहसी।

जैसलमेर भाटी पैरी धीयारी रूपांदे। सात भाइया री एका-एक बैनड़ी रूपांदे रा भाभोसा छेहली बार साठ घोड़ा दान करण री विचारणा करी तदई सांसा छूटै। भाई तो पांछा फूरग्या पण रूपांदे कौल वाचा देय दिया। मरदानो वैस धारयां काठियावाड़ जाय पूगी। भडकोट गळाकर नीसरतां जसोल रा रावल मल्लीनाथ सूं भेंट का हुया। रावळ इण प्रण ने पूरण में मददगार बणण री मंशा दरसायी। काठियावाड़ पूग्यां डीगी भींता में बांध्योड़ा घोड़ा देखीजिया। रूपांदै कह्यौ- घोड़ा आप खुला करौ, टोळ नै म्है ले जासूं। रावळ इण काम मैं अबखाई देख कह्यौ-बांडा में तो आप बड़ौ, घोड़ा-हाँक मैं (म्हैं) ले जासूं। माळा सूं मोह राखण वाळी रूपांदै बाड़ा में ऊँची डाक देय कूद पड़ी। सांकळा में बंध्या घोड़ा खोल-खोल ने बाड़ा बारै कर्‌या।

मल्लीनाथ जी तो फटकारै घोड़ां ने हांक लगाई। रूपांदे लारै-लारै हवळै-हवळै टुळी। पक्को धीजो हो, कै लारै वार तो आवणी ई है। सेवट यौई हुयौ। वार आया काठियावाड़ी बूझ करी तो घोड़ा धकै टोळीजण री जाण पड़ी। अबै तक तो घोड़ा अळगी भांय पूगग्या होसी। रूपांदे ई प्रस्ताव राख्यौ के घोड़ा लेजावणियां थांरी नीजरां में। यूं ही म्हारै सागे चालता रहो। पण मांरी एक शर्त रहसी। म्हैं तो ठहरियौ निबळौ बंधाणी पंथी। हाँ, जे म्हारां वायौड़ा तीर ने इण झाड़ सूं जे थां में सूं कोई बारै काड दैसी तो म्है थांरौ सांगो करणे त्यार। किणी री हिम्मत नी हुयी। सेवट काठियावाड़ी हार-थाक पाछा वळ्या। इण भांत राणी रूपांदे आपरै-भामल री छेहली मंशी पूर साठ घोड़ा दान कर्‌या, अर वारै जीव ने मुखोत्तर रौ मारग बतायौ। घणा दिन बित्या मरदाना वेश में रूपांदे एक तळव किनारे संपाड़ौ कर लेवण री विचारी। ओठौ तो घणौ ई लियौ, पण नाड़ी री उण पाळे कोई छोरां उण नै जनानां रूप में जौयी ली।

फटकै आय मल्लीनाथ जी ने उघाड़ कर्‌यौ के आपरै सागै तो मोट्यार सांप्रत नारी है। मल्लीनाथ जी रो मन नी मान्यौ तो, ऊभा हौय निजरां सांगै बात देख ली। अबे तो रूपांदे भी खुद ने धरम संकट में देख मल्लीनाथ जी सूं ब्याव री हामल भरी। पण आमी सामी हुवतां रूपांदे तो मल्लीनाथ जी ने साख्यात सिंघणी ई देखी जी।

अर कोई देवी रूपमान मल्लीनाथ जी रौ मन मगसौ पड़ग्यौ। पण रूपांदे कह्यौ म्हांरी माळा अबोट बणी रहवै, इण सांरू आप मनांग्याना तो म्हारा भरतार हुयग्या, पण ऐ कौलवाचा अबै आगला जन्म में पूरा होवैला। म्हैं दूधवारा ठाकरा रै घरे धीवड़ रूप में आप ने पाछी मिळु ला अर आपने म्हनै पिछावणी पड़ैला।

समाजोग सूं रावळ मल्लीनाथ दळ-बदळ सांगे उणकानी निकळिाय घोड़ां रौ पावरौ कम पड़ग्यौ। खेत रै से बीच एक कन्या ने समचौ मैल्यां कन्या फेरू एक शर्त रख ली। रावळ आपौ-आप पावरौ मांडे तो सगळां री भरपूर आय भगत। सेवट हार-थाक रावळ पावरौ मांग्यौ अर सामी निजरां हुवता पूरबला गठजोड़ री जाण पड़गी।

रूपांदे राणी बण जसोल महलां आयी, पण वा तो भगती अर-मूगती रा मारग सारूं ई जलमी ही। ज्यूं-ज्यूं आपरा गुरु मेघ री संगत जागण में जावणौ तो जावणौ। ईसकाळी सौत राणियाँ चुगली खायी। सबूत सांरू चाकर सागै रूपांदे री सोन-तारां जड़ी एक पगरखी चुरवाय ली।

मल्लीनाथ जी महला जाय जांवै तो रूपांदे री सेज छाब-भर्‌यौ-वासक नाग पौढ़्यौ थकौ। रीस खांय मल्लीनाथ जी लारै गया। गुरु मेघ सूं परसाद री थाळी लेय पाछी महलां वळती रूपांदे सूं भेंट का हुयां-तुमार जौवण तरवार री नोक सूं थाळी उघाड़ जोयी तो मायं भांत-भांत री सो-रभ वाळा फूल पुष्प भर्‌योड़ा।

अठै आये मल्लीनाथ जी हार मानी, अर उण मारगरी मांग करी जीण मारण सुरग री सोय सोरी होय सकै। रूपांदे वाने गुरु मेघ घारु कनै ले जाय दीक्षा दिरायी। आ ठौड़ वो पाळियौ (स्थान) जठै दोन्यू जणां भगती रै बळ सुरग रा सांवेला रूपांदे री माळा रे बळ पूरीजिया।

आज ई तिलवाड़ा गुरु मेघ घारु अर भरडकोट रे कनै वा ठौड़ पाळियौ कही जै, जठै भगतीमती रूपांदे खुद तो मोक्ष पायो सागै-सागै आपरा सुहाग ने ई सुरग सोय कराय परचौ दियो।

आज ई जस ऊजल धरती जसोल रा रावळा में विरद गावतां मिरासियां रै मूंडै ऐ बोल सुणी जै-

भगती जस ऊजाळि्यों रूपां रावळ दोय।
तिलवाड़ा धर ऊपड़ै पशु मेळै हर कोय।।

से.नि. भूगोल शिक्षक
मोहन बाल निकेतन, आहोर
मो. 9414544673

मनख जमारो सुधर जायलो
करल्यो पढ़ाई।
पोता पत्यां नै समझावै
बैठी धापली माई।।
खाखला अर नीरणी की
बाँधली पोटां।
अब तो जाबाद्‌यो स्कूलां
खुलसी ज्ञान की पोटां।।

– गोविन्द 'निर्मल'

ह्विड़े तोल

❒ पूरणमल तेली

हगळा मिनख आपणी-आपणी हमझूँ पूरा वेणा छाइर्‌या, कणी न कणी अधूरापणाऊं वे दोरा है। दोरा वेन वे आकाइ मिनख जमारा रा लखण लेणा छावे विंका वाते वे घणा-दोरापणा में लाग्या रैवे। घणा मिनख अस्या बी है जो वे आपणा दोरापणा मइने भूलबा भटकबा अर अणजाण की जाण बी नी है। वे हमेश्यान दोरापणो करताइ जार्‌या अन थाक'न विसामी लेणा छाइर्‌या। वां मिनखां ने विसामी को ठाणो न विसामी को टेम की नंगेइ कोइनी।

घमण्डी मिनखां ने आपणा दोरापणा रो फळ नी मळे जदी वे घणा दुखी वे जावे अर जदी कणी अन्धारी भाग उं फळ मळ जावे वदी आपणा दोरापणा निस मानर आपरां घमण्डुं घणो राजी वेवे। पण घमण्ड करबा वाळो मिनख भलइ हमेश्यान राजी होय'र हिवड़ा रा गीत गावे तोई वो जटा तक दाळिदर अर मंगतो इ वण्यो रेवेला वटा तक वणीकि भूल न भटकण अर अणजाण ने नी जाणेला।

आपरां जनम लीदा केड़े आपणी इन्द्रयां जो कई देखे अर देख्या दका का वाते जो कई हुणे वीनिस मन में मान जावे। कणी बी चीजवसत न मिनख के वासते हुणताइ या धारणा वणे अर जो आंख्यां मुं नी देख सके वीका वास्ते हुणता-हुणता अस्या फोटू बणा लेवे। अस्यानीस आपां आपणी मानतावां, धारणावां अरे होसवावां का मोही, लोबी, कामी अर अभेमानी बणन राजीपणां के हण्डे हाथां दोरा वेइर्‌यां हां। धीरज की जगां अधीरज अर स्वाधिन की जगां परवसु वेइर्‌यां। अभेमानुं आपी आपणी अणजाण, भरम अर भटकण ने नी जाण सकर्‌यां।

आपां आपणी धारणाउं राजी रे सकां पण वना पग्सपात करता थका मनड़ा की शान्ति अर सांचापणा ने बी नी हमझ सकां। घणां साधना करबा वाळाउं थोड़ा किस चतमन ऊं बुदि का थोड़ाक भाग मइने अतरो किस हमझ सके के आपां ने जो कई बी भगवान को प्रेम मल्यो है वो तो आपांने आपणीस मानतावां तकिस ढाँक मेल्यो है। अस्यानीस आपांने भगवान को ग्यान मल्यो है वो आपांके अभेमान का थोड़ाक भागुं इस ढंक्यो है। आपांने अणन्त भगवान की जो तागत मळी दकी है वो थोड़ाक संकळपु ढंकी है अर जो जीवणो मल्यो वो बी खतम वेबा वाळो है। आपां बी मिस राजी हां। पण भय, चिन्ता अर अशान्ति ऊं मुग्त नी हां। आपां अभेमान का फोराक चकरा में थोड़ाक भोगबा वाळा वण्या दका हां। अणन्त शाश्वत का जोगी नी वण सक्या। आपांने गुरां ग्यानुं या नंगे वेइगी क जदी एहं रूपी चेतन बिन्दु ने अणन्त चेतना समदां में होसबा लाग जावां तो जटे आपांने थोड़ोक पळ को राजीवेवा बीं जगां शाश्वत सांच का जोग वेई सकां।

आपां बारली नरी चिजाऊं ग्यानी बणर्‌या हां पर आपणां मईला हिवड़ा के वाते अग्यानी इस हां। बारला ग्यान को अभेमान हेलो वेइर्‌यो पण मइने अग्यान घणो वेतो जार्‌यो। बारने जतरी तागत सम्पद अर योग्यता वत्ती वेईरी वतरीज तागतुं तेजगतिऊं मईने हिया कि अशान्ति वदती जारी। घणां साधनावाऊं जीवण में जदी-जदी बारने पईसा वदता गया वदी मइने लोब लाळच वत्तो वियो। जदी पद को अधिकार मल्यो वदी एंहकार अभेमान ओरी वत्तो वियो। जदी कदी हाउ सुख वाळो जोग बण्यो वदी मोह वत्तो वियो। जदी कदी बारली भोग की चिजां वत्ती वी मईली कामना बी वत्ती वी। हमेश्यान यो देखां क वत्तो रैवे वीने भगवान कदी न कदी खतम कर देवे पण मइने जो कई वत्तो वेवे जस्यान्- लोब, लाळच, मोह, अभेमान बधतो रैवे वाने कोई नी खतम कर सके यांने तो आंपानीस सोड़ना पड़े है।

आपांऊं नारो जो कई बी है दूजा के हाथे अर भेळा में एहंकार रे जावे। एहंकार ने ध्यान लगान देखणो इ इने मटावा री साधना है। अणी साधना में दोरापणो नी, शान्ति वेणी छावे; सोचबा की नी वैराग वेणो छावे; कस्याई संगत की नी असंगता वेणी छावे, जो हमेश्यान मल्यो वीने रूकन देखणो छावे। कटी आवा जावा कई करबा की आवश्यकता नी है वो तो हमेश्यान है, हंगळी जगां है, अबाणुं है, अटीस है याईस सनातन साँच परमात्मा है। आपां में निरन्तर जग्या दका है।

प्रधानाध्यापक
सण्डियारड़ा, पो. मुंगाना, वाया-भूपालसागर,
जिला-चित्तौड़गढ़ (राज.)-312204
मो: 9460910799

आस री किरण

❒ रामजीलाल घोड़ेला

पंकज आपरै मा बाप रो एकलो बेटो। उणरी दो छोटी भैणा भी है जकी अबार पांचवीं अर सातवीं मांय भणीजै। दोनूं भैणा पढ़णै मांय हुंसियार। पण पंकज पढ़णै मांय आळसी। आठवीं जमात तो उण डी ग्रेड सूं पास कर लीनीं। पण नौंवी जमात मांय आवता ही ब्रेक लागगी। पैली बरस तो फैल हुयग्यो। मा बाप नै घणो दुःख हुयो। पंकज पूरै बरस आधा दिन भी स्कूल नी गयो। उणरो साथ चौखा टाबरां साथै नीं हो। पण दूजै बरस गुरुजी री किरपा हुयगी अर दसवीं जमात मांय आयग्यो। दसवीं जमात बोर्ड परीक्षा सूं पास करनी पड़ै। कॉपियां भी बारै जंचै। इण बरस पंकज नै बोर्ड परीक्षा रो डर सतावै हो। मा बाप भी उण री चिन्ता करै। पंकज जाणै हो कै दसवीं पास करणी अबखो। पंकज जमात मांय सबसूं लारै बैठतो। होम वर्क कर'र नीं ल्यावतो। कदै उदास आवतो तो आधी छुट्टी मांय फरार हुय जावतो। उणरा एक दो साथी और हा जका उणरो साथ निभावता। पण बै पढ़णै मांय हुंसियार हा।

पंकज नै गणित भणावण वाळा गुरुजी नै डर सतावै हो कै इण बरस रिजल्ट कमती रैयग्यो तो विभाग नै कै जवाब देस्यां। गुरुजी प्रयास कर'र देख लियो पर कीं सफलता कोनीं मिली। इयां गणित वाळा गुरुजी घणां दुखी हुयग्या। आज गुरुजी टेस्ट रा नम्बर सुणावैगा अर कमती आया तो गुरुजी रो ओळमो न्यारो। आ सोच'र पंकज आधी छुट्टी पछै आयो ही कोनी। पंकज रा जीरो नम्बर आया। अगलै दिन पैले पीरियड मांय गणित वाळा गुरुजी पंकज नै हैडमास्टर सा'ब कनै लेग्या। गुरुजी रोळा करणा सरु कर दिया। सा'ब ओ पंकज निकमो है, ढीठ है, होम वर्क कर'र कोनी ल्यावै, पढ़ै कोनीं, जीरो नम्बर आवै। इयां उणा केई उपाधियां पंकज नै देय न्हाखी।

हैडमास्टर सा'ब पंकज कानी गौर सूं देख्यो। बै उणनै आपरै ऑफिस मांय लेग्या। उणानै पंकज मांय आस री किरण दिखाई दीनीं। उणा पंकज नै समझावता थकां कैयो- पंकज बेटा, देख इण बरस तेरी बोर्ड परीक्षा है। बिना मैनत करयां पार नीं पड़ैला। तूं तो समझदार है, स्कूल सूं भागणो समस्या रो समाधान नीं है। तेरा मा बाप तैरे सूं किती आस राखै। फेर तूं ही उणां रो सा'रो है। तूं पास नीं हुयो तो उणां पर कै बीतसी। बेटा, तेरे मांय काबलियत है। बोर्ड परीक्षा तेरे सामणै कीं कोनी। तैरे सूं कमजोर टाबर भी आछा नम्बरां सूं पास हुय सकै तो तूं क्यूं नीं। तैरो पैलो स्थान आवणो चाईजै। इयां हैडमास्टर सा'ब पंकज नै प्रेरित कर्‌यो। पंकज कीं देर तो चुपचाप खड़्यो रैयो अर फेर हैडमास्टर सा'ब रै पगां पड़ग्यो अर माफी मांगता थकां कैयो कै वो आज सूं मैनत करैलो अर पास हुय'र दिखावैगो।

हैडमास्टर सा'ब पंकज नै टाईम टेबल बणाय'र दे दीनो अर उणनै बोर्ड परीक्षा री तैयारी रा गुर बताया। उणा पंकज नै सो'रा प्रश्न पैलां याद करणै अर सगळा विषयां री बराबर तैयारी करणै री तजवीज बताई। उणा पंकज नै हर रोज स्कूल आवण रो अर कदेई गैर हाजिर नीं रैवण रो कैयो। पंकज हैडमास्टर सा'ब नै विश्वास दिरायो कै वो हर रोज स्कूल आयसी अर सगळा रो काम कर'र ल्यासी। पंकज वादो कर्‌यो कै वो होम वर्क वाळी कॉपी हर रोज उणानै दिखावैगो। पंकज मैनत करणै लागग्यो। अबार अढ़ाई महीनां बोर्ड परीक्षा रा बाकी हा। दिसम्बर रै आखरी सात दिनां री छुट्टी रैवे। छुट्टियां मांय पंकज हैडमास्टर सा'ब कनै आ जावतो अर सा'ब उणनै परीक्षा री तैयारी रा टिप्स ई बतावता। पंकज रा मा बाप उण मांय आया बदळाव सूं हैरान हा। अब पंकज देर रात तांई पढ़तो अर बैगो ही जाग'र पढ़णो सरु कर देवतो। पंकज बोर्ड री परीक्षा दीनीं। जून मांय रिजल्ट आयो तो पंकज री खुशी रो ठिकाणो नीं रैयो। मा बाप नै घणो हरख हुया। पंकज पैंसठ सैंकड़ा नम्बर लेय'र पास हुयो। पंकज रै आछा नम्बरां सूं पास हुवण रो समाचार सुण'र हैडमास्टर सा'ब घणा राजी हुया। पंकज नेट सूं काढ़्योड़ी मार्कसीट लेय'र सा'ब कनै पूग्यो अर उणा रै पगां धोक लगायी। हैडमास्टर सा'ब उणनै आशीर्वाद देवता थकां कैयो-''मैनत करणै वाळां री कदैई हार नीं हुवै।''

कोई भी मिनख दृढ़ निश्चय सूं मैनत करै तो संसार री सगळी अबखायां उणरै रास्तै सूं अपणै आप दूर हुय जावै। पंकज नै भणावण वाळा सगळा गुरुजी राजी हा अर पंकज रै बदळाव पर अचरज हो। ग्यारहवीं मांय पंकज विज्ञान विसै लेय'र पढ़ाई करणै री सोची अर डॉक्टर बणनै रो निश्चय कर्‌यो। अबै तो पंकज रो सुपनो आभै सूं बातां करै। वो मैनत करणै री कला पिछाणग्यो हो।

प्रधानाचार्य
राज क्लोथ स्टोर, लूणकरणसर, बीकानेर-334603
मो: 9414273575

ठमता ठौर कोनी!

❒ हरीश सुवासिया

ऊंचा आभै
उड़ण री हूंस।
लेयर मनड़ो
बणाय पखेरु
साव सगा जाण
तुरंत जुड़
प्रीत रे धागा
मांडै गठजोड़।
जीवण जातरा
दीठे दोय छोर
अधूरी इच्छावां
अनंत आभौ।
मैणत म्हारी
उड़ती पतंग है।
चित चकरी
चाल चंग है।
हूंस री डोर।
मीठी उमंग है।
इबतो
पगां चालतां
पगोतिया बणै
हूंस ने हियां ठौड़ है।
जिको बैठा राखे
निजरां माथै
बे रिस्ता बेजोड़ है।
पण किंया ?
अेक पख फेरुं
क्यूं कै-
जिनगाणी जीवती
साचाणी खतोड़ है।
जिण में नित नूंवा
बैवतां मोड़ है
ठमता ने कदै
कोय नीं ठौड़ है।

प्राध्यापक
रा.आ.उ.मा.वि. धामोद, बिछीवाड़ा,
डूंगरपुर-314801

राखी रौ मोल

❐ आशुतोष

जुझारी धरती राजस्थान रौ गर्वीलोगढ़ चितौड़गढ़ मुगलां नै लड़ाई में धूळ भेळा करता चित्तौड़ रा महाराणा संग्राम सिंह (राणा सांगा) वीरगति पायी। मुगलां सू हुयी संधि रै बावजूद गुजरात रा शासक बहादुर शाह 1533 में चितौड़ पे चढ़ाई कर दी नी। अबकी बार मुगलां सूं दोय-दोय हाथ करणौ राजपूत वीरां नै भारी पड़्यों। चितौड़ री महाराणी कर्मावती टेम री नजाकत नै पिछाण एक नुवी तजवीज विचारी। इणी टेम मुगल शासक हुमायु ग्वालियर रै किले आयौ थकौ। कर्मावती हुमायु रौ मिनखपणौ परखण उणनै भाई मान राखी खिनायी। मिनखपणा रौ कंवलौ कस भाई बैन रौ पवित्र बंधण राखी। दोय मजहबां में मिनखपणा री मिसाल रेशम डोर राखी रौ मान किण भांत निभाई जियौ इण एकांकी में यौ ई' ज दरसाब।

पात्र :

कर्मावती – चितौड़ री महाराणी

डावडियां – चितौड़ महाराणा री सेविकांवा

हुमायुं – मुगल बादशाह

चितौड़ सेनापति

मुगल दरबारी – बादशाह हुमायुं रा मनसबदार

दरसाव पहलो

परदौ ऊठे

(चितौड़ री महाराणी कर्मावती आपरा निवास में फूलांरी माला पोवती निगे आवै)

कर्मावती – (डावड़ी सूं) – अरे, कोई है अठै नैड़ौ? पतो तो लगाओ लड़ाई रां कांई समाचार है..... म्हारी जीवणी आंख ई फरूकै है। रात सुपनौ ई अणखणों देख्यों। महाराणा रा कांई समाचार है।

डावड़ी – महाराणी सा आप चिंतामत करौ। समाचार चोखा ई आवैला।

(चितौड़ सेनापति रौ आवणों)

कर्मावती – (उतावली पडती थकी) – कांई समाचार ल्याया सेनापति जी? आप बोल क्यूं नी रया हो?

सेनापती – (धूण नीची कियां ई) म्हे हार रह्या हां महाराणी सा!

कर्मावती – (ऊभी होवती)– कांई बोल्या? दुश्मण आपणा पे भारी पड़रह्यौ है? राजपूत वीरांरी तरवारां बोथी हुयगी कांई? (डावड़ी सूं) अरे सुणों हो। मेवाड़ हार रह्यौ है– सगली जणियां सती हुवण री त्यारी करौ! पंडित जी ने तेड़ाय जौहर रौ सरंजाम कराऔ। दुसमीरा हाथां सूं अग्नि रौ खोलो घणो जस जोग। डावड़ी–बड़ो हुकुम महाराणी सा!

(सेनापति रौ जावणौ)

दरसाव दूजो

(महारानी कर्मावती रै रनिवास रौ अंतःपुर। महाराणी जी गहरा सोच में डूब्यां कमरा में चकारा निकालता देखी जै)

कर्मावती – ए डावड़ी, सुण तो! म्हारा मन में एक सोच ऊपजी है।

डावड़ी – कांई विचार कर्‌यो महाराणी सा!

कर्मावती – डावड़ी जा! हरकारै ने तैड़ाय ल्याव। म्हैं बादशाह हुमायुं ने धरम रौ भाई बणावण उण नै राखड़ी मेंलणी चाबूं। इण अबखी घड़ी में आ ई एक उम्मीद री किरण दीसै। म्हनै धीजौ है, बादशाह म्हारी राखी रौ मान अवस राखैला।

डावड़ी – (अचंबा सूं) राखड़ी? अर वाई मुगल बादशाह नै? मुगल तो ठेट सूं आपणा दुसमी रह्या है महाराणी सा!

कर्मावती – थारी ना कुछ अक्कल इण बात री समझ नी पड़ै के राखी रा कच्चा धागा रो मोल कांई हुवै। (रुकती थकी) छोड़ इण बातनै। फटकारै हरकारौ तेड़ाय ल्याव। ऊगतैं सूरज रै उजास धरम री बैनड़ कर्मावती रौ सनेव बंधण आ राखडी भाई हुमायुं तांई अवस पूगती हुय जासी।

डावड़ी – जो हुकुम महाराणी सा!

डावड़ी रौ जावणौ

दरसाव तीजो

(ग्वालियर रा किला में बादशाह हुमायं रौ दरबार लाग्यों थकौ। बादशाह हुमायुं दरबार में बैठ्‌यौ दीसै। दरबान रौ आवणों)

हुमायुं – कांई बात है दरबान, बताओ।

दरबान – (बादशाह धकै आधौ झुकतौ थकौ) – हुजूर!

चितौड़ री महाराणी कर्मावती रौ भैज्यो ड़ो एक दूत बारै ऊभों। बादशाह सूं अजेज भेंट कर खास समाचार देवणी चावै!

हुमायुं – (चेहरा पे अचंभौ प्रकटाबतों) – तो देरी क्यूं? कर्मावती रा दूत नै जल्द हाजिर करौ।

दरबान – जो हुक्म जहां पनाह! (दरबान रौ जावणो, दूत रो दरबार में – आय अभिवादन करणौ)

कर्मावती रौ दूत – बादशाह सलामत! चितौड़ री महाराणी कर्मावती आपनै घणे विश्वास औ संदेश अर राखी मेली है – कबूल करौ।

बादशाह हुमायुं (दरबार में एक वजीर सूं) देखो वजीरे आजम। महाराणी सा रौ इण खत में कांई फरमावणौ है।

वजीर (संदेश अर सामान हाथ में लेय र पढ़नै सुणावै)

धरम रा भाई म्हारा वीरा बादशाह हुमायुं। गुजरात रा सुलतान बहादुर शाह मेवाड़ पे औचक आक्रमण कर दियो है। म्है राजपूत घणी अबखी में हाँ। बचण री कोई तजबीज नी पाय आपने राखी मेली है अर सागेई औ न्यौतो भी देवूं के आप धरम री बहन कर्मावती री हिफाजत री हामल अवस भरौला। थांनै भाई मान याद कर्‌या; एक बैनड़ रै संसार री रूखाली थारै भरोसै।

हुमायुं (गरव सूं) – मेवाड़ महाराणी म्हनै भाई रौ मानदेय याद कर्‌यौ – धरम री म्हारी बहन कर्मावती री मेल्योड़ी इन रेशम डोर राखड़ी नै म्हैं घणै मान मंजूर करूँ। (आपरैं हाथ में राखी बंधवावै)

सिपह सालार! जल्दी करौ। एक बहन री अबखी, भाई सू बेसी कूण मिटाय सकै भलां।

वजीर (बिचालै ई ऊभो होय) – गुनाह माफ हूजूर, कांई फरमायौ आप? रानी कर्मावती री हिफाजत में आप पधारो ला? आ बात

इस्लाम रै खिलाफ नीं होवैला?

हुमायुं रै दरबार में दूजो वजीर (ऊभो होय) – गुस्ताखी माफ, बादशाह सलामत! कांई आप एक हिंदू औरत री राखी रौ मान रखण री बात फरमावौ? उण चितौड़ शासकांरी हिफाजत जिका मुगल सल्लनत रा धुर विरोधी रहता आया है।

हुमायुं – थे नी जाणो वजीर जनाब! म्हारै सागे भी की इसौंई समाजोग हुयौड़ो। मालिक म्हनै निहायत एक नेक मौकों बख्श्यो है।

वजीर – (अचंमा सूं) – इसौ कांई समाजोग हुयग्यों शंहशाह?

हुमायुं – (दरबारियां सूं ऊभो होय ने) – तो सगला दरबारी सुणै! हिंदोस्तान रा बादशाह हुमायुं रौ लाडल शाहजादो अकबर, म्हारों लखते जिगर, चश्में नूर म्हारौं बेटो अकबर भी अमरकोट रा राजपूत शासक वीरशाल कनै शरणागत रूप में जलम्यौ, पाळी ज्यौ। (रूकतां थकां) वीरशाल री राणी जी म्हनै सहोदर भाई बरोबर सनेव दियौ। समझ्या?

सगला वजीर – (बादशाह कानी आधा झुकता थकां) – वजा फरमायौ हुजूर! अल्लाहताला री नियामत नै इण नेक मौके कबूल करणौ वाजिब है हुजूर!

हुमायुं – (ऊभौ होय) – तो फौज ने चित्तौड़ कूच रौ हुकुम देय म्हारी बहन कर्मावती री हिफाजत सारू वहीर हुवौ।

(सगलां रौ जावणौ)

दरसाव चौथौ

गढ़ चितौड़ रा रानिवास में महाराणी कर्मावती रै महल रौ दरसाव देखीजे)

कर्मावती (अठी उठी चकारा देवती) – अजे तांई हुमायुं रा कोई समाचार नीं? लागे अबे घणी जेज कोनी, दुश्मण किलो भेद ने ई निरांत करै ला। सगली क्षत्राणियां ने जौहर सारू कूच करण में सार'।

एक डावड़ी (हाणफाण हुयोड़ी) – महाराणी सा, महराणी सा। सेनापति जी समचार मेल दिया – किलौ भेली जग्यो। क्षत्राणियां जौहर करै। जितरै बच्चा खुच्चा राजपूत दुश्मण नै प्रौल बारै अटकाय ऊभा है–हे मां तुलजा! थारी शरणां!!

कर्मावती (मन करड़ौ करती थकी) – हां, हां थे कोई फिकर मत करौ। बात अर टेम दोन्यूं बीत गया। करमाय नमः।

अबे भाई हुमायुं आवै, नीं आवै – परमेश्वर नै या ई प्रार्थना के धरम रौ ही सही, म्हारौ भाई हुमायुं सदा सुखी रै वै (सगली क्षत्राणियां रौ जौहर सारू प्रस्थान। सगली एकण सागे–पत राखै मां तुलजा!)

(इणी वखत बादशाह हुमायुं रौ किले में पूगणौ अर जौहर री झालां धकै माथो निवाय ऊभो हुयोडो देखी जै)

हुमायुं (उदास चेहरा सूं) – म्हारी बहन कर्मावती! म्हनै माफ करीजो। म्हनै अणूतो अफसोस घणो पछतावो के म्हैं धरमरी इण बहन नै बचाय नीं सक्यों। काश! एक भाई एक बैनड़ री मदद कर पावतौ (रूकतां थकां) – पण म्हारी किस्मत में तो नाकामयाबी ई लिख्योड़ी। धरम री म्हारी बहन कर्मावती – म्हनै ताजिंदगी पछतावौ ई हाथ आयौ। अरे, इस्लाम तो मोहब्बत नै ई सबसूं बड़ी मानैं अर मुसीबत में इन्सानियत री मदद करण री हामल भरै।

अर पछे, भाई बहिन रौ पाक रिश्तों निभावणौ तो घणे फख्र अर गुमेज री बात है–या खुदा थारी मरजी। (ऊपर हाथ करतां)

वजीर – तसल्ली फरमावौ जहांपनाह! अबे कीं हाथ नी लागै। भाई बहिन रौ औ रिश्तों हिंदोस्तान हमेशा याद राखैला!

हाँ गुजरातरा सेनापति तातारखां नै बर्खास्त करतां चितौड़ रा कुंवर उदयसिंह जी बूंदी रा किला में हिफाजत सागे पूगता कर दीना है।

हुमायुं (सुणनै) – या खुदा! मेरी बहिन कर्मावती को जन्नत नसीब करना। (दोन्यू हाथ उठावतां)

(सगळां रौ जावणौ)

(परदो पड़ै...।)

(पर्दा लारैं ओलयां, गाईजती सुणी जै)–

वीर बैनड़ हेतरी राखी रेशम डोर।
सगी बहिन संसार री, धरम बहन सिरमौर।।
राखी बंधण नेह रौ भाई बैनड़ सार।
तिण पर बंधण धरम रौ बीजा बंधण भार।।

भाषा अध्यापक
सनराइज एजूकेशन एकेडेमी
(उ.मा.) समदड़ी (बाडमेर)
मो. 9414244195

टाबर : घर अर स्कूल

❒ डॉ. विमलेश कुमार पारीक

टाबर भगवान की सबसूँ बड़ी रचना छै। भगवान की ई श्रेष्ठ रचना का विकास कै ताणी घराँ माँ–बाप, स्कूलाँ माई गुरुजन, अर समाज सूं जुड़्योड़ी हर बात, जियां–बालसेवी संस्था साहित्य अर समाज सगळा की मिली जुली भूमिका छै। या सब म सूँ अगर एक भी ढीलो पढ़ जावै छै तो टाबर को विकास होतो–होतो रुक जावै छै अर वो मन ही मन कुडबा लग जावै छै।

परिवार सैं मतलब मां–बाप द्वारा टाबर का विकास की पैली पाठशाला मान्यो गया छै। या मैं भी मां–बाप को दर्जो लूठो होया करै छै। मां–बाप टाबर सूँ परेम करै छै वै, परेम जताना नै, ऊ का हर काम माही रुचि लेता रै, बाकी इच्छावाँ को मान राखै तो आप मानेर चाला टाबर माही सदभावना, सहयोग, उत्तरदायित्व निभावणा सामाजिक गुण मतै ही पैदा हो जासी। बो टाबर समाज का संगठन में आपणो योदान देबा वालो सफल मिनख बण जासी। अगर आं सूँ उलटो व्यौहार घर में टाबर सूँ होसी तो वो टाबर भी सगळा नैतिक मूल्याँ नै ताक में मेल'र मनमानी करैलो। वो समाज मै घृणा रो भाव लिया फरसी और समाज माही काँटो बणसी।

स्कूलाँ का वातावरण को भी टावर का कोमल मन पर घणो ही प्रभाव पडै छै। शिक्षकाँ को व्यौहार मां–बाप जस्यो सामाजिक और सहपाठी टाबरो को व्यौहार आपस कै माही परेम वालो हो वै ये बात ऊकाँ विकास कै ताई जरूरी है वै छै। एक शिक्षक जद्या टाबराँ नै अरपण करै छै तो ही वो शिक्षक बा टाबराँ माही श्रम की खुशी, मित्रता और मनरवा पणा की भावना भर सकै छै। ई वास्त या बात घणी जरूरी छै कि शिक्षक स्कूलाँ माही घराँ जैस्यो वातावरण बणा वै।

प्रधानाध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
कोकावास, सांगानेर
फोन 9829517035

कुलधरा रौ कळाप

❐ जेठनाथ गोस्वामी

माड़धरा रौ मुकुट गढ़ जैसाण।
आण बाण रौ ठाण गढ़ जैसाण।
सोनल धोरां री धरती री सोनाली।
हवेल्यां रौ हठ जैसाण।
उतराद रा भड़ किवाड़।
भाटियां री रणभेर गढ़ जैसाण।।
सालम रा षड्यंत्रां अर जोरावर रै साम धरमी
जोर री जुहार गढ़ जैसाण।
पालीवाल ब्राह्मणां रा गादोतरा री गाल गढ़
जैसाण। सोनल धोरां री कुल ऊजल ठौड़
कुलधरा।

महारावल कर्ण री बख्श्योड़ी शरणागत पालीवालां री चौरासी खेड़ां री खोड़ कुलधरा। हीरा मोत्यां रै बिणज रौ रेलो मांडती मण्डी। कुलधरा कुबेर जिणसूं ईसको करै तो इन्द्र री अप्सरावां री गिनरत ई नीं करती रूपाली गवरजावां।

मारवाड़ नर नीपजे नारी जैसलमेर।
सांढ्यां तो सिंध सांतरी करहळ बीकानेर।।

इण इदकाई रै पाण ई आज रौ आथमतो सूरज घणी रातोल में आगत रै उजाड़ रा सेनाण देवतो सो दीस र्‌यौ। रात रौ सून्यापो पसर तो जाय रह्यौ।

आज कुलधरा उजाड़ है।

माड़धरा जैसाण रा शरणागत ब्राह्मण पालीवाल धण महताऊ रह्या। इणां रा आपरा कोई चौरासी गाँव हा। ठाट इस्यो के ऐ आपरौ दसराबौ, दीवाली ई न्यारी मनावता। विराट नगर सूं जाणीजतो आज रौ उजाड़ गांव खाभा री विराट मण्डी जिणरौ आपरौ एक किलौ।

गांव रा मकान लेणो लेण तो गलियां सगली दिखणादू।

पर्यावरण पारखी पालीवालां में गरीब अमीर री कोई दुभांत नीं देखीजी। चारे नीरे रा ठाण तो होका-हथाई सारू चोंतरा अर गोडालां। हर घर रै सैं बीच में तुलसी ठाणौ। सै कुछ शोभन अर मन मोवन। केई केई वेला जानां चढ़ती तो माणक मोती री झालरां वाला चाँदी रै होदे हाथी सजीजता। हजारूं री निछरावलां अर झलण पाण गीत उगरीजता। गांव फलसा तांई कालीन बिछीजता। सींगा में सोना रा पोला, पगां में सोना री नेवरियां, अर गलां में सोना री झालरां वाली सजी बलदा गाड़ी री ख्यातां पालीवाल ब्राह्मणां री ई है।

पालीवाल ब्राह्मणां रै चौरासी गावां में एक खेड़ो खाभा। पालीवालां री पीलजोत घीवड़ पूनम।

निजर पड़ता पांण सालम तो पगलायग्यो। पद रौ मद अर हाकमी री हिम्मत बस उण अप्सरा नै पावण री पीड़ मेट्यां नेठाव हुवै।

कुलधरा री कालमण आज मंगाणियारां रै झोरावां अर गायकी में संजीवण सत्ता अर सुन्दरी हाथ आयां मिनख रौ जोबन पाछो बावड़ जावै। महारावल तो श्रीनाथ जी री भक्ति रै ओलावे पराधीन ई हुयग्या हा। अठीने सालम आपरी अणूतायां में आंधो हुयोड़ो। र्‌या री हर रूपाली लुगाई वो निज निमत ई मानण लागग्यो। सालम सर रा गोख आज ई इणरा सांप्रत सबूत।

इण बुर्जां में केई नुवादी परणायतां री चीत्कारां अबोली हुयगी। लुगायां आपरा उणियारा राख रगड़ विड़रूपा राखती।

ऐड़ी ई एक टेम नुवादी परणेतर सालम रा पींजरा में झिलगी।

हिरणी सी उछाल पाण एक बकरिया नै पकड़ण री जुगत में लुळी उण बाला रौ हाण फाण होवतो हियो सालम री सासां अटकाय दी। पीला ओढ़णा सूं झांकती केसर क्यारी।

सालम सूं निजर मिलतां वा केलू री कांब ज्यूं कांपगी। म्याजलार गांव री वा माखण मिसरी सांझ ढलयां सालम निमत सूंपीजणी। ओ हीरो उण सारू। हाका धाकां सालम धाटण धीवड़ नै बहू बणाय बैठ्यौ। आदमी री उमर रौ कांई। राज पुरुष कदे ई बूढ़ा हुया है!

देह पाण तो बलिया सालम री बणगी पण मना ग्यानां उण इण बदला रौ प्रण कर लियौ।

कुलधरा रा पालीवाल लिछामी रा लाड़ेसर अर कुबेर रा पाटवी ठाट वाला। अरब देसां ताई बिणज करै अर मोहरां सूं बालद लाद ल्यावैं।

ब्राह्मणां सूं अणूतो लागलेय महरावल कर्ण रौ वचन झुठलाय वचन भंग रा दोषी यूं बण्या! दीवाण दूण बात नै अणदेखी ई राखी। उणरा मन में लाग री लालसा कम अर काम री लाय अणूती ही। कुलधरा रा पालीवाल हरजल जी री बेटी मिरगां उण लोलुप अहेरी रै निजरां चढ़गी। किण तरयां पंछी पकड़ में आवै पग पटकणी इणी बात री।

सालम रौ स्वभाव मीठा मोरिया सो जो साबत सांप मिट जाय।

कुलधरा री हवेल्यां में सुणन में आवे के सोना री कलम कोरणी वाला कमरा, सोना चांदी रा ई बर्तन बासण।

सालम रै कामुक नैणां री निजर पड़तां षोडशी ब्याहता किस्तरी रै नैणां तो मुकलावे री मुळकई मगसी पड़गी।

सालम रा राजमद अर काममद री अणूताई रै कारण ई तो आज ऊजड़ती कुलधरा में हुजूरियां रौ हाकौ, बिना दुहारी बाछड़ा भिलती गायां, पाट बन्द मंदिर, सहम्या मां वां रै खोलै चिप्या टाबर ऐ सगला ऐलाण आगत रा सून्यापे अर सोग नै प्रगटावै हा।

आखिर पालीवाल ब्राह्मणां आपरौ असबाब अंवेरयौ। गादोतरा (पलायन) निमत की संस्तर पाती अर कूड़िया पेटियां अर कोठला, उछाला सारू ऊंटा, घोड़ा, बळदां रो चारो नीरो गाडियाँ में भर नै गादोतरो लेय हाबुर री सोय करी परभतिये तारै रे ऊगंतां पाण बालद उछालौ सरकतो निगे आयौ तो आज लग पाछल नीं फेरी।

विधना री आ ही मरजी ही। पूनम री धवल रात में सोनल रेत री वा सम्पन्न बस्ती कुलधरा पसर्‌या सून्यापा वाली आ उजाड़ ठौड़ किणी तिलस्मी नगरी सूं कम नी लागै।

इणी अणूतायां सूं आंती आय कुलधरा रा चौरासी खेड़ा लूट खसोट अर इज्जत आबरू रो हुवतां देख सदा सारू गादोतरो लेय लियौ। गली गुवाड़ में सून्यापो वापर्‌यो जो आज ई उजाड़ है। छोवट मिनख रै मंसूबां री आ ई गत बणै। कातकी पूनम री धवल चांदणी रात। खाभा हाबुर रै मारग उजाड़ गांव कुलधरा मीलांलग सून्यायो। उण चांद उजाला में किणी सोनल धोरा पे बैठ्यो मिरासी री मिसरी घोलती देर में लोकगीत रा ऐ बोल कानां पड़ै।

आधी नदिया काकराजी, कोई आधी बालू रेत,
आधी गोरी सेज में जी आधो हिवड़ै हेत,
म्हारी चंद्र गोरजा सतनारो थांभो दीसे धूंधलो।।

किणी दिनां कुबेर नगरी रही कुल धरा रा ऐलाण आज धुंधला होय रह्या। महारावल मूलराज रै भक्ति रंग रै ओठै दीवान सालम सिंह री ताना शाही सूं तंग आय पालीवाल ब्राह्मणां रै पलायन री पीड़ आज ई उड़ती बालू रा रजकण मूंडै बोलता सुणीजै। टेम बीतगी पण बात रैयगी।

से.नि. प्रधानाचार्य
बालोतरा
मो: 9828926826

उन्हाळा री पंचदशी दोहावली

❐ नरेश व्यास

तावडियें री तल्खी पड़वां लागी, याद आया राम,
मौसम यूं बिफरण भी लागी, न्हीं व्हैवें कांई काम।।

तपती धरती बळता रूंख, कवळी काया छाया ढूंढ,
पाणी-पाणी करती निजरां डोले, न्ही मटै तरस री भूख।।

जैष्ठ री गरमी सूं बढ़ गियों पारा रो व्हों भाव,
जीव जन्तु सगळां ढूंढण लागियां रुंखा री व्हां छांव।।

पानड़ा सगळां टाट्यां व्हियां, पीळां पड्या सब रूंख,
'लूं' रा थपेड़ा री कांई कैवां, बण्यों मिनख ही ठूंठ।।

जैष्ठ री दुपैरी, पंखेरू बैठें रूंखड़ियें री छांव,
आपस मांय बतियावै यूं, करे दुःख-सुखरी सगळी बात।।

आछां आछां जोधावां री भी लळगी यूं गाबड़,
किणने, कद, क्यूं कैवा म्हें, जद् जीभ पे लागी हाकळ।।

कूवा, बावड़ियां, बांध, तालाब, सगळा जल रा है स्रोत,
बैसाख मांय ही सूख गिया, पंखेरू सब मरण लागियां बैमौत।।

छानी-छपकी बैठी कोयल, गावै मन सूं मन रो गान,
कानड़ां मांय गूंजण लागे प्रेम रस री सी मीठी व्हां तान।।

भरी उन्हाळी देखतां ही आख्यां व्हीं क्यूं राती,
यों कांई जादू इणमें, क्यूं भरण लागी छाती।।

देख्यों कुल्फी वाळा ने जद्, जिद् पर अड़गी टाबर-टोळ,
मां बापां सूं यूं जिद्द करें, चुकायं दो कुल्फी रो ही मोल।।

ज्यैष्ठ महिनां री लूं री अब मत पूछो म्हांरा सूं रफ्तार,
सावां री जद् धूम रहे, जीमण री उडण लागे फटकार।।

होळी रो डांडों रूप्यों, ढीला पड्यां सियाळां रा भाव,
उन्हाळों रो ज्यों पारो चढ़ें, छूटे कोट, जर्सी रा साथ।।

पारों धरां रो ज्यूं-ज्यूं चढ़े, देवै पेट भी ऐड़ों जवाब,
उल्टी-दस्तां यू वैवण लागी, ऐड़ो कड़वों है यो ख्वाब।।

पाणी-पाणी रा फेर मांय, घूस आया सियाळ्यां अर नार,
तरस तो व्हांकी मिटी कोनी, पालतू जनावर पे कर दिया वार।।

उन्हांळा री देवी है 'लूं' थांसू म्हांरी है बस एक अर्जी,
बहजे धीरे-धीरे थूं कर रूंख ने मोळों, बाकी सब रामजीरी मर्जी।।

राजकीय माध्य. विद्यालय लड़की, रायपुर, भीलवाड़ा

मो: 08764018111

आवो नी ढोला मरुधर प्रदेश

❐ रामेश्वर लाल

आवो नी ढोला म्हारे मरुधर प्रदेश,
बाजरी रा रोट जीमण देस्यां, सांगर फली सूं मनुहार,
छाछ, दही पीवण देस्यां, थाको करस्या अतिथि सत्कार।
थे तो पधारों नी म्हारे मरुधर प्रदेश।
दूध, दही रा कटोरा सूं करस्या सत्कार,
लापसी, पुवा, पापड़ी सूं थाल भरस्यां जीमण री मनुहार,
पीवण ने बाजरा री राबड़ी, रोहिड़ा रा फूलां सूं सत्कार।
थे तो पधारों नी म्हारे मरुधर प्रदेश।
जोधपुर सूर्य नगरी देखो बीकानेर रो बीकाजी को महल,
जैसलमेर स्वर्ण नगरी देखो स्वर्ण हवेलियां रो शृंगार,
जैसलमेर बाड़मेर रा रेतीला धोरां रो देखो शृंगार।
थे तो पधारों नी म्हारे मरुधर प्रदेश।
करणी माता रो मंदिर देखो, पुष्कर रो देखो सरोवर,
शाकंभरी माता देखो सांभर झील रो धवल शृंगार,
देवयानी की शोभा देखो उदयपुर झील रा सरोवर,
थे तो पधारों नी म्हारे मरुधर प्रदेश।
देलवाड़ा, रामदेवरा व करौली मैया रा मंदिर देखो,
कोलायत रो सरोवर देखो या तपोभूमि है महान,
नागफणी रो सत्कार देखो, फोग रा फूलां रो सत्कार।
थे तो पधारों नी म्हारे मरुधर प्रदेश।
बाजरी रा खेत देखो ग्वार फली री भरमार,
खेता मांय काकड़ी मतीरा, काचरी से करस्यां मनुहार,
खिपलियां केर काचरी रो मन भर खाओ नी आचार।
थे तो पधारों नी म्हारे मरुधर प्रदेश।
सांगरिया री मेवा जिमण देवा थांकि करा मनुहार,
आवो नी ढोला थारी यादें सतावें मरवण ने मरु प्रदेश।
थे तो पधारों नी म्हारे मरुधर प्रदेश।

प्राचार्य (सेवानिवृत्त)

पुराना किला, सांभरलेक, जयपुर (राजस्थान)

मो: 9929187985

राजस्थान रो जसगान

❐ जगदीश प्रसाद कुमावत

प्यारी धरती धोरां री,
म्हारे मनड़ा में रम जाए।
थारी महमां जोरां री,
यो अरावळ रह्यो सुणाए।।

बीकाणु जोधाणु सिरमोड़,
झाला दे रह्यो चित्तौड़।
मीरां अमर सिंह राठौड़,
ज्यारो नाम काळ नहीं खाए।।

प्यारी धरती धोरा....

पन्ना की बातां न्यारी,
यो करज लूण रो भारी।
बेटो उदयसिंह पे वारी,
पल में टुकड़ दिया कराए।।

प्यारी धरती धोरा....

आगे बात करां पदमां री,
सांचा मारग रां कदमां री।
आई खबर मरण पियां री,
दी अग्नि में देही जलाए।।

प्यारी धरती धोरा....

करषां रो भाग हरसावैं,
सांवरो बिन बिरखा निपजावे।
सुपणा रो महल बणावें,
घणीं बादल सूं प्रीत लगाए।।

प्यारी धरती धोरा....

घूमर, घूंघरु, घूंघट,
गाती-सीरां में आंग्ल्या चाटी।
नित जीमे चूरमो बाटी,
सगळां ठाठ सूं खाए।।

प्यारी धरती धोरा...

अध्यापक
रा.उ.मा.वि. महेशवास कलां,
जालसू, जयपुर-302012
मो: 6377097933

पढ़बा चालां रे

❐ उषा रानी स्वामी

पढ़बा चालां रे सहेली
आपा पढ़बा चालां रे,
शुभ दिन आयो रे।
हाँ, रे शुभ दिन आयो रे सहेली,
आपा पढ़बा चालां रे,
शुभ दिन आयो रे।
आखर की आपा ज्योत जलास्या,
अंधियारां न दूर हटास्यां,
अक्षर ज्ञान सीख'र जीवन,
खुशहाल बणास्यां रे,
शुभ दिन आयो रे।
इक्कीस जून न योग दिवस पर
आपा योग सीखस्यां,
ई काया न निरोगी बणा,
सब सुख सूं रहस्या रे,
शुभ दिन आयो रे।
चोखा-चोखा नम्बर लास्यां,
लेपटॉप री सौगात पास्यां,
वैदिक काल की गार्गी को,
आपा मान बढ़ास्यां रे,
शुभ दिन आयो रे।
गवरमेन्ट स्कूलां में पढ़,
निःशुल्क पुस्तकां पास्यां,
कस्तूरबा छात्रावासा मं आपा,
हिलमिल रहस्या रे,
शुभ दिन आयो रे।
मानवता को पाठ सीखस्यां,
नैतिकता जीवन में ल्यास्यां,
हिन्द देश रा हर संकट मं,
साथ निभास्या रे,
शुभ दिन आयो रे।
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,
नारा खूब लगास्यां,
स्वच्छ, स्वस्थ, सुन्दर भारत रो,
परचम फहरास्यां रे,
शुभ दिन आयो रे।
शुभ दिन आयो रे सहेली
आपा पढ़बा चालां रे,
शुभ दिन आयो रे।

वरिष्ठ पुस्तकालयाध्यक्ष
रा.बा.उ.मा.वि., निवाई, (टोंक)
मो: 9530004587

बेटी मत ब्याहवो बचपन में

❐ हजारी लाल सैनी

ओ बेटी मत ब्याहवो बचपन में,
मैया कुछ तो सोचो ना
सोचो ना रे मैया, सोचो ना-2
ओ बेटी मत..................।।

तू बचपन में ब्याही मैया, कभी ना तू खेली
ना खेली कूदी, कितने दुःख तू झेली
ओ अपनी बिटिया की खातिर न,
मुँह तो अपना खोलो ना
खोलो ना रे मैया, बोलो ना-2
ओ बेटी मत..................।।

बाल शादी गुलामी है ये, तोड़ो कुरीति
लोगों की ना सुनना बापू, बदलो
आ नीति ओ बोझ नहीं बिटिया आंगन
में, बापू सबको बोलो ना
बोलो ना रे बापू, बोलो ना-2
ओ बेटी मत..................।।

आगे बढ़ना है मुझको, पढ़ने दो ना
मन चाहे जैसे मुझको, जीने दो ना
ओ आगे बढ़े बिटिया जीवन में,
राह उसकी रोको ना
रोको ना रे बापू, रोको ना-2
ओ बेटी मत..................।।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय गढ़ी
थानागाजी, अलवर
मो: 8104346722

रंग रंगीलो राजस्थान

❒ रितेश कुमार शर्मा (पथिक)

घणो सुरंगों रंग रंगीलो, रजपूती मूंछ्या रो गुमान।
राजपूताणों बण इठलायो, रंग रंगीलो राजस्थान।।
सुरगानै शरमाती या की, शोभा अजब निराली छैः।
कतरो करूँ बखाण में इण रो, या धरती मोत्यां वाली छैः।
नील गगण सूं घणी मोखली, ऊँची वीर प्रसूता शान।
राजपूताणों...............................राजस्थान।।1।।

धण धरती मेवाड़ लुगायां जणी एक सूं एक बड़ी।
पन्नाधाई मात पद्मनी मीरा हिवड़ जार बसी।
स्वामीभक्त चेतक र सागै, महाराणा री ऊँची शान।
राजपूताणों...............................राजस्थान।।2।।

बीकाणो जोधाणो जैसलमेर मरुथल मांय खड़ो।
केर सांगरी मोठ बाजरी, सूट पाग रो मान बड़ो।।
मारवाड़ रो जहाज ऊँटड़ो, है इण री अद्‌भुद पहचान।
राजपूताणों...............................राजस्थान।।3।।

बांगड़ री है धरा अनोखी, तरवेणी बेणेश्वर धाम।
भील गेर गवरी जण जण रा, मुखड़ा पे त्रिपुरा रो नाम।।
माऊंटाबु हिल स्टेशन, सन सेट रो घणो बखाण।।
राजपूताणों...............................राजस्थान।।4।।

शेखावाटी ठाट-बाट री, कहे हवेली गाथा ने।
सेठ साहूकारां री कहाणी निपज्योड़ा उण पर दाता ने।
कारोबार्या री धरती सूं बड़ो मोकळो उण रो दान।।
राजपूताणों...............................राजस्थान।।5।।

कोटा, बूँदी, बारां, झालवाड़, हाडा झाला रो।
रणथम्भौर त्रिनेत्र गणेश्यो, दुनिया में हाको बाघां रो।
करै धौलपुर और करौली सूं, सब बीहड़ री पहचान।।
राजपूताणों...............................राजस्थान।।6।।

राजा सूरजमल री ख्याति ने, हरख-हरख कहवे मेवात।
ब्रज पर किरपा कुदरत री हो री, अन्न लुटावे दोन्यू हाथ।।
घणा सरिस्का जीवणदायी, परवास्या पक्ष्या री ज्यान।।
राजपूताणों...............................राजस्थान।।1।।

जैपर जंग जीतता जग सूं, पुरखां री दौलत रै पाण।
हवामहल जंतर-मंतर अर, रंग गुलाबी या की शाण।।
पथिक सरग सूं होड़ लगातो, या है रजवाड़ा रो भाण।
राजपूताणों...............................राजस्थान।।1।।

संस्कृत शिक्षक
राज.उ.प्रा.संस्कृत विद्यालय, संजय नगर,
भट्टा बस्ती, जयपुर
मो: 9828950927

मायड़ रै नांव पाती

❒ टेकचन्द्र शर्मा

बाल बधू री पातड़ी, अपणी मायड़ नांव।
पूगाओ सनेसो थै, ढाणी ढाणी गाँव।।

कसबा अर नगरां मांय, बोल सुणाओ जाय।
बाल बियाव रोकण रो, चोखो करो उपाय।।

खेलण खावण री उम्र, म्हानै दी परणाय।
अबखाई तो ठाडी आ, पीड़ सैई न जाय।।

लाड कोड थारो मात, घणी सकी नीं भोग।
नैनी सी उमर में ई, लागियो कोजो रोग।।

टाबर री लैण लागी, साम्ही उमर पहाड़।
लालण पालण रै खातर, कयां करां जुगाड़।।

भण नी सकी मायड़ जी, रैयी अंगुठा छाप।
दिल में म्हारे हो रियो, भोत घणो संताप।।

बिगड़ियो जीणै रो ढब, कठै करां फरियाद।
आवै घणी माँ थारी, म्हानै सदा याद।।

बाल बियाव रै कारण, हुया हाल बेहाल।
म्हारी सब भाणां रो, राखीज्यो थै ख्याल।।

नैनी म्हारी भाणां नै, मत दिज्यो परणाय।
भणै अर परगति करे, करज्यो ऐड़ो उपाय।।

बालपणै बियाव करणो, ओछी घटिया रीत।
घाटै रे भीचीड़ां सूं, जावे जीवण बीत।।

शर्मा सदन, झुंझुनूं-333007
मो: 9667212236

इन्सान बणै लो

❐ डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत

ज्यूँ खावै लो पीवैलो तो,
काम करै लो।
चोरी अन्यायी सैं डरै लो तो,
इन्सान बणै लो।
पढ़ै लो लिखै लो तो,
समझदार बणै लो।
स्वस्थ शरीर बणैलो तो,
देश की सेवा करै लो।
जस्यो करम करै लो,
बस्यो खजानो भरै लो।
सुबह सैं श्याम तक कर्मशील बणै
लो तो, जीवन में मौज करै लो।
जमानां की भागदौड़ में धीरज धरै
लो तो, मीठा फळ पावै लो।
संस्कारां की पूँजी जोड़ै लो तो,
भलो इन्सान बणै लो।
खाण-पीण में संयम बरतै लो तो,
ज्यादा जीवै लो।
बड़ा-बूढ़ा को आशीर्वाद लेवै लो
तो, गुणवान बणै लो।
कम्प्यूटर में ध्यान धरै लो तो,
चाँद तारा गिणै लो।

श्री सर्वेश्वर भवन, नाँगल जैसा बोहरा,
झोटवाड़ा, जयपुर-302040
मो: 8946838583

ग़ज़ल

❐ रहीम खां हसनिया 'सांचोरी'

दूजां री फोड़ खुदरी चढ़ावै
मिनखां री तो नीति मरगी।।
परचूण आळा तो बाका फाड़ै
मिलावटियां री तिजोरियां भरगी।।
घी, मिरच, धाणा, दूध मं इतरा कमाया
बस उणां री तो सात पीढ़ी तरगी।।
लैवण बखत तो करै खूब हाथा-जोड़ी
दैवण बखत वां री क्यों मति फरगी।।
रात रा नाठै घरां उल्टा ताला दैयर
रुलया सेठिया टाबरां री बै पौबारा करदी।।
खोटो खावणो काम हारो करणो
मीनख मं घर बीमारी करगी।।
दैख खैल जगत मं मिनखां रौ
भळै मिनख री आतमा डरगी।।
'सांचोरी' कांई होसी अब इण जगत रौ
जका बेईमानी री हदे पार कर दी।।

वरिष्ठ अध्यापक
आदर्श रा.मा.वि., डेडवा, तह. सांचोर,
जिला-जालोर-343041
मो: 9929614376

मोट्यार

❐ गोपाल लाल वर्मा

सीख सबकी मान, जन्म सुधर जासी।
ठण्डो पाणी पाबो सीख
आशीष मिल जासी।।
गेले-गेले चाल मंजिल मिल जासी।।
बड़ा-बूढ़ा कनै बैठबो
सीख अक्ल मिल जासी।।
जल्दी उठबो सीख भाग्य खुल जासी।।
भायां-सागै बैठ
परिवार सुधर जासी।।
दान करबो सीख भण्डार भर जासी।।
साफ सुथरो रहबो सीख
रोग मिट जासी।।
धीरज धारबो सीख क्रोध मिट जासी।।
प्यास बुझाबो सीख
शीतलता मिल जासी।।
गुरुवां की सेवा करबो सीख
ज्ञान मिल जासी।।
कर्म करबो सीख जमारो सुधर जासी।।
भागबो दोड़बो सीख मोट्यार बणजासी।।
भजन गाबो सीख जन्म सुधर जासी।।

वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी)
रा.आ.उ.मा.वि., मूण्डवाड़ा,
सांभरलेक, जयपुर (राज.)-303328
मो: 9828432125

आपरौ-परायौ

❐ मंगलेश सोलंकी

घर में सगळा आपरा लागै। भाई-बेन, माँ-बाप, नैना-मोटा अठै तांई'क कुत्तरा अर। मिनकी साथै मारा पोछा ताई न। सगळा अेक दूजै रै मतई ध्यान राखै...। किणी नै किणी रौ भैय नी। कांई चीज किणी ठौड़ पड़गी तो पेट सूं पाणी डिगावण री जरूरत नीं वा उठै ई हुवेला या किणी सही ठिकाणे कर लीनी हुवेळा। ओ है अपणापणो.. आपरौ।

अठै कुत्ता मिन्नी ई किणी चीज नै नीं खावै नीं सूंघै। कुत्तो, मिनकी साथै रमै पण वार नी करें। प्रेम देखतां जीव धापै।

पण ज्यूं ई घर सूं पग बारै राख्यौ... सगळा सावधान..। फूंक-फूंक पग राखै जाणै कद आफत गळै पड़ जावे...। जेब कतरो जेब काट रफू हुय सकै। कोई किणी वगत बदसलूकी कर'र पाणी उतार लेवै। कुत्ता, बिल्ली ई सावचेत...। बारै वाळौ कुत्तो मिनकी माथै आंख्यां निकाळै अर घर वाळो कुत्तो बारै वाळै कुत्तै माथै दुश्मनी निकाळण सारु उतावळो हुवै...। सगळा पराया..। औ आपरौ अर' परायै रौ भेद नीं जाणै कद तक चालेला।

खाण्डप (बाड़मेर) राज.-
मो: 9462083220

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्व रचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

बेटी बगिया की बहार

बेटी है सावन की फुहार
बेटी झूला और मलहार
बेटी कोयल ऋतु–बसंत
बेटी बगिया की बहार

बेटी स्कूल की शान
गौरव करती खेल मैदान
सावन राखी रोली टीका
हर त्यौहार की है जान

माता भगिनी प्रिय प्रियतमा
हर क्षेत्र में बनी सुकर्मा
छात्रा, टीचर और अधिकारी
स्कूल की सुंदर ये फुलवारी

बेटी दोनों कुल की लाज
बदला थोड़ा अब समाज
मानता नारी का महत्व
करता अपनी सुता पर नाज

हर बेटी अब स्कूल जाए
पढ़ लिख कर नाम कमाएँ
खेलकूद में सबसे आगे
देश समाज का मान बढाएँ

समीक्षा, कक्षा–7
रा.उत्कृष्ट उ.प्रा.वि., सेनणा तलाब,
लोराबास, कुचामन, नागौर

पेड़ों से हमें लाभ

धरती के खुशहाल पेड़ है।
पेड़ हमारा जीवन है।
पेड़ों से हम अपनी भूख मिटा
सकते हैं।
पेड़ों से हमें ऑक्सीजन मिलती है।
पेड़ों से हम दवाइयाँ बना सकते हैं।
पेड़ ईंधन के रूप में
भी काम आते हैं।
पेड़ हमें शुद्ध व ताजे फल देता है।
पेड़ हमें छाया देते हैं।
पेड़–पौधें पशुओं का आहार भी हैं
पेड़ जीवन का आधार भी है।
हमें पेड़ नहीं काटने अब
बल्कि पेड़ लगाना हैं।
पेड़ हम सबका है जीवन
हमें पेड़ बचाना हैं।

करण बैरवा, कक्षा–5
रा.उ.प्रा.वि. बल्लूपुरा

प्रकृति कहती

कहे पहाड़ ऊँचे उठना
नदी कहे मत रूकना
चन्दा कहता ठण्डक देना
सूरज कहे चमकना
पेड़ सिखाए सहनशीलता
माटी सेवा करना
धरती कहती माफी दे दो
सदा हौसला रखना
चींटी कहती मेहनत करलो
फूल कहे खुश रहना
पक्षी कहते गाते जाओ
बच्चों मानो कहना।

लीला, कक्षा–5
राउप्रावि., कोटड़ा

याद आता है वो पल

याद आता है वो पल, जब रमेश बहुत छोटा था, तो कितनी शरारते करता था। वह अपने से बड़ों के साथ मजाक करता था। उनकी एक हँसी के लिए वो कुछ भी कर सकता था। याद आता है वो पल, जब वह 10 वर्ष का था तो उसने एक मजाक करने के लिए करणी जी (एक अध्यापक) से संज्ञा शब्द की परिभाषा पूछी तो उन्होंने बताया किसी के नाम को ही संज्ञा कहते हैं। उसने पूछा तो एक (कारक चिह्न) कोई संज्ञा तो नहीं है। फिर आपकी परिभाषा गलत है। कुछ देर तक बहस चली फिर अंत में करणी जी को कक्षा छोड़कर जाना पड़ा।

अगले दिन सुबह उसके लिए एक भंयकर सुबह थी। जब वह विद्यालय की प्रार्थना में पहुँचा तो सब बच्चे व गुरुजन उसकी तरफ एक अलग दृष्टि से देख रहे थे। लेकिन वह इस बात को समझ नहीं पाया कि हम इस तरह क्यों देख रहे हैं। प्रार्थना समाप्त हुई वहाँ के प्रमुख धनराम जी ने उसको (रमेश) खड़ा किया और उसकी बेइज्जती की क्योंकि उसने कल करणी जी गुरुजी को थोड़ा परेशान किया था। बेइज्जती के कारण रमेश ने अपनी नजरें नीचे झुका ली। दूसरे दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ, इस बार करणी जी ने भी खूब बेइज्जती की। अगले दिन वह प्रार्थना सभा में नहीं आया। इस बार धनरामजी को वह (रमेश) दिखाई नहीं दिया और बोले इस बार नामाकूल प्रार्थना में भी नहीं आया। यह बात हँसकर हम सबको बताई। हम दोस्तों ने वहाँ का सारा हाल रमेश को सुना दिया। अब वह एक महीने से प्रार्थना सभा में उपस्थित नहीं हुआ।

अक्टूबर का महीना आया उन दिनों विद्यालय का समय बदल गया। समय परिवर्तन की बात रमेश को पता नहीं चली और वह उसी समय विद्यालय आया जो कि एक महीने से आ रहा था। उस समय विद्यालय की पहली घंटी लगी थी, धनराम जी ने उसे रोका और उसे प्रार्थना स्थल पर आगे बैठा दिया। वह मन ही मन सोच रहा था कि आगे उसकी बेइज्जती कैसी होगी। इतने में ही करणी जी एक अलग सी मुस्कान लिए प्रार्थना सभा में आए लेकिन खुशी जाहिर की कि वे सरकारी अध्यापक लगे हैं, सब बच्चे फूले नहीं समाए।

रमेश जितना खुश दिख रहा था उतनी ही दुःखी भी दिख रहा था। दरअसल उसने एक मजाक करने वाले गुरु को खो दिया साथ में गुरुजी सरकारी नौकरी लगे हैं इसलिए वह खुश था। उस समय तो वह बेइज्जती से बच गया। जब विदाई का वक्त आया तो हम सब उदास थे लेकिन रमेश हम सबके विलोम था अर्थात् वह खुशी जाहिर कर रहा था। यह देखकर करणी जी और हम भी इस बात का रहस्य नहीं जान पाए और आज भी यह बात रहस्य बनी हुई है। सोचता हूँ तो बस याद आता है वो पल, याद आता है वो पल...

नितेश कुमार सिंवाल
कक्षा–10
ग्रा.पो.–पाबूसर रतनगढ़ (चूरू) **मो. 9983546835**

राजू के जूते

एक राजू नाम का लड़का था। वह बहुत गरीब था। उसके स्कूल के कपड़े व जूते पुराने हो गए थे। एक दिन वह स्कूल जा रहा था तो उसने देखा कि रास्ते में कुछ मजदूर जमीन खोद रहे थे। तभी एक मजदूर का फावड़ा जोर से किसी से टकराया तो देखा कि एक लोहे का बक्सा है। मजदूर ने बाहर निकाला तो उसमें पुराने जुते थे। उन्होंने उन जूतों को दूर फेंक दिया। राजू ये सब देख रहा था। उसने देखा कि वे जूते राजू के अपने जूतों से कुछ ठीकठाक है। राजू ने वो जूते पहन लिए और चलने लगा।

तभी आवाज आई राजू कैसे हो। उसने इधर उधर देखा कोई नहीं। उसने उन जूतों की ओर देखा तो जूते फिर बोले हाँ राजू मैं ही बोल रहा हूँ। मेरे दोस्त बनोगे। राजू ने हाँ भर दी। अब चल तेरे घर। राजू ने जैसे ही हाँ कहा जुते उड़कर उसके घर पहुँच गए। उस दिन से दोनों मित्र बन गए। राजू उन जूतों की मदद से गाँव वालों की भी मदद करने लगा। जैसे किसी का पशु खो गया आदि। राजू का एक दोस्त सूनील अब नाराज रहने लगा। वह राजू व जूतों की दोस्ती से खुश नहीं था। एक दिन उसने रात में उसके घर जाकर वे जूते फाड़ दिए। परन्तु सुबह उसकी बिल्ली मिल नहीं रही थी । सभी खोज रहे थे। उसे देखा किसी से डर कर बिल्ली पेड़ पर चढ़ गई। वह उतर भी नहीं रही हैं।

तभी उसे राजू की याद आई अभी राजू के पास जूते होते तो उतार देता। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ और उसने राजू से माफी मांगी।

निर्मल, कक्षा-4
रा.प्रा.वि. भीमलवास, रबासर, धनाऊ
जिला बाड़मेर(राज.)

चिड़िया मुझे बनादो...

चिड़िया मुझे बना दो राम
एक साथ करूं दो दो काम
सुंदर पंख लगा दो राम
जीतूंगी में हर संग्राम
डाल डाल पर जाऊँगी
मीठे गीत सुनाऊँगी
सबका मन बहलाऊँगी
फर फर फर उड़ जाऊँगी

आचूकी, कक्षा-3
राआउमावि. थिरपाली बड़ी,
चूरू (राज.)

बेटी का सवाल

तू मुझे परी बुलाती है लेकिन
परियों को आजादी मिलती है
तु मुझे चिड़िया कहती है लेकिन
चिड़िया हेतू खूला
आसमान होता है
तू मुझे गुड़िया भी कहती है
लेकिन
गुड़िया भी तो खेल की
रानी होती है
तो कहाँ है?
इस परी के लिए आजाद व
सुरक्षित दुनियां
इस चिड़िया के पंखों के लिए
खुला आसमान
कहाँ है इस गुड़िया रानी के लिए
सपनों का राज्य
बताओं ना माँ

भावना सिंवर, कक्षा-11
राउमावि रणजीतपुरा
हनुमानगढ़ (राज.)

चिड़िया और चींटी

एक बार की बात है कि एक चिड़िया नदी के किनारे पेड़ पर बैठी थी। तभी उसने देखा कि एक चींटी पानी में डूब रही है। उसने तुरन्त पेड़ का पत्ता तोड़ा और नदी में चींटी के आगे फेंक दिया। चींटी उस पर चढ़ गई । धीरे धीरे पता किनारे आया तो चींटी जमीन पर उतर गई। चींटी वापस चिड़िया के पास जाकर धन्यवाद दिया। फिर दोनों में दोस्ती हो गई। चींटी ने अपनी दोस्त चीड़िया से वादा किया कि भविष्य में कभी जरूरत पड़ी तो वह उसकी सहायता करेगी।

एक दिन एक शिकारी आया और अपने तीर से चिड़िया पर निशाना साधने लगा। चींटी ने उसे देख लिया। वह तुरन्त अपने साथियों को साथ लेकर शिकारी की ओर तेज गति से भागी। जैसे ही शिकारी चिड़िया पर तीर चलाने वाला था, चींटी व उसके साथीयों ने उसके पैर पर जोर से काटा। शिकारी का निशाना चुक गया और चिड़िया वहाँ से उड़ गई। इस प्रकार चींटी ने चिड़िया की जान बचाकर अपनी दोस्ती निभाई।

शिक्षा-मुसीबत में हमेशा एक दूसरे की मदद करनी चाहिए।

राधा, कक्षा-5
रा.उ.प्रा.वि. नया गांव,
कोलायत, बीकानेर

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2017: अनुभूत क्षण

❐ डॉ. सुमन जाखड़

गत वर्ष राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार हेतु चयन की सूचना का रोमांच उस समय और बढ़ गया जब मुझे बताया गया कि पुरस्कार वितरण की पूर्व संध्या पर हमारी मुलाकात हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्रीमान् नरेन्द्र मोदी जी से होना प्रस्तावित है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा देशभर से चयनित सभी 45 शिक्षक-शिक्षिकाओं की 3 दिवसीय आवास और भोजन व्यवस्था राजधानी दिल्ली के पॉश इलाके चाणक्यपुरी स्थित आलीशान पाँच सितारा होटल 'अशोका' में की गई थी। जहाँ राजस्थान से दूसरे चयनित शिक्षक इमरान खान जो एप-डवलपर के नाम से विख्यात है, समेत देश के कोने-कोने से चयनित शिक्षक 4 सितम्बर को दोपहर तक पहुँच चुके थे। हमें सूचना दी गई कि प्रधानमंत्री कार्यालय के अधिकारियों की एक टीम अत्यावश्यक दिशा-निर्देश देने हेतु होटल पहुँचने वाली है। सभी शिक्षकों को होटल में एक स्थान पर एकत्र होने के निर्देश मिला। तदुपरान्त अधिकारियों द्वारा 2 घंटे तक प्रधानमंत्री से मुलाकात के दौरान पालन किए जाने वाले निर्देशों को बारीकी से समझाया गया कि क्या पहनना है..कैसे बोलना है...कैसे बैठना है....क्या नहीं बोलना... मोबाइल साथ नहीं ले जा सकते इसलिए सेल्फी का तो सोचना भी मत... सामूहिक फोटो सैशन होगा जो बाद में आपको उपलब्ध करा दी जाएगी आदि आदि।

इसके बाद सायं 4 बजे निर्देशानुसार हमें वातानुकूलित लग्जरी बस में बिठा कर प्रधानमंत्री निवास पर ले जाया गया, हमें सम्मान सहित पूर्व निर्धारित सीटों पर बिठाया गया। मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमान् प्रकाश जावड़ेकर जी भी वहाँ उपस्थित थे। सभी से औपचारिक परिचय के साथ-साथ हुई वार्ता में एक शिक्षक ने मंत्री जी को बताया कि उनके विद्यालय में अटल टिंकरिंग लेब भी तैयार हो रही है, इससे उत्साहित जावड़ेकर जी ने सभी की ओर उन्मुख होकर उत्सुकता से पूछा कि किसी विद्यालय ने यह लैब कार्यशील भी की है क्या? उस समय मुझे बताते हुए अत्यंत गौरव महसूस हुआ कि 'श्रीमान् जी हमारे विद्यालय राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजगढ़ (चूरू) में यह लैब है, जहाँ विद्यार्थी स्वयं

कम्प्यूटर से डिजाइन कर मॉडल बनाते हैं तथा नेशनल टिंकर फिस्ट भी जीत चुके हैं, इस पर प्रसन्न होते हुए श्रीमान् जावड़ेकर जी ने पूछा कि 'मैडम आप कहाँ से हैं' मेरे द्वारा इस प्रश्न का उत्तर बताने के दौरान ही अन्दर के दरवाजे से प्रधानमंत्री महोदय का आगमन हुआ। प्रधानमंत्री जी ने सभी का अभिवादन स्वीकार कर आसन ग्रहण किया और सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस एवं राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त करने की बधाई दी।

गत वर्षों में राष्ट्रीय स्तर पर अधिक संख्या में (लगभग 300) शिक्षक सम्मानित होते थे तो उनका औपचारिक सम्बोधन एवं चाय पानी ही हो पाता था। परन्तु इसी वर्ष मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा चयन प्रक्रिया को पूर्णतया पारदर्शी बनाते हुए देशभर से मात्र शीर्ष 45 अति योग्य शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार देना तय किया है जिसके चलते वातावरण बहुत ही सहज और अनौपचारिक-सा था, इसी दौरान बातचीत को क्रम देते हुए जावड़ेकर जी द्वारा मुझे इंगित करते हुए प्रधानमंत्री जी को बताया गया कि चूरू, राजस्थान की इन मैडम ने हमारी महत्वाकांक्षी और महत्त्वपूर्ण परियोजना अटल टिकरिंग लैब स्थापित कर क्रियाशील भी कर दी है। इस पर प्रधानमंत्री महोदय ने मुझसे प्रश्न किया कि कितने बच्चे हैं आपकी स्कूल में मैडम...? तो मैंने उन्हें सम्मानपूर्वक बताया कि श्रीमान् जी मेरे बालिका विद्यालय में 5 वर्ष पूर्व मेरे कार्यग्रहण के समय केवल 340 बालिकाएँ थी और वर्तमान में लगभग 1300 छात्राएँ अध्ययनरत हैं यह सुनकर प्रधानमंत्री महोदय अत्यंत प्रभावित हुए और बालिका शिक्षा में योगदान हेतु मुझे विशेष बधाई दी। बड़े ही खुशनुमा वातावरण में चाय नाश्ता हुआ फिर सामूहिक फोटो सैशन हुआ, इसके बाद कुछ शिक्षकों के साथ प्रधानमंत्री जी की पहल पर व्यक्तिगत फोटो भी करवाए और मुझे भी इसका सौभाग्य मिला। बहुत ही अनौपचारिक व सौहार्द्रपूर्ण वातवारण में एक विराट व्यक्तित्व से मुलाकात के रोमांच को मैं होटल पहुँचकर अपने परिवार से साझा कर ही रही थी कि मेरे पति डॉ. विनोद जाखड़ के फोन पर एक परिचित के आए फोन ने हमें चौंका दिया....हमें बताया गया कि अभी प्रधानमंत्री महोदय ने अपने ट्वीट अकाउंट से ट्वीट कर के डॉ. सुमन जाखड़ की बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ की मुहिम ने शानदार योगदान करने पर अभिनन्दन किया है। यह मेरे जैसे साधारण शिक्षक के लिए बहुत गौरव की बात थी। चूँकि मैं विभागीय कार्यों के अलावा कभी सोशल मीडिया उपयोग नहीं लेती थी पर प्रधानमंत्री जी के एक ट्वीट ने मुझे देशभर में पहचान दी। हजारों की संख्याओं में उत्साहवर्द्धक रिट्वीट आए।

सारांशतः यह छोटी सी मुलाकात मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटनाओं में से एक बन गई। राजस्थान के छोटे से कस्बे राजगढ़ को अपनी कर्मस्थली बनाते समय यह सपना तो पाल रखा था कि मेरी संस्था के हर छात्र-छात्रा को वो सब सुख-सुविधाएँ मिले जिसका वो आकांक्षी है पर यह कल्पना और अपेक्षा नहीं की थी कि इन सब कार्यों का मूल्यांकन इस तरह सुखद रूप में होगा।

प्रधानाचार्य
(राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2017 से सम्मानित)
राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
राजगढ़-331023 चूरू (राज.)
मो. 9414527503

पुस्तक चर्चा

मेरी स्कूल डायरी

लेखिका : रेखा चमोली **प्रकाशन** : अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का प्रकाशन।

समतामूलक और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को केन्द्र में रखकर अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन पिछले कई वर्षों से कार्य कर रहा है। सार्वजनिक स्कूली व्यवस्था समृद्ध और सक्षम बने, समाज में वृहद स्तर पर इस व्यवस्था पर भरोसा बने, साथ ही शिक्षकों की क्षमतावर्धन जैसे महत्त्वपूर्ण विषय फाउण्डेशन की प्राथमिकता में हैं। फाउण्डेशन शिक्षकों और शिक्षा के विभिन्न विषयों पर केन्द्रित पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहा है। स्वाध्याय और शैक्षिक विमर्श के अवसर बनाने की श्रृंखला में ही 'मेरी स्कूल डायरी' का प्रकाशन शैक्षिक जगत में नई आशाएँ जगाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए कार्य कर रहे शिक्षकों को अपने जमीनी अनुभवों को विभिन्न विधाओं में लिखने के लिए प्रेरित कर शिक्षक समुदाय के बीच संवाद की पहल का हिस्सा बनाने का यह एक सफल प्रयास है।

अच्छी नीतियों और संसाधनों की उपलब्धता के साथ ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवाने में शिक्षकों की योग्यता और व्यावसायिक दक्षता विकास की भूमिका निर्णायक होती है। उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले के सरकारी प्राथमिक विद्यालय गणेशपुर की शिक्षिका रेखा चमोली द्वारा लिखी गई 'मेरी स्कूल डायरी' एक सामान्य सरकारी प्राथमिक विद्यालय व कक्षाओं की अभावग्रस्त परिस्थितियों व वातावरण में अध्यापिका के शिक्षण कार्य का स्वाभाविक विवरण प्रस्तुत करती है।

यह डायरी सकारात्मक उदाहरण के साथ संदेश देती है कि कैसे एक शिक्षिका अपने 50 से अधिक बच्चों की कक्षा में शैक्षिक साझेदारी करती है और जड़ता को तोड़ने की पहल करती है। यह कोशिश किसी भी शिक्षक के दक्ष होने की प्रक्रिया का जीवन्त उदाहरण है।

एक गुणवान शिक्षक कैसा होना चाहिए इसके कुछ महत्त्वपूर्ण पहलुओं के उदाहरण आपको इस डायरी में मिलते हैं। डायरी को पढ़ते हुए आप यह अनुभव करते हैं कि शिक्षिका द्वारा किए जाने वाले विविध सुचिंतित क्रियाकलाप उसे पारम्परिक शिक्षकों से विशेष बनाते हैं व उसे नयी मानवीय और दक्ष शिक्षक की पहिचान दिलाते हैं। यह डायरी राजकीय विद्यालयों के प्रति समाज के सभी वर्गों में भरोसा और सकारात्मक नज़रिया बनाए रखने में मदद करती है। इसमें कोई दो राय नहीं कि समतामूलक शिक्षा की बुनियाद राजकीय विद्यालयों के सबके लिए समान स्कूली शिक्षा के सिद्धान्त में संभव है। इस डायरी में वर्णित शिक्षिका के अनुभव सरकारी स्कूली व्यवस्था की उत्कृष्टता के साथ-साथ यहाँ पढ़ाने वाले शिक्षकों के प्रति भरोसा प्रदान करते हैं। साथ ही प्रत्येक शिक्षक को अपनी व्यावसायिक दक्षता में अभिवृद्धि के लिए शिक्षणकार्य की स्वाभाविक प्रक्रियाओं को जानने समझने का नज़रिया प्रदान करने का अवसर देते हैं।

'मेरी स्कूल डायरी' प्राथमिक कक्षा के शिक्षण कार्य करवाने वाले शिक्षकों में विभिन्न प्रकार की आवश्यक दक्षताओं और कौशलों को विकसित करवाने का अनुभूत अनुभवों को सहज रूप से साझा करते हुए सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जीवन्त रूप में आगे बढ़ाने का सफल प्रयास है।

कोई भी व्यक्ति एक शिक्षक होने का अर्थ तभी समझ पाता है जब वह सीखने की अपार क्षमताओं के साथ विद्यालय में आ रहे विद्यार्थियों के साथ शिक्षण कार्य में पूर्ण मनोयोग से शामिल होता है। विद्यालय परिसर और कक्षा-कक्ष में उसका सामना इस बात से होता है कि विद्यार्थी पाठ्यक्रम में दिये गये ज्ञान की संकल्पनाओं से कैसे पारस्परिक क्रिया करते हुए प्रक्रिया में शामिल होते हैं। विद्यार्थी उन अवधारणाओं को कैसे सीखते हैं? जिनका उल्लेख पाठ्यचर्या करती है। 'मेरी स्कूल डायरी' एक शिक्षिका का स्वयं से निरन्तर चलने वाले संवाद का जीवन्त उदाहरण है। यह संवाद दक्ष, मानवीय और चिन्तनशील शिक्षक बनाने की दिशा में प्रवृत्त करने के अनुभूत ईमानदार प्रयास प्रतीत होते हैं।

'मेरी स्कूल डायरी' में एक सरकारी प्रारम्भिक विद्यालय की शिक्षिका अपने शिक्षण कर्म की यात्रा से यह समझाने में सफल है कि अभावग्रस्त परिवेश में शैक्षिक सिद्धान्त किस प्रकार शिक्षण कर्म में आकार पाते हैं। सन्दर्भ के साथ भाषा सीखना और स्थानीय ज्ञान का पाठ्यक्रम के साथ सम्बन्ध, शिक्षण में कैसे आकार लेता है? इन महत्त्वपूर्ण विषयों को इस पुस्तक से समझा जा सकता है। प्राथमिक शालाओं में शिक्षण कार्य कर रहे शिक्षकों को अपने शिक्षण कर्म को नये आयाम देने में यह पुस्तक प्रभावी मार्ग दिखलाने का कार्य करती प्रतीत होती है और इन सभी के मूल में है जीवन्त शिक्षण अनुभव। संवाद और स्वाध्याय के लिए यह पुस्तक अपनी उपादेयता सिद्ध करती है और प्राथमिक शिक्षकों को प्रेरित करती है कि वृहद भारतीय ग्रामीण परिवेश के विद्यालयों में कार्य करते हुए उनके शैक्षिक अनुभव, शिक्षा में सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को अनवरत नये उत्साह और नई शक्ति के साथ कैसे आगे बढ़ा सकते हैं।

स्वाध्याय करें, संवाद बनाएं। निश्चित रूप से नये आयाम स्थापित होंगे।

-मुकेश व्यास
संपादक, शिविरा
II-165, मुरलीधर व्यास नगर,
मौसम विभाग के पास, बीकानेर-334004
मो. 9460618809

पुस्तक समीक्षा

साथी हैं संवाद मेरे

लेखक : ज्ञान प्रकाश 'पीयूष' **प्रकाशक : बोधि प्रकाशन,** सी-46, सुदर्शनपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन, बाइस गोदाम, जयपुर-302006 **संस्करण** : मई, 2019, **पृष्ठ** : 136, **मूल्य:** ₹ 200/- (सजिल्द)

प्रथम काव्य कृति 'अर्चना के उजाले' के काव्य जगत में समादृत होने के शीघ्र बाद श्री ज्ञान प्रकाश 'पीयूष' की दूसरी काव्य कृति 'साथी हैं संवाद मेरे' का आना अत्यन्त हर्ष का विषय है। यह कृति कवि के जीवन-अनुभवों के विविध पक्षों की सरल भाषा में अभिव्यक्ति है।

इसमें प्रकृति के मनभावन दृश्य हैं तो सामाजिक विसंगतियों के कटु अनुभव भी हैं। एक ओर मातृभूमि का गौरव गान है तो दूसरी ओर फटेहाल मजदूर किसानों का कारुणिक चित्रण है। जहाँ आध्यात्मिकता के स्वर हैं वहीं जीवन के प्रति सकारात्मक चिन्तन है। इन सभी विषयों के वर्णन का मूल उद्देश्य अच्छाई को ग्रहण कर नैतिक मूल्यों की स्थापना करना रहा है। इस प्रकार यह कृति साहित्य के मूल भाव 'समाज के हित' को सफलतापूर्वक साधती है।

इस संग्रह की कविताएँ कवि के संवेदनशील मन से निसृत होकर पाठक के हृदय से सीधे संवाद करती हैं। यह कोमल भावनाओं से युक्त सुन्दर भावाकृति है जो पाठकीय चेतना को झकझोरने में पूर्णतया समर्थ है। छियानवे कविताओं का यह वृहद् काव्य संग्रह विचारों एवं कल्पनाओं का मणि-कांचन समन्वय है। इसमें लघु एवं दीर्घ दोनों प्रकार की कविताएँ गुम्फित हैं। कवि की दृष्टि समन्वयवादी है। वह जीवन के सभी पक्षों को आपस में गुँथा हुआ पाता है। इतना ही नहीं वह तो प्रकृति और मानव-सृष्टि में अद्‌भुत साम्य देखता है। संग्रह की प्रथम कविता 'अद्‌भुत साम्य है' में कवि का कहना है-

''अल सुबह/पंछियों के मंगल गान से/
खुलती है आँख,
सूरज दादा के/उठने पर/होती है/दिन की शुरुआत,
साँझ ढले जब/सूरज अपने घर/जाने को होता है
पंछी लौट आते हैं/अपने घोंसलों में/बिताने को रात,
हम भी होते हैं/अपने परिवार के साथ,
अद्‌भुत साम्य है/प्रकृति और/मानव सृष्टि में।'' (पृष्ठ 17)

जीवन में वाणी का बड़ा महत्व है। मन के भावों को अभिव्यक्त करने का यही सबसे सशक्त माध्यम रहा है। आपस में संवाद ही मनुष्य की प्रगति के कारक रहे हैं। मनुष्य का परस्पर मतभेद हो जाने पर भी संवाद बना रहे तो भ्रांतियाँ दूर होकर सम्बन्ध पुनः सामान्य हो जाते हैं। शीर्षक कविता 'साथी हैं संवाद मेरे' में कवि का कथन है-

''संवाद हैं/मेरे साथी
अंधे की सी लाठी
रूठों को ये मनाते
बिछुड़ों से हैं मिलाते
हरते जीवन का खालीपन
खुशियों से
भर देते दामन।'' (पृष्ठ 25)

हर बात के अच्छे और बुरे दो पहलू होते हैं। आग का उदाहरण देते हुए कवि 'आग और रोशनी' कविता में कहता है-

''विकृतियों को/जब जलाना हो
तब आग/आग जैसी होती है
और किसी को/राह दिखानी हो
तब आग/रोशनी बन जाती है।'' (पृष्ठ 46)

कवि के लिए संवेदनशील होना अत्यावश्यक है। अपने या दूसरों के दुःखों की अनुभूति से जो भाव उत्पन्न होते हैं वे ही शब्द बन कर कविता का रूप ले लेते हैं। 'कविता' शीर्षक की कविता में कवि का यह कथन दृष्टव्य है-

''कविता नहीं है/केवल भावों की
अभिव्यक्ति
सर्वोत्तम शब्दों का/सर्वोत्तम अनुक्रम,
या अंतर्द्वन्द्वों का/सहज प्रकाशन,
अथवा जीवन की व्याख्या
वह तो है/आत्म-संवेदन का
स्वतःस्फूर्त उद्वेलन
आत्म-मंथन का सार
अनुभव का दिव्य निखार।'' (पृष्ठ 53)

कवि विनम्रशील है और कष्ट सहिष्णु भी। वह सभी परिस्थितियों में सुख तलाश लेता है। ऋतुओं का परिवर्तन भी उसके लिए आनन्द का कारण बन जाता है। 'धन्यवाद सृजनकार का' कविता में कवि का यह कथन दर्शनीय है-

''वर्षा ने भिगोया/ठंड ने कँपाया
लू ने झुलसाया/वसंत ने गंधाया मुझे
अपने सुरभित फूलों से।
आभार सबका/धन्यवाद उस
सृजनकार का
जिसने इन्हें बनाया।'' (पृष्ठ 75)

कवि औरों के गुणों को ग्रहण करता है। दूसरों के दोषों से उसे कुछ लेना-देना नहीं है। कवि के इस दृष्टिकोण से समाज को सुन्दर बनाया जा सकता है। 'पड़ती नहीं नज़र' कवि की यही सकारात्मक सोच दृष्टिगोचर होती है-

''लोगों की नज़र
पड़ती नहीं क्यों उजालों पर,
ढूँढ़ लाते तत्काल वे
अंधेरे औरों के।'' (पृष्ठ 112)

उक्त कुछ उदाहरणों से कृति के कथ्य का अनुमान लगाया जा सकता है। संग्रह की सभी कविताएँ रोचक, पठनीय और मननीय हैं। ये पाठक के मन को अन्त तक बाँधे रखती हैं। कविताओं की भाषा सरिता की तरह मन्द-मन्द प्रवाहमान है। अलंकारों, मुहावरों, प्रतीकों और बिम्बों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। सुगठित शब्द संयोजन दर्शनीय है। कवि श्री 'पीयूष' की प्रत्येक कविता जीवन का मर्म, व्यक्ति का समाज के प्रति धर्म और चरित्र निर्माण के करणीय कर्म की शिक्षा प्रदान करती है। जनमानस को नव चिन्तन के लिए प्रेरित करती कृति के सृजन के लिए श्री ज्ञान प्रकाश 'पीयूष' निश्चित रूप से बधाई के पात्र हैं।

समीक्षक : **सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'**
3-फ-22 विज्ञान नगर, कोटा-324005 (राज.)
मो: 9928539446

बैकुंठी

लेखक : श्री देवकिशन राजपुरोहित **प्रकाशक** : महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, सिटी पैलेस, उदयपुर-313001 **संस्करण** : 2018
पृष्ठ संख्या : 96 **मूल्य** : ₹ 80

किसी भी समाज की पहिचान उसकी अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश और विरासत होती है। जो देश काल और परिस्थिति के अनुरूप परिष्कृत होती जाती है। किसी भी सभ्य समाज का यह दायित्व होता है कि वह अपने सामाजिक सरोकारों और सांस्कृतिक परम्पराओं की गरिमा को सँजोकर रखे। यह कार्य आने वाली पीढ़ियों की जिम्मेदारी होती है। फिर चाहे वह परम्परा उचित हो या अनुचित। बैकुंठी-वरिष्ठ लेखक श्री देवकिशन राजपुरोहित का एक ऐसा ही रोचक उपन्यास है।

जो राजस्थानी परिवेश को जीवन्त करता हुआ एक समसामयिक दस्तावेज है। उपन्यास का विन्यास बहुत ही रोचकता लिए हुए है जो गाँव की गलियों में व्याप्त हलचल उसकी अपणायत और विद्रूपता उसकी प्रखरता और भोंथरेपन का मनोरंजक प्रस्तुतिकरण है। कथाशिल्प की विशेषता यह है कि पाठक यह महसूस करने लगता है कि वह हो रहे घटनाक्रम का स्वयं ही साक्षी है। लेखक ने प्रत्येक दृश्य की बारीकियों का मुँह बोलता चित्रण किया है और समाज में व्याप्त बैकुंठी जीवित खर्च, विधवा विवाह, बेरोजगारी, अशिक्षा जैसे मुद्दों को सशक्त रूप से उठाया है। वही अमल के प्रयोग को जीवनशैली का प्रतीक समझकर उसका प्रयोग करना और बढ़ावा देना, बीड़ी व धूम्रपान को एक आवश्यक जरूरत के रूप में प्रस्तुत करना, मृत्यु भोज को क़ानून की नज़र से बचाने के लिए गंगा परसादी का नाम देना। समाज में लोगों के वर्चस्व की लड़ाई अपने वज़ूद और ठसक की कश्मकश, सरकारी तंत्र का दखल ना होना। बिना जद्दोजहद के तंत्र में सहज सुधार होना। कहीं-कहीं कहानी की कसावट को झकझोर देता है। पुस्तक के आवरण पर थोड़ी मेहनत और की जा सकती थी। पुस्तक के आकार को देखते हुए मूल्य थोड़ा ज्यादा हो गया है। तथापि लेखक ने कथा सम्राट प्रेमचंद की किस्सगोई वाली शैली को फिर से जीवित कर दिया है। राजस्थानी भाषा के साहित्य में कुछ ठेठ शब्दावली का विलक्षण प्रयोग किया है जो भाषा की सबलता को दर्शाते हैं। लेखक इस बात के लिए साधुवाद के पात्र हैं कि उन्होंने कथा के बहाव को गति देने के लिए राजस्थानी के बहुत से ऐसे शब्दों को पुनर्जीवित कर दिया जो इन दिनों प्रचलन से लुप्त हो रहे हैं। साथ ही इस बात से भी आगाह किया है कि भाषा को इस विरासत को आधुनिकता की चकाचौंध से बचा कर रखना होगा। यह पुस्तक राजस्थानी भाषा में एक मील का पत्थर साबित होगी।

इस पुस्तक को महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन उदयपुर जैसे प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। जो पुस्तक की उपादेयता को स्वयं प्रमाणित करता है।

समीक्षक : **जगमोहन सक्सैना**
1 ई 19 जय नारायण व्यास कॉलोनी,
बीकानेर-334003
मो. 9414140044

माटी हिन्दुस्तान की

लेखक : टीकम अनजाना **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन सी-46, सुदर्शनपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर-302006 **संस्करण** : 2018 **पृष्ठ संख्या** : 120

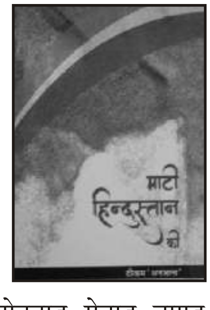

श्री टीकमचन्द बोहरा राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी हैं। पाली, राजसमन्द, जालोर, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, दौसा, भीलवाड़ा और जयपुर में अच्छी सेवाओं के कारण आपको जाना जाता है। वहाँ रहते हुए गोढ़वाड़, मेवाड़, वागड़ और ढूँढ़ाड़ी संस्कृति को आपने नजदीकी से पहचाना, परखा और लिखा। 'राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण' में रहते हुए अनेक तरह के अनुभव प्राप्त हुए। संवेदनशीलता ने आपको पिछले तीन वर्ष में लेखक बना दिया। हालांकि प्रशासनिक सेवा की पत्रिका 'प्रतिध्वनि' से आप एक अर्से से जुड़े हुए हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन ने आपको आगे बढ़ने की जाजम और मंच दिया है।

कवि 'अनजाना' जी का 'माँ से प्यारा नाम नहीं' (2017) महाबलिदानी पन्नाधाय (2018) के बाद 'माटी हिन्दुस्तान की' काव्य संग्रह पाठकों के हाथ में आया है लिफाफा देखकर मजमून भाँप लिया जाता है शीर्षक से ही आभास हो जाता है कि देश की माटी की सुगन्ध यह पुस्तक पाठकों को देगी। जिसकी नींव मजबूत व मकान मजबूत है। इस देश की नींव मजबूत हाथों से रखी गई। अनजाना जी का कविता संग्रह उसी महत्त्वपूर्ण हस्तियों को साक्षी मानकर साधा गया है। सबसे पहले 'वन्दे मातरम्' के भाव के साथ पुस्तक का श्रीगणेश किया है।

पहली जननी माँ है मेरी, दूजी धरती माता।
माँ और मातृभूमि ही, होती सच में माता।।

इस कविता संग्रह में अनेक रचनाओं के संकलन में मातृभूमि से जुड़ी हुई रचनाओं को प्रमुख स्थान दिया है। माँ और मातृभूमि के प्रति उदात्त भावनाएँ ही लेखक को बरबस लिखने को प्रेरित करती हैं।

भारत माता की जय बोलो,
तो सीने में आती जान है।
उद्घोष करके वन्दे मातरम्,
बढ़ते आगे जवान है।।
मातृभूमि पर राष्ट्रभक्त,
हो जाते कुर्बान है।
भारत माँ के वो लाडले,
पाते तिरंगा परिधान है।।

माँ को सलाम 'अनजाना' जी देश की अस्मिता से अनजाना नहीं है। देशभक्ति उनकी रग-रग में है। देश की सीमा की रक्षा करने वाले सैनिकों के प्रति अबाध श्रद्धा है तो भारतीय संविधान उनको प्यारा है। राष्ट्र नहीं तो कुछ नहीं। यह बात लेखक बहुत अच्छी तरह से जानता है। वो जानते हैं कि देशभक्ति की आज के जमाने में सख़्त जरूरत है। जिसका स्पष्ट संदेश इस पुस्तक में दिया गया है।

'वतन के जो काम न आए, खून नहीं वो पानी है, कौम के जो काम न, बेकार वो जवानी है, माँ से जीवन हमने पाया, धरा ने तो जीवन बनाया, हम सबके जीवन की सच्ची यही कहानी है।'

'माटी हिन्दुस्तान की' पुस्तक का शीर्षक है इस कविता में भी देशभक्ति की भावना का सन्देश है। सांस्कृतिक और प्राकृतिक संपदा से लदीपदी हमारी भारतमाता का महिमा ज्ञान बहुत ही भावनात्मक शब्दों में चित्रित किया हैः-

आजाद हिन्द के शासन की,
अशोक स्तम्भ पहचान है,
अशोक चक्र से बना तिरंगा,
ये तिरंगा हमारी शान है।
भारत की पावन धरती पर,
महावीर ने जन्म पाया है,
सत्य अहिंसा क्षमा का,
उन्होंने पाठ पढ़ाया है।
तर्क ज्ञान-नीति शिक्षा,
जग में सारा मान रहा है।
जगत में सारे भारत को,
गौतम बुद्ध से जान रहा है।
कण-कण गौरव गाता इसका,
ये माटी हिन्दुस्तान की,
भारत-भू पर जन्म लिया,
ये बात बड़े अभिमान की।।

'अनजाना' जी ने सम्राट अशोक से लेकर

अम्बेडकर तक अपनी कविताओं में आदर के साथ स्मरणांजलि प्रदान की है। मेरा प्यारा भारत, तिरंगे की तमन्ना, सेना की बदौलत, सेना को सलाम, भारत माता की जय, जय माँ जय मातृभूमि, वन्दे मातरम्, अब आजादी चाहिए, जैसी अनेक कविताओं में कवि ने देश के स्वर्णिम इतिहास, राष्ट्रीय प्रतीक, राष्ट्र की सांस्कृतिक परंपरा, नई पीढ़ी को अवगत कराया है। संविधान निर्माता भीमराव अम्बेडकर को 'वीर विजयी वो कालजयी' कविता में तथा 'महिमा संविधान' में अधिकारों के साथ कर्त्तव्य की शिक्षा दी गई है। युवाओं की अज्ञानता का निवारण किया है, दो अक्टूबर के महत्त्व में दोनों महापुरुषों को इस प्रकार याद किया है।

गाँधी शास्त्री दोनों को,
देश करता धन्यवाद है।
दो अक्टूबर के दिन,
श्रद्धा से करता याद है।।

आज भारत आजाद हो गया। मगर समाज दिशाहीन होता जा रहा है। आज हम जाति, धर्म-सम्प्रदाय के नाम पर बँटकर कभी आतंकवाद, तो कभी नक्सलवाद की चपेट में आकर दिग्भ्रमित हो रहे हैं। देश के भीतर भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है। सीमा पर गद्दारों की नजरें टिकी है। 'दर्द मेरे देश का' में यह दर्द साफ झलकता हैः-

आतंकवाद की ज्वाला में,
कश्मीर हमारा जल रहा है।
वार्ता की आड़ लेकर,
चालाक पड़ौसी छल रहा है।
जातिवाद का अजगर देखो,
इंसानियत को निगल रहा है।
लोकतंत्र के नाम पर देश,
भीड़तंत्र में बदल रहा है।

टीकमचन्द जी ने राजस्थान में जन्म लिया है तो अपने प्यारे प्रान्त को कैसे भूल सकते हैं। 'म्हारो हिवड़ो राजस्थान' में मायड़ भाषा राजस्थानी में राजस्थान का खान-पान, सन्तों और सूरमाओं की महिमा, नदियों, बांधों, झीलों, मेट्रो, तेल, मीरा और वीरा का बखाण करते हुए कवि का मन मोर यूं नाचने लगता है।

सबसू प्यारो राजस्थान
म्हारो हिवड़ो राजस्थान।
जग सूं न्यारो राजस्थान,
म्हारो जिवड़ो राजस्थान।।

'गौरव गाथा प्रताप की' वीर अमरसिंह राठौड़, प्रताप से पहले पन्ना को प्रणाम है, जय जय कालीबाई, विद्या की देवी सावित्री बाई आदि कविताओं में राजस्थान का गौरवपूर्ण इतिहास, विश्व प्रसिद्ध धरोहर और सांस्कृतिक छटा का सांगोपांग वर्णन है।

कवि 'अनजाना' आसपास के प्रदूषण से अनजान नहीं है कलम से सहजरूप में उकेरा है। उनके भावों का बहाव तेज है। सीधा कलेजे में बैठता है 'मानव का अधिकार' कविता में 'चमड़ी का रंग अनेक' होकर भी हम एक हैं। 'आओ सबको करे स्वीकार, इंसानियत को करे प्यार।' कवि ने 'आखरदान' चलो चले इक काम करें, पढ़ना लिखना आम करें। आगे अगर बढ़ना है तो, सब लोगों को पढ़ना है।

कविमन नारीमन को कैसे छोड़ सकता है। नारी अब नहीं बेचारी, नारी से नहीं मिला है। बेटी को भी चाहिए जीने का अधिकार, ईश्वर का दूजा रूप, धन्य है भारत की नारी आदि अनेक कविताओं में मातृशक्ति पर केन्द्रित रचना-रची है।

पूजा नहीं पुरुष के सम,
नारी को अधिकार चाहिए।
दिलों में इज्जत,
आँखों में सत्कार चाहिए।।

इस प्रकार टीकमचन्दजी ने पुलिस और घरेलू सुरक्षा, कर्ज में डूबा किसान, खेत खलिहान, पर्यावरण, स्वच्छ भारत, साक्षरता, मेहनतकश मजदूर, हमारी प्रकृति, पृथ्वी की पुकार, हृदय की भाषा (हिन्दी), पुस्तक प्रेम आदि अनेक विविध विषयों पर शानदार ढंग से प्रस्तुति दी है। मैं अपनी बात कवि 'अनजाना' की इसी आह्वान के साथ सम्पन्न करता हूँ-

सबको ले साथ चलेंगे,
काम के सारे हाथ चलेंगे।
कोशिश में न कमी रखेंगे,
आँखों में नमी रखेंगे।
सब मिलकर संघर्ष करेंगे,
मायूसों में हर्ष भरेंगे।
नहीं झुकेंगे, आगे बढ़ेंगे,
बिना रुके दिन-रात चलेंगे।।

अंत में कविवर टीकमचन्द जी बोहरा को अच्छी रचना के लिए कोटिशः शुभकामना।

समीक्षक : **पृथ्वीराज रतनू**
FCI. गोदाम के पास, इन्दिरा कॉलोनी,
बीकानेर-334001
मो: 9414969200

हाट

लेखक : ओम नागर **प्रकाशक** : बोधि प्रकाशन सी-46, सुदर्शनपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर-302006 **संस्करण** : 2018 **पृष्ठ संख्या** : 184 **मूल्य** : ₹ 250/-

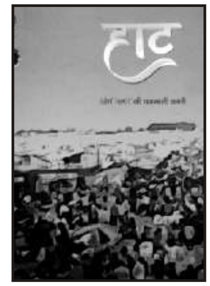

हिन्दी और राजस्थानी के समर्थ कवि ओम नागर से साहित्य जगत को अभी और संभावनाएँ नजर आती हैं। ओम नागर साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखते हैं, युवा पत्रकार होने के कारण समाज में घटित होने वाली घटनाओं पर पैनी नजर रखते हैं। इस बार अपने पाठकों के सम्मुख ओम नागर राजस्थानी डायरी 'हाट' के साथ एक बार फिर खुद को लोक का प्रतिनिधि साहित्यकार के रूप में उपस्थित हैं। साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार एवं भारतीय ज्ञानपीठ नव लेखन पुरस्कार से समादृत ओम नागर को राजस्थानी अकादमी सहित अनेक पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है।

डायरी विधा में राजस्थानी भाषा में अभी बहुत अधिक लिखा नहीं गया है, ऐसे में ओम नागर की 'हाट' इन दिनों चर्चा में हैं। जनवरी 2016 से दिसम्बर 2017 दो वर्षों की जीवन यात्रा है जो लेखक ने खट्ठे-मीठे अनुभवों के साथ इस डायरी में उकेरी है। इस डायरी में लेखक का कवि मन पूरी तरह साथ निभाता चल रहा है। इसके माध्यम से लेखक राजनीति, समाज, मनुष्यता के विभिन्न पक्षों पर अपनी बेबाक बात रखने में सफल रहे तो खुद की परेशानियों को सार्वजनिक करने से भी पीछे नहीं हटे हैं।

वैसे डायरी एकदम निजी होती है परंतु बदलते परिवेश में साहित्य समाज में डायरी विधा को सार्वजनिक कर दिया, कुछ लोग दो तरह की डायरी उकेरते हैं एक निजी और दूसरी साहित्यक-सार्वजनिक परंतु ओम नागर ने भीतर खाने कुछ भी नहीं रखा जो डायरी में लिखा उसको पाठकों को परोस दिया। इस डायरी में पूरा परिवेश है, साहित्यकार की डायरी के साथ-साथ सामान्य नागरिक की डायरी भी प्रतीत होती है, अनेक अवसरों पर कविता का

सहारा लेते हैं, अपने अनुभवों को इस तरह प्रस्तुत करते हैं जिससे वह उस दिन की घटना लेखक की व्यक्तिगत न होकर समाज की घटना बन जाती है, डायरियाँ खूब लिखी जा रही हैं लेकिन ओम प्रतिदिन को उत्सव का रूप देने का प्रयास करते हैं तभी तो हर दिन की लेखनी को शीर्षक दे देते हैं।

ओम नागर का दो वर्षों का सफर हड़बड़ाहट का नहीं है, उन्होंने अपने समय का भरपूर उपयोग किया है, घर, समाज, साहित्य, राजनीति, मित्रता, परिवार, स्वयं के भीतर और बाहर सभी को गोता लगाकर देखा-परखा है, तभी तो 'हाट' आत्मकथ्य बनता नजर आता है। सामाजिक सरोकारों का सांगोपांग स्वरूप देखने को मिलता है।

एक लेखक होने के नाते ओम नागर सजग दिखाई देते हैं, वह चीजों को पारखी नज़र एवं सूक्ष्म तरीके से देखते हैं, इस समय में उनके द्वारा की गई यात्राओं का वर्णन ही नहीं करते बल्कि नए स्थानों में रमण करते हैं, यात्रा वृतांत को डायरी के माध्यम से चित्रकार की भाँति उकेरने में सफल हुए हैं।

'हाट' के माध्यम से लेखक सभी भाषाओं का सम्मान करते हुए सबको पढ़ने-सुनने का आह्वान भी करते हैं, ओम नागर की डायरी केवल ओम नागर की डायरी नहीं हैं, इसको पढ़ते हुए अनेक वरिष्ठ एवं युवा कवियों को जानने, समझने और पढ़ने का लाभ भी मिलता है, पाठक को जोड़े रखने में 'हाट' एक मुकम्मल डायरी है।

ओम नागर की डायरी में दिन भर का विवरण मात्र नहीं है बल्कि स्थानीय संस्कृति, परिवेश, इतिहास एवं साहित्यिक गतिविधियों एवं संवेदनाओं से साक्षात्कार करवाती है। डायरी पढ़ते हुए रोचकता के साथ-साथ नागर साहित्यिक-सांस्कृतिक विमर्श करते हैं, उन्होंने यात्राओं को अत्यंत पठनीय बनाने के साथ-साथ यहाँ की संस्कृति से परिचित करवाने का प्रयास भी किया है।

हम सबके प्रिय कवि ओम नागर की 'हाट' को हाथ में लेते ही तुरंत पढ़ने को मन करता है, ऐसा लगता है कि पन्ने जल्दी-जल्दी पलटते जाए। ओम नागर को बहुत-बहुत बधाई।

समीक्षक : **राजेन्द्र जोशी**
तपसी भवन, नत्थूसरबास
बीकानेर-334004
मो. 9829032181

रपट

नेत्रहीन विद्यालय में विभिन्न कार्यों का उद्घाटन

❒ अल्ताफ़ अहमद खान

बीकानेर। दिनांक 22.08.2019 को राजकीय नेत्रहीन छात्रावासित उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर में प्रमुख शिक्षा सचिव श्री आर. वेंकटेश्वरन द्वारा एनएलसी. इंडिया लिमिटेड द्वारा 16 लाख रुपयों की लागत से सीएसआर. फंड से निर्मित डायनिंग हाल मय किचन एवं अन्य निर्माण कार्यों का उद्घाटन किया गया। निर्माण कार्यों के उद्घाटन के समय प्रमुख शिक्षा सचिव श्री आर. वेंकटेश्वरन के साथ श्री नथमल डिडेल निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, श्री ओमप्रकाश कसेरा निदेशक प्राथमिक शिक्षा राजस्थान, एनएलसी. इण्डिया लिमिटेड की तरफ से श्री ई. ईसक्किमुथु परियोजना प्रमुख, श्री श्रीधरन महाप्रबंधक, श्री नरेन्द्र मीणा अधिशाषी अभियंता, श्री हेमंत लेखरा अधिशाषी अभियंता उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरूआत प्रमुख शिक्षा सचिव द्वारा विद्यालय में पौधारोपण करके की गई। श्री आर. वेंकटेश्वरन ने सम्पूर्ण विद्यालय एवं छात्रावास का निरीक्षण किया तथा दृष्टिबाधित बालकों के साथ कुछ समय बिताया एवं उन पर शिक्षा विभाग की तरफ से हो रहे खर्च की जानकारी ली। इसके साथ ही प्रमुख शिक्षा सचिव महोदय के समक्ष संगीत अध्यापक श्री सुरजाराम के नेतृत्व में कुलदीप, देवकिशन, अमित, रामदेव गहलोत आदि छात्रों द्वारा संगीतमय प्रस्तुति दी गई। प्रमुख शिक्षा सचिव महोदय ने मुक्त कंठ से बालकों की संगीत प्रतिभा की प्रशंसा की तथा उन्हें आशीर्वाद दिया।

श्री दिलीप परिहार सहायक निदेशक (सीएसआर.) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ने प्रमुख शिक्षा सचिव को सीएसआर. गतिविधियों के अन्तर्गत नेत्रहीन विद्यालय तथा बीकानेर के अन्य विद्यालयों में चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यों के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी दी, जिस पर प्रमुख शिक्षा सचिव ने प्रसन्नता जाहिर की। नेयवेली लिग्नाइट कॉर्पोरेशन इण्डिया लिमिटेड बरसिंहसर, बीकानेर द्वारा इसी शिक्षा सत्र में 47 लाख के सीएसआर. फंड से नेत्रहीन विद्यालय में 5 अतिरिक्त छात्रावास कक्ष तथा 2 टॉयलेट ब्लॉक का निर्माण करवाया जाएगा, जिसकी प्रस्तावित जगह का प्रमुख शिक्षा सचिव श्री आर. वेंकटेश्वरन एवं श्री नथमल डिडेल निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान द्वारा निरीक्षण किया गया।

उद्घाटन समारोह में श्री राजकुमार शर्मा मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी बीकानेर, श्री उमाशंकर किराड़ू जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय (माध्यमिक शिक्षा) बीकानेर, श्री अजय कुमार रंगा अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा) बीकानेर, श्री हेतराम सारण एडीपीसी. समसा बीकानेर श्री दिलीप परिहार सहायक निदेशक (सीएसआर.) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान उपस्थित रहे।

प्रधानाचार्य
राजकीय नेत्रहीन छात्रावासित
उच्च माध्यमिक विद्यालय
बीकानेर (राज.) 334003
मो. 9414414614

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

स्वतंत्रता दिवस पर शिवनगर की 41 प्रतिभाओं का हुआ सम्मान

बीकानेर- स्कूल राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर में 73वाँ स्वतंत्रता दिवस जश्न ए आजादी के रूप में बड़े धूमधाम से मनाया गया। विद्यालय के कार्यक्रम अधिकारी मोहरसिंह सलावद ने बताया कि इस अवसर पर छात्र छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। भामाशाह बैंक प्रबंधक होत सिंह भाटी एवं विद्यालय कि ओर से सत्र 2018-19 में कक्षा एक से 12 तक उत्कृष्ट परिणाम वाले 41 छात्रों को प्रशस्ति पत्र, मेडल एवं नगद राशि देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा शिक्षक प्रकोष्ठ के जिला संयोजक किशनसिंह राजपुरोहित, भामाशाह भैरूसिंह थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य श्री अनुज अनेजा ने की। कार्यक्रम में अभिभावक एवं ग्रामीण सहित समस्त शाला स्टाफ मौजूद रहा। मंच संचालन गोवर्धन लाल ने किया। शिवनगर स्कूल में ही 41 फल एवं छायादार पौध लगाकर पौधा रोपण किया गया। विद्यालय के कार्यक्रम एवं प्रवेश प्रभारी मोहर सिंह सलावद ने बताया कि राज्य के शिक्षा मंत्री के आदेशानुसार स्कूल एवं सार्वजनिक स्थानों पर जितने नवप्रवेश होंगे उतने पौधे लगाएँ जाएँगे। साथ ही 60 से अधिक पौधे बच्चों को वितरित किए जिनको सार्वजनिक स्थानों पर लगाएँ जाएँगे। जब तक ये पौधे बड़े होंगे इनकी देखभाल भी बच्चे करेंगे। इस अवसर पर विद्यालय के सभी छात्रों को एक-एक पौधा लगाने एवं जब तक वह बड़ा नहीं होता देखभाल करने की शपथ दिलवाई। व्याख्याता अनुज अनेजा ने छात्रों को पर्यावरण संरक्षण के बारे में जानकारी दी। पौधा रोपण कार्यक्रम में व्याख्याता अनुज अनेजा, सुभाषचन्द्र न्योल, गोवर्धन लाल, कार्यक्रम अधिकारी मोहरसिंह सलावद, तेजपाल मेघवाल, दयाराम, सुजान सिंह, प्रेमसिंह, कमलसिंह, खुमान सिंह, नरपत सिंह, बुधसिंह, देवीसिंह, बाबू दान, कैलाश राम, मुकेश कुमार आदि उपस्थित रहे।

बारहगुवाड़ विद्यालय के भामाशाहों का सम्मान

बीकानेर- राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, बारहगुवाड़, बीकानेर में भामाशाह श्री गौरीशंकर आचार्य ने एक कक्षा-कक्ष मय बरामदा लागत मूल्य 5,50,000/- पाँच लाख पचास हजार रुपए से निर्माण कार्य करवाकर विद्यालय को समर्पित किया। 15 अगस्त से इस कक्ष का उपयोग प्रारंभ कर दिया गया है। इसी प्रकार श्री निर्मल प्रकाश डागा गंगाशहर बीकानेर ने 60,000/- साठ हजार रुपए की लागत से विद्यालय की कम्प्यूटर लैब को सुसज्जित करवाया। इन दोनों भामाशाहों का विद्यालय स्तर पर संस्थाप्रधान श्रीमती मधु पुरोहित द्वारा विद्यालय परिसर में सम्मानित किया गया। संस्थाप्रधान ने भामाशाहों को प्रेरित करने वाले व्याख्याता डॉ. विष्णुदत्त जोशी का आभार व्यक्त किया।

वडेरवास (पाली) में स्वतन्त्रता दिवस समारोह पर प्रतिभाओं का सम्मान

वडेरवास(पाली)- 73वाँ स्वाधीनता दिवस राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, वडेरवास में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने वरिष्ठ अध्यापक जी.आर. गुर्जर, अध्यापिका श्रीमती लक्ष्मी बाकोलिया व श्रीमती अनीता मीणा के नेतृत्व में अनेक प्रकार की सांस्कृतिक व साहसिक प्रस्तुतियों से आगंतुकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्यातिथि महोदया सरपंच श्रीमती ममता सीरवी, SDMC अध्यक्ष श्री फूलाराम सीरवी व प्रधानाचार्य श्री राजेंद्र कुमार त्रिवेदी के द्वारा संयुक्त रूप से ध्वजारोहण किया गया। इस दौरान विद्यालय की छात्रा तनु, राधिका व अनीता द्वारा मुख्यातिथि व गणमान्य लोगों को परेड निरीक्षण कराया तथा व्यायाम व पिरामिड प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भामाशाह वेनारामजी ने की तथा संचालन वरिष्ठ अध्यापक जी. आर. गुर्जर ने किया। भामाशाहों व गणमान्य लोगों का विद्यालय परिवार द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। इस मौके पर सरपंच महोदया की ओर से विद्यालय की लीला देवी, गुड्डी, ममता आदि प्रतिभाओं को सिल्वर मेडल (रजत पदक) सह प्रशस्ति-पत्र देकर प्रतिभाओं को प्रोत्साहन दिया। कार्यक्रम में खैरवा विद्युत विभाग के अधिकारी श्री शुभम गोचर, ग्राम पंचायत अधिकारी श्री अरविंद, श्री विक्रमसिंह, श्री मिट्ठूसिंह आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम सफल बनाने में विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों व्याख्याता श्री अशोक कुमार, श्री जयराम चौधरी, श्री माणकचंद शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक श्री राजेन्द्र कुमार खमराणा, श्री घीसूलाल दवे, श्री सुरेश कुमार, श्री भंवर लाल कुमावत, श्री नरेश कुमार शर्मा पूर्ण योगदान रहा।

विद्यालय को व्याख्यान स्टेंड भेंट

बाड़मेर जिले की राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नगर, ब्लॉक गुड़ामालानी में कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक श्री बाबूलाल परमार की प्रेरणा से उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भावी देवी मेघवाल, सरपंच, ग्राम पंचायत, डेडावास जागीर ने स्वतंत्रता दिवस पर विद्यालय में माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तरीय कक्षाओं में अध्यापन कार्य के लिए आठ व्याख्यान स्टेंड भेंट किए। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देदाराम पारंगी ने इस भेंट के लिए भामाशाह श्रीमती भावी देवी मेघवाल व प्रेरक उनके पति श्री बाबूलाल परमार वरिष्ठ अध्यापक का आभार प्रकट किया। श्री बाबूलाल परमार वरिष्ठ अध्यापक की ही प्रेरणा से उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भावी देवी मेघवाल सरपंच, डेडावास जागीर ने अपने ही गाँव के विद्यालय, राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, डेडावास जागीर ब्लॉक गुड़ामालानी में स्वतंत्रता दिवस पर कक्षाओं में अध्यापन कार्य के लिए सात व्याख्यान स्टेंड भेंट किए। इस पर विद्यालय परिवार और संस्था प्रधान ने भामाशाह का धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय स्तर पर टीचर इनोवेशन अवॉर्ड 2019 हेतु कोटड़ा (जवाजा) के व्याख्याता नरेन्द्र सिंह रावत का चयन

राष्ट्रीय स्तर पर टीचर इन्नोवेशन अवॉर्ड 2019 हेतु राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटड़ा (जवाजा) के व्याख्याता नरेन्द्र सिंह रावत को चुना गया है। आगामी 15 से 18 अगस्त 2019 तक दिल्ली के मानेकशा सेंटर में आयोजित भव्य समारोह में केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक द्वारा नरेन्द्र सिंह रावत सहित देश भर के 65 शिक्षकों को इस अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। शून्य निवेश आधारित नवीन शिक्षा प्रविधि (ZIIEI) कार्यक्रम के तहत श्री अरबिंदो सोसाइटी द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यापक परिषद दिल्ली द्वारा दो दिवसीय शैक्षिक नवाचारों की कार्यशाला भी आयोजित की गई हैं जिसमें सभी सम्मानित शिक्षकों का प्रोजेक्ट प्रस्तुतिकरण किया जाएगा। जिसमें शिक्षकों द्वारा किए गए नवाचार का प्रदर्शन किया जाएगा। अलग-अलग 10 शैक्षिक क्षेत्रों में से नरेन्द्र सिंह रावत को पर्यावरण शिक्षा व इकोलॉजी में श्रेष्ठ कार्य हेतु चुना गया है। इस कैटेगरी में देश भर से 7 लोगों को चुना गया है। इस उपलब्धि पर प्रधानाचार्य अवधेश शर्मा सहित विद्यालय परिवार एवं कोटड़ा गाँव सहित सभी शिक्षकों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए हार्दिक शुभकामनाएँ दी है।

लूणकरणसर के विद्यालय में पोधारोपण

लूनकरनसर, बीकानेर– राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय लूनकरनसर, बीकानेर में पूर्व प्रधान श्री स्व. मामराज गोदारा की स्मृति में शाला परिसर में 400 पौधे लगाए गए। गोदारा परिवार द्वारा इन पौधों के संरक्षण का प्रबन्धन किया गया। विद्यालय के मुख्य द्वार का भी उद्घाटन किया गया इस अवसर पर प्रधान श्री गोविन्द राम गोदारा, आरटीएस. उमा मित्तल, एसीबीईओ.-द्वितीय श्री मोटाराम चौधरी, रेवन्तराम गुरिया आदि गणमान्य लोगों ने छात्रों का मार्गदर्शन किया। श्री श्याम सुन्दर ज्याणी प्रोफेसर डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर ने छात्रों को पेड़-पौधों के संरक्षण एवं पर्यावरण विषय पर अहम जानकारी दी। संस्थाप्रधान श्रीमती शशि वर्मा ने सभी का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर विद्यालय के व्याख्याता श्री रेवन्तराम गोदारा, श्री राजेन्द्र कुमार, श्री महावीर, श्री सत्यनारायण गोदारा, श्री भरताराम सिद्धू, श्री राजकुमार गोगिया, श्री लक्ष्मीनारायण पारीक, श्रीमती झिलमिल पुनियाँ ने उक्त कार्यक्रम में अपनी अहम भूमिका अदा करते हुए कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। एनसीसी. प्रभारी श्री पवन सींवर ने व्यवस्थाओं में छात्रों को प्रेरित कर सहयोग लिया।

सहायक कर्मचारी की सेवानिवृत्ति पर विद्यालय द्वारा दोपहिया भेंट

राशमी, चित्तोड़गढ़। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पावली, पं स. पावली जिला चित्तौड़गढ़ के सहायक कर्मचारी श्री रामेश्वर लाल सुखवाल ने 22 वर्ष की अनवरत सेवा काल के उपरान्त 31.07.19 को अधिवार्षिकी आयु पूर्ण होने पर सेवा निवृत्ति प्राप्त की है। उनकी कार्य शैली

से अभिभूत होकर विद्यालय परिवार द्वारा उनको 52000/– बावन हजार मूल्य की स्कूटी भेंट की। इसके अलावा भी विद्यालय के विद्यार्थियों ने मोबाइल फोन तथा अन्य उपहार भेंट किए। स्थानीय ग्रामवासियों ने भी उनको श्री सांवलिया जी की थ्रीडी तस्वीर तथा अन्य उपहार दिए इस अवसर पर श्री सांवलिया को विद्यालय परिसर में साफा, श्रीफल से सम्मानित करते हुए भावभीनी विदाई दी गई। एक सहायक कर्मचारी का इतना मान वास्तव में एक अनुकरणीय प्रेरणा का स्रोत है, जो शिक्षा विभाग के लिए गर्व की बात है।

कार्यक्रम के दौरान मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी महोदय श्रीमान् गणेश लाल जी वैष्णव, स्थानीय विद्यालय के कार्यवाहक प्रधानाचार्य श्री झाबरमल सैनी, विद्यालय का समस्त स्टाफ तथा 150 से भी ज्यादा ग्रामवासी उपस्थित थे। कार्यक्रम के उपरान्त सम्पूर्ण ग्राम में इनका डी.जे. ने विदाई जुलूस निकाला गया तथा उनको उनके गाँव भोपलाई तक ससम्मान पहुँचाया गया।

जैसलसर में दो बीघा जमीन देने वाले भामाशाह का सम्मान

डूंगरगढ़, बीकानेर– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जैसलसर में भामाशाह श्रीमान ठा. सवाई सिंह बीका द्वारा को दान स्वरूप दो बीघा जमीन विद्यालय के नए भवन निर्माण हेतु 13.10.2019 को तात्कालीन रामावि जैसलसर को भेंट की। इस भूमि पर रमसा द्वारा नए भवन का निर्माण भी करवा दिया गया है तथा वर्तमान में इस भवन में कक्षा 7 से 12 तक विद्यालय संचालित है। 15 अगस्त के स्वतंत्रता दिवस पर भामाशाह ठा. सवाई सिंह को संस्थाप्रधान द्वारा सम्मानित किया गया।

प्राथमिक विद्यालय में भामाशाह द्वारा स्टेशनरी वितरित

सीकर– राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मोचीवाड़ा रोड सीकर के विद्यालय प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। विद्यालय की छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी तथा देश भक्ति गीत भी प्रस्तुत किए। संस्थाप्रधान ने संबोधित करते हुए पढ़ाई का महत्त्व बताया तथा नियमित रूप से विद्यालय आने के लिए बच्चों को प्रेरित किया। इस अवसर पर जीनगर समाज सीकर द्वारा सामुहिक रूप से विद्यालय के बच्चों को मिठाई, पेन, कोपी, पैंसिल वितरण किया गया जिसमें समाज के अध्यक्ष श्री पुरणजी निर्वाण, उपाध्यक्ष श्री ज्ञानचंन्द जीनगर, मंत्री श्री निश्चय कुमार जीनगर एवं जीनगर ज्योति राष्ट्रीय मंच सीकर के जिला संयोजक श्री रविन्द्र कुमार गहलोत, श्री मुकेश कुमार गहलोत, श्री रामस्वरूप चावला (गाँधी), श्री चैन प्रकाश खत्री, श्री ललित कुमार गहलोत, श्री ओमप्रकाश जी जोया, श्री विशाल चावला एवं विद्यालय परिवार उपस्थित थे।

भूमि दान कर्त्ता वयोवृद्ध श्रीमती हरखू देवी का विद्यालय प्रांगण में हुआ सम्मान

बाड़मेर– राजकीय प्राथमिक विद्यालय चमाराम मेघवाल की ढांणी कंवरली में विद्यालय के लिए भूमि दानकर्त्ता का सम्मान एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बाड़मेर के जिला प्रमुख प्रियंका मेघवाल ने कहा कि शिक्षा ही विकास का मूल मंत्र है। शिक्षा से ही जीवन में निखार आता है। शिक्षित परिवार होने से क्षेत्र के साथ साथ राष्ट्र का विकास होता है। कार्यक्रम के अध्यक्ष पाटोदी पंचायत समिति के प्रधान रशीदा बानो ने कहा कि शिक्षा में गुणवत्ता बढ़ाने का प्रयास शिक्षकगण मिलकर करें। इस अवसर पर भूमि दानकर्त्ता वयोवृद्ध श्रीमती हरखू देवी को शॉल ओढ़ाकर, प्रशस्ति पत्र प्रदान कर माला पहनाकर अतिथियों ने सम्मान किया। आयोजित समारोह में अतिथियों विद्यालय परिसर में पौधारोपण भी किया गया। पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर के जिलाध्यक्ष श्री सालगराम परिहार द्वारा बाल जीमण भी करवाया गया। इस अवसर पर मेघवाल समाज समदड़ी के अध्यक्ष गणेशराम बुनकर, बालोतरा पंचायत समिति की प्रधान दरिया देवी, पाटोदी ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष घेवराराम गढ़वीर, वरिष्ठ समाजसेवी रूप सिंह, वार्ड पंच चतर सिंह, भारतीय जीवन बीमा निगम के विकास अधिकारी मानाराम परिहार, पूर्व प्रधानाचार्य बालाराम भाटिया, पार्षद हनुमान जोगसन, पूर्व सरपंच आईदानराम गोदारा, आर.पी नारायणराम गेंवा, सोहनलाल परिहार, लक्ष्मण लोहिया, केहराराम, बिजाराम, भलाराम परिहार, व्याख्याता कैलाशचंद्र बामणिया, सागरमल सोलंकी, धर्मचंद वर्मा सहित सैकड़ों गणमान्य उपस्थित रहे। प्रधानाध्यापक श्री बुधाराम ने अतिथियों व आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। संचालन श्री महेंद्र सिंह ने किया।

स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से समारोहपूर्वक मनाया

चूरू– राजकीय माध्यमिक विद्यालय दांदू (चूरू) में 73वाँ स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से समारोहपुर्वक मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री लखेन्द्र सिंह राठौड़ उपसरपंच ग्राम पंचायत घांघू थे। कार्यक्रम में झंडारोहण विद्यालय के प्रधानाध्यापक नेमीचंद सुडिया ने किया। इस अवसर पर शा.शि. श्री रामचंद्र ढाका के निर्देशन में विद्यार्थियों ने पी.टी. परेड का शानदार प्रदर्शन किया गया। बच्चों ने देश भक्ति से ओत-प्रोत शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। प्रधानाध्यापक श्री नेमीचंद सुडिया ने विद्यालय के पिछले तीन वर्ष से परीक्षा परिणाम गुणात्मक व मात्रात्मक श्रेष्ठ रहने के लिए विद्यालय स्टाफ को सम्मानित किया और उपस्थित ग्रामवासियों से वायदा किया कि आगे भी हम इसी तरह का परीक्षा परिणाम देंगे और भरोसा दिलाया कि हम विद्यालय के बच्चों में अच्छी शिक्षा व संस्कार देने के लिय प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर गाँव के सर्वश्री हनुमान सिंह सांखला, कानाराम मीणा, अर्जुनराम बाबल, गोरधनराम, पूर्णाराम प्रजापत विद्यालय के शिक्षक सुलतान सिंह, विनोद बुगालिया, नोरंगराम , बजरंग लाल, राकेश आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राजेश कुमार मीना ने किया।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बरुन्धन में नई पहल की गई

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बरुन्धन की शिक्षिका शोभा कंवर द्वारा विद्यालय में बालकों की शतप्रतिशत उपस्थिति व ठहराव के लिए 21 अगस्त 2019 को एक नई पहल का शुभारंभ हुआ। एक बालक को उसकी माँ ही प्रेरित करती है कि वह रोज स्कूल जाए। इसीलिए बालक को उसकी माँ के साथ सम्मानित किया जाए। इसी कड़ी मे कक्षा 5 के मनीष और उसकी माता जी राजेश बाई का सम्मान सादे समारोह में किया गया। डाइट के आठवीं बोर्ड प्रभारी राजेन्द्र शर्मा के द्वारा बालक को मेडल तथा SIQE के राज्य प्रभारी सत्यनारायण वर्मा द्वारा माँ को मोमेंटो दे कर सम्मानित किया गया। के आर पी आशुतोष दाधिच ने भी सहयोग किया। मीना सुगमकर्त्ता शोभा कंवर ने बताया कि मीना मंच प्रत्येक राजकीय विद्यालय में है, जिसमे एक उपस्थिति का प्रत्येक कक्षा का एक चार्ट बनाया जाता है। बस यहीं से उनके दिमाग मे ये आइडिया आया। इस अवसर पर मुम्बई से मिले खिलौने का भी उद्घाटन किया गया। ये खिलौना बैंक कोटा की कीर्ति मेहरोत्रा ने डोनेट किए थे। इसमें बहुत से आधुनिक खिलौने हैं जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में बहुत सहायक होंगे। प्रधानाचार्य किरण सांखला ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने इस नवाचार को इसी महीने से प्रत्येक कक्षा में लागू करने की बात कही। इस अवसर पर शम्भूदयाल गुप्ता, विक्रम सिंह, शिवराज मीना, भँवर लाल वर्मा, ज्योति चांदसी, सिराजुद्दीन जी और मीना मंच की छात्राध्यक्ष चंचल सैनी भी उपस्थित थी।

मामाजी का थान विद्यालय में संस्थाप्रधान व अतिथियों ने किया ध्वजारोहण

जोधपुर– आजादी के 73 वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर मामाजी का थान स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक शौकत अली लोहिया की अध्यक्षता में महादेव मंदिर के संत रामेश्वर गिरी महाराज, भीमाराम पटेल, एसएमसी. अध्यक्ष गोरखराम, गोपाल सिंह राजपुरोहित सहित ग्रामवासियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया गया। प्रधानाध्यापक शौकत अली लोहिया ने बताया कि राष्ट्रगान 'जन गण मन अधिनायक जय हे' के साथ बच्चों ने देश-प्रेम से ओत-प्रोत गीतों के साथ व्यायाम पीटी व योगाभ्यास की प्रस्तुति दी। 73 वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर अतिथियों का स्वागत अभिनन्दन किया गया। इस मौके पर स्कूल प्रबन्धन समिति के सदस्यों व ग्रामवासियों में अचलाराम, वृद्धाराम, चैथाराम, डूंगरराम, भीमाराम, चैनाराम, गोपाराम, खीमाराम, राजूराम, बुद्धाराम, फूसाराम, छोगाराम, कलाराम, लक्ष्मणराम, जैताराम, जयरूपराम, हीराराम, लाभुराम, प्रेमाराम, भगाराम, पुरखाराम, तुलसाराम, रामाराम, शेराराम, रमेश पटेल, भींयाराम, नारायणराम, जुगताराम, चैनाराम, पप्पूराम, सुरजाराम, तेजाराम, सुआ देवी, तुलसी देवी, छमकु देवी, विमला देवी, शांति देवी सहित सैंकड़ों गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। विद्यालयी बच्चों सहित ग्रामवासियों को सरपंच, ग्रामवासी, भामाशाहों व विद्यालय परिवार की ओर से फ्रूट (केला), मिष्टान्न लड्डू व विभिन्न प्रकार की टॉफियाँ वितरित की गई।

ईदगाह मस्जिद पेश इमाम मौलाना मोहम्मद याकूब व अतिथियों ने ध्वजारोहण किया

जोधपुर– 73 वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर जालोरी गेट ईदगाह स्थित मदरसा इस्लामिया अफजल प्रांगण में ईदगाह मस्जिद के पेश इमाम मौलाना मोहम्मद याकूब, पूर्व पार्षद फरजाना चैहान, यूथ काँग्रेस प्रदेश महासचिव इलियास मोहम्मद, पूर्व जिला मदरसा प्रभारी व प्रधानाध्यापक शौकत अली लोहिया, तबस्सुम खान, हाजी मोहम्मद रमजान, हसन अली व मोहम्मद रफीक सहित मोहल्लेवासियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया गया। मदरसा शिक्षा सहयोगी तबस्सुम खान ने बताया कि राष्ट्रगान 'जन गण मन अधिनायक जय हे' के साथ बच्चों ने देश-प्रेम से ओत-प्रोत गीतों के साथ व्यायाम पीटी. व योगाभ्यास की प्रस्तुति दी। इस मौके पर मोहल्लेवासियों ने भाग लिया व मदरसे के बच्चों को मिष्टान्न लड्डू व बिस्किट वितरण किए गए।

संकलन: प्रकाशन सहायक

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

हार्ट अटैक के खतरे के बारे में सूचना देगी स्मार्टवॉच, ईसीजी मॉनीटरिंग भी करेगी

यूरूसलम, हार्ट अटैक के बढ़ते खतरे और इसके लक्षणों को समय रहते जानने के लिए इजराइल की एक कंपनी के बेहतरीन पहल की है। मेडिकल डिवाइस कंपनी कार्डिएकेंस एक स्मार्टवॉच विकसित की है जो कार्डियक अरेस्ट या स्ट्रोक की चेतावनी दे सकती है। यह व्यक्ति के हृदय गति, ब्लड प्रेशर, ऑक्सीजन की मात्रा जैसी जरूरी आयामों को ट्रैक करता है। कंपनी का कहना है कि यह हार्ट अटैक के संभावित लक्षणों को बताने में 99 फीसदी सटीक है। यह स्मार्टवॉच, संबंधित व्यक्ति की ईसीजी मॉनिटरिंग और फोटोप्लेथ्सोग्राफी की स्थिति को ट्रैक कर इसकी रीडिंग डॉक्टर को भेजता रहता है। कार्डिएकेंस कंपनी का कहना है कि अस्पताल में मौजूदा उपकरण उपकरणों के मुकाबले यह काफी सुविधाजनक है। आमतौर पर लोगों के स्वास्थ्य की मॉनीटरिंग नहीं हो पाती है और परंपरागत साधन काफी महंगे होते हैं।

कुछ ही मिनटों में ऐप बता देगा आपकी किडनी की हालत

लंदन। किडनी की गंभीर बीमारी का पता अब मोबाइल ऐप के जरिए लग जाएगा। लंदन के रॉयल फ्री हॉस्पिटल में डॉक्टरों की एक टीम ने इसका प्रयोग किया। औसतन 14 मिनट के भीतर ही बीमारी के संकेत मिल गए। डॉक्टरों ने ऐप को 'जीवन रक्षक' के तौर पर इंगित किया है। अब चंदमिनटों में ही बीमारी का पता चल जाएगा। ब्रिटेन में हर वर्ष एक लाख लोगों की मौत किडनी संबंधी बीमारियों से हो जाती हैं। इस ऐप को स्ट्रीम नाम से जाना जाएगा। इसे टेक्नोलॉजी फर्म डीपमाइंड के साथ मिलकर रॉयल फ्री ने विकसित किया है।

नवजात के वजन-लंबाई बताएंगे दिल के होने वाले रोग

वाशिंगटन। यह विज्ञान का कमला है कि नवजात के जन्म के समय के वजन और लंबाई के जरिए यह भी पता लगाया जा सकता है कि भविष्य में उसे दिल से जुड़ी बीमारियों का खतरा है या नहीं। मेडिकल कॉलेज ऑफ जॉर्जिया के डॉ. ब्रायन स्टैन्सफील्ड कहते हैं कि बच्चे के जन्म के वक्त का वजन और उसकी हाइट भ्रूण के संपूर्ण विकास के बारे में पूरी जानकारी देता है। अर्ली ह्यूमन डेवेलपमेंट नाम की विज्ञान में मैग्जीन में प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक, बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) में हाइट और वेट दोनों शामिल होता है। इसके जरिए भ्रूण के विकास की सटीक जानकारी मिल जाती है जिससे भविष्य में बच्चे की सेहत कैसी रहेगी, इस बारे में पता लगाया जा सकता है। पहले के कई अध्ययनों में भी कहा जा चुका है कि जनम के वक्त बच्चे का वजन अगर कम है तो उसे दिल की बीमारियों की आंशका रहती है। जन्म के समय बच्चे का बीएमआई कम होने से दिल के पर्पिंग चेंबर का साइज बढ़ने का खतरा था। इससे आगे चलकर दिल से जुड़ी बीमारियों का खतरा कई गुना अधिक हो जाता है।

वैज्ञानिकों ने एक माह में आठ रहस्यमयी रेडियो तरंगें पकड़ीं

नई दिल्ली। वैज्ञानिक अब रहस्मयी रेडियो तरंगों के उद्गम स्थान का पता लगाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ना चाहते। इसी कड़ी में वैज्ञानिकों को अब एक बड़ी कामयाबी मिली है। कनाडा के वैज्ञानिकों ने सिर्फ एक माह में आकाश गंगा में रहस्यमयी त्वरित रेडियो तरंगों के धमाकों (एफआरबी) के आठ सिग्नल पकड़े हैं।

जानें क्या है एफआरबी : फास्ट रेडियो ब्रस्ट (एफआरबी) एक प्रकार की रेडियो तरंग है। इसका पता लगाना जितना मुश्किल है, उतना ही मुश्किल इसका अध्ययन करना भी है। यह एक सेकेंड के करीब एक अरबवें हिस्से की अवधि के लिए पैदा होती है। पहली एफआरबी को रेडियो टेलीस्कोप के जरिये वर्ष 2001 में पकड़ा गया था, लेकिन 2007 में जाकर इसका विश्लेषण किया जा सका।

तनाव दूर करने को फीस देकर गायों के गले लग रहे अमरीकी

न्यायार्क। लोग बिल्लियों और कुत्तों के साथ समय बिताने के प्रभाव से परिचित हैं पर गाय की धड़कनें भी रिलेक्स महसूस कराती हैं। यूरोप के देशों में काउ काडलिंग (गाय को लाड दुलार करना) के सत्र लोकप्रिय हैं। अब अमरीकियों के लिए भी यह सुविधा राजधानी न्यूयार्क में शुरू की गई है। इन गायों के साथ समय बिताने के लिए लोगों को एक घंटे का करीब 5100 रूपए खर्च करने होंगे। पैकेज के तहत व्यक्ति गाय के साथ शांत माहौल में रह सकता है। दावा है कि इससे तनाव दूर होता है। न्यूयार्क स्थित माउंटेन फार्म हाउस में यह सुविधा शुरू की गई है। इस फार्म हाउस में नौ साल से घोड़ों के साथ वेलनेस सत्र चल रहे थे। काउ कडलिंग की शुरूआत पिछले दिनों हुई है। दिन में काउ कडलिंग के दो सत्र होते हैं। फार्म की मालिक सुजैन वुर्ल्स ने बताया कि उन्होंने 33 एकड़ घोड़ों के वेलनेस सत्र काफी पहले तक शुरू किया था, लेकिन नीदरलैंड की यात्रा के बाद ही उन्होंने इसमें गायों को भी शामिल करने के बारे में सोचा। वुर्ल्स मूल रूप से नीदरलैंड की हैं जो अपने पति के साथ न्यायार्क में फार्म चलाती हैं।

बड़ी उम्र में हो रही डिप्थीरिया जैसी बचपन की बीमारियां

जोधपुर बचपन में होने वाली बीमारियां अब किशोरावस्था व इसके बाद भी हो रही हैं। जबकि इनके वायरस-बैक्टीरिया किसी सूरत में स्वाइन फ्लू की तरह अपना स्टेन नहीं बदलते। बचपन में वैक्सीनेशन के बादजूद वयस्क और युवाओं में ये बीमारियां सामने आने से डॉक्टर भी हैरत में हैं। हालांकि डॉक्टरों का यह भी कहना है कि बचपन में एक बार इन बीमारियों से लड़ने का टीका लगाने के बाद परिजन आगे इनकी बूस्टर डोज नहीं लगवाते। डॉक्टरों का मानना है कि पहले लोग आपस में जनदीक और संयुक्त लोग आपस में जनदीक और संयुक्त परिवार में रहते थे। इस कारण बच्चों में बीमारियों जल्दी होती और बाद में इम्यूनिटी डवलप हो जाती थी। इसे हर्ड इम्यूनिटी कहा जाता है। आजकल वैक्सीनेशन के बाद बच्चे एक बार सुरक्षित हो जाते हैं, लेकिन बूस्टर टीकाकरण के अभाव में किशोर व वयस्क अवस्था में बीमारी की चपेट में आ जाते हैं। इसमें विशेष रूप से डिप्थीरिया मम्स शामिल हैं।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

जयपुर

रा.उ.मा.वि. कालाडेरा, पं.स. गोविन्दगढ़ में श्री बिरदीचन्द गोयल द्वारा 4,26,750 रुपये की लागत से मंच स्टेज का निर्माण कार्य करवाया गया मय सरस्वती मूर्ति की स्थापना और 5 छत पंखे, 2 कूलर भी विद्यालय को भेंट, श्री राकेश जी मीणा द्वारा 50 छात्र-छात्राओं को स्वेटर भेंट जिसकी लागत 15,000 रुपये, श्री कालूराम प्रजापत द्वारा 15 छात्र-छात्राओं को स्वेटर भेंट, जिसकी लागत 4,500 रुपये। **रा.मा.वि. नृसिंहपुरा, पं.स. गोविन्दगढ़** में श्री बिरदीचन्द गोयल द्वारा 5,90,750 रुपये की लागत से मंच स्टेज का निर्माण कार्य करवाया गया, सरस्वती की मूर्ति की स्थापना, विद्यालय चारदिवारी 3 फीट ऊँची तथा 780 फीट लम्बी निर्माण कार्य करवाया गया, रसोई घर के सामने चबूतरा का निर्माण भी करवाया गया साथ ही 5 छत पंखे, 01 कूलर, 3 सैट लकड़ी मेज-कुर्सी भी विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.उ.मा.वि. वाघावास पं.स. साम्भरलेक** को श्री बिरदीचन्द गोयल ने 3 छत पंखे व 200 पैन छात्र-छात्राओं को सप्रेम भेंट जिसकी लागत 3,500 रुपये। अभिभावकों, शिक्षकों, भामाशाहों द्वारा कक्षा 1 से 12 तक आवश्यकता वाले 40 छात्र-छात्राओं को विद्यालय गणवेश सप्रेम भेंट जिसकी लागत 24,000 रुपये, श्री बिरदी चन्द गोयल व श्री कालूराम प्रजापत द्वारा 19 छात्र-छात्राओं को स्वेटर भेंट जिसकी लागत 6,000 रुपये। रा.उ.प्रा. संस्कृत विद्यालय वाघावास को श्री बिरदी चन्द गोयल ने 07 छात्र-छात्राओं को विद्यालय पोशाक, स्कूल बैग, ड्राईंग बॉक्स, रूल, पैन्सिल आदि भेंट जिसकी लागत 3,500 रुपये। रा.मा.वि., चारपोल को श्री बिरदी चन्द गोयल ने 08 छात्र-छात्राओं को विद्यालय पोशाक, 08 स्कूल बैग, 70 पैन्सिल, मेडल सर्वोच्च अंक कक्षा 10 में प्राप्त को भेंट। रा.उ.प्रा.वि. धोलियों का वास को को श्री बिरदी चन्द गोयल ने 06 छात्र-छात्राओं को गणवेश, स्कूल बैग भेंट जिसकी लागत 3,000 रुपये तथा 07 स्वेटर, जूते, जुराब भेंट जिसकी लागत 5,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. वाघावास पं.स. साम्भरलेक** जयपुर को श्री बिरदी चन्द गोयल ने 08 विद्यालय पोशाक, स्कूल बैग, 400 पैन, 10 टी शर्ट भेंट जिसकी लागत 6,000 रुपये। **रा.मा.वि. चारपोल पं.स. गोविन्दगढ़** में श्री सत्यनारायण पारीक (से.नि.शि.) द्वारा 5,000 रुपये की लागत से सरस्वती का मन्दिर मय मूर्ति स्थापना कराई गई।

उदयपुर

रा.उ.मा.वि. कातनवाड़ा तह. सराड़ा में श्री मोहन लाल पुत्र श्री दलजी पटेल द्वारा पानी की टंकी जिसकी लागत 25,000 रुपये तथा 25,000 रुपये का मोटर पम्प लगवाया गया।

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

हमारे भामाशाह

जोधपुर

रा.उ.प्रा.वि. ताम्बड़िया खुर्द पं.स. भोपालगढ़ में श्री काना गोदारा ने अपने पिता व अपने पुत्र की यादगार में 4,00,000 रुपये की लागत से एक हॉल का निर्माण करवाया जिसका साइज 20x20 वर्ग फुट व बरामदा 20x10 का है।

पाटिलीपुत्रवासियों ने तथागत से पूछा-''आपने तो परंपरागत धर्म का कड़ा प्रतिरोध किया है, फिर आप धर्म की शरण में जाने की बात को क्यों इतना महत्त्व देते हैं?'' भगवान बुद्ध बोले- ''भंते! धर्म और रूढ़ियों में अंतर करना होगा। श्रेष्ठ सिद्धांतों का आचरण ही 'धर्म' कहलाता है। विचार यदि क्रिया में नहीं बदलते तो उनका लाभ नहीं मिल सकता। इसलिए सद्‌विचारों को सदाचरण की ओर ले जाने वाली प्रक्रिया के रूप में धर्म को अपनाया जाना है। अतः धर्म की शरण में गए बिना किसी का कल्याण नहीं है।''

झुंझुनूं

सेठ श्री जवाहरमल मोदी रा.बा.उ.मा.वि., उदयपुरवाटी को श्रीमती भगवती देवी डोकानिया चैरीटेबल ट्रस्ट मुम्बई द्वारा 1,62,157 रुपये की लागत से 32 C.C.T.V. कैमरे 40 इंच L.E.D. सहित लगवाए गए। श्री साँवरमल सैनी (से.नि.अ.) से कार्यालय टेबल 6x3 आकार की व कार्यालय कक्ष में फर्श मेट लगवाई जिसकी लागत 21,000 रुपये।

बाड़मेर

रा.उ.मा.वि. होडू, बाड़मेर में सर्वश्री लालचन्द, सुखराज, भंवरलाल, पारसमल, गोतमचन्द द्वारा एक हॉल का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 10,000,00 रुपये, सर्वश्री गौतमचन्द, अशोक, संजय अपने पिता स्व. श्री हीरालाल जैन की स्मृति में एक जल मंदिर (प्याऊ) का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 4,000,00 रुपये, श्री नानगाराम सुथार द्वारा 2,00,000 रुपये की लागत से प्रार्थना स्थल पर टिन शैड व आँगन करवाया गया।

भरतपुर

रा.मा.वि. सज्जनवास (रूपवास) में स्व. श्री वासदेव जी की स्मृति में पुत्रगणों श्री रतनसिंह व श्री प्रेम सिंह द्वारा 3,50,000 रुपये की लागत से एक कमरा मय बरामदा निर्माण करवाया गया।

सीकर

रा.उ.मा.वि. खण्डेला में श्री ओंकार मल (प्रधानाचार्य) द्वारा विद्यालय परिसर में दो शौचालय का निर्माण मय पाईप व टंकी फिटिंग सहित करवाया गया जिसकी लागत 71,000 रु.।

हनुमानगढ़

रा.मा.वि. नंदराम की ढाणी में श्री जगदीश चन्द्र खैरवा (व.अ. अंग्रेजी) द्वारा 2,00,000 रुपये की लागत से एक बरामदे का निर्माण करवाया गया, श्री रामस्वरूप खटोड़ पुत्र श्री भागीरथ खटोड़ व श्री सोहनलाल टाँक पुत्र श्री ख्याली राम टाँक द्वारा विद्यालय परिसर में लोहे का गेट लगवाया गया जिसकी लागत 20,500 रुपये, श्री अजायब सिंह पुत्र श्री श्रवण सिंह से एक वाटर फिल्टर प्राप्त हुई जिसकी कीमत 20,100 रुपये।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : सितम्बर, 2019 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक: अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्रवीथिका : सितम्बर, 2019

श्री आर. वेंकटेश्वर प्रमुख शिक्षा सचिव, श्री नथमल डिडेल निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, श्री ओमप्रकाश कसेरा निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान, श्री ई. ईसक्किमुथु परियोजना प्रमुख एनएलसी इण्डिया लिमिटेड व अधिकारीगण द्वारा राजकीय नेत्रहीन छात्रावासित उच्च माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में CSR के अन्तर्गत एनएलसी इण्डिया लिमिटेड द्वारा नवनिर्मित डायनिंग हॉल मयकिचन का उद्घाटन व पौधारोपण किया गया।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर निदेशालय परिसर में दुर्लभ औषधीय पौधे पारस पीपल का रोपण करते हुए माध्यमिक शिक्षा निदेशक श्री नथमल डिडेल; प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक श्री ओम प्रकाश कसेरा, अतिरिक्त शिक्षा निदेशक रचना भाटिया के साथ कार्मिक एवं शिक्षक।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, सत्र 2018–19 में कक्षा 12 वीं में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम प्राप्त करने वाले राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर के 41 विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र व नकद राशि देकर सम्मानित किया गया।

राजकीय माध्यमिक विद्यालय सज्जनवास भरतपुर में विद्यालय संबलन के अवसर पर पौधारोपण करते हुए संस्थाप्रधान, अध्यापकगण एवं वरिष्ठ सम्पादक शिविरा।

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय लूणकरणसर में पूर्व प्रधान स्व. श्री मामराज गोदारा की स्मृति में शाला परिवार द्वारा प्रो. श्याम सुन्दर ज्याणी एवं अन्य के साथ परिसर में 400 पौधों का रोपण किया गया।

चित्रवीथिका : सितम्बर, 2019